# गवेषणा

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान-आगरा

# गवेषणा

संपादक

डॉ० व्रजेश्वर वर्मा

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

वर्ष 11 1973 अंक 22

प्रकाशक :
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
नया आगरा,
आगरा-5

मूल्य : रु. 4.00

प्रकाशन तिथि : जुलाई, १९७४

मुद्रक :
रूपक प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा दिल्ली-३२

# विषय-सूची



-३२

सीताराम शास्त्री

# उर्दू-हिन्दी परिचय कोश

(हिन्दी में प्रचलित अरबी, फ़ारसी, तुर्की आदि शब्दों का परिचय)

## 1.0. कार्य का परिचय

प्रस्तुत कार्य उर्दू-हिन्दी परिचय कोश (हिन्दी में व्यवहृत अरबी, फ़ारसी, तुर्की आदि के शब्दों का परिचय) संस्थान द्वारा मुझे प्रदत्त उर्दू-हिन्दी कोश निर्माण परियोजना का अंग है। मैंने इस कोश-परियोजना को अपनी दृष्टि से तीन स्तरों में करने की योजना बनायी है। यह कार्य प्रथम स्तर का है। द्वितीय स्तर (उर्दू-हिन्दी प्रयोग कोश—कृपया 'गवेषणा' अंक-१७ देखिए) और तृतीय स्तर का कोश कार्याधीन है। इन तीन स्तरों को क्रमशः उर्दू-हिन्दी का परिचय-कोश, माध्यमिक कोश और उच्च कोश कहना उपयुक्त होगा।

## 1.1. लक्ष्य

परियोजना के शीर्षक से स्पष्ट है कि बोलचाल की हिन्दी में आये हुए अरबी, फ़ारसी आदि (उर्दू) शब्दों का विस्तृत संकलन और उनका परिचय देना ही हमारा लक्ष्य है। इस परिचय के अंतर्गत अधोलिखित चर्चा करना भी हमारा लक्ष्य है :—

हिन्दी भाषा से संकलित उर्दू शब्दों के—

1—ध्वनि व्यवस्था अथवा उच्चारण विशिष्टताओं पर प्रकाश डालना। (भूमिका भाग)

2—पद व्यवस्था अर्थात् शब्द, प्रत्यय, उपसर्ग आदि की विविधता बताना। (भूमिका भाग)

3—अर्थ के वैविध्य का विस्तार बताते हुए हिन्दी के पर्यायों का निर्णय करना। (स्तंभ चार)

4—शब्दों का स्रोत बताना। (स्तंभ एक)

5—देवनागरी और फ़ारसी लिपि में शब्द के मूल और परिवर्तित वर्तनी एवं उच्चारण में अंतर प्रदर्शित करना। (स्तंभ दो और तीन)

6—कुल मिलाकर यह बताना कि शिक्षित हिन्दी भाषा-भाषी व्यक्ति सहज रूप से उर्दू के सामान्यतया कौन-कौन से और कितने शब्दों का प्रयोग करता है; (प्रविष्टियां) और इस प्रयोग का व्यावहारिक, भाषायी और सांस्कृतिक महत्व क्या है। (भूमिका भाग)

## 1.2. सीमा

इस शब्द परिचयात्मक संकलन में लगभग 2300 शब्द सम्मिलित हैं। इस बड़ी संख्या को देखते हुए यह भ्रम हो सकता है कि यह एक उर्दू-हिन्दी कोश है। अतः यह स्पष्ट करना अनुचित न

होगा कि इस परियोजना का उद्देश्य किसी प्रकार का कोश निर्माण नहीं है। और न इसका लक्ष्य हिन्दी में प्रचलित समस्त उर्दू शब्दों की सूची तैयार करना है। हिन्दी या उर्दू का भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना अथवा उर्दू-हिन्दी की तुलना करना भी इस कार्य की सीमा में नहीं आते। स्पष्ट रूप से इस परियोजना की सीमा के अंतर्गत बातें सम्मिलित हैं—

1—शिक्षित हिन्दी भाषा-भाषी हमारे सूचक हैं, जिन्होंने उर्दू न पढ़ी हो।

2—उन सूचकों में अध्यापक, छात्र, क्लर्क, कवि और लेखक सम्मिलित हैं। इनकी विशेषता यह है कि ये मध्य वर्गीय हैं।

इन लोगों की बोलचाल या व्यवहार की हिन्दी ही उर्दू शब्द-संकलन का क्षेत्र है। इस व्यावहारिक सीमा में लिखित भाषा सम्मिलित नहीं है। शब्द-संकलन की अन्य सीमा में प्रस्तुत अध्ययन में वे शब्द आये हैं, जिनका व्यवहार अधिक से अधिक और सहज रूप से होता है। मनुष्य के विविध व्यवहारों की सीमा नहीं है। उन व्यवहारों को परिभाषित करने वाली वाणी को पूरी तरह पकड़ पाना भी असंभव है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में शब्द-संकलन की सीमा स्वतः सिद्ध है।

### 1.3. पद्धति

इस परियोजना के उर्दू शब्दों का संकलन प्रमुख रूप से इन तीन पद्धतियों से किया गया है।

1—उपर्युक्त अध्यापक, छात्र, क्लर्क आदि सूचकों की बोलचाल का अध्ययन एवं निरीक्षण करके कई सौ शब्दों की सूची तैयार की गयी।

2—इस सूची को आधार बनाकर अनेक अन्य सामान्य शब्दों की परिकल्पना की गयी और उनको भी अकारादि क्रम से सूची में सम्मिलित किया गया। इस परिकल्पना में अनुभवी व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त हुआ।

3—इन मित्रों ने प्रस्तुत अध्ययन के लिए शब्द-संचय में सहयोग दिया—

1—श्रीमती वशिनी देवी

2—श्री वी० रा० जगन्नाथन

3—श्री चंद्रकांत शास्त्री

4—श्री कन्हैया सिंह

5—श्री विजय राघव रेड्डी

इन व्यक्तियों की विशेषता यह है कि ये शिक्षा क्षेत्र में कार्य करते हैं। इनको भाषा-अध्यापन का पर्याप्त अनुभव है। इन्होंने उर्दू नहीं पढ़ी है। अतः प्रस्तुत कार्य में इनके सहयोग से वैधता, विश्वसनीयता एवं समन्वयपूर्ण दृष्टि की अपेक्षा करना स्वाभाविक है। तथापि शब्द-संकलन के गुण और परिमाण के संबंध में मतभेद की गुंजाइश है।

## 2.0. ध्वनि व्यवस्था

### 2.1. ध्वनि

संसार की समस्त भाषाओं के अभिव्यंजन के मूल में प्रथमतः उच्चारण प्रक्रिया सन्निहित है। किसी भाषा का अभिव्यंजन या उच्चारण विशिष्टता उस भाषा के ध्वनि-शास्त्रीय पक्ष में मिलता है। ध्वनिशास्त्रीय, व्याकरणिक तथा शब्द-कोशीय व्यवस्था दो भाषाओं में भेदक तत्व का कार्य करती है। इनमें भी दो भाषाओं की विशिष्टताओं में स्पष्ट अंतर करने का कार्य ध्वनिशास्त्र ही करता है। तात्पर्य यह है कि संसार की कोई भी दो भाषाएँ एक-सी नहीं हैं, केवल इसलिए कि उन भाषाओं का ध्वनिशास्त्र एकसा नहीं है। सारांश यह है कि किसी भाषा की मुख्य व्यवस्था को (अभिव्यंजन व्यवस्था)

समझने के लिए प्रथमतः उसकी ध्वनि-व्यवस्था को समझना अनिवार्य होता है।

दो भाषाओं का परस्पर प्रभावित होने का अर्थ है एक दूसरे की ध्वनि व्यवस्था को स्वीकार करना अथवा किसी भाषा से प्रभावित होने का तात्पर्य यह है—उसकी ध्वनि व्यवस्था, व्याकरण और शब्द कोश को किसी अंश में स्वीकार करना। इस स्वीकरण में दो प्रक्रियाएं कार्य करती हैं—प्रथम ग्रहीत व्यवस्था को अपनी व्यवस्था में सुरक्षित रखना, द्वितीय उस व्यवस्था को अपनी प्रकृति के अनुकूल ढाल लेना। अधिकांश भाषाओं में द्वितीय प्रक्रिया ही देखी जाती है।

उर्दू के संदर्भ में यदि हिन्दी की प्रकृति का विश्लेषण किया जाये तो ज्ञात होगा कि इसमें दोनों प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। उर्दू भारतीय भाषा है। इस धारणा के बावजूद यह असंदिग्ध तथ्य है कि हिन्दी ध्वनि व्यवस्था से उर्दू ध्वनि-व्यवस्था अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा काफ़ी दूर है। इस संदर्भ में हिन्दी-उर्दू की व्यवस्था की तुलना करना हमारा ध्येय नहीं है। तथापि अगले प्रसंग के स्पष्टीकरण के लिए मोटे तौर से यह समझना आवश्यक है कि इन दोनों भाषाओं की सैद्धांतिक ध्वनि-व्यवस्था में क्या अंतर है। इस अंतर को समझने से पूर्व इस आधारभूत सत्य को हृदयंगम करना होगा कि हिन्दी की ध्वनि-व्यवस्था मूलतः संस्कृत ध्वनि-व्यवस्था से और उर्दू की ध्वनि-व्यवस्था अरबी-फ़ारसी की ध्वनि-व्यवस्था से प्रभावित है। इस विशिष्ट ध्वनि-व्यवस्था से युक्त उर्दू के शब्द हिन्दी के व्यवहार में आकर अनेक रूपों में परिवर्तित हुए हैं। आगे के प्रकरणों में इस परिवर्तन का सविस्तार विवरण दिया जायेगा। यह ज्ञातव्य है कि ध्वनि-व्यवस्था से हमारा तात्पर्य यहाँ उच्चारण पद्धति से है।

2.2. **ध्वनि परिवर्तन**—पिछले प्रसंग में हिन्दी और उर्दू ध्वनियों की सामान्य सैद्धान्तिक चर्चा की गई है। वह प्रसंग वस्तुतः आनुषंगिक ही माना जाना चाहिए। ध्वनि प्रसंग में हमारा मुख्य लक्ष्य व्यावहारिक हिन्दी में प्रचलित उर्दू शब्दों की ध्वनि संबंधी व्यवस्था का सूक्ष्म अध्ययन करना है। हमें यह देखना है कि उर्दू की शब्दावली हिन्दी में आकर किस सीमा तक ध्वन्यात्मक रूप में परिवर्तित हो गई है और इस परिवर्तन के क्या-क्या परिणाम हुए हैं। स्वर और व्यंजन क्रम से इस अध्ययन को सोदाहरण प्रस्तुत किया जायेगा।

2.2.1 **स्वर**—उर्दू वर्णमाला में केवल /अ/ ( اَ ), /ई/ ( ی ) और /ए/ ( ے ) स्वरों को स्थान प्राप्त है। व्यवहार और लेखन में हिन्दी के अन्य स्वर भी किंचित भेद के साथ उसमें प्राप्त होते हैं। जैसे /आ/ ( آ ), इ ( اِ ), /उ/ ( اُ ) /ऊ/ ( اُو ), /ऐ/ ( اے ), /ओ/ ( او ) /औ/ ( اَو ) इत्यादि। इस संदर्भ में ध्यान देने योग्य बात यह है कि उर्दू की एक व्यंजन ध्वनि। 'ऐऩ'। ( ع ) से भी स्वरवत् अनेक ध्वनियाँ बोली और लिखी जाती हैं। 'ऐन'/अ़/ स्वरयंत्र मुखी अघोष स्पर्श ध्वनि है. इन दोनों प्रकार के स्वरों से युक्त उर्दू के शब्द हिन्दी के व्यवहार में आए हैं। जैसे—'आदमी' ( آدمی ) और 'ऐश' ( عیش ), 'इम्तिहान' ( امتحان ) और 'इश्क' ( عشق ) 'उस्ताद' ( اُستاد ) और 'उम्र' ( عمر ) 'एहसान' ( احسان ) और 'एलान' ( اعلان ) इत्यादि। शुद्ध उर्दू के उच्चारण में इन दोनों प्रकार के स्वरों में अंतर देखा जा सकता है। किन्तु हिन्दी की उच्चारण और लेखन पद्धति में इनमें कोई अन्तर नहीं आया है। इस एक रूपता में कहीं-कहीं ध्वनिग्रामिक महत्व भी दिखाई देता है। उपर्युक्त विवरण आगे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायेगा।

1. /अ/—/अ़/—अक्सर ( اکثر ), अदब ( ادب ), अ़क्ल ( عقل ), अ़रक़ ( عرق ) इत्यादि। हिन्दी में सभी रेखांकित ध्वनियों के लिए केवल /अ/ का व्यवहार होता है।

कभी-कभी /अ़/ के स्थान पर हिन्दी में /य़/ श्रुति का आगम होता है, जैसे—तबीअ़त>तबीयत।

/अ/ का ध्वनिग्रामिक महत्व भी कहीं-कहीं मिलता है। जैसे— ख़ुद ( خد ) और ख़ुदा ( خدا ) का अर्थ स्पष्ट है।

2. /आ/—/आ़/ 'आ़दमी' ( آدمی ) 'आ़फ़त' ( آفت ) 'आ़राम' ( آرام ), 'आ़शिक' ( عاشق ), 'आ़दी' ( عادی ), 'आ़म' ( عام ) इत्यादि। हिन्दी में रेखांकित सभी ध्वनियों के लिए केवल /आ/ व्यवहृत होता है। 'मुनक्क़ा' ( منقیٰ ) 'मुरब्बा' ( مربیٰ ), 'आ'ला' ( اعلیٰ ) इत्यादि में /आ/ की विशिष्टता द्रष्टव्य है। लेखन की दृष्टि से ये विशिष्ट शैली के प्रतीक हैं। /आ/ और /आ़/ का एकाध अर्थ भेदक उदाहरण भी मिलता है। जैसे—'आम' ( آم ) 'आ़म' ( عام ) का अर्थ क्रमशः 'आम्र' और 'साधारण' होता है। /आ/ में /व/ श्रुति के उदाहरण मिलते हैं। जैसे बैआनः >बयाना। सुआल >सवाल।

3. /इ/—/इ़/ 'इ़तिज़ार' ( انتظار ), 'इ़म्तिहान' ( امتحان ), 'इ़ल्म' ( علم ), 'इ़श्क़' ( عشق ) 'इ़त्र' ( عطر ) इत्यादि। हिन्दी में रेखांकित ध्वनियों के लिए केवल /इ/ व्यवहृत होता है। /इ/ में /य/ श्रुति के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जैसे—क़वाइद >क़वायद, कइद : क़ायदा, नालाइक>नालायक, फ़ाइदः>फायदा, दाइरः >दायरा।

4. /ई/—/ई़/ ई़जाद ( ایجاد ) ई़मान ( ایمان ) ई़द ( عید ) ई़सा ( عیسیٰ ) इत्यादि। हिन्दी में रेखांकित ध्वनियों के लिए केवल /ई/ का प्रयोग होता है।

5. /उ/—/उ़/ 'उ़स्ताद' ( استاد ) 'उ़स्तुर' : ( استرہ ) 'उ़र्दू' ( اردو ) 'उ़म्र' ( عمر ) 'उ़म्द :' ( عمدہ ) 'उ़र्फ़' ( عرف ) इत्यादि। रेखांकित ध्वनियों के लिए केवल /उ/ का व्यवहार होता है। /ऊ/ से युक्त कोई उर्दू शब्द हिन्दी में नहीं है।

6. /ए/—/ए़/ उर्दू में वस्तुतः /ए/ और /अ/ के व्यवहार में कोई अन्तर नहीं है। तथापि हिन्दी में प्रचलित उर्दू शब्दों में /ए/ का अस्तित्व मानकर चलते हैं। 'ए़हसान' ( احسان ), 'ए़हतियात' ( احتیاط ) 'ए़लान' ( اعلان ) 'ए़तिराज़' [ اعتراض ]। रेखांकित ध्वनियों के लिए हिन्दी में केवल /ए/ है। उर्दू शब्दों के षष्ठी तत्पुरुष समास में आगत /ए/ का महत्व शैलीगत है। जैसे— संग-ए-दिल ( سنگ دل ) शाह-ए-जहां ( شاہ جہاں ), मालिक-ए-मकान ( مالکِ مکان )।

7. /अ'इ/ /ऐ/ फ़ारसी में संयुक्त स्वर /अ'इ/ है, जो हिन्दी में /ऐ/ (अए) हो जाता है। जैसे म'इदः >मैदा, ख़'इर>ख़ैर, श'इतान >शैतान, क़'इद>क़ैद, इत्यादि। हिन्दी में प्रचलित उर्दू शब्दों के आदि में /ऐ/ है, हिन्दी की /ऐ/ नहीं है। जैसे 'ऐ़नक' ( عینک ) 'ऐ़श' ( عیش ) 'ऐ़ब' ( عیب ) इत्यादि।

8. /ओ/—/ओ़/ हिन्दी में प्रचलित उर्दू शब्दों के मध्य में ही /ओ/ पायी जाती है। जैसे—हिन्दोस्तान ( ہندوستان ) अजीबोग़रिब ( عجیب وغریب )। शब्द के आरंभ में /ओ़/ का व्यवहार मिलता है। जैसे ओ़हद : ( عہدہ )। हिन्दी में केवल /ओ/ से काम लिया जाता है। उर्दू शब्दों के द्वंद्व-समास में आगत /ओ/ का शैलीगत महत्व है। जैसे ऐ़श-ओ-आराम ( عیش و آرام ) आब-ओ-हवा ( آب و ہوا ) दीन-ओ-दुनिया ( دین و دنیا ) अजीब-ओ-ग़रीब ( عجیب وغریب ) इत्यादि। इसमें /ओ/ 'और' का अर्थ देते हुए एक पद का कार्य भी कर रही है।

9. /अ'उ/—/औ़/ फ़ारसी में /अ'उ/ संयुक्ताक्षर है जो हिन्दी में /औ/ (अ'ओ) हो जाता है। जैसे फ'उज—फ़ौज, म'उसम—मौसम, श'उकीन—शौकीन, द'उलत—दौलत इत्यादि। /अ'उ/ और /औ़/ के अंतर के उदाहरण—

**औ़ज़ार** ( اوزار ) **औ़लाद** ( اولاد ) **औ़सत** ( اوسط ) और **औ़रत** ( عورت )।

/ ऑ / का प्रयोग बहुत कम है।

2.2.2—**व्यंजन**—हिन्दी में व्यवहृत उर्दू शब्दों में जिन व्यंजनों में परिवर्तन हुआ है, वे व्यंजन ये हैं-/ क़ / (ق) / ख़ / (خ) / ग़ / (غ) / ज़ / (ض) / फ़ / (ف) / ऐन / (ع) / स / (ث) दो चश्मी है (ھ) / हे / (ہ) है (ح)। उर्दू में ये व्यंजन ध्वनिग्रामिक हैं और इनकी शुद्धता तथा परस्पर अंतर की रक्षा का पूरा यत्न किया जाता है। किंतु हिन्दी में आने पर यह यत्न शिथिल हो जाता है। अतः इनमें प्रथम चार ध्वनियों में परिवर्तन के संबंध में हिन्दी भाषियों में मतभेद है। इनमें एक वर्ग शुद्धतावादी है। दूसरा वर्ग इनमें परिवर्तन (हिन्दीकरण) का पक्षपाती है। इस मतविभिन्नता के परिणामस्वरूप हिन्दी में व्यवहृत उर्दू शब्दों का उच्चारण अनिश्चित है। इस अनिश्चय का एक कारण यह भी है कि हिन्दी में व्यवहृत उर्दू शब्दों में उपर्युक्त ध्वनियों का ध्वनिग्रामिक महत्व प्रायः नहीं ही है। कहीं-कहीं एक-दो अपवाद इसके मिल जाते हैं। आगे के उदाहरणों से यह विवरण स्पष्ट हो जायेगा।

1. / क़् / — / क् / उर्दू में / क़् / और / क् / तथा / क़् / और / ख़् / का ध्वनिग्रामिक महत्व है, जैसे क़दर (قدر) और कदर (کدر) का अर्थ क्रमशः 'शक्ति' और 'मलिनता' है। इसी प्रकार क़त (قط) और ख़त (خط) का 'कलम की नोक' और 'पत्र' अर्थ है। इस प्रकार के अनंत उदाहरण मिल जाते हैं। हिन्दी में हल्क़ा (परिधि) और हल्का (भार रहित), ताक़ (आला) और ताक (टोह) जैसे ध्वनिग्राम के एक-दो उदाहरण मिलते हैं। प्रायः क़ानून (قانون) अक़्ल (عقل) वक़्त (وقت) बाक़ी (باقی) शौक़ (شوق) आदि का उच्चारण क्रमशः कानून (کانون) अक्ल (اکل) वक्त (وکت), बाकी (باکی) शौक (شوک) भी होता है।

2. / ख़् / — / ख् / —उर्दू में / ख़् / और / क़् / के ध्वनिग्रामों के उदाहरण बहुत कम हैं। एक-दो उदाहरण, जो अप्रचलित हैं, द्रष्टव्य हैं—ख़ता (خطا) और क़ता (قطا) तथा ख़फ़ा (خفا) और क़फ़ा (قفا)। इनके अर्थ हैं क्रमशः 'अपराध', और 'एक चिड़िया' तथा 'रुष्ट' और 'सिर के पीछे का भाग' हिन्दी में / ख़ / और / ख / ध्वनिग्राम वाले दो-चार उदाहरण मिल जाते हैं, जैसे ख़ाना (خانہ) और खाना (کھانا), ख़ुदा (خدا) और खुदा (کھدا) ख़ाली (خالی) और खाली (کھالی) इनमें अर्थ का अंतर स्पष्ट है।

3. / ग़् / — / ग् /—हिन्दी और उर्दू में इनके ध्वनिग्रामिक उदाहरण शायद नहीं हैं। हिन्दी में ग़बन (غبن) ग़दर (غدر) दिमाग़ (دماغ) चिराग़ (چراغ) बग़ल (بغل) आदि का उच्चारण गबन (گبن) गदर (گدر) दिमाग (دماگ) चिराग (چراگ) बगल (بگل) होता है।

4. /ज़्/ – / ज् / —अरबी के 'ज़े' (ز) ज़हर (زہر) ज़िंदगी (زندگی)
'ज़ोय' (ظ) ज़ाहिर (ظاہر) ज़ालिम (ظالم)
'ज़्वाद' (ض) ज़रूर (ضرور) हाज़िर (حاضر)
'ज़ाल' (ذ) ज़ात (ذات)
'झ़' (ژ) अझ़दह (اژدہ) काझ़ (کاژ)

ये ध्वनियाँ क्रमशः दंत्य वर्त्स्य संघर्षी, कंठ स्थान युक्त, दंत्य वर्त्स्य संघर्षी, कंठस्थानयुक्त दंतवर्त्स्य स्पर्श, दंत संघर्षी तथा तालव्य संघर्षी हैं। ये पाँचों ध्वनियाँ हिन्दी की वर्त्स्य संघर्षी / ज / में

समाहित हो गई हैं। शुद्ध उर्दू में ये ध्वनियाँ ध्वनिग्राम हैं। एक दो उदाहरण से यह बात स्पष्ट होती है जैसे—

ज़रा ( ذرع ) लोभ
ज़रा ( ضرا ) रोना
ज़रा ( ذرا ) तनिक
इसी प्रकार ज़न ( زن ) स्त्री
ज़न ( ظن ) विचार

हिन्दी में व्यवहृत उर्दू शब्दों में यह पूर्ण ध्वनिग्राम नहीं मिलता। उर्दू में / ज़ / और / ज् / ध्वनिग्राम है। इनके अनेक उदाहरण मिलते हैं। जैसे—

ज़बान ( زبان ) —जिह्वा
जबान ( جبان ) —नपुंसक
जर ( جر ) —आकर्षण
ज़र ( زر ) —सोना
मोज़ ( موز ) —आनंद
मौज ( موج ) —तरंग

हिन्दी में भी / ज़ / और / ज / ध्वनिग्राम के दो चार उदाहरण मिल जाते हैं, जैसे—

ज़रः ( ذره ) थोड़ा
जरा ( جرا ) बुढ़ापा
राज़ ( راز ) रहस्य
राज ( راج ) शासन
ज़मानः ( زمانہ ) युग
जमाना ( جمانا ) क्रिया (जमाने की)

इन उदाहरणों के बावजूद हिन्दी में / ज़ / के स्थान पर / ज / के प्रयोग में किसी प्रकार की व्यावहारिक बाधा उपस्थित नहीं होती है। परिणामतः ज़हर-जहर ( زہر- جہر ) ज़ालिम-जालिम ( ظالم- جالم ) हाज़िर-हाजिर ( حاضر- حاجر ) दोनों प्रकार का उच्चारण होता है।

5. / फ़ / — / फ् / —हिन्दी में / फ़ / का व्यवहार / ज़् /, / ग़् / या / क़् / की तुलना में अधिक होता है। कभी-कभी हिन्दी के शब्दों में भी यह ध्वनि सुनाई पड़ती है, जैसे—

फल-फ़ल, फिर-फ़िर, फूल-फ़ूल इत्यादि। उर्दू के फ़ौरन ( فوراً ) फ़ैसला ( فیصلہ ) तूफ़ान ( طوفان ) लिफ़ाफ़ः ( لفافہ ) शरीफ़ ( شریف ) आदि में / फ / की अपेक्षा / फ़ / का उच्चारण अधिक देखा जाता है।

6. / स् / अरबी के 1. 'से' ( ث ) सवाब ( ثواب ) वारिस ( وارث )
2. 'स्वाद' ( ص ) साबुन ( صابن ) सनम ( صنم )
3. 'सीन' ( س ) सफ़ेद ( سفید ) सर्दी ( سردی )

उपर्युक्त ध्वनियाँ क्रमशः दंत मध्य संघर्षी, कंठ स्थान युक्त दंतवर्त्स्य संघर्षी, और सामान्य दंत वर्त्स्य संघर्षी हैं। हिन्दी में इनका प्रयोग वर्त्स्य संघर्षी / स् / ही होता है। उर्दू में इन व्यंजनों के ध्वनिग्राम के उदाहरण भी मिलते हैं। जैसे—सौत ( صوت ) ध्वनि
सौत ( سوط ) चाबुक

समर ( صبر ) कथा
समर ( ثمر ) मेवा

हिन्दी में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। परिणामतः उपर्युक्त सभी ध्वनियों का एक समान व्यवहार होता है।

7. /अ़/ — /ऐन/ अरबी में 'हमज़ा-आलिफ़', जिसको 'ऐन' ( ع ) कहते हैं, स्वरयंत्र मुखी अघोष स्पर्शध्वनि है। हिन्दी में आकर यह ध्वनि दो रूपों में परिवर्तित हो गई हैं—

1. शब्द के आदि में यह ध्वनि लुप्त हो गई है। जैसे—अक़्ल ( عقل ) अजब ( عجب ) ऐश ( عیش )

2. शब्द के मध्य और अंत में यह ध्वनि दीर्घ /आ/ में बदल गई है जैसे—बाद ( بعد ) मशाल ( مشعل ), लाल ( لعل ), जमा ( جمع ), मना ( منع ) इत्यादि।

8. /ह़/ —अरबी में दो चश्मी 'हे' ( ھ ) ज़हर ( زھر ) ज़ाहिर ( ظاہر ); हे' ( ہ ) हवा ( ہوا ) हमराज़ ( ہمراز ); हे ( ح ) हालत ( حالت ) हाज़िर ( حاضر ) क्रमशः ये ध्वनियाँ स्वरयंत्रमुखी, और उपालिजिह्वा हैं। हिन्दी में ये ध्वनियाँ घोष या अघोष /ह़/ के रूप में प्रयुक्त होती हैं। परिष्कृत उर्दू में इन ध्वनियों का ध्वनिग्रामिक महत्व है। जैसे—हाजिर ( ہاجر )=परदेशी; हाजिर ( حاضر )=रोकनेवाला; हामी ( ہامی )=चकित; हामी ( حامی )=पक्षपाती, इत्यादि। हिन्दी में व्यवहृत उर्दू शब्दों में ऐसे उदाहरण नहीं मिलते। अतः केवल /ह़/ का व्यवहार सर्वत्र होता है। वस्तुतः 'दो चश्मे हे' का प्रयोग महाप्राणत्व उत्पन्न करने में होता है। हिन्दी की महाप्राण ध्वनियाँ फ़ारसी लिपि में इसी के मेल से लिखी जाती हैं। जैसे—

खाना ( کھانا ), घर ( گھر ) फल ( پھل ) थाली ( تھالی ) मलाई ( ملائی ) इत्यादि।

हमज़ा ( ہ ) का प्रयोग पूर्ण /ह/ के रूप में होता है। जैसे कहानी ( کہانی ) मेहरबानी ( مہربانی ) हवा ( ہوا ) इत्यादि। इस हमज़े का एक और प्रयोग देखा जाता है। अरबी-फ़ारसी के शब्दों के अंत में प्रयुक्त 'हा-इ-मुख़्तफ़ी' जो विसर्ग रूप /:/ में लिखा और अल्पोच्चरित /ह़/ के समान उच्चरित होता है। हिन्दी में आकर वह /आ/ स्वर में परिवर्तित हो जाती है। जैसे—

इशारः ( اشارہ ) इशारा
तमाशः ( تماشہ ) तमाशा
किनारः ( کنارہ ) किनारा

इस ध्वनि के ध्वनिग्रामिक रूप भी मिलते हैं, जैसे—

पेशः ( پیشہ ) और पेश ( پیش )
तख़्तः ( تختہ ) और तख़्त ( تخت )
बरामदः ( برامدہ ) और बरामद ( برامد )
अंदाज़ः ( اندازہ ) और अंदाज़ ( انداز )

परिष्कृत उर्दू में इनका उच्चारणगत अंतर देखा जा सकता है। हिन्दी में इस अंतर की आवश्यकता नहीं है।

9. **अनुस्वार :**— /ं/ उर्दू के 'नून' ( ں ) अर्थात् /न्/ और हिन्दी के अनुस्वार (ं) में बहुत कुछ समानता है, जैसे—

अंगूर—अन्गूर ( انگور )

अंजीर—अन्जीर ( انجیر )

अंदरूनी—अन्दरूनी ( اندرونی )

अंबार—अम्बार ( انبار )

परिणामतः इस प्रकार के उर्दू शब्दों को हिन्दी में अनुस्वार के साथ ही प्रयोग किया जाता है।

यक़ीनन ( یقیناً ) फ़ौरन ( فوراً ) अंदाज़न ( اندازاً ) शरारतन ( شرارتاً ) जैसे उर्दू के विशिष्ट प्रयोगों में अंत्य / न् / द्रष्टव्य है। इसके लिए हिन्दी में / न् / का ही व्यवहार होता है।

10. अनुनासिकता / ँ /—परिष्कृत उर्दू में विशेषकर शायरी में अनुनासिकता का प्रयोग खूब होता है, जैसे—आस्माँ ( آسماں ) इन्साँ ( انساں ) जवाँ ( جواں ) वीराँ ( ویراں ) हिन्दोस्ताँ ( ہندوستاں ) इत्यादि। उर्दू में इनका मूल रूप आस्मान, इन्सान, जवान और वीरान है। हिन्दी में इन्हीं रूपों का प्रचलन है। शेर-शायरी में अनुनासिकता इतनी बढ़ जाती है कि तरह, हमेशा, दुनिया को भी तरहाँ, हमेशाँ, दुनियाँ उच्चरित किया जाता है।

2. 3. **लोप**— हिन्दी में व्यवहृत उर्दू शब्दों में स्वर-व्यंजन ध्वनियों का लोप भी देखा जाता हैं, जैसे—

**आदि लोप**=गुवाह >गवाह, जुबान >जबान, सुहूलत >सहूलत।

**मध्य लोप**=ख़्वाब >खाब, दरख़्वास्त >दरखास्त, जवाहिर >जवाहर, मज़्दूर> मजूर

**अन्त लोप**=शुरुअ> शुरू, बाय >बू

2. 4. **आगम** : हिन्दी में व्यवहृत उर्दू शब्दों के ध्वनि-गुच्छों में प्रायः स्वरों का **आगम होता है**। यह आगम प्रायः शब्द के मध्य या अंत में होता है, जैसे—

**मध्य आगम**=हुक्म > हुकुम, बुन्याद > बुनियाद, मज़्बूत > मजबूत, ग़ब्न > गबन, ख़त्म > खतम।

**2. 5. प्रतिस्थापन**

हिन्दी में आने पर अनेक उर्दू शब्दों में ध्वनियों का प्रतिस्थापन होता है। जैसे—आदि में—जिहेज >दहेज, सिपुर्द >सुपुर्द; मध्य में=नक़द >नग़द, सवाब >सबाब; अंत में—सेव>सेब, तकाद : >तकाजा;

2. 6. **ह्रस्वीकरण**—हिन्दी के कतिपय उर्दू शब्दों में द्वित्व का लोप हो जाता है। परिणामस्वरूप शब्द का ह्रस्वीकरण हो जाता है। जैसे—

नव्वाब > नवाब, दल्लाल > दलाल, ज़िद्द > जिद, हक़्क़ > हक, आचार > अचार, अव्वार: > आवारा

**3. 0. पद-व्यवस्था**

**3. 1. स्रोत**

भाषाशास्त्रियों का मत है कि उर्दू हिन्दी की एक विशिष्ट शैली है। इस अभिमत का प्रमुख कारण है कि उर्दू और हिन्दी का व्याकरण एक है। इस एकता के बावजूद उर्दू की जो विशिष्टता है, वह उसके शब्द या पद भंडार में निहित है। इस शब्द समृद्धि के लिए उर्दू सदा से विदेशी शब्द-सम्पदा को स्रोत मानती रही है। विशेषकर अरबी, फ़ारसी और तुर्की भाषाओं से गृहीत शब्द समूहों से ही वह अपना कोश भरती रही है। इन विभिन्न स्रोतों से अनेक प्रकार के शब्द वर्गों को स्वीकार कर उन्हें

हिन्दी व्याकरण के अनुसार प्रयोग करना ही उर्दू का अपना अस्तित्व है। जो हो, आज उर्दू का सामाजिक, साहित्यिक तथा सांविधानिक दृष्टि से अपना अलग अस्तित्व है, यह असंदिग्ध है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी में उर्दू की समस्या प्रमुख रूप से शब्दों या पदों की समस्या है। मूलत: हिन्दी में उर्दू के कितने शब्द आये हैं, इसके संबंध में श्री भोलानाथ तिवारी ने अपने 'हिन्दी भाषा' ग्रन्थ में लिखा है कि यह संख्या लगभग 6125 के निकट पहुँचती है। इनमें फ़ारसी, अरबी और तुर्की के शब्द सम्मिलित हैं। संभव है कि हिन्दी की साहित्यिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार की भाषा में इतने सारे शब्द हों, किंतु प्रस्तुत अध्ययन में साहित्यिक संदर्भ के शब्दों से हमारा कोई संबंध नहीं रहा है। हमें केवल यह देखना है कि हिन्दी के व्यवहार में कितने उर्दू शब्दों का प्रयोग करना संभव होता है। अत: इस व्यावहारिक सीमा के कारण हमारा उपर्युक्त शब्द संख्या से कोई संबंध नहीं रह जाता। हमने यह देखने की कोशिश की है कि इस व्यवहार की सीमा में कितने शब्द आ सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित शब्दों का स्रोतीय विवरण या परिचय आगे दिया जाता है।

**3.1.1—फ़ारसी**

आज हिन्दी में प्रयुक्त फ़ारसी शब्दों की संख्या भोलानाथ तिवारी के अनुसार लगभग 3500 हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में व्यावहारिक शब्दों के विषय की दृष्टि से कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

धर्म संबंधी—रोज़ा, दीन, कुरान, ख़ुदा इत्यादि
शासन संबंधी—सरकार, वकील, चपरासी, सिपाही इत्यादि
पोशाक संबंधी—पाजामा, कमीज, शलवार इत्यादि
सेना संबंधी—फ़ौज, हमला, कमान, तीर इत्यादि
स्थान संबंधी—मुहल्ला, देहात, शहर, जिला इत्यादि
पत्र-व्यवहार संबंधी—ख़त, लिफ़ाफा, पता इत्यादि
अन्न-फल-मेवा—बादाम, सेब, अनार, अंगूर, तरबूज़, कद्दू इत्यादि
बरफी, हलवा, गुलाब जामुन, समोसा, इत्यादि
व्यवसायियों के नाम—दर्जी, सईस, बावर्ची, हलवाई इत्यादि
श्रृंगार संबंधी—साबुन, आईना, शीशा, इत्र इत्यादि
मकान संबंधी—मकान, दीवार, दालान, मंजिल, बरामदा इत्यादि
बीमारी संबंधी—हकीम, बुखार, हैज़ा, ज़ुकाम, बीमार इत्यादि
फर्नीचर संबंधी—कुर्सी, तख्त इत्यादि

इसमें संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण, समुच्चय बोधक तथा विस्मयादि बोधक शब्द सम्मिलित हैं। प्रस्तुत शब्द परिचय में लगभग फ़ारसी के 1060 शब्द आये हैं।

3.1.2. **अरबी**—भोलानाथ तिवारी की गणना के अनुसार हिन्दी में लगभग 2500 अरबी के शब्द हैं जो फ़ारसी के माध्यम से हिन्दी में आये हैं। प्रस्तुत अध्ययन में आये हुए अरबी शब्दों के निम्नलिखित कुछ उदाहरण हैं —

शासन—अदालत, अमीन, फ़ैसला, बरी, हिरासत इत्यादि
धर्म—हज, ईद, दुआ, शैतान इत्यादि
चिकित्सा—बलगम, हकीम, जुलाब, मर्ज़, मरीज़ इत्यादि

शिक्षा—किताब, कलम, कागज़, इम्तिहान इत्यादि

प्रस्तुत शब्द परिचय में लगभग 1000 अरबी शब्द आये हैं।

**3.1.3. तुर्की**

श्री तिवारी के अनुसार ही हिन्दी में प्रयुक्त तुर्की के शब्द 125 से कम नहीं हैं। प्रस्तुत अध्ययन में ऐसे तुर्की शब्दों को लिया गया है जो हिन्दी के सामान्य व्यवहार में देखे जा सकते हैं। जैसे—

उर्दू, बहादुर, चाकू, कैंची, बेगम, तोप, दरोगा, लाश, बारूद, कुर्त्ता, ठाकुर, चोगा, मुगल, आदि। कुल संकलित तुर्की शब्दों में अधिकतर शब्द संज्ञा हैं और सेना से संबद्ध हैं।

प्रस्तुत शब्द संकलन में लगभग 35 तुर्की शब्द हैं।

**3.1.4. स्रोतीय उभय शब्द**

1—भारत और ईरान की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक घनिष्ठता तथा संस्कृत एवं फ़ारसी दोनों के आर्य भाषा-परिवार के सदस्य होने के कारण इनमें बहुत से ऐसे शब्द किंचित् रूप परिवर्तन के साथ मिलते हैं, जो हिन्दी में आकार स्रोत का भ्रम पैदा करते हैं। ये शब्द उर्दू कोशों में फ़ारसी स्रोतीय बताये जाते हैं और हिन्दी कोशों में संस्कृत स्रोतीय बताये जाते हैं। जो हो, ऐसे उभय स्रोतीय शब्दों के कुछ उदाहरण ये हैं—

गीद (गृद्ध), गो (गौ), नाम (नाम), बारी (पारी), मूशक (मूषक), अंकुस (अंकुश), सान (षाण), साया (छाया), हफ्ता (सप्ताह), माह (मास), पंज (पंच), अब्र (अभ्र), आफ़त (आपत्ति) बाद (वात), नर्म (नम्र) इत्यादि। ऐसे शब्दों में गीद, मूशक, अंकुस, पंज आदि शब्द प्रस्तुत अध्ययन में नहीं लिये गये हैं जिनके बारे में हिन्दी कोश केवल संस्कृत स्रोतीय मानते हैं। सान, साया, हफ्ता, माह आदि ऐसे शब्दों को इस अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिनको कतिपय उर्दू और हिन्दी-कोश फ़ारसी या अरबी और संस्कृत स्रोतीय मानते हैं। शब्दों के स्रोत के संबंध में कोशों का एक मत न होना इस अध्ययन की विश्वसनीयता की सीमा मानी जानी चाहिए।

2—अरबी शब्दों में फ़ारसी प्रत्यय या उपसर्ग जुड़कर, या इसके विपरीत होकर भी अनेक उभय स्रोतीय शब्द बन गये हैं। जैसे—अक़्लमंद (अ़० + फ़ा०), ईदगाह (अ़० + फ़ा०) ओहदेदार (अ़० + फ़ा०) तालुक़दार (अ़० + फ़ा०) बेमानी (फ़ा० + अ़०) ताकतवर (अ़० + फ़ा०) खुदग़र्ज (फ़ा० + अ़०) इत्यादि। इस अध्ययन में ऐसे शब्द लगभग 205 हैं।

3. उर्दू भाषा में पुर्तगाली शब्दों का भी प्रयोग होता है। प्रस्तुत अध्ययन में 'आया' और 'मस्तूल' जैसे एक-दो शब्द ही आये हैं।

**3.2. वर्गीकरण**

**3.2.1. संज्ञा**

प्रस्तुत अध्ययन में अधिकांश संज्ञा शब्द ही हैं। 1—इनमें महमूद, मुंशी, अहमद, याक़ूब, मौलाना आदि व्यक्ति वाचक संज्ञाओं की गणना नहीं की गई है।

2—जाति वाचक संज्ञाओं में—इरादा, कफ़न, कबूतर, चाकर, कौम, पाव, बरबाद, बरामद, दुकान इत्यादि सैकड़ों शब्द इस परिचय में सम्मिलित हैं।

3—भाववाचक संज्ञाओं में—आमदनी, आशिकी, इन्सानियत, बरबादी, नादानी, रहनुमाई जैसे असंख्य शब्द इस शब्द-सूची में मिलेंगे।

**3.2.2. विशेषण**—इस अध्ययन में प्रस्तुत असंख्य विश्लेषण शब्द फ़ारसी के हैं। कुछ विशेषण द्रष्टव्य हैं—

ख़ुश, बदनाम, परेशान, वारीक, तेज़, बेहया, मंदा, बेकार, आलीशान, चाप्लूस, इन्साफ़पसंद, औसत, काफ़ी, कानूनदां, ताज़ा, नामी, बहादुर, जानदार, मुश्किल, आसान, बेईमान, ईमानदार, कम, ज़्यादा, सख्त, नरम, सादा, साफ़ इत्यादि शब्दों पर ध्यान दें तो ज्ञात होगा कि इनमें अधिसंख्यक विशेषण गुणवाचक हैं, दूसरे स्थान पर परिणाम वाचक विशेषण आये हैं।

3.2.3. **सर्वनाम**—ख़ुद, फ़लां, जैसे एक-दो सर्वनाम हिन्दी में व्यवहृत होते हैं।

3.2.4. **क्रिया**—फ़ारसी के कुछ क्रिया-पद हिन्दी के व्यवहार में देखे जाते हैं जैसे—ख़रीद > ख़रीदना, ख़र्च > ख़र्चना, गुज़र > गुज़रना, गुम > गुमना, तराश > तराशना, वसूल > वसूलना, शर्म > शर्माना, फ़रमान > फ़रमाना। इनमें काल, वचन, लिंग आदि का व्याकरण हिन्दी क्रियाओं के अनुरूप ही है।

3.2.5. **क्रिया विशेषण**—यकीनन, शरारतन, हरचंद, कतई, अंदाजन, फौरन, अक्सर, आखिर, जरूर, शायद, बिल्कुल, हमेशा, बेशक, हर्गिज, जल्द इत्यादि उर्दू के क्रिया विशेषण हिन्दी में सहज रूप से व्यवहृत होते हैं।

3.2.6. **समुच्चय बोधक**—अगर, अगरचे, मगर, व, कि हालांकि, वरना, लेकिन, चुनांचे, बल्कि, इत्यादि शब्द हिन्दी व्याकरण के संयुक्त वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं।

3.2.7. **विस्मयादि बोधक** वाह !, वाह-वाह !, उफ़ !, आह !, आहा !, हाए-तोबा !, हा !, शाबाश !, ए !, ओ !, काश ! इत्यादि फ़ारसी के विस्मयादि बोधक शब्द हिन्दी व्यवहार में मुक्त रूप से व्यवहृत होते हैं। ज्ञातव्य है कि इनमें से कई शब्दों को हिन्दी कोशकारों ने संस्कृत स्रोतीय माना है।

3.3. **उपसर्ग**—हिन्दी में अनेक उर्दू के उपसर्ग प्रयोग किये जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन के शब्दों में कुछ विशेष उपसर्गों का ही बाहुल्य है। इनका सोदाहरण विवरण इस प्रकार है—

ब—बख़ूबी, बअदब, बख़ुशी।

बा—बाकायदा, बाअदब, बाकमाल।

बे—बेचैन, बेअदब, बेइज्ज़त, बेईमान।

ला—लाइलाज, लापरवाह, लापता, लाजवाब।

हम—हमउम्र, हमदम, हमराज़, हमसफ़र

ग़ैर—ग़ैरहाज़िर, ग़ैरकानूनी, ग़ैरजिम्मेदारी

ना—नाख़ुश, नाकाम, नाचीज़

फ़िल—फ़िलहाल, फ़िलवक्त

फ़ी—फ़ीसदी, फ़ी आदमी

बद—बदकिस्मत, बदनाम, बदनसीब

सर—सरेआम, सरेबाजार

हर—हरदम, हरसाल, हरवक़्त

3.4. **प्रत्यय**

3.4.1. **कृदन्त प्रत्यय**—हिन्दी में उर्दू के कृदन्त प्रत्ययों का बहुत कम प्रयोग होता है। जिन थोड़े शब्दों का प्रयोग हमारे व्यवहार में होता है, उनमें भी प्रकृति, प्रत्यय का बोध हो नहीं पाता। जैसे—मालूम, जरूर, जल्लाद आदि अरबी कृदन्त विशेषणों में तथा तहसील, मुकाबिला, इन्कार, बग़ावत, किताब, सवाल, एतराज आदि कृदंत संज्ञाओं में मूल धातु और प्रत्यय का कोई अनुमान नहीं लगने पाता।

फ़ारसी कृदन्त पदों के प्रयोग की स्थिति भी इसी प्रकार की है। इन पदों की प्रकृति-प्रत्यय की प्रतीति अपेक्षाकृत सरल है जैसे --परवरिश, कोशिश, आमदनी, आज़माइश, फ़रमाइश, मालिश रिहा, ज़िंदा आदि। इन फ़ारसी कृदन्तों में इ श, ई, आ, इंदा आदि प्रत्ययों का प्रयोग हो रहा है। इन्हीं प्रत्ययों का प्रयोग हम अपने व्यावहारिक उर्दू शब्दों में अधिकांश रूप से करते हैं।

3.4.2. **तद्धित प्रत्यय**—व्यावहारिक उर्दू शब्दों में अरबी तद्धित प्रत्ययों का प्रयोग बहुत कम होता है। फ़ारसी तद्धित प्रत्ययों की सूची पर्याप्त लम्बी है। प्रस्तुत अध्ययन में कुछ विशेष प्रत्ययों का ही प्रयोग हुआ है। उनका विवरण इस प्रकार है --

**(क) संज्ञा**

ई—कारीगरी, इंकलाबी, खुशी, दोस्ती

दान—कलमदान, पानदान, पीकदान, फूलदान

गर—जादूगर, बाजीगर, कारीगर, सौदागर

बीन—तमाशबीन, खुर्दबीन, दूरबीन

ख़ाना—दवाख़ाना, जेलख़ाना, कारख़ाना

कार—पेशकार, काश्तकार, सलाहकार, दस्तकार

गार—मददगार, रोज़गार, यादगार, खिदमतगार

गाह—ईदगाह, सैरगाह, बंदरगाह

गी—संजीदगी, सादगी, बंदगी, गंदगी

बाज़—हवाबाज़, नशेबाज़, चालबाज़, गप्पबाज़

आबाद—इलाहाबाद, हैदराबाद, अहमदाबाद।

**(ख) विशेषण**

ई—दिली, जासूसी, शादी, अंगूरी, ईरानी

मंद—अक्लमंद, जरूरतमंद, दौलतमंद

वार—उम्मीदवार, सिलसिलेवार, माहवार

नाक—खतरनाक, दर्दनाक, खौफ़नाक

आना—मर्दाना, जनाना, मस्ताना, रोजाना, सालाना

ईन—शौकीन, नमकीन, संगीन, रंगीन

ख़ोर—हरामख़ोर, गोताख़ोर, रिश्वतख़ोर

दार—दुकानदार, जमानतदार, मजेदार, दिलदार, कर्ज़दार

साज़—घड़ीसाज़, जालसाज़, दवासाज़।

**(ग) बहुवचन प्रत्यय**

आन—साहबान, मालिकान

आत—काग़ज़ात, ज़ेवरात, मकानात, बेगमात

**अन्य**— ख़बर—अख़बार

हाकिम—हुक्काम

वक्त—औकात

अजीब—अजायब

जौहर—जवाहर

नतीजा—नतायज

(घ) **तुलनार्थी प्रत्यय—**

तर (तर)—बदतर, बेहतर, कमतर

तरीन (तम)—बदतरीन, बेहतरीन, कमतरीन।

(ङ) प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोग की दृष्टि से कुछ पद ऐसे हैं जिनके मूल रूपों की अपेक्षा व्युत्पन्न या संयुक्त रूपों का प्रयोग अधिक होता है। या मूल रूपों का प्रयोग होता ही नहीं; जैसे—

1. खुराफ़ात की अपेक्षा खुराफ़त का प्रयोग अधिक है।

नाख़ुशी " " नाख़ुश " " "

नामंज़ूरी " " नामंज़ूर " " "

नाराज़गी " " नाराज़ " " "

नामज़दगी की अपेक्षा नामज़द का प्रयोग अधिक है।

हराम ,, ,, नमकहराम " " "

2. तौर का प्रयोग नहीं होता, तौरतरीका का प्रयोग होता है।

गंद " " " गंदगी, गंदा " " "

गिर्द " " " इर्दगिर्द " " "

नीम " " " नीमहकीम " " "

मै " " " मैख़ाना " " "

सद " " " सदी " " "

संग " " " संग-दिल " " "

मरमर " " " संगमरमर " " "

### 4.0. अर्थ-व्यवस्था

प्रस्तुत अध्ययन का तीसरा प्रमुख लक्ष्य संकलित शब्दों के अर्थपक्ष की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालना है। यह कार्य पर्यायों के सहयोग से सम्पन्न किया गया है। पर्याय देने के उद्देश्य ये हैं—

1—संकलित हज़ारों उर्दू शब्दों के अर्थ समझाना हमारा लक्ष्य नहीं है, क्योंकि इस संकलन के पीछे यह धारणा रही है कि उनका व्यवहार हिन्दी में एक परिचित अर्थ में होता है।

2—एक भाव, विचार या प्रत्यय अथवा वस्तु के बोध के लिए शब्दों के एकाधिक स्थानापन्न अन्य शब्द हो सकते हैं। इन पर्यायों द्वारा यह ज्ञात करना है कि व्यावहारिक हिन्दी में प्रचलित उर्दू शब्दों के स्थान पर हिन्दी के अपने कितने शब्द प्रयोग किये जाते हैं या किये जा सकते हैं। इस अध्ययन में उर्दू शब्दों के तीन वर्ग प्रमुख रूप से मिलते हैं—

1—पूर्ण पर्याय, 2—अर्धपर्याय—अर्थात् ऐसे शब्द जिनके हिन्दी पर्याय आंशिक रूप में ही मिलते हैं। 3—अपर्याय—अर्थात् ऐसे शब्द जिनके हिन्दी पर्याय बिलकुल नहीं हैं। निश्चय ही ऐसे अध्ययन से किसी भाषा की शब्द-शक्ति या शब्द-भंडार का बोध होता है। आगे के विवरण से व्यावहारिक हिन्दी की अपनी शब्द-सम्पत्ति की एक बानगी मिल सकती है।

4.1. **पूर्ण पर्याय**—प्रस्तुत शब्द-परिचय में लगभग 1600 उर्दू शब्दों के पूर्ण पर्याय दिये गये हैं। इन पर्यायों की जानकारी का यह लाभ होगा कि हमारी शब्द समृद्धि बढ़ेगी। सुविधानुसार और प्रसंगानुकूल शब्दों का चयन किया जा सकेगा। इनके चयन में एक और सांस्कृतिक मूल्य छिपा है। सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ-साथ भाषा में शुद्धता आने लगती है अर्थात् विदेशी शब्दों के स्थान पर

अपने निजी या देशी शब्दों का व्यवहार अधिक होने लगता है। आजकल भारत में सांस्कृतिक जागरण के कारण हिन्दी में विशुद्धता की प्रवृत्ति दिनों-दिन बढ़ रही है। परिणामतः उर्दू शब्दों के स्थान पर संस्कृत स्रोतों के शब्दों का प्रयोग अधिकाधिक होने लगा है। जैसे कुछ बहुत ही सरल शब्दों को लीजिए—मुश्किल, आसान, मकान, शहर, औरत, दरवाजा आदि के स्थान पर कठिन, सरल,घर, नगर स्त्री, द्वार का प्रयोग अधिक हीन लगा है। कुछ और शब्द लीजिए—हज़ार, ख़ूबसूरत, फौज, तीर, कमान, अगर, अन्दर, उम्दः, काफ़ी, ख़ुश आदि के लिए सहस्र, सुन्दर, सेना, बाण, धनुष, यदि, भीतर, बढ़िया, पर्याप्त, प्रसन्नता का प्रयोग करना लोग शिष्टता के गुण मानने लगे हैं। कुछ कठिनतर शब्दों को लें—अदालत,अख़बार, अन्दाज़, पुराना ज़माना, नुमाइश, ख़ातिर, तकल्लुफ़, बेगाना, तहज़ीब, तीमारदारी, तालुक़ आदि शब्दों के स्थान पर न्यायालय,समाचारपत्र, अनुमान, प्राचीनकाल, प्रदर्शनी, सत्कार, संकोच, पराया, सभ्यता, सेवा और संबंध शब्दों का प्रयोग करना लोगों का शिक्षित होने के लक्षण लग रहे हैं।

4.2. **अर्धपर्याय**—प्रस्तुत अध्ययन में लगभग 250 उर्दू शब्दों के हिन्दी के अर्ध पर्याय दिये गये हैं। सूची में ऐसे पर्यायों को तारांकित* किया गया है। इन अर्धपर्यायों के भी दो वर्ग हैं। प्रथम वर्ग वह है जिसमें आंशिक रूप से अर्थ देने वाले पर्याय हैं। ये पर्याय अर्थ की छायामात्र वहन करते हैं। कुछ उदाहरण—'अदा' का अर्थ 'हावभाव' कहना कहाँ तक उचित माना जायेगा। इसीप्रकार 'अफ़वाह' का अर्थ 'जन-श्रुति' या 'किंवदंति', 'अमल' का अर्थ 'कार्य' कहना, 'कंदील' को 'दीपक' कहना, 'चर्खा' को 'चक्र' कहना या 'तलब' को 'चाह' कहना केवल शब्द की अर्थ-छाया की ओर संकेत करना है।

दूसरे वर्ग में जो पर्याय हैं, वे अधिक तत्सम हैं, अतः कठिन हैं। इनका प्रयोग विशेष संदर्भों में ही संभव हो सकता है। या अति शुद्धतावादी ही इनका व्यवहार करता है। जैसे 'अनार' के लिए 'दाड़िम', 'अंगूर' के लिए 'द्राक्षा' का प्रयोग सहज व्यवहार में नहीं होता। इसी प्रकार इनके बारे में भी कहा जा सकता है—पियाज (महाकंद), पियाला (चषक), बंदूक (शतघ्नी), मस्तूल (मरूत्पट), सफ़ा (पित्त), स्याही (मसि), सिफारिश (अनुशंसा), सुर्मा (सांजन) इत्यादि। इनके प्रयोग की विरलता के कारण ही इनको अर्ध पर्याय में रखा गया है। हिन्दी में बढ़ती हुई तत्समवादी प्रवृत्ति के कारण संभव है कि भविष्य में इनका प्रयोग खूब चल पड़े।

4.3. **अपर्याय**—प्रस्तुत शब्द संकलन में लगभग 450 ऐसे उर्दू के शब्द हैं, जिनके हिन्दी के पर्याय लगभग नहीं हैं। इनमें बहुत से सामान्य जीवन के उपयोग से सम्बन्धित हैं जैसे—चपरासी, साबुन, बेरोज़गारी, तम्बाकू, लिफ़ाफ़ा, पेचिश, सुराही, मुफ़्त, सौदा इत्यादि। कुछ और कठिनतर शब्द लें—सर्राफ़, सलामी, वकालत, शरारतन, शर्त, शीरा, शुतुरमुर्ग, सिफ़ारिश, हर्जाना, हवालात इत्यादि। इनके लिए हिन्दी में कोई पर्याय नहीं है। कुछ फलों के नाम हिन्दी में नहीं मिलते, जैसे—अंजीर, सेब, ख़ूबानी, नाशपाती, शरीफ़ा, तरबूज इत्यादि।

कुछ मिठाइयों के लिए भी हिन्दी में नाम नहीं हैं। जैसे—गुलकंद, बर्फ़ी, हलवा, हरीरा, जलेबी, कुलफ़ी, कलाकंद इत्यादि। बहुत से मेवों के नाम भी हिन्दी में नहीं है—जैसे खूबानी, बादाम, मुनक्का, किशमिश, पिस्ता, नाशपाती इत्यादि।

पोशाक संबंधी—पाजामा, कमीज़, मोजा, दस्ताना, साफ़ा, शलवार आदि के लिए भी हिन्दी में अन्य शब्द नहीं हैं। उपर्युक्त विवरण आश्चर्य में डालने वाला है। प्रश्न उठता है कि क्या ये फल, मेवे और मिठाइयाँ हमारे देश में प्राचीन काल में नहीं थीं? यदि थीं तो इनके नाम क्या थे? यदि नहीं थे तो क्या यह माना जाये यह सारी उपयोगी वस्तुएँ विदेशों से आयी हुई हैं। जो हो, इस प्रकार का

और गहन अध्ययन बड़ा रोचक बन सकता है। इसमें हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की परतें टूटेंगी और वास्तविक जीवन का बोध हो सकता है। सूची में अपर्याय वाले स्थलों में ( × ) का चिह्न रखा गया है।

4.4. **एक पक्षीय पर्याय**—हिन्दी पर्यायों में कुछ ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं, जो उर्दू के मूल रूप के लिए तो हैं, किन्तु उनसे व्युत्पन्न शब्दों के लिए नहीं हैं जैसे—

गिरफ़्तार के लिए बंदी है, गिरफ़्तारी के लिए नहीं,
पाबंदी ,, रोक ,, पाबंद ,, ,,
पहलवान ,, मल्ल ,, पहलवानी ,, ,,
सूद ,, ब्याज ,, सूदखोर ,, ,, इत्यादि।

4.5. **अनेक के लिए एक पर्याय :** उर्दू के दो-दो या अनक शब्दों के लिए हिन्दी में प्रायः लोकप्रिय एक-एक पर्याय ही प्रचलित है, जैसे—

दोस्ती और दोस्ताना के लिए केवल मित्रता का प्रयोग
किस्मत या नसीब ,, ,, भाग्य ,,
सूरत या शक्ल ,, ,, रूप ,,
कसूर या गुनाह ,, ,, अपराध ,,
सवाल या सवालात ,, ,, प्रश्न ,, इत्यादि

4.6. **एक के लिए अनेक पर्याय :**

(क) संकलन में आये हुए अनेक उर्दू शब्दों में एक-एक के अनेक उर्दू पर्याय हैं, जैसे—सलीक़ः के लिए तमीज़, शुरूर, तर्तीब, तहज़ीब और नूर या चमक भी प्रचलित हैं—

(ख) संकलन के उर्दू शब्दों के लिए कहीं-कहीं अनेक हिन्दी पर्याय भी मिलते हैं। जैसे 'सलामत' के लिए सुरक्षित, जीवित या स्वस्थ। 'हमला' के लिए—आघात, वार, आक्रमण, चोट, युद्ध-यात्रा। प्रसंगानुकूल इनका चयन हो सकता है। प्रस्तुत संकलन में अनेक स्थल इसी प्रकार के हैं। इनमें निकटतम अर्थ के आधार पर ही पर्याय दिए गए हैं।

5.0. **शैक्षिक मूल्य**—प्रस्तुत संकलन के हज़ारों उर्दू शब्दों के परिचय का अपना शैक्षिक मूल्य है। जैसा कि प्रथम अध्याय में इस कार्य की सीमा और लक्ष्यों के संदर्भों में कहा गया है कि शिक्षित हिन्दी भाषियों की व्यावहारिक हिन्दी में आये हुए उर्दू शब्दों का परिचय देना है। अतः उस शिक्षित व्यक्ति के विचार, चिंतन, कला-बोध तथा सौंदर्य बोध को भी निश्चय ही ये उर्दू शब्द प्रभावित करते हैं। इस प्रभाव को हम मुख्यतः उसके दैनंदिन व्यवहार, भाषा तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण में देख सकते हैं।

5.1. **व्यवहार :** विशेषकर हिन्दी समाज मुस्लिम संस्कृति एवं सभ्यता के अतिनिकट है। दैनिक व्यवहार में हिन्दी और उर्दू भाषी प्रायः आदान-प्रदान करते हुए पाये जाते हैं। इस संपर्क को अधिक से अधिक सफल बनाने के लिए भाषा एक प्रमुख साधन है। यह भाषा ऐसी हो जो दोनों पक्षों के लिए सुगम लगे। व्यवहार को अधिकाधिक स्पष्ट, असंदिग्ध तथा प्रिय बनायें। इसके लिए यह स्वयं सिद्ध तथा अनिवार्य तथ्य लगता है कि हिन्दी में प्रचलित उर्दू शब्दों का बहिष्कार न किया जाये, वरन् उसके सार्थक तथा समर्थ प्रयोग के लिए यत्न किये जायें। संकलन में दिए गए लगभग सभी शब्द इस ध्येय को पूर्ण करने के लिए सक्षम हैं।

5.2. **भाषा :** प्रत्येक भाषा की अपनी मूल प्रवृत्ति होती है। अनेक अन्य भाषाओं से प्रभावित होकर या उधार लेकर भी उस प्रकृति को नहीं छोड़ा जाता। हिन्दी की अपनी प्रकृति है। इस प्रकृति

को कुछ लोग संस्कृत के निकट मानकर उसमें अधिकाधिक संस्कृत शब्दों का प्रयोग करते हैं; और कुछ लोग उर्दू के निकट मानकर उसमें ज़्यादा से ज़्यादा उर्दू शब्दों का समावेश करते हैं। इनको अतिवादी कहा जा सकता है। एक मध्यमार्गी वर्ग भी है, जो संस्कृत और उर्दू शब्दों को यथास्थान समुचित उपयोग का पक्ष लेता है। मध्यमार्गी दृष्टिकोण हिन्दी की प्रकृति के निकट है। प्रस्तुत अध्ययन के उर्दू शब्दों का प्रयोग हिन्दी की इस मूल प्रकृति को बनाए रखने में सहयोग दे सकता है। इनके प्रयोग से हिन्दी का व्यावहारिक रूप अधिक प्रवाहमयी, स्वाभाविक एवं सरल बनता है।

5.3. **संस्कृति** —सांस्कृतिक तत्वों की अभिव्यक्ति प्रमुख रूप से भाषा के माध्यम से होती है। भाषा के घटक-रूप शब्द इन तत्वों के प्रतीक का कार्य करते हैं। अतः भाषा के माध्यम से हमारे रीति-रिवाज, खान-पान, पूजा, पाठ, संस्कार, त्यौहार आदि का प्रकाशन होता है। उर्दू भाषा प्रमुख रूप से अरबी, फ़ारसी और तुर्की संस्कृति से प्रभावित है। अतः हिन्दी में प्रचलित उर्दू शब्दों के प्रयोग से हम यह जान सकने में समर्थ हो सकते हैं कि हम मुस्लिम संस्कृति के कितने निकट हैं। उस संस्कृति का हमारे व्यवहार और जीवन दर्शन पर क्या प्रभाव है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि हम मुस्लिम संस्कृति का कितना उपभोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए कुछ खाद्य पदार्थ लीजिए—

पुलाव, कबाब, कीमा, बिर्यानी आदि पदार्थ भारतीय संस्कृति में नहीं आते। किंतु आज हम उर्दू के माध्यम से परिचित हो गये हैं। पाजामा, कमीज, शलवार, दस्ताना आदि पोशाक हमारे लिए विदेशी सभ्यता है। साक़ी, जाम, पैमानः, आशिक़, दाग़ेजिगर, दाग़ेदिल आदि शब्द उर्दू संस्कृति के व्याख्याता हैं। पान, पानदानी, पीकदान आदि उर्दू सभ्यता के अंग हैं। शहनाई, ताजिया कब्रिस्तान, शतरंज, राह, मस्नद, आशियाना आदि शब्द मुस्लिम सभ्यता और संस्कृति का परिचय देते हैं। यद्यपि हम इस संस्कृति से कोसों दूर हैं तथापि इन शब्दों के प्रयोग ने हमें उस संस्कृति के निकट लाकर खड़ा किया है। परिणाम स्वरूप, दो संस्कृतियों में आदान-प्रदान की प्रक्रिया अधिक गतिशील हुई है। भावात्मक एकता में यह कम महत्व की बात नहीं है।

सांस्कृतिक मूल्य का एक पक्ष और है। देश में सांस्कृतिक जागरण के कारण हम अपनी प्राचीन संस्कृति के तत्वों को पुनः स्वीकार करने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इसी के लिए हिन्दी भाषा में भी बहुत-कुछ परिवर्तन हो रहा है। प्राचीन रीति-रिवाज, ज्ञान-विज्ञान, दार्शनिक चिंतन धारा तथा धार्मिक विचारधारा को प्रकट करने के लिए अधिक से अधिक संस्कृत के शब्दों को स्वीकार कर रहे हैं। इसे स्वीकारने में यह संभव है कि व्यावहारिक हिन्दी में प्रचलित उर्दू शब्दों को या तो हम छोड़ ही दें या उनको स्थानापन्न करें।

5.4. **शब्द परिचय की प्रविष्टियों के संबंध में**

(क) प्रत्येक प्रविष्ट के आगे चार स्तंभ दिये गए है। उनका परिचय इस प्रकार है :

प्रविष्टि : **हिन्दी में व्यवहृत उर्दू शब्द**। इसमें दिये गए शब्दों के उच्चारण या वर्तनी के संबंध में मतभेद की गुंजाइश है। /क़/, /ख़/, /ग़/, /ज़/, /फ़/ आदि ध्वनियों के प्रयोग के निश्चित नियम न होने से लेखन और व्यवहार में इसके प्रयोग में एकरूपता नहीं है। अतः इनकी वर्तनी को मानक न माना जाए।

स्तंभ 1. **स्रोत**। आगे उल्लिखित कोशों के, विशेषकर पहले कोश के आधार पर प्रविष्टियों के अरबी, फ़ारसी आदि स्रोत दिये गए हैं।

**संकेत—फ़ारसी के लिए फ़ा०; अरबी के लिए अ; फ़ारसी और अरबी के लिए—फ़ा० अ०; तुर्की के लिए तु०।**

स्तंभ 2. **संकलित शब्दों का मूल उच्चारण (वर्तनी) नागरी लिपि में।** मानक उच्चारण (वर्तनी) के लिए पहले कोश को ही आधार बनाया गया है। कई उर्दू शब्दों के मूल उच्चारण के संबंध में कोशों में परस्पर मतभेद है।

संकेत 1. शब्द के मध्य ऐन ( ع ) ध्वनि के लिए ( ॒ ) चिह्न का प्रयोग किया गया है जैसे ए'तिराज ( اعتراض ), एलान ( اعلان ) आदि। शब्द के आदि और अन्त में ऐन (ع) के लिए अ़ (आ़, इ़, ई़, उ़, ऊ़, ए़, ओ़) का प्रयोग किया गया है। जैसे आ़म ( عام ), जमअ़ ( جمع )।

2. शब्दांत में आनेवाली उर्दू की 'हे' ( ہ ) ध्वनि के लिए विसर्ग का (:) प्रयोग किया गया है। जैसे अन्दाज: ( اندازہ ), इशार:बाज़ी (اشارہ بازی ), ज़मान: ( زمانہ ), बच्च: ( بچہ ) आदि।

स्तंभ 3. **फ़ारसी लिपि में मूल उच्चारण।** इसकी विश्वसनीय वर्तनी के लिए पहले और दूसरे कोश को आधार बनाया गया है।

स्तंभ 4. **हिन्दी के पर्याय।** इसके निर्धारण के लिए अनेक कोशों का सहारा लिया गया है। पर्यायवाची शब्दों को निश्चित करने में मतभेद संभव है। भूलचूक भी संभव है।

संकेत 1. ( × ) चिह्न हिन्दी पर्याय का अभाव सूचित करता है।

2. (*) चिह्न अप्रचलित और कठिन पर्याय का बोधक है, जिसे भूमिका में अर्धपर्याय कहा गया है।

(ख) प्रविष्टियों की अनिर्दिष्टित बातें

1. व्युत्पत्ति—प्रस्तुत अध्ययन की प्रविष्टियाँ व्यवहार को ध्यान में रखकर चुनी गई हैं, अतः इनमें व्युत्पत्ति संबंधी प्रक्रिया नहीं दी गई है। हिन्दी में उर्दू शब्दों के व्यवहार में देखा गया है कि वे प्रायः रूढ़ शब्दों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। व्युत्पत्ति ज्ञान का अभाव उनके प्रयोग और अर्थ संप्रेषण में किसी प्रकार का बाधक नहीं बनता। जैसे, अख़बार, औक़ात, जवाहर, बेहतरीन आदि शब्दों के अर्थ जानने के लिए यह आवश्यक नहीं कि उनके मूल ख़बर, वक़्त, जौहर, बेहतर शब्दों को जाना जाए।

2. शब्द निर्माण—प्रस्तुत अध्ययन की प्रविष्टियों की निर्माण प्रक्रिया उर्दू में पर्याप्त विस्तृत है। जैसे 'बे' उपसर्ग से लगभग चार सौ शब्द बनते हैं। इसी प्रकार 'ना' 'बद' आदि उपसर्गों से क्रमशः लगभग 250,200 शब्द बनते हैं। किसी प्रकार के शब्द संकलन में इस निर्माण-प्रक्रिया का समावेश अपेक्षित होता है। प्रस्तुत अध्ययन में इसका अभाव है। व्यवहार सापेक्षिक होने के कारण इन प्रविष्टियों में निर्माण-प्रक्रिया आंशिक रूप से अपनाई गई है। जैसे 'बे' उपसर्ग से बेअदब, बेईमान, बेकार, बेगार, बेगारी, बेगुनाह; 'बद' से बदतमीज़, बदनाम, बदनसीब, बदनीयत और 'ना' से नामंज़ूर, नामर्द, नामाकूल जैसे प्रचलित शब्दों को ही स्थान दिया गया है।

3. संयुक्त शब्द—प्रविष्टियों में दरियादिल, काबिलेतारीफ़, नाज़ुकमिज़ाज; दिलो-दिमाग़ इत्यादि उर्दू के संयुक्त शब्द हिन्दी में रूढ़ एकल शब्दों के रूप में प्रयुक्त होते हैं, अतः इनका चुनाव किया गया है। अन्यथा संयुक्त शब्द प्रस्तुत अध्ययन की सीमा में नहीं आते।

4. व्याकरण—1. लिंग—प्रविष्टियों की लिंग संबंधी जानकारी नहीं दी गई है। इसके कारण हैं—

(अ) प्रस्तुत अध्ययन परम्परागत कोश कार्य नहीं है।

(ब) इन शब्दों के हिन्दी और उर्दू प्रयोगों में लिंग संबंधी कोई विशेष अन्तर नहीं हैं। हाँ, कुछेक शब्दों के लिंग के बारे में कोशों में ही मतभेद पाया गया।

2. वचन—इन प्रविष्टियों की वचन संबंधी प्रक्रिया हिन्दी व्याकरण के अनुकूल ही है। जैसे उर्दू के कागज़ात, नतायज, मकानात, बेगमात आदि बहुवचन शब्द हिन्दी में कागज़, नतीजे, मकान, बेगमें आदि रूपों का प्रयोग होता है, अतः इन प्रविष्टियों का वचन निर्देश भी नहीं किया गया है।

व्याकरण संबंधी विस्तृत विवरण के लिए आगे का 'प्रत्यय' प्रसंग द्रष्टव्य है।

3. शब्द भेद —इन प्रविष्टियों के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषणादि नहीं दिए गए हैं। हिन्दी में उर्दू शब्द प्रायः संज्ञा या विशेषण ही हैं और अपने मूल शब्द भेदों में ही प्रयुक्त होते हैं। उनका रूपांतर हिन्दी प्रत्यय जोड़कर भी किया जाता है।

### 5.5. संदर्भ कोश

1. उर्दू हिन्दी शब्द कोश। सं० मुहम्मद मुस्तफा खां 'मद्दाह';
प्रकाशक—हिन्दी समिति, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग उ० प्र० सन् 1959
2. प्रैक्टिकल उर्दू-इंग्लिश डिक्शनरी। सं० अज्ञात; प्रकाशक रामनारायण लाल, इलाहाबाद
3. उर्दू हिन्दी कोश। सं० रामचन्द्र वर्मा; प्रकाशक हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई, सन् 1953
4. संक्षिप्त शब्द सागर। सं० रामचन्द्र वर्मा, प्रकाशक काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी; संवत् 2008
5. मानक हिन्दी कोश। सं० रामचन्द्र वर्मा; प्रकाशक साहित्य सम्मेलन, प्रयाग; संवत् वि० 2019
6. हिन्दी शब्द सागर। सं० श्यामसुन्दर दास; प्रकाशक काशी नागरी प्रचारिणी सभा
7. बृहत् हिन्दी कोश। सं० कालिका प्रसाद: प्रकाशक ज्ञान मंडल लिमिटेड, बनारस।

### 5.6. कोश में प्रयुक्त संकेत—

| | |
|---|---|
| अ़रबी | अ़ |
| फ़ारसी | फ़ा० |
| तुर्की | तु० |
| अ़रबी-फ़ारसी | अ़० फ़ा० |
| अर्ध पर्याय | * |
| अपर्याय | × |

## शब्द-परिचय

### अ-अ़

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अंगूर | फा० | अंगूर | انگور | *द्राक्षा |
| अंगूरी | ,, | अंगूरी | انگوری | × |
| अंजाम | ,, | अंजाम | انجام | परिणाम, अंत |
| अंजीर | अ़० | अंजीर (इंजीर) | انجیر | × |
| अंदर | फ़ा० | अंदर | اندر | भीतर |
| अंदरूनी | ,, | अंदरूनी | اندرونی | भीतरी, आंतरिक |
| अंदाजा | ,, | अंदाज़ : | اندازه | अनुमान |
| अंदाज़न | ,, | अंदाज़न | اندازه | लगभग |
| अंदाज | ,, | अंदाज़ | انداز | शैली, हावभाव |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अंदेशा | ,, | | अंदेशः | اندیشہ | शंका |
| अंबार | अ़० | | अंबार | انبار | ढेर |
| अक्ल | ,, | | अक़्ल | عقل | बुद्धि |
| अक्लमंद | अ़० फ़ा० | | अक़्लमंद | عقلمند | बुद्धिमान |
| अक्सर | अ़० | | अक्सर | اکثر | प्रायः |
| अख़बार | ,, | | अख़्बार | اخبار | समाचार पत्र |
| अख़बारी | ,, | | अख़्बारी | اخباری | × |
| अगर | फ़ा० | | अगर | اگر | यदि |
| अगरचे | ,, | | अगरचे | اگرچہ | यद्यपि |
| अचार | फ़ा० | | अचार | اچار | × |
| अजब | अ़० | | अजब | عجب | अनोखा, विचित्र |
| अज़ीज़ | ,, | | अ़ज़ीज़ | عزیز | प्रिय, प्यारा |
| अजीब | ,, | | अ़जीब | عجیب | निराला |
| अजीबो गरीब | ,, | | अ़जीबोग़रीब | عجیب وغریب | विचित्र |
| अजनबी | ,, | | अ़जनबी | اجنبی | अपरिचित, अज्ञात |
| अतराफ | ,, | | अत्राफ़ | اطراف | चतुर्दिक |
| अदब | ,, | | अदब | ادب | शिष्टाचार, सभ्यता |
| अदा | फ़ा० | | अदा | ادا | *हावभाव |
| अदा | अ़० | | अदा | ادا | चुकाना |
| अदायगी | ,, | | अदाइगी | ادائگی | देय |
| अदाकार | फ़ा० | | अदाकार | اداکار | अभिनेता |
| अदालत | अ़० | | अ़दालत | عدالت | न्यायालय |
| अदावत | ,, | | अ़दावत | عداوت | शत्रुता, बैर |
| अदना | ,, | | अद्ना | ادنیٰ | तुच्छ |
| अनक़रीब | ,, | | अ़नक़रीब | عنقریب | सन्निकट |
| अनार | फ़ा० | | अनार | انار | *दाड़िम |
| अफ़वाह | अ़० | | अफ़्वाह | افواہ | जनश्रुति, किंवदंति |
| अफ़साना | फ़ा० | | अफ़्सानः | افسانہ | कहानी, व्यथा-कथा |
| अफ़सोस | ,, | | अफ़्सोस | افسوس | खेद, शोक |
| अबर | ,, | (सं०?) | अब्र | ابر | बादल, मेघ |
| अबीर | अ़० | | अ़बीर | عبیر | × |
| अमल | ,, | | अ़मल | عمل | कार्य, क्रियान्वयन, कृत्य |
| अमानत | ,, | | अमानत | امانت | थाती, धरोहर |
| अमीर | ,, | | अमीर | امیر | संपन्न, धनवान, धनी |
| अमीरी | ,, | | अमीरी | امیری | संपन्नता |
| अमन | ,, | | अम्न | امن | शांति |
| अमनपसंद | ,, | | अम्नपसंद | امن پسند | शांतिप्रिय |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अर्ज़ | " | अर्ज़ | عرض | प्रार्थना, निवेदन |
| अर्ज़ी | " | अर्ज़ी | عرضی | प्रार्थनापत्र, आवेदनपत्र |
| अरमान | तु० | अर्मान | ارمان | आकांक्षा, अभिलाषा |
| अलफ़ाज | अ० | अल्फ़ाज़ | الفاظ | शब्द |
| अलाहदा | " | अ़लाहद: | علیحدہ | अलग, पृथक |
| अलबत्ता | " | अल्बत्त: | البتہ | परंतु, किंतु |
| अव्वल | " | अव्वल | اول | प्रथम, पहला |
| अशरफी | फ़ा० | अश्रफ़ी | اشرفی | *स्वर्णमुद्रा |
| अश्क | " | अश्क | اشک | आँसू |
| असबाब | अ० | अस्बाब | اسباب | वस्तुएँ |
| असल | " | अस्ल | اصل | यथार्थ, वास्तविक |
| असलियत | " | अस्लियत | اصلیت | यथार्थता, वास्तविकता |
| असामी | " | असामी | اسامی | × |

## आ-आ़

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आइन्दा | फ़ा० | आइन्द: | آئندہ | आगे |
| आईना | " | आईन: | آئینہ | दर्पण |
| आख़िर | अ० | आख़िर | آخر | अंत |
| आख़िरी | अ० | आख़िरी | آخری | अंतिम |
| आगाह | फ़ा० | आगाह | آگاہ | सूचित, सचेत |
| आज़माइश | " | आज़माइश | آزمائش | परीक्षा, परख |
| आदत | अ० | आ़दत | عادت | प्रकृति, स्वभाव |
| आदम | " | आदम | آدم | मानव (मनु) |
| आदमी | " | आदमी | آدمی | मनुष्य, मानव |
| आदमक़द | " | आदमक़द | آدم قد | × |
| आदमख़ोर | अ० फ़ा० | आदमख़ोर | آدم خور | मनुष्य |
| आदमियत | " | आदमियत | آدمیت | मानवता, मनुष्यता |
| आदाब | " | आ:दाब | آداب | नमस्कार, प्रणाम |
| आदी | " | आ़दी | عادی | अभ्यस्त, व्यसनी |
| आन | फ़ा० | आन | آن | वात, टेक |
| आफ़त | " | आफ़त | آفت | संकट, विपत्ति कष्ट, दुःख |
| आब | " | आब | آب | पानी, जल |
| आबकारी | " | आबकारी | آب کاری | मद्य-विभाग |
| आबपाशी | " | आबपाशी | آبپاشی | सिंचाई |
| आबरू | " | आबरू | آبرو | इज्जत, प्रतिष्ठा |
| आबादी | " | आबादी | آبادی | जनसंख्या |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आम | अ॰ | आ़म | عام | सार्वजनिक, सर्व-साधारण |
| आमदनी | फ़ा॰ | आमदनी | آمدنی | आय |
| आया | पुर्त॰ | आया | آیا | धाई, दाई |
| आराम | फ़ा॰ | आराम | آرام | सुख, चैन |
| आरामकुर्सी | " | आरामकुर्सी | آرام کرسی | × |
| आरामगाह | " | आरामगाह | آرام گاہ | × |
| आरामतलब | " | आरामतलब | آرام طلب | × |
| आरामदेह | " | आरामदेह | آرام دہ | सुखप्रद, सुखद |
| आरामपसंद | " | आरामपसंद | آرام پسند | × |
| आरजू | " | आर्ज़ू | آرزو | इच्छा, मनोकामना |
| आला | " | आ'ला | اعلیٰ | उत्तम, श्रेष्ठ |
| आलीशान | " | आ़लीशान | عالیشان | महान, भव्य |
| आलुबुख़ारा | " | आलूबुख़ारा | آلو بخارا | × |
| आलू | फ़ा॰ | आलू | آلو | × |
| आवाज़ | " | आवाज़ | آواز | स्वर, ध्वनि |
| आवारा | " | आवारः | آوارہ | *दुश्चरित्र, निकम्मा |
| आशिक | अ॰ | आ़शिक़ | عاشق | प्रेमी, अनुरागी |
| आशिकी | " | आ़शिकी | عاشقی | प्रेम, अनुराग |
| आसान | फ़ा॰ | आसान | آسان | सरल |
| आसानी | " | आसानी | آسانی | सरलता |
| आसार | अ॰ | आसार | آثار | लक्षण, चिह्न |
| आसमान | फ़ा॰ | आस्माँ | آسماں | आकाश |
| आस्तीन | " | आस्तीन | آستین | × |
| आह ! | " | आह | آہ | हाय, उच्छवास |
| आहा ! | " | आहा | آہا | वाह-वाह |
| आहिस्ता | " | आहिस्तः | آہستہ | धीमा, धीरे |

## इ—इ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| इंतेकाल | अ॰ | इंतिक़ाल | انتقال | मृत्यु, मरण |
| इंतेज़ाम | " | इंतिज़ाम | انتظام | प्रबन्ध |
| इंतज़ार | " | इंतिज़ार | انتظار | प्रतीक्षा |
| इंतेहा | " | इंतिहा | انتہا | पराकाष्ठा, हद |
| इंसान | " | इंसान | انسان | मानव |
| इंसानियत | " | इंसानियत | انسانیت | मनुष्यता, मानवता |
| इंसाफ़ | " | इंसाफ़ | انصاف | न्याय |
| इंसाफ पसन्द | " | इंसाफ़ पसन्द | انصاف پسند | न्यायप्रिय |
| इकरार | " | इक़्रार | اقرار | स्वीकृति, वचन |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| इख्तियार | ” | ,इख़्तियार | اختیار | अधिकार |
| इजलास | ” | इज्लास | الزام | न्यायालय, सभा |
| इजाजत | ” | इजाज़त | اجازت | अनुमति |
| इज़ाफ़ा | ” | इज़ाफ़: | اضافہ | वृद्धि |
| इज्जत | ” | इज़्ज़त | عزت | सम्मान, प्रतिष्ठा |
| इज्जतदार | ” | इज़्ज़तदार | عزت دار | प्रतिष्ठावान |
| इज़हार | ” | इज़हार | اظہار | प्रकट |
| इतमीनान | ” | इत्मीनान | اطمینان | धीरज, विश्वास, धैर्य |
| इत्तेफाक | ” | इतिफ़ाक़ | اتفاق | संयोग, दैवयोग |
| इत्र | ” | इत्र | عطر | × |
| इत्रदान | अ० फा० | इत्रदान | عطردان | × |
| इनायत | अ० | इनायत | عنایت | कृपा, अनुकंपा |
| इन्कार | ” | इन्कार | انکار | अस्वीकार |
| इन्कलाब | ” | इन्क़िलाब | انقلاب | क्रांति |
| इन्कलाबी | ” | इन्क़िलाबी | انقلابی | क्रांतिकारी |
| इबादत | ” | इबादत | عبادت | पूजा, उपासना |
| इबतेदा | ” | इब्तिदा | ابتدا | आरंभ |
| इमारत | ” | इमारत | عمارت | भवन |
| इमदाद | ” | इम्दाद | امداد | सहायता |
| इमारती | ” | इमारती | عمارتی | × |
| इबतेदा | ” | इब्तिदा | ابتدا | आरंभ |
| इम्तेहान | अ० | इम्तिहान | امتحان | परीक्षा, जांच |
| इरादा | ” | इराद: | اراده | संकल्प, निश्चय |
| इर्दगिर्द | फ़० | इर्दगिर्द | اردگرد | आसपास |
| इलाज | अ० | इलाज | علاج | उपचार |
| अलावा | ” | इलाव: | علاوه | अतिरिक्त |
| इल्जाम | ” | इल्ज़ाम | الزام | दोष, अपराध |
| इल्म | ” | इल्म | علم | ज्ञान, विद्या |
| इशारा | ” | इशार: | اشاره | संकेत |
| इशारा-बाजी | ” | इशार: बाज़ी | اشاره بازی | × |
| इश्क | ” | इश्क़ | عشق | प्रेम, प्यार |
| इश्कबाजी | ” | इश्कबाज़ी | عشق بازی | × |
| इश्तेहार | ” | इश्तिहार | اشتہار | विज्ञापन |
| इस्तीफा | ” | इस्तिफ़ा | استعفا | त्यागपत्र |

**ई- ई**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ईजाद | अ० | ईजाद | ایجاد | आविष्कार |
| ईद | ” | ईद | عید | पर्व, त्योहार |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ईदगाह | अ़० फ़ा० | .ईदगाह | عیدگاہ | × |
| ईमान | अ़ | ईमान | ایمان | × |
| ईमानदार | " | ईमानदार | ایمان دار | × |
| ईसा | " | .ईसा | عیسیٰ | × |
| ईसाई | " | .ईसाई | عیسائی | × |
| ईसवी | " | .ईसवी | عیسوی | × |

### उ—उ़

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उज्र | अ़० | उ़ज्र | عذر | आपत्ति |
| उफ़ ! | " | उफ़ ! | اف | ओह ! |
| उमर | " | उ़म्र | عمر | वय, आयु, अवस्था |
| उम्मीद | फ़ा० | उमीद | امید | आशा |
| उम्मीदवार | " | उम्मीदवार | امیدوار | प्रत्याशी |
| उमदा | अ़० | उ़म्द: | عمدہ | उत्तम, बढ़िय |
| उर्दू | तु० | उर्दू | اردو | × |
| उर्फ़ | अ़० | उ़र्फ़ | عرف | उपनाम |
| उसूल | " | उसूल | اصول | सिद्धांत |
| उस्ताद | फ़ा० | उस्ताद | استاد | गुरु, शिक्षक, अध्यापक |
| उस्तरा | " | उस्तुर: | استرہ | × |

### ए—ए़

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ए ! | फा० | ए ! | اے | ऐ ! आदि |
| एतराज | अ़० | ए'तिराज़ | اعتراض | आपत्ति |
| एतबार | " | ए'तिबार | اعتبار | विश्वास |
| एलान | " | ए'लान | اعلان | घोषणा |
| एवज | " | ए'वज़ | عوض | प्रतिफल |
| एहतियात | " | एहतियात | احتیاط | सावधानी, चौकसी |
| एहसान | " | एहसान | احسان | उपकार, आभार |
| एहसानमंद | अ़० फ़ा० | एहसानमंद | احسان مند | कृतज्ञ |
| एहसास | अ़० | एहसास | احساس | अनुभूति |

### ए—ऐ़

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ऐन वक़्त | अ़० | .ऐन वक़्त | عین وقت | × |
| ऐनक | " | .ऐनक | عینک | × |
| ऐब | " | .ऐब | عیب | दोष, बुराई |
| ऐय्यार | " | .ऐयार | عیار | *वंचक, छली |
| ऐय्याश | " | .ऐयाश | عیاش | विलासी |
| ऐय्याशी | " | .ऐयाशी | عیاشی | विलासिता |
| ऐश | " | .ऐश | عیش | भोग-विलास |

## ओ—ओ़

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ओहदा | अ० | ओ़हद: | عہدہ | पद |
| ओहदेदार | अ० फ़ा० | ओ़हद:दार | عہدہ دار | पदाधिकारी |

## औ—औ़

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| औकात | अ० फ़ा० | औक़ात | اوقات | मर्यादा, सामर्थ्य |
| औजार | " | औज़ार | اوزار | उपकरण |
| औरत | " | औ़रत | عورت | स्त्री, नारी |
| औलाद | " | औ़लाद | اولاد | संतान |
| औसत | " | औसत | اوسط | × |

## क—क़

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कंगूरा | फ़ा० | कंगूर: | کنگورہ | × |
| कंदील | " | क़ंदील | قندیل | × |
| कतार | अ० | क़तार | قطار | पंक्ति |
| कतई | " | क़त्ई़ | قطعی | *कदापि |
| कतल | " | क़त्ल | قتل | वध, हत्या |
| कतलेआम | " | क़त्लेआ़म | قتلِ عام | × |
| कद | " | क़द (क़द्द) | قد | डील, ऊंचाई |
| कदम | " | क़दम | قدم | पांव, पग, चरण |
| कदम ब कदम | " | क़दम-ब-क़दम | قدم بہ قدم | * पग-पग |
| क़दर | " | क़द्र | قدر | आदर, सत्कार |
| कद्दू | फ़ा० | कदू | کدو | लौकी |
| कफ़ | " | कफ़ | کف | फेन, झाग |
| कफ़न | अ० | कफ़न | کفن | × |
| क़बाब | " | कबाब | کباب | × |
| कबीला | " | क़बील: | قبیلہ | *जत्था, झुंड |
| कबूतर | फ़ा० | कबूतर | کبوتر | कपोत |
| कबूतरख़ाना | " | कबूतरख़ाना | کبوترخانہ | × |
| कबूतरबाज | " | कबूतरबाज़ | کبوترباز | × |
| कबूल | अ० | क़बूल | قبول | स्वीकार |
| कब्र | " | क़ब्र | قبر | * समाधि |
| कब्ज | " | क़ब्ज़ | قبض | अजीर्ण, कोष्ठबद्धता |
| कब्रस्तान | अ० फ़ा० | कब्रिस्तान | قبرستان | * शमशान |
| कम | फ़ा० | कम | کم | अल्प, थोड़ा |
| कमअक्ल | अ० | कम अ़क्ल | کم عقل | अल्प बुद्धि |
| कमउमर | " | कमउ़म्र | کم عمر | अल्प वयस्क |
| कमजोर | " | कमज़ोर | کمزور | निर्बल |
| कमजोरी | " | कमज़ोरी | کمزوری | निर्बलता |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कमबख्त | फ़ा० | कमबख़्त | کم بخت | × |
| कमर | फ़ा० | कमर | کمر | कटि |
| कमरबंद | ” | कमरबंद | کمربند | नाड़ा |
| कमसिन | फ़ा० अ० | कमसिन | کمسِن | अल्पवयस्क |
| कमान | ” | कमान | کمان | धनुष |
| कमानदार | ” | कमानदार | کمان دار | धनुषाकार |
| कमाल | अ० | कमाल | کمال | × |
| कमी | फ़ा० | कमी | کمی | न्यूनता |
| कमीज़ | अ० | क़मीस | قمیص | × |
| कमीना | फ़ा० | कमीन: | کمینہ | नीच, अधम |
| कमोबेश | ” | कमोबेश | کم و بیش | थोड़ा-बहुत, न्यूनाधिक |
| कयामत | ” | क़यामत | قیامت | प्रलय |
| करघा | ” | करगह | کرگہہ | × |
| करामात | अ० | करामात | کرامت | चमत्कार |
| करीना | ” | क़रीन: | قرینہ | × |
| करीब | ” | क़रीब | قریب | निकट, समीप |
| कर्ज़ | ” | क़र्ज़ | قرض | ऋण, उधार |
| कर्जदार | अ० फ़ा० | कर्ज़दार | قرض دار | ऋणी |
| कलम | अ० | क़लम | قلم | लेखनी |
| कलमदान | अ० फ़ा० | क़लमदान | قلمدان | × |
| कलई | ” | क़लई | قلعی | × |
| कलगी | तु० | कल्ग़ी | کلغی | * मौर |
| कलमी | अ० | क़लमी | قلمی | × |
| कलाबाज़ | फ़ा० | क़लाबाज़ | قلاباز | × |
| कल्ला | ” | कल्ल: | کلّہ | गाल |
| कवायद | ” | क़वाइद | قواعد | × |
| कव्वाल | ” | क़व्वाल | قوال | × |
| कव्वाली | ” | क़व्वाली | قوالی | × |
| कश | फ़ा० | कश | کش | दम, खींच |
| कशमकश | ” | कशमकश | کشمکش | खींचातानी, संघर्ष |
| कशिश | ” | कशिश | کشش | आकर्षण, खिंचाव |
| कसीदा | ” | कशीद: | کشیدہ | × |
| कसीदाकार | ” | कशीद:कार | کشیدہ کار | × |
| कसीदाकारी | ” | कशीद:कारी | کشیدہ کاری | × |
| किश्ती | ” | कश्ती | کشتی | नाव, नौका |
| कसम | अ० | क़सम | قسم | सोगन्ध |
| कस्बा | ” | क़स्ब: | قصبہ | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कसरत | " | कसरत | كسرت | व्यायाम |
| कसाई | " | क़स्साब | قصاب | वधिक, निष्ठुर |
| कहर | " | क़ह्र | قہر | *संकट, विपत्ति |
| कहवा | " | क़ह्वः | قہوہ | × |
| कायदा | " | क़ाइदः | قاعدہ | नियम, प्रथा |
| कायम | " | क़ाइम | قائم | स्थिर, स्थापित |
| कायल | " | क़ाइल | قائل | × |
| काका | तु० | काका | کاکا | चाचा |
| काग़ज़ | अ० | काग़ज़ | کاغذ | × |
| काग़ज़ात | " | काग़ज़ात | کاغذات | × |
| काग़ज़ी | " | काग़ज़ी | کاغذی | × |
| काज़ी | " | क़ाज़ी | قاضی | × |
| कातिल | " | क़ातिल | قاتل | *बधिक |
| कानून | " | क़ानून | قانون | विधान, नियम |
| कानूनी | " | क़ानूनी | قانونی | वैधानिक |
| कानूनगो | अ० फ़ा० | क़ानूनगो | قانون گو | × |
| कानूनदां | " | क़ानूनदां | قانون داں | विधानवेत्ता |
| कानूनन | अ० | क़ानूनन | قانوناً | विधानतः |
| काफ़िर | " | काफ़िर | کافر | × |
| काफ़िला | " | क़ाफ़िलः | قافلہ | *यात्रीदल |
| काफ़ी | " | काफ़ी | کافی | पर्याप्त |
| काफ़ूर | फ़ा० | काफ़ूर | کافور | कपूर |
| काबिल | अ० | क़ाबिल | قابل | योग्य, दक्ष |
| काबिलीयत | " | क़ाबिलीयत | قابلیت | योग्यता, दक्षता |
| काबिलेतारीफ़ | " | काबिले-तारीफ़ | قابل تعریف | प्रशंसनीय |
| काबू | " | क़ाबू | قابو | वश, अधिकार |
| कामयाब | फ़ा० | कामयाब | کامیاب | सफल |
| कारकुन | " | कारकुन | کارکن | कार्यकर्त्ता |
| कारख़ाना | " | कारख़ानः | کارخانہ | × |
| कारगर | " | कारगर | کارگر | प्रभावकारी, उपयोगी |
| कारगुज़ारी | " | कारगुज़ारी | کارگذاری | *कार्यपटुता |
| कारनामा | " | कारनामः | کارنامہ | × |
| कारंवाई | " | कारंवाई | کارروائی | कार्यवाही |
| कारिन्दा | " | 'कारिन्दः | کارندہ | *कर्मचारी |
| कारिस्तानी | " | कारस्तानी | کارستانی | कृत्य, कर्म |
| कारोबार | " | कारोबार | کاروبار | व्यवसाय, व्यापार |
| कारवान | " | कार्वान | کاروان | यात्रीदल |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कालीन | तु० | क़ालीन | قالین | × |
| काश ! | फ़ा | काश ! | کاشں ! | × |
| काश्तकार | " | काश्तकार | کاشت کار | कृषक |
| काहिल | अ० | काहिल | کاہل | आलसी |
| किताब | " | किताब | کتاب | पुस्तक, ग्रंथ |
| किताबी | " | किताबी | کتابی | पुस्तकीय |
| किनारा | फ़ा० | कनारः | کناره | तट |
| किफ़ायत | अ० | किफ़ायत | کفایت | बचत |
| कतार | " | क़तार | قطار | पंक्ति |
| कयामत | " | क़ियामत | قیامت | *महाप्रलय |
| किराया | " | किरायः | کرایہ | भाड़ा |
| किरायेदार | अ०फ़ा० | किरायःदार | کرایہ دار | × |
| किरायानामा | फ़ा० | किरायःनामः | کرایہ نامہ | × |
| करिश्मा | " | किरिश्मः | کرشمہ | चमत्कार |
| किशमिश | " | किश्मिश | کشمش | × |
| किला | अ० | क़ल्अः | قلعہ | दुर्ग, गढ़ |
| किल्लत | " | क़िल्लत | قلت | अभाव, कमी |
| किस्त | " | क़िस्त | قسط | *भाग, अंश |
| किस्म | " | क़िस्म | قسم | प्रकार, भेद |
| किस्मत | " | क़िस्मत | قسمت | भाग्य |
| क़िस्सा | " | क़िस्सः | قصّہ | कथा, कहानी |
| कीमा | फा० | क़ीमः | قیمہ | × |
| कीमत | अ० | क़ीमत | قیمت | दाम, मूल्य |
| कीमती | " | क़ीमती | قیمتی | मूल्यवान |
| कुंदा | फ़ा० | कुंदः | کندہ | × |
| कुन्द | " | कुंद | کند | मंद, कुंठित |
| कुतुबनुमा | अ०फ़० | क़ुत्बनुमा | قطب نما | दिग्दर्शक |
| कुदरत | अ० | क़ुद्रत | قطب | प्रकृति |
| कुदरती | " | क़ुद्रती | قدرتی | प्राकृतिक, ईश्वरीय |
| कुफ़ | " | कुफ़् | کفر | *कृतघ्नता |
| कुफ़ल | अ० | क़ुफ़्ल | قفل | × |
| कुमुक | तु० | कुमुक | کمک | × |
| कुर्सी | अ० | कुर्सी | کرسی | × |
| कुव्वत | " | क़ुव्वत | قوت | शक्ति |
| कुर्बान | " | कुर्बान | قربان | बलि,,न्यौछावर |
| कुर्क | तु० | क़ुर्क़ | قرق | × |
| कर्की | " | क़ुर्क़ी | قرقی | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कुर्त्ता | " | कुर्तः | کرتہ | × |
| कुली | " | क़ुली | قلی | *सेवक |
| कुलफ़ी | अ० | कुल्फ़ी | کلفی | × |
| कुल | " | कुल | کل | सब, सर्व |
| कुव्वत | " | क़ुव्वत | قوت | शक्ति, बल |
| कुश्ती | फ़ा० | कुश्ती | کشتی | मल्लयुद्ध |
| कुश्तीबाज़ | " | कुश्तीबाज़ | کشتی باز | × |
| कुसूर | अ० | क़ुसूर | قصور | दोष, अपराध |
| कूचा | फ़ा० | कूचः | کوچہ | गली |
| कूच | " | कूच | کوچ | प्रस्थान, प्रयाण |
| कूजा | " | कूज़ः | کوزہ | *मटका |
| कै | अ० | क़ै | قے | वमन, उल्टी |
| कैंची | तु० | क़ैंची | قینچی | कतरनी |
| कैद | अ० | क़ैद | قید | कारावास |
| कैदखाना | " | कैदख़ानः | قیدخانہ | कारागार |
| कैदी | " | क़ैदी | قیدی | बंदी |
| कैफ़ीयत | " | कैफ़ीयत | کیفیت | समाचार |
| कोताही | फ़ा० | कोताही | کوتاہی | भूल, न्यूनता |
| कोफ़्त | फ़ा० | कोफ़्त | کوفت | कष्ट, दुःख |
| कोशिश | " | कोशिश | کوشش | प्रयत्न |
| कोहराम | अ० | क़हरआम | قہرعام | विलाप, हाहाकार |
| क़ौम | " | क़ौम | قوم | जाति, वंश |
| कौमी | " | क़ौमी | قومی | जातीय, राष्ट्रीय |
| कौल | " | क़ौल | قول | वचन, प्रण |

ख—ख़

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| खंजर | अ० | ख़ंजर | خنجر | *क्षुरिका, छुरी |
| ख़च्चर | तु० | ख़च्चर | خچر | × |
| ख़जाना | अ० | ख़ज़ानः | خزانہ | निधि, कोष |
| ख़जांची | अ० फ़ा० | ख़ज़ानची | خزانچی | × |
| ख़त | अ० | ख़त | خط | पत्र, चिट्ठी |
| ख़तरा | " | ख़तरः | خطرہ | भय, त्रास, डर |
| ख़तरनाक | अ० फ़ा० | ख़तरनाक | خطرناک | भयानक |
| ख़तम | अ० | ख़त्म | ختم | समाप्त |
| ख़ता | " | ख़ता | خطا | अपराध, दोष, त्रुटि |
| खफ़ा | " | ख़फ़ा | خفا | क्रुद्ध, रुष्ट |
| खबर | " | ख़बर | خبر | सूचना, संदेश, समाचार |
| ख़बरदार | अ०फ़ा | ख़बरदार | خبردار | सचेत, सतर्क |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| खमीर | अ० | ख़मीर | خمیر | × |
| खयाल | ,, | ख़याल | خیال | विचार, ध्यान |
| खयाली | ,, | ख़याली | خیالی | × |
| खरगोश | फ़ा० | ख़रगोश | خرگوش | शश, शशक |
| खरबूजा | ,, | ख़रबुज़: | خربزہ | × |
| ख़राद | ,, | ख़राद | خراد | × |
| खराब | अ० | ख़राब | خراب | विकृत, दूषित |
| खराबी | ,, | ख़राबी | خرابی | *विकृति, दोष |
| ख़राश | फ़ा० | ख़राश | خراش | छीलन, रगड़ |
| ख़रीद | ,, | ख़रीद | خرید | मोल |
| ख़रीदार | ,, | ख़रीदार | خریدار | ग्राहक |
| ख़रीदारी | ,, | ख़रीदारी | خریداری | × |
| ख़रीफ़ | अ० | ख़रीफ़ | خریف | × |
| ख़र्च | फ़ा० | ख़र्च | خرچ | व्यय, उपभोग |
| ख़लल | अ० | ख़लल | خلل | विघ्न, बाधा |
| ख़लास | फ़ा० | ख़लास | خلاص | समाप्त |
| खस | फ़ा० | ख़स | خس | × |
| ख़शख़श | ,, | ख़श्ख़ाश | خشخاش | × |
| ख़स्ता | ,, | ख़स्त: | خستہ | *दुर्दशाग्रस्त |
| ख़स्ताहाल | फ़ा० अ० | ख़स्त:हाल | خستہ حال | *दरिद्रता |
| ख़ाक | फ़ा० | ख़ाक | خاک | धूलि, मिट्टी |
| ख़ाका | ,, | ख़ाक: | خاکہ | रेखाचित्र |
| ख़ाकी | ,, | ख़ाकी | خاکی | × |
| खातिर | अ० | ख़ातिर | خاطر | सम्मान, आदर |
| ख़ात्मा | ,, | ख़ातिम: | خاتمہ | अंत, मृत्यु, समाप्ति |
| ख़ातिरदारी | फ़ा० अ० | खातिरदारी | خاطرداری | सेवा, सुश्रूषा, सत्कार |
| ख़ाना | फ़ा० | ख़ान: | خانہ | गृह, छेद, घर |
| ख़ानाबदोश | ,, | ख़ान:बदोश | خانہ بدوش | *संचारजीवी |
| ख़ानापूरी | ' | ख़ान:पुरी | خانہ پری | × |
| ख़ानगी | ,, | ख़ानगी | خانگی | निजी, घरेलू |
| ख़ानदान | ,, | ख़ानदान | خاندان | वंश, कुल |
| ख़ानदानी | ,, | ख़ानदानी | خاندانی | कुलीन |
| ख़ामख़ा | ,, | ख्वामहख्वाह: | خواہ مخواہ | व्यर्थ |
| ख़ामी | ,, | ख़ामी | خامی | कच्चापन, त्रुटि |
| खामोश | ,, | ख़ामोश | خاموش | चुप, शांत |
| खामोशी | ,, | ख़ामोशी | خاموشی | शांति, चुप्पी |
| ख़ार | ,, | × | | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ख़ारिज | अ० | ख़ारिज | خارج | अस्वीकृत, बहिष्कृत |
| ख़ालिस | " | ख़ालिस | خالص | शुद्ध |
| ख़ाली | " | ख़ाली | خالی | रिक्त |
| ख़ास | " | ख़ास | خاص | विशेष, प्रधान |
| ख़ासियत | " | ख़ासियत | خاصیت | विशेषतः |
| ख़िजाब | " | ख़िज़ाब | خضاب | × |
| ख़िताब | " | ख़िताब | خطاب | उपाधि |
| ख़िदमत | " | ख़िदमत | خدمت | सेवा, शुश्रूषा |
| ख़िदमतगार | फ़ा० | ख़िदमतगार | خدمت گار | सेवक |
| ख़िलाफ़ | अ० | ख़िलाफ़ | خلاف | विरुद्ध, प्रतिकूल |
| ख़िलाफ़त | " | ख़िलाफ़त | خلافت | विरोध, प्रतिरोध |
| ख़ुद | फ़ा० | ख़ुद | خود | स्वयं |
| ख़ुदकशी | " | ख़ुदकशी | خودکشی | आत्महत्या |
| ख़ुदगरज | फ़ा० अ० | ख़ुदगरज़ | خودغرض | स्वार्थी |
| ख़ुदग़रज़ी | " " | ख़ुदग़रज़ी | خودغرضی | स्वार्थपरता, स्वार्थसाधन |
| ख़ुदबख़ुद | फ़ा० | ख़ुदबख़ुद | خودبخود | स्वतः |
| ख़ुदा | " | ख़ुदा | خدا | परमात्मा, ईश्वर |
| ख़ुदाई | " | ख़ुदाई | خدائی | जगत, सृष्टि |
| ख़ुदी | " | ख़ुदी | خودی | अहंकार, अहंभाव |
| ख़ुफ़िया | अ० | ख़ुफ़ीयः | خفیہ | गुप्तचर |
| ख़ुमारी | " | ख़ुमारी | خماری | *मद, नशा |
| ख़ुरदा | फ़ा० | ख़ुर्दः | خردہ | छुट्टा, खुले |
| ख़ुर्दबीन | " | ख़ुर्दबीन | خوردبین | सूक्ष्मदर्शक |
| ख़ुराक | " | ख़ुराक | خوراک | भोजन, खाद्य |
| ख़ुराफात | अ० | ख़ुराफ़ात | خرافات | × |
| ख़ुलासा | " | ख़ुलासः | خلاصہ | सार, स्पष्ट |
| ख़ुश | फ़ा० | ख़ुश | خوش | प्रसन्न, आनन्दित |
| ख़ुशकिस्मत | फ़ा० अ० | ख़ुशक़िस्मत | خوش قسمت | सौभाग्यशाली |
| ख़ुशखबरी | " " | ख़ुशख़बरी | خوش خبری | शुभसमाचार |
| ख़ुशदिल | " " | ख़ुशदिल | خوش دل | प्रसन्नचित |
| ख़ुशनसीब | " " | ख़ुशनसीब | خوش نصیب | सौभाग्यशाली |
| ख़ुशनुमा | फ़ा० | ख़ुशनुमा | خوشنما | मनोरम, सुन्दर |
| ख़ुशबू | " | ख़ुशबू | خوشبو | सुगंध |
| ख़ुशमिजाज | फ़ा० अ० | ख़ुशमिज़ाज | خوش مزاج | प्रसन्नचित्त |
| ख़ुशहाल | " " | ख़ुशहाल | خوش حال | संपन्न, समृद्ध |
| ख़ुशहाली | " " | ख़ुशहाली | خوش حالی | संपन्नता |
| ख़ुशामद | फ़ा० | ख़ुशामद | خوشامد | चाटुकारिता |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ख़ुशामदपसंद | फ़ा० | ख़ुशामदपसंद | خوشامدپسند | × |
| ख़ुशामदी | ,, | ख़ुशामदी | خوشامدی | चाटुकार |
| ख़ुशी | ,, | ख़ुशी | خوشی | आनन्द, हर्ष |
| ख़ुश्क | ,, | ख़ुश्क | خشک | शुष्क, नीरस |
| ख़ुश्की | ,, | ख़ुश्की | خشکی | *शुष्कता |
| ख़ुसूसीयत | अ० | ख़ुसूसीयत | خصوصیت | विशेषता, विशिष्टता |
| ख़ूंख़ार | फ़ा० | ख़ूंख़्वार | خونخوار | *रक्तपायी, निर्दय |
| ख़ून | ,, | ख़ून | خون | रक्त, हत्या |
| ख़ूनी | ,, | ख़ूनी | خونی | हत्यारा |
| ख़ूब | ,, | ख़ूब | خوب | बहुत, सुन्दर |
| ख़ूबसूरती | फ़ा० अ० | ख़ूबसूरत | خوبصورت | सुन्दर, रूपवान |
| ख़ूबसूरती | ,, ,, | ख़ूबसूरती | خوبصورتی | सौन्दर्य |
| ख़ूबानी | फ़ा० | ख़ूबानी | خوبانی | × |
| ख़ूबी | ,, | ख़ूबी | خوبی | गुण, विशेषता |
| ख़ेमी | अ० | ख़ेमः | خیمہ | डेरा |
| ख़ैर | ,, | ख़ैर | خیر | अस्तु, कुशल |
| ख़ैरात | ,, | ख़ैरात | خیرات | दान |
| ख़ैराती | ,, | ख़ैराती | خیراتی | × |
| ख़ैरियत | ,, | ख़ैरियत | خیریت | कुशलमंगल |
| ख़ौफ़ | ,, | ख़ौफ़ | خوف | भय, त्रास, डर |
| ख़ौफ़नाक | फ़ा० | ख़ौफ़नाक | خوفناک | भीषण, भयंकर |
| ख़ाब | ,, | ख़्वाब | خواب | स्वप्न |
| ख़ाहिश | ,, | ख़्वाहिश | خواہش | इच्छा, चाह |

## ग—ग़

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| गंज | फ़ा० | गंज | گنج | × |
| गंदा | ,, | गन्दः | گندہ | मलिन, मैला |
| गंदगी | ,, | गंदगी | گندگی | *मलिनता, मल |
| गज़ | ,, | गज़ | گز | × |
| गजक | ,, | गज़क | گزک | × |
| गजब | अ० | ग़ज़ब | غضب | *प्रकोप, आश्चर्य |
| ग़ज़ल | ,, | ग़ज़ल | غزل | × |
| गद्दार | ,, | ग़द्दार | غدار | कृतघ्न |
| गद्दारी | ,, | ग़द्दारी | غداری | *कृतघ्नता |
| गदर | ,, | ग़द्र | غدر | *विप्लव, विद्रोह |
| गनीमत | ,, | ग़नीमत | غنیمت | × |
| गप | फ़ा० (सं०?) | गप | گپ | × |
| गपबाज़ | ,, | ग़पबाज़ | گپ باز | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| गफ़लत | अ० | ग़फ़लत | غفلت | असावधानी |
| ग़बन | " | ग़बन | غبن | × |
| ग़म | अ० | ग़म | غم | शोक, दुःख |
| ग़मेदिल | अ० फ़ा | ग़मेदिल | غم دل | *मनस्ताप |
| गर | फ़ा० | गर | گر | यदि |
| ग़रज़ | अ० | ग़रज़ | غرض | स्वार्थ, आवश्यकता |
| गरजमंद | अ० फ़ा० | ग़रज़मंद | غرض مند | × |
| गरजमंदी | " | ग़रज़मंदी | غرض مندی | × |
| गरीब | " | ग़रीब | غریب | असहाय, निर्धन |
| गरीबख़ाना | अ० फ़ा० | ग़रीबख़ाना | غریب خانہ | × |
| गरीबपरवर | " " | ग़रीबपरवर | غریب پرور | दीनवत्सल |
| गरीबी | अ० | ग़रीबी | غریبی | निर्धनता, कंगाली |
| गर्क | " | ग़र्क़ | غرق | *निमग्न, निमज्जन |
| गर्द | फ़ा० | गर्द | گرد | धूलि, रज |
| गर्दन | " | गर्दन | گردن | *ग्रीवा |
| गर्दिश | " | गर्दिश | گردش | *दुर्भाग्य, विपत्ति |
| गर्म | " | गर्म | گرم | तप्त, उष्ण |
| गर्म दिमाग | फ़ा० अ० | गर्म मिज़ाज | گرم مزاج | क्रोधी |
| गर्मागर्मी | " | गर्मागर्मी | گرماگرمی | × |
| गर्मी | फ़ा० | गर्मी | گرمی | उष्णता |
| गलत | अ० | ग़लत | غلط | अशुद्ध |
| गलीज़ | " | ग़लीज़ | غلیظ | *मल, विष्ठा, मलिन |
| गवारा | फ़ा० | गुवारः | گوارہ | सह्य |
| गवाह | अ० | गुवाह | گوارہ | साक्षी |
| गवाही | फ़ा० | गुवाही | گواہی | साक्ष्य |
| गलतफ़हमी | अ० | ग़लतफ़हमी | غلط فہمی | भ्रम |
| गल्ला | " | ग़ल्लः | غلہ | अन्न, धान्य |
| गश | फ़ा० | ग़श | غش | मूर्छा |
| गश्त | " | गश्त | گشت | × |
| गश्ती | " | गश्ती | گشتی | परिपत्र |
| गलीचा | तु० | ग़ालीचः | غالیچہ | × |
| गाफ़िल | अ० | ग़ाफ़िल | غافل | असावधान, आलसी |
| गिज़ा | " | ग़िज़ः | غذہ | भोजन, अन्न |
| गायब | " | ग़ायब | غایب | लुप्त, अदृश्य |
| गिरह | फ़ा० | गिरह | گرہ | गांठ, उलझन, जेब |
| गिरानी | " | गिरानी | گرانی | मंहगाई |
| गिरफ्त | " | गिरफ़्त | گرفت | पकड़, जकड़ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| गिरफ़्तार | फ़ा० | गिरिफ़्तार | گرفتار | बंदी |
| गिरफ़्तारी | " | गिरिफ़्तारी | گرفتاری | × |
| गिरवी | " | गिरवी | گروی | बंधक |
| गिरोह | " | गिरोह | گروہ | दल, झुंड, जत्था |
| गिला | " | गिलः | گلہ | *उलाहना |
| गिलाजत | अ० | ग़िलाज़त | غلاظت | मलिनता |
| गिलाफ़ | " | ग़िलाफ़ | غلاف | खोल |
| गुंजाइश | फ़ा० | गुंजाइश | گنجائش | संभावना |
| गुंबद | " | गुंबद | گنبد | × |
| गुजर | " | गुज़र | گزر | निर्वाह, जीविका |
| गुजारा | " | गुज़ारः | گزارہ | निर्वाह |
| गुज़ारिश | " | गुज़्ज़ारिश | گزارش | प्रार्थना, निवेदन |
| गुनाह | " | गुनाह | گناہ | पाप |
| गुनाहगार | " | गुनाहगार | گناہ گار | पापी, दोषी |
| गुफ़्तगू | " | गुफ़्तगू | گفتگو | बातचीत |
| गुब्बारा | " | ग़ुब्बारः | غبارہ | × |
| गुम | " | गुम | گم | खोना |
| गुमनाम | " | गुमनाम | گم نام | अज्ञात |
| गुमराह | " | गुमराह | گم راہ | पथभ्रष्ट |
| गुमशुदा | " | गुमशुदः | گم شدہ | × |
| गुमान | " | गुमान | گمان | शंका, कुधारणा |
| गुमाश्ता | " | गुमाश्तः | گماشتہ | × |
| गुरूर | " | गुरूर | غرور | अहंकारी, घमंडी |
| गुल | फ़ा० | गुल | گل | पुष्प, सुमन |
| गुलकंद | " | गुलक़ंद | گلقند | × |
| गुलज़ार | " | गुलज़ार | گلزار | *उद्यान, वाटिका, पुष्पित |
| गुलदस्ता | " | गुलदस्तः | گلدستہ | × |
| गुलशन | " | गुलशन | گلشن | उद्यान, वाटिका |
| गुलबदन | " | गुलबदन | گل بدن | × |
| गुलाब | " | गुलाब | گلاب | × |
| गुलाबी | " | गुलाबी | گلابی | × |
| गुलाम | " | ग़ुलाम | غلام | दास |
| गुलामी | " | ग़ुलामी | غلامی | दासता |
| गुलेल | " | ग़ुलूलः | گولہ | × |
| गुसल | अ० | ग़ुसुल | غسل | नहाना, स्नान |
| गुस्ताख | फ़ा० | गुस्ताख़ | گستاخ | अशिष्ट |
| गुस्ताख़ी | " | गुस्ताख़ी | گستاخی | अशिष्टता |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| गुसलख़ाना | अ० | गुस्लखानः | غسل خانہ | स्नानघर |
| ग़ैब | " | ग़ैब | غیب | लुप्त, अदृश्य |
| ग़ैर | " | ग़ैर | غیر | अन्य, पराया |
| ग़ैरकानूनी | " | ग़ैर क़ानूनी | غیر قانونی | अवैध |
| ग़ैरजिम्मेदार | " | ग़ैरज़िम्मेदार | غیر ذمہ دار | दायित्वहीन, अनुत्तरदायी |
| ग़ैरहाज़िर | " | ग़ैरहाजिर | غیر حاضر | अनुपस्थित |
| ग़ैरतमंद | अ० फ़ा० | ग़ैरतमंद | غیرت مند | स्वाभिमानी |
| गोकि | फ़ा० | गोकि | گو کہ | यद्यपि |
| गो | " | गो | گو | यद्यपि |
| गोता | अ० | ग़ोतः | غوطہ | डुबकी |
| गोताखोर | " | ग़ोतःखोर | غوطہ خور | × |
| गोया | फ़ा० | गोया | گویا | मानो |
| गोला | " | गोलः | گولہ | × |
| गोलाबारी | " | गोलःबारी | گولہ باری | × |
| गोशा | " | गोशः | گوشہ | × |
| गोश्त | " | गोश्त | گوشت | मांस |
| ग़ौर | " | ग़ौर | غور | विचार, ध्यान |

च

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| चंगुल | फ़ा० | चुंगुल | چنگل | पंजा |
| चन्दा | " | चन्दः | چندہ | × |
| चन्द | " | चन्द | چند | थोड़े, कतिपय |
| चखचख | " | चख़चख़ | چخ چخ | कलह, कहासुनी, झगड़ा |
| चपरासी | " | चपरासी | چپراسی | × |
| चपाती | " (सं० ?) | चपाती | چپاتی | फुलका |
| चमन | " | चमन | چمن | उद्यान |
| चमचा | तु० | चमचः | چمچہ | × |
| चरबी | फ़ा० | चर्बी | چربی | वसा |
| चरागाह | " | चरागाह | چراگاہ | *गोचर |
| चर्खा | " | चर्ख़ः | چرخہ | × |
| चरखी | " | चर्ख़ी | چرخی | × |
| चश्मा | " | चश्मः | چشمہ | × |
| चहलकदमी | " | चहेलकदमी | چہل قدمی | घूमना, टहलना |
| चाकर | " | चाकर | چاکر | सेवक, दास |
| चाकरी | " | चाकरी | چاکری | सेवा, दासता |
| चाकू | " | चाक़ू | چاقو | *छुरिका |
| चादर | " | चादर | چادر | × |
| चाप्लूस | " | चाप्लूस | چاپلوس | चाटुकार |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| चाबुक | फ़ा० | चाबुक | چابک | कोड़ा |
| चारदीवारी | " | चारदीवारी | چاردیواری | घर, प्राचीर |
| चारपाया | " | चारपायः | چارپایہ | पशु |
| चारा | " | चारः | چارہ | उपाय |
| चाय | " | चाय | چائے | × |
| चालाक | " | चालाक | چالاک | निपुण, चतुर, धूर्त |
| चालाकी | " | चालाकी | چالاکی | धूर्तता, ठगी, चतुराई |
| चाश्नी | " | चाश्नी | چاشنی | × |
| चिक | तु० | चिक | چک | × |
| चिकन | फ़ा० | चिकिन | چکن | × |
| चिराग़ | " | चराग़-चिराग़ | چراغ چراغ | दीपक |
| चिलम | " | चिलिम | چلم | × |
| चिलमन | " | चिलमन | چلمن | चिक |
| चीज़ | " | चीज़ | چیز | वस्तु, पदार्थ |
| चुकंदर | " | चुक़ंदर | چقندر | × |
| चुगल | तु० | चुग़ुल | چغل | *पिशुन |
| चुगली | " | चुग़ुली | چغلی | *पिशुनता |
| चुगलख़ोर | अ०तु० | चुग़ुलख़ोर | چغل خور | *पिशुन |
| चुनांचे | फ़ा० | चुनांचे | چنانچہ | अतः |
| चुनिंदा | " | चुनिंदा | چنندا | बढ़िया |
| चुस्त | " | चुस्त | چست | फुर्तीला, दक्ष |
| चुस्ती | " | चुस्ती | چستی | दक्षता, दृढ़ता |
| चूंकि | " | चूंकि | چونکہ | क्योंकि |
| चूज़ा | " | चूज़ः | چوزہ | × |
| चेचक | तु० | चेचक | چیچک | शीतलामाता |
| चेहरा | फ़ा० | चेहरः | چہرہ | मुखाकृति, मुखड़ा |
| चोगा | तु० | चूग़ा | چغا | × |

## ज-ज़

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जंग | फ़ा० | जंग | جنگ | युद्ध |
| ज़ंग | " | ज़ंग | زنگ | * |
| जंगल | " | जंगल | جنگل | वन, विपिन |
| जंगली | " | जंगली | جنگلی | *असभ्य, अशिष्ट |
| जंगी | " | जंगी | جنگی | युद्ध |
| जंगे-आजादी | " | जंगे आज़ादी | جنگ آزادی | स्वातन्त्र्य युद्ध |
| जंजीर | " | ज़ंजीर | زنجیر | शृंखला, क्रम, साँकल |
| जखम | " | ज़ख़्म | زخم | आघात, घाव |
| जख्मी | " | ज़ख़्मी | زخمی | घायल |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जगह | फ़ा० | जाएगाह | جایگاه | स्थान |
| जच्चा | " | ज़च्च: | زچّہ | प्रसूता |
| जच्चाखाना | " | ज़च्च:खान: | زچہ بچہ | प्रसूति गृह |
| जज़्बा | अ० | जज़्ब: | جذبہ | मनोवृत्ति, भावना |
| जज़्बात | " | जज़्बात | جذبات | मनोवृत्तियाँ, भावनाएँ |
| जज़्ब | " | जज़्ब | جذب | सोखना |
| जनाजा | " | जनाज़ा | جنازہ | अर्थी |
| जनाना | फ़०अ० | ज़नान: | زنانہ | स्त्रियाँ |
| जनानख़ाना | फ़०अ० | ज़नानख़ान: | زنان خانہ | *अंत:पुर |
| जनाब | फ़० | जनाब | جناب | महोदय, महाशय |
| जन्नत | " | जन्नत | جنت | स्वर्ग |
| जबर्दस्त | " | ज़बर्दस्त | زبردست | *शक्तिशाली |
| जबर्दस्ती | " | ज़बर्दस्ती | زبردستی | बलपूर्वक, बलात |
| जबान | " | ज़बान | زبان | जीभ, जिह्वा |
| जबानी | " | ज़बानी | زبانی | मौखिक |
| जब्त | अ० | ज़ब्त | ضبط | संयम, धैर्य |
| जबरन | " | जबरन | جبرن | हठात् बलात् |
| जमा | " | जमअ् | جمع | एकत्र, इकट्ठा |
| ज़माना | " | ज़मान: | زمانہ | समय, काल |
| जमात | " | जमाअ्त | جماعت | कक्षा, पंक्ति |
| जमानत | " | ज़मानत | ضمانت | *प्रतिभूति |
| जमानतदार | अ०फ़० | ज़मानतदार | ضمانت دار | × |
| जमानतनामा | " " | ज़मानतनाम: | ضمانت نامہ | *प्रतिभूतिपत्र |
| जमीन | फ़ा० | ज़मीं | زمیں | पृथ्वी, भूमि |
| जमींदार | " | ज़मींदार | زمیندار | भूस्वामी |
| जमींदारी | " | ज़मींदारी | زمینداری | × |
| जमीन | " | ज़मीन | زمین | भूमि |
| ज़र | " | ज़र | زر | सोना, संपत्ति |
| ज़रा | अ० | ज़रा | ذرا | थोड़ा, अल्प |
| जरासीम | " | जरासीम | جراثیم | कीटाणु |
| जरी | फ़ा० | ज़री | زری | × |
| जरूर | अ० | ज़रूर | ضرور | अवश्य |
| जरूरत | " | ज़रूरत | ضرورت | आवश्यकता |
| जरूरतमंद | " | ज़रूरतमंद | ضرورت مند | *इच्छुक |
| ज़रूरी | " | ज़रूरी | ضروری | आवश्यक |
| ज़र्दा | " | ज़र्द: | زردہ | × |
| ज़र्रा | " | ज़र्र: | ذرہ | अणु, कण |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जलील | अ० | ज़लील | ذلیل | अधम, अपमानित |
| जुल्म | ,, | ज़लूम | ظلم | अत्याचार, अन्याय |
| जल्लाद | ,, | जल्लाद | جلاد | *निर्दय, वधिक |
| जलसा | ,, | जल्स: | جلسہ | सभा |
| जल्द | फ़ा | जल्द | جلد | शीघ्र, तुरंत |
| जवान | ,, | जवान | جوان | तरुण, युवक |
| जवाँमर्द | ,, | जवाँमर्द | جواں مرد | वीर,शूर |
| जवानी | ,, | जवानी | جوانی | युवावस्था, यौवन |
| जवाब | अ० | जबाब | جواب | उत्तर |
| जवाबतलब | ,, | जवाब तलब | جواب طلب | × |
| जवाबदेह | ,, | जवाबदेह | جواب دہ | उत्तरदायी, उत्तरदाता |
| जवाबी | ,, | जवाबी | جوابی | × |
| जवाहर | ,, | जवाहिर | جواہر | रत्न |
| जशन | फ़ा० | जश्न | جشن | उत्सव, समारोह |
| जहन्नुम | अ० | जहन्नम | جہنم | नरक |
| जहाँ | फ़ा० | जहाँ | جہاں | संसार, विश्व |
| जहाज | अ० | जहाज़ | جہاز | नाव,पोत |
| जहाजरानी | फ़ा० | जहाज़रानी | جہازرانی | × |
| जहाजी | अ० | जहाज़ी | جہازی | × |
| जहालत | ,, | जहालत | جہالت | जड़ता,असभ्यता,अज्ञानता |
| जहर | फ़ा० | ज़हर | زہر | विष |
| जहरीला | ,, | ज़ह्‌रीला | زہریلا | विषाक्त |
| जायका | अ० | ज़ाइक़: | ذائقہ | स्वाद,रस |
| जायज | ,, | — | | — |
| जायेदाद | फ़ा० | जाएदाद | جائیداد | *भू-संपत्ति |
| जागीर | ,, | जागीर | جاگیر | × |
| जागीरदार | ,, | जागीरदार | جاگیردار | × |
| जादू | ,, | जादू | جادو | *माया, इन्द्रजाल |
| जादूगर | ,, | जादूगर | جادوگر | मायावी |
| जानदार | ,, | जानदार | جاندار | प्राणी, जीवधारी |
| जान | ,, | जान | جان | प्राण |
| जानवर | ,, | जानवर | جانور | पशु-पक्षी |
| जानिब | अ० | जानिब | جانب | पक्ष, ओर, दिशा |
| जाफ़रान | ,, | ज़ा'फ़रान | زعفران | कुंकुम, केसर |
| जाफ़रानी | ,, | ज़ाफ़रानी | زعفرانی | केशरी |
| जाम | फ़ा० | जाम | جام | पान पात्र, चषक |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जामिन | अ़० | ज़ामिन | ضامن | × |
| जारी | ,, | जारी | جاری | संचालित, प्रवाहित |
| जाल | ,, | जा'ल | جعل | *छल, कूटता, धोखा |
| जालसाज़ | ,, | जा'लसाज़ | جعل ساز | *कूटकार |
| जालसाज़ी | ,, | जा'लसाज़ी | جعل سازی | *कूटकर्म |
| ज़ालिम | ,, | ज़ालिम | ظالم | अन्यायी, अत्याचारी |
| ज़ाली | ,, | जा'ली | جعلی | कृत्रिम, बनावटी |
| ज़ासूस | ,, | जासूस | جاسوس | गुप्तचर |
| जासूसी | ,, | जासूसी | جاسوسی | गुप्तचरी |
| ज़ाहिर | ,, | ज़ाहिर | ظاہر | व्यक्त, प्रकट |
| जाहिल | ,, | जाहिल | جاہل | अज्ञानी, मूर्ख, गँवार |
| जिंदा | फ़ा० | ज़िंद: | زندہ | जीवित |
| जिंदगी | ,, | ज़िंदगी | زندگی | जीवन |
| जिंदादिल | ,, | ज़िंद:दिल | زندہ دل | *विनोद प्रिय |
| जिंदादिली | ,, | ज़िंदादिली | زندہ دلی | *विनोद प्रियता |
| जिंदाबाद | ,, | ज़िंद:बाद | زندہ باد | × |
| जिन्स | ,, | जिंस | جنس | वस्तु, पदार्थ |
| जिकर | अ़० | ज़िक्र | ذکر | उल्लेख |
| जिगर | फ़ा० | जिगर | جگر | हृदय |
| जिगरी | ,, | जिगरी | جگری | हार्दिक, घनिष्ठ |
| जिद्द | अ़० | ज़िद्द | ضد | हठ, आग्रह |
| जिद्दी | ,, | ज़िद्दी | ضدی | हठी, आग्रही |
| ज़िम्मा | ,, | ज़िम्म: | ذمہ | × |
| ज़िम्मेदार | अ़०फ़ा० | ज़िम्मेदार | ذمہ دار | उत्तरदायी |
| ज़िम्मेदारी | ,, ,, | ज़िम्मेदारी | ذمہ داری | उत्तरदायित्व |
| जादा | अ़० | ज़ियाद: | زیادہ | अधिक, प्रचुर |
| जादातर | अ़०फ़ा० | ज़ियाद:तर | زیادہ تر | अधिकांश, बहुधा |
| जादती | अ़० | ज़ियादती | زیادتی | *अत्याचार, अधिकता |
| जिरह | ,, | जुरह | جرح | *विवाद |
| जिरात | ,, | ज़िराअ़त | زراعت | कृषि, खेती |
| जिराफ़ | ,, | ज़ुराफ़ | جراف | × |
| जिला | ,, | ज़िला | ضلع | × |
| जिल्द | ,, | जिल्द | جلد | × |
| जिल्दसाज़ | अ़०फ़ा | जिल्दसाज़ | جلدساز | × |
| जिसम | अ़० | जिस्म | جسم | शरीर, क़ाया |
| जिहाद | ,, | जिहाद | جہاد | धर्म युद्ध |
| ज़ीरा | फ़ा०(सं०?) | ज़ीर: | زیرہ | *जीरक |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जीन | फ़ा० | ज़ीन | زین | × |
| जीना | ,, | ज़ीन: | زینہ | सीढ़ी |
| जुदा | ,, | जुदा | جدا | पृथक, भिन्न |
| जुकाम | ,, | ज़ुकाम | زکام | × |
| जुदाई | फ़ा० | जुदाई | جدائی | पृथकता |
| ज़बान | ,, | ज़बान | زبان | जिह्वा |
| जुम्मा | अ़० | जुम्अ़: | جمعہ | शुक्रवार |
| जुमला | ,, | जुम्ल: | جملہ | वाक्य |
| जुर्रत | ,, | जुर्अत | جرأت | धृष्टता, साहस |
| जुर्म | ,, | जुर्म | جرم | अपराध |
| जुर्माना | अ़० फा० | जुर्मान: | جرمانہ | *अर्थदंड, दंड |
| जुलूस | अ़० | जुलूस | جلوس | *उत्सवयात्रा |
| जुल्फ़ | फ़ा० | जुल्फ़ | زلف | केशपाश, अलक |
| जुल्म | अ़० | ज़ुल्म | ظلم | अत्याचार |
| जुलाब | ,, | जुल्लाब | جلاب | × |
| जेब | ,, | जेब | جیب | × |
| जेबखर्च | अ़०फ़ा० | जेबख़र्च | جیب خرچ | × |
| जेवर | फ़ा० | ज़ेवर | زیور | आभूषण |
| जैतून | अ़० | ज़ैतून | زیتون | — |
| ज़ोर | फ़ा० | ज़ोर | زور | बल, शक्ति |
| जोरदार | ,, | ज़ोरदार | زوردار | × |
| जोश | ,, | जोश | جوش | उमंग, उत्साह |
| जौहरी | अ़० | जौहरी | جوہری | *मणिकार |
| जौहर | ,, | जौहर | جوہر | वीरता, दक्षता, रत्न, विशेषता |

त

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तंग | फ़ा० | तंग | تنگ | संकीर्ण, संकुचित |
| तंगदिल | ,, | तंगदिल | تنگ دل | *कृपण |
| तंगदिली | ,, | तंगदिली | تنگ دلی | *कृपणता, तुच्छता |
| तंगहाल | फ़ा० अ़० | तंगहाल | تنگ حال | *निर्धन |
| तंगी | फ़ा० | तंगी | تنگی | × |
| तंदूर | अ़० | तंनूर | تنور | × |
| तंबाकू-तंबाखू | तु० | तंबाकू | تمباکو | × |
| तंबूरा | फ़ा० | तंबूर: | تنبورہ | × |
| तकाबी | अ़० | तक़ाबी | تقابی | × |
| तक़दीर | ,, | तक़्दीर | تقدیر | भाग्य |
| तकरार | ,, | तकरार | تکرار | विवाद, झगड़ा |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तकरीबन | अ॰ | तक़्रीबन | تقریباً | अनुमानतः, लगभग |
| तालुका | " | तअ़ल्लुकः | تعلقہ | × |
| तालुक़दार | अ॰ फ़ा॰ | तअ़ल्लुक़ःदार | تعلقہ دار | × |
| तालुक़ | अ॰ | तअ़ल्लुक़ | تعلق | संबंध |
| तकिया | " | तक्यः | تکیہ | *उपधान |
| तकमील | " | तक्मील | تکمیل | पूर्ति, समाप्ति, पूर्ण |
| तकाज़ा (तगादा) | " | तक़ाज़ा | تقاضا | × |
| तकियाकलाम | " | तक्यःकलाम | تکیہ کلام | × |
| तकलीफ़ | " | तक्लीफ़ | تکلیف | दुःख, कष्ट |
| तख़्ता | फ़ा॰ | तख़्तः | تختہ | पटरा |
| तख़्त | " | तख़्त | تخت | सिंहासन |
| तदबीर | अ॰ | तद्बीर | تدبیر | उपाय |
| तनहाई | फ़॰ | तनहाई | تنہائی | अकेलापन, एकांतता |
| तजरुबा | अ॰ | तज्रिबः | تجربہ | अनुभव, प्रयोग |
| तनख़ा | फ़ा॰ | तनख़्वाह | تنخواہ | वेतन |
| तना | " | तनः | تنہ | × |
| तपाक | फ़ा॰ | तपाक | تپاک | सोत्साह, वेग |
| तपेदिक | " | तपेदिक | تپ دق | क्षयरोग |
| तफ़री | अ॰ | तफ़्रीह | تفریح | *विहार |
| तफ़सील | अ॰ | तफ़्सील | تفصیل | विस्तार, विवरण |
| तबादला | " | तबादलः | تبادلہ | *परिवर्तन, स्थानान्तरण |
| तबाह | " | तबाह | تباہ | नष्ट, ध्वस्त |
| तबाही | " | तबाही | تباہی | विनाश |
| तबियत | अ॰ | तबीअ़त | طبیعت | स्वास्थ्य, प्रकृति |
| तबका | " | तब्क़ः | طبقہ | वर्ग, श्रेणी |
| तबलची | " | तबलची | طبلچی | × |
| तबला | " | तब्लः | طبلہ | × |
| तबदील | " | तब्दील | تبدیل | बदलना, स्थानांतरण |
| तमन्ना | " | तमन्ना | تمنا | आकांक्षा, कामना |
| तमाचा | फ़ा॰ | तमाचः | تماچہ | थप्पड़, चांटा |
| तमाशा | अ॰ | तमाशः | تماشہ | × |
| तमाम | " | तमाम | تمام | समस्त, समग्र |
| तमाशबीन | फ़ा॰ | तमाशबीन | تماش بین | × |
| तमीज | अ॰ | तमीज़ | تمیز | सभ्यता, शिष्टता |
| तमगा | तु॰ | तम्ग़ा | تمغا | पदक |
| तय | अ॰ | तय | طے | *निर्णय, निश्चय |
| तैयार | " | तय्यार | تیار | *तत्पर, कटिबद्ध, सन्नद्ध |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तैयारी | अ० | तय्यारी | تیاری | तत्परता, सन्नद्धता |
| तर | फ़ा० | तर | تر | आर्द्र, गीला |
| तरकश | ,, | तरकश | ترکش | तूणीर, निषंग |
| तरक्की | अ० | तरक्क़ी | ترقی | उन्नति, प्रगति |
| तरक्कीपसंद | अ० फ़ा० | तरक्क़ीपसंद | ترقی پسند | प्रगतिशील |
| तरकारी | फ़ा० | तर:कारी | ترہ کاری | सागभाजी |
| तरफ़ | अ० | तरफ़ | طرف | ओर, पक्ष |
| तरफ़दारी | अ० फ़ा० | तरफ़दारी | طرف داری | पक्षपात |
| तरबूज | फ़ा० | तरबुज़ | تربوز | × |
| तरह | अ० | तरह | طرح | समान, भाँति |
| तराज़ू | फ़ा० | तराज़ू | ترازو | तुला |
| तराना | ,, | तरान: | ترانہ | गीत, गान |
| तराश | ,, | तराश | تراش | *कटाव, काटछाँट |
| तरी | ,, | तरी | تری | *आर्द्रता |
| तरीक़ा | ,, | तरीक़: | طریقہ | शैली, ढंग, विधि |
| तरकीब | अ० | तर्कीब | ترکیب | युक्ति, ढंग |
| तर्ज | ,, | तर्ज़ | طرز | शैली, पद्धति, धुन |
| तर्जुमा | ,, | तर्जुम: | ترجمہ | अनुवाद, भाषांतर |
| तर्जी | ,, | तर्जीह | ترجیح | प्रधानता, प्राथमिकता |
| तरतीब | अ० | तर्तीब | ترتیب | क्रम |
| तलब | ,, | तलब | طلب | *चाह, इच्छा, माँग |
| तलाक | ,, | तिलाक़ | طلاق | × |
| तलाश | तु० | तलाश | تلاش | खोज, अन्वेषण |
| तलाशी | ,, | तलाशी | تلاشی | × |
| तवज्जोह | अ० | तवज्जोह | توجہ | ध्यान |
| तशतरी | फ़ा० | तश्तरी | تشتری | × |
| तशरीफ़ | अ० | तशरीफ़ | تشریف | पधारना, आगमन, पदार्पण |
| तसवीर | ,, | तस्वीर | تصویر | चित्र |
| तसलीम | ,, | तस्लीम | تسلیم | स्वीकार, प्रणाम |
| तसल्ली | ,, | तसल्ली | تسلی | सान्त्वना, ढाढ़स |
| तह | फ़ा० | तह | تہہ | तल |
| तहख़ाना | ,, | तहखान: | تہہ خانہ | तलधर |
| तहक़ीकात | अ० | तहक़ीक़ात | تحقیقات | जाँच-पड़ताल |
| तहज़ीब | ,, | तहज़ीब | تہذیب | सभ्यता, शिष्टता |
| तहत | ,, | तहत् | تحت | अधीन |
| तहसील | ,, | तहसील | تحصیل | × |
| तहसीलदार | अ० फ़ा० | तहसीलदार | تحصیل دار | × |

| तहमद | फ़ा० | तहबंद | تہبند | अगाछा |
|---|---|---|---|---|
| ताईद | अ० | ताईद | تائید | समर्थन, पक्षपात |
| ताक | ,, | ताक़ | طاق | आला |
| ताकत | ,, | ताक़त | طاقت | शक्ति, बल |
| ताकतवर | अ० फ़ा० | ताक़तवर | طاقتور | बलवान, शक्तिशाली |
| ताकीद | अ० | ताकीद | تاکید | सचेत, समझाना, चेतावनी |
| ताज़ा | फ़ा० | ताज़: | تازہ | *हराभरा, नवीन |
| ताज | ,, | ताज | تاج | मुकुट |
| ताज़गी | ,, | ताज़गी | تازگی | *नवीनता, हरापन |
| ताजिया | ,, | ता'ज़िय: | تعزیت | × |
| ताजुब | ,, | तअज्जुब | تعجب | आश्चर्य, विस्मय |
| ताना | ,, | तान: | طعنہ | व्यंग्य, कटाक्ष |
| ताबेदार | फ़ा०अ० | ताबेदार | تابعدار | अनुयायी, आज्ञाकारी |
| तामील | ,, | तामील | تعمیل | आज्ञापालन, पालन |
| तामीर | अ० | ता'मीर | تعمیر | निर्माण |
| तार | फ़ा० | तार | تار | तंतु, डोरा |
| तार तार | ,, | तार तार | تارتار | टुकड़े-टुकड़े |
| तारीख़ | अ० | तारीख़ | تاریخ | तिथि |
| तारीफ़ | ,, | ता'रीफ़ | تعریف | प्रशंसा |
| तालाब | फ़ा० | तालाब | تالاب | तडाग |
| तालीम | अ० | ता'लीम | تعلیم | शिक्षा |
| तावीज | ,, | ता'वीज़ | تعویذ | × |
| ताश | तु० | ताश | تاش | × |
| तिजारत | अ० | तिजारत | تجارت | व्यापार |
| तिलस्म | ,, | तिलिस्म | طلسم | माया, इंद्रजाल |
| तिलस्मी | ,, | तिलिस्मी | طلسمی | मायावी |
| तीमारदार | फ़ा० | तीमारदार | تیماردار | परिचारक |
| तीर | ,, | तीर | تیر | बाण, शर |
| तीरंदाज़ | ,, | तीरंदाज़ | تیرانداز | × |
| तुनुक मिजाज | ,, | तुनुक मिज़ाज | تنک مزاج | चिड़चिड़ा |
| तुर्रा | अ० | तुर्र: | طرّہ | × |
| तूफ़ान | ,, | तूफ़ान | طوفان | *प्लावन, बाढ़, आँधी |
| तूफ़ानी | ,, | तूफ़ानी | طوفانی | *उग्र, प्रचण्ड |
| तूल | ,, | तूल | طول | *लंबाई |
| तेज़ | फ़ा० | तेज़ | تیز | तीव्र, प्रचंड, तीक्ष्ण |
| तेजाब | ,, | तेज़ाब | تیزاب | × |
| तेज़ी | ,, | तेज़ी | تیزی | *तीव्रता, शीघ्रता |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तैनात | अ० | तअय्युनात | تعینات | नियुक्त, नियत |
| तैयारी | " | तैयारी | تیاری | *तत्परता |
| तैश | " | तैश | طیش | आवेश |
| तोता | फ़ा० | तोता | طوطا | सुआ |
| तोप | तु० | तोप | توپ | × |
| तोपखाना | " | तोपखान: | توپ خانہ | × |
| तोपची | " | तोपची | توپ چی | × |
| तोशा | फ़ा० | तोश: | توشہ | × |
| तोशदान | " | तोशदान | توش دان | × |
| तोहफा | अ० | तुहफ़: | تحفہ | उपहार |
| तोबा | " | तोब: | توبہ | *पछतावा |
| तौरतरीका | " | तौरतरीक़: | طورطریقہ | रीति रिवाज, प्रथा |
| तौहीन | " | तौहीन | توہین | अपमान, अनादर |

द

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दंग | फ़ा | दंग | دنگا | चकित, स्तब्ध |
| दंगल (दंगा) | " | दंगल | دنگل | × |
| दक्कन | अ० | दकन | دکن | दक्षिण |
| दकियानूस | " | दक्यानूस | دقیانوس | पुराणपंथी |
| दकियानूसी | " | दक़्यानूसी | دقیانوسی | पुराणपंथ |
| दख़ल | " | दख़्ल | دخل | पहुँच, हस्तक्षेप, प्रवेश |
| दख़ल अंदाज़ी | " | दख़लअंदाज़ी | دخل اندازی | हस्तक्षेप |
| दगा | फ़ा० | दग़ा | دغا | छल, धोखा |
| दग़ाबाज़ | " | दग़ाबाज़ | دغاباز | छली |
| दफ़ा | अ० | दफ़्अ़ | دفعہ | बार, धारा |
| दफ्तर | " | दफ़्तर | دفتر | कार्यालय |
| दफ्तरी | " | दफ़्तरी | دفتری | × |
| दफ़न | अ० | दफ़्न | دفن | गाड़ना |
| दबदबा | " | दब्दब: | دبدبہ | प्रताप, आतंक |
| दमा | फ़ा | दम: | دمہ | × |
| दम | " | दम | دم | श्वास |
| दर | " | दर | در | द्वार |
| दरकार | " | दरकार | درکار | आवश्यकता |
| दरख़्त | फ़ा० | दरख़्त | درخت | वृक्ष |
| दरखास्त | " | दरख़्वास्त | درخواست | आवेदनपत्र |
| दरगाह | " | दरगाह | درگاہ | × |
| दरजा | अ० | दरज: | درجہ | श्रेणी, वर्ग |
| दरबान | फ़ा० | दरबान | دربان | द्वारपाल |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दरबार | फ़ा० | दरबार | دربار | राजसभा |
| दरबारी | " | दरबारी | درباری | × |
| दरमियान | " | दरमियान | درمیان | मध्य, बीच |
| दरयाफ्त | " | दरयाफ़्त | دریافت | जाँच, टोह, पूछताछ |
| दरवाजा | " | दरवाज़: | دروازہ | द्वार |
| दरवेश | " | दरवेश | درویش | *भिक्षुक |
| दर्रा | " | दर्र: | درّہ | घाटी |
| दरोगा | " | दरोग़: | دروغہ | × |
| दर्ज | अ० | दर्ज | درج | प्रविष्ट, अंकित |
| दर्जी | फ़ा० | दर्ज़ी | درزی | × |
| दर्द | " | दर्द | درد | कष्ट, यातना, पीड़ा |
| दर्दनाक | " | दर्दनाक | دردناک | *कष्टदायक, पीड़ादायक |
| दर्दे दिल | " | दर्दे दिल | دردِ دل | मनःस्ताप |
| दरिया | " | दर्या | دریا | नदी, सरिता |
| दरियाई | " | दर्याई | دریائی | × |
| दरियादिल | फ़ा० | दर्यादिल | دریادل | विशाल हृदय |
| दलील | अ० | दलील | دلیل | तर्क, युक्ति |
| दलाल | " | दल्लाल | دلال | *मध्यस्थ |
| दवा | " | दवा | دوا | औषध, |
| दवाख़ाना | अ०फ़ा० | दवाख़ाना | دواخانہ | औषधालय |
| दवात | अ० | दवात | دوات | *मसिपात्र |
| दवासाज़ | अ० फ़ा० | दवासाज़ | دواساز | × |
| दस्त | फ़ा० | दस्त | دست | शौच, टट्टी |
| दस्तक | " | दस्तक | دستک | × |
| दस्तकारी | " | दस्तकारी | دستکاری | शिल्प |
| दस्तख़त | " | दस्तख़त | دستخط | हस्ताक्षर |
| दस्तावेज़ | " | दस्तावेज़ | دستاویز | *लेखपत्र |
| दस्ताना | " | दस्तान: | دستانہ | × |
| दस्ती | " | दस्ती | دستی | रूमाल |
| दस्तूर | " | दस्तूर | دستور | नियम, विधान, प्रथा |
| दहशत | अ० | दहशत | دہشت | आतंक, भय, डर |
| दहेज | " | जहेज़ | دہیز | × |
| दायरा | " | दाइर: | دائرہ | परिधि, घेरा, वृत्त |
| दाखिल | अ० | दाख़िल | داخل | सम्मिलित |
| दाख़िला | " | दाख़िल: | داخلہ | प्रवेश |
| दाग | फ़ा० | दाग़ | داغ | धब्बा, कलंक |
| दागेजिगर | " | दाग़ेजिगर | داغِ جگر | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दागेदिल | फ़ा० | दाग़ेदिल | داغِ دل | × |
| दाद | ,, | दाद | داد | *प्रशंसा |
| दाना | ,, | दानः | دانہ | × |
| दामन | ,, | दामन | دامن | अंचल |
| दामाद | ,, | दामाद | داماد | *जामाता |
| दाया | ,, | दायः | دایہ | धाय |
| दारचीनी | ,, | दारचीनी | دارچینی | × |
| दारू | ,, | दारू | دارو | मदिरा |
| दारोगा | ,, | दारोग़ः | داروغہ | × |
| दारोमदार | ,, | दारोमदार | دارومدار | निर्भर, आश्रित |
| दालान | ,, | दालान | دالان | ओसारा |
| दावत | अ० | दावत | دعوت | भोज |
| दावतनामा | ,, | दावतनामा | دعوت نامہ | *निमंत्रणपत्र |
| दावा | ,, | दावा | دعویٰ | × |
| दिक | ,, | दिक | دق | तंग |
| दास्तान | फ़ा० | दास्तान | داستان | × |
| दिक्कत | अ० | दिक्कत | دقت | कठिनता, कष्ट |
| दिमाग़ | ,, | दिमाग़ | دماغ | मस्तिष्क |
| दिलपसंद | फ़ा० | दिलपसंद | دل پسند | मनमगन |
| दिल | ,, | दिल | دل | हृदय, मन |
| दिलदार | ,, | दिलदार | دل دار | *प्यारा, प्रेमी |
| दिलरुबा | ,, | दिलरुबा | دل رُبا | प्रेमिका, प्यारी |
| दिलासा | फ़ा० | दिलासा | دلاسا | धैर्य, आश्वासन, ढाढ़स |
| दिली | ,, | दिली | دلی | हार्दिक |
| दिलेर | ,, | दिलेर | دلیر | साहसी, शूर |
| दीगर | ,, | दीग़र | دیگر | अन्य |
| दीन | अ० | दीन | دین | धर्म, पंथ |
| दीमक | फ़ा० | दीमक | دیمک | × |
| दीवाना | ,, | दीवानः | دیوانہ | पागल |
| दीवान | ,, | दीवान | دیوان | *मंत्री |
| दीवानख़ाना | ,, | दीवानख़ानः | دیوان خانہ | *बैठक |
| दीवानी | ,, | दीवानी | دیوانی | *न्यायालय |
| दीवार | फ़ा० | दीवार | دیوار | *भित्ति |
| दुआ | अ० | दुआ | دُعا | *प्रार्थना, स्तुति |
| दुकान | फ़ा० | दुकान | دکان | *पण्यशाला |
| दुकानदार | ,, | दुकानदार | دکان دار | *विक्रेता |
| दुकानदारी | ,, | दुकानदारी | دکان داری | *क्रय-विक्रय |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दुनिया | अ० | दुन्या | دنیا | संसार, जगत् |
| दुम | फ़ा० | दुम | دم | पूंछ |
| दोपाया | " | दुपाय: | دوپایہ | दो टांगों वाला |
| दुतरफ़ा | हिं० | दुतर्फ़: | دوطرفہ | द्विपक्षीय |
| दुबारा | फ़ा० | दुबार: | دوبارہ | पुन: |
| दुमंज़िला | " | दुमंज़िल: | دومنزلہ | × |
| दुरुस्त | " | दुरुस्त | درست | ठीक, सही |
| दुशाला | " | दुशाल: | دوشالہ | × |
| दुश्मन | " | दुश्मन | دشمن | शत्रु, रिपु |
| दुश्मनी | " | दुश्मनी | دشمنی | शत्रुता |
| दुश्वार | " | दुश्वार | دشوار | कठिन |
| दूरबीन | " | दूरबीन | دوربین | दूरदर्शक |
| देगचा | " | देगच: | دیگچہ | × |
| देर | " | देर | دیر | विलम्ब |
| देहात | " | देहात | دیہات | गांव, ग्राम |
| देहाती | " | देहाती | دیہاتی | ग्रामीण |
| दोजख | " | दोज़ख़ | دوزخ | नरक |
| दोस्त | " | दोस्त | دوست | मित्र, सखा |
| दोस्ती | " | दोस्ती | دوستی | मित्रता |
| दोस्ताना | " | दोस्तान: | دوستانہ | मित्रता, मैत्री |
| दौरा | अ० | दौर: | دورہ | चक्कर, भ्रमण |
| दौर | " | दौर | دور | *कालचक्र |
| दौरान | " | दौरान | دوران | बीच, मध्य |
| दौलत | " | दौलत | دولت | धन, सम्पत्ति |
| दौलतखाना | अ०फ़ा० | दौलतख़ान: | دولت خانہ | × |
| दौलतमंद | " " | दौलतमंद | دولت مند | धनवान, धनी |

### न

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नकद | अ० | नक़द | نقد | *रुपया-पैसा |
| नकल | " | नक़्ल | نقل | अनुकरण, प्रतिलिपि |
| नकली | " | नक़्ली | نقلی | कृत्रिम |
| नकाब | " | नक़ाब | نقاب | घूंघट, मुखावरण |
| नक्काल | अ० | नक़्क़ाल | نقال | बहुरूपिया, भांड |
| नक्कारखाना | अ० | नक़्क़ारखाना: | نقارخانہ | × |
| नक्काश | " | नक़्क़ाश | نقاش | × |
| नक्काशी | " | नक़्क़ाशी | نقاشی | × |
| नकशा | " | नक़्श: | نقشہ | आकृति, मानचित्र |
| नख़रा | फ़ा० | नख़र: | نخرہ | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नगीना | फ़ा० | नगीनः | نگینہ | नगर, रत्न |
| नग़मा | " | नग़्मः | نغمہ | गीत, गान |
| नज़दीक | फ़ा० | नज़दीक | نزدیک | समीप |
| नज़र | अ० | नज़र | نظر | दृष्टि, |
| नज़र अंदाज | अ०फ़ा० | नज़र अंदाज़ | نظرانداز | उपेक्षा |
| नज़रबंद | " " | नज़रबंद | نظربند | × |
| नज़रबंदी | " " | नज़रबंदी | نظربندی | * |
| नज़राना | " " | नज़रानः | نذرانہ | उपहार |
| नज़रिया | अ० | नज़रीयः | نظریہ | दृष्टिकोण |
| नज़ला | " | नज़्लः | نزلہ | × |
| नज़ाक़त | फ़ा० | नज़ाक़त | نزاکت | *मृदुलता, सुकोमलता |
| नजात | अ० | नजात | نجات | मुक्ति |
| नज़ारा | " | नज़्ज़ारः | نظارہ | दर्शन, दृश्य |
| नज़दीक | फ़ा० | नज़्दीक | نزدیک | समीप, निकट |
| नज़म | अ० | नज़्म | نظم | पद्य, काव्य |
| नतीजा | " | नतीजः | نتیجہ | परिणाम |
| नदारद | फ़ा० | नदारद | ندارد | *गुप्त, लुप्त |
| नफ़ीस | अ० | नफ़ीस | نفیس | *उत्तम |
| नफ़रत | " | नफ़रत | نفرت | घृणा |
| नफ़ा | " | नफ़अ् | نفع | लाभ |
| नब्ज़ | " | नब्ज़ | نبض | नाड़ी |
| नम | फ़ा० | नम | نم | आर्द्र, गीला |
| नमक | " | नमक | نمک | लवण |
| नमकहराम | " | नमकहराम | نمک حرام | कृतघ्न |
| नमक हलाल | " | नमक हलाल | نمک حلال | कृतज्ञ |
| नमकीन | " | नमकीन | نمکین | × |
| नमाज़ | अ० | नमाज़ | نماز | × |
| नमाज़ी | " | नमाज़ी | نمازی | × |
| नमी | फ़ा० | नमी | نمی | आर्द्रता |
| नमूना | " | नमूनः | نمونہ | *आदर्श |
| नर्म | " (सं. ?) | नर्म | نرم | मृदुल |
| नर्म तबीयत | " | नर्म तबीअत | نرم طبیعت | विनीत, नम्र |
| नर्मदिल | " | नर्मदिल | نرم دل | सहृदय |
| नर्म मिज़ाज | " | नर्म मिज़ाज | نرم مزاج | कोमल हृदय |
| नर्मी | " | नर्मी | نرمی | *मृदुलता |
| नवासा | " | नवासः | نواسہ | नाती |
| नवाब | अ० | नव्वाब | نواب | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नवाबी | अ० | नव्वाबी | نوابی | राजसी |
| नशा | " | नश्शः | نشہ | *मद, उन्माद |
| नशीला | " | नश्शीला | نشیلی | मादक, उन्माद |
| नश्तर | फ़ा० | नश्तर | نشتر | × |
| निशान | फ़ा० | नशान | نشان | चिह्न, लक्षण |
| नसीब | अ० | नसीब | نصیب | भाग्य |
| नसीहत | " | नसीहत | نصیحت | सदुपदेश, उपदेश |
| नसल | " | नस्ल | نسل | वंश, गौत्र |
| नहर | " | नहर | نہر | × |
| नाउम्मीद | फ़ा० | नाउम्मीद | نا امید | निराश |
| नाउम्मीदी | " | नाउम्मीदी | نا امیدی | निराशा |
| नाकाबिल | फ़ा०अ० | नाक़ाबिल | نا قابل | अयोग्य |
| नाकाम | फ़ा० | नाकाम | ناکام | असफल, व्यर्थ |
| नाकामियाब | " | नाकामयाब | ناکامیاب | असफल |
| नाकामियाबी | " | नाकामयाबी | ناکامیابی | असफलता |
| नाकारा | " | नाकारः | ناکارہ | व्यर्थ |
| नाख़ुश | " | नाख़ुश | ناخوش | अप्रसन्न |
| नाख़ून | " | नाख़ून | ناخن | नख |
| नागा | तुर्की | नाग़ः | ناغہ | *अनुपस्थिति, अंतर |
| नागवार | फ़ा० | नागवार | ناگوار | अप्रिय, असह्य |
| नाचीज़ | " | नाचीज़ | ناچیز | हेय, तुच्छ, निकृष्ट |
| नाज़ | " | नाज़ | ناز | अभिमान, गर्व |
| नाजायज़ | फ़ा० अ० | नाजायज़ | ناجائز | अनुचित |
| नाजुक | फ़ा० | नाज़ुक | نازک | मृदुल, कोमल |
| नादान | " | नादान | نادان | * अनभिज्ञ, मूर्ख, अनजा |
| नादानी | " | नादानी | نادانی | * मूर्खता |
| नान | " | नान | نان | रोटी |
| नापसंद | " | नापसंद | ناپسند | अरुचिकर, अप्रिय |
| नामंज़ूर | " | नामंज़ूर | نامنظور | अस्वीकृत |
| नाबालिग | फ़ा० अ० | नाबालिग़ | نابالغ | अवयस्क |
| नामज़द | फ़ा० | नामज़द | نامزد | मनोनीत |
| नामर्द | " | नामर्द | نامرد | भीरु, नपुंसक |
| नामवर | " | नामवर | نامور | प्रसिद्ध, ख्यात |
| नाम | (सं ?) | नाम | نام | यश, प्रतिष्ठा |
| नामाकूल | फ़ा० अ० | नामा'कूल | نامعقول | अनुचित, अपर्याप्त |
| नामालूम | " | नामालूम | نامعلوم | अज्ञात |
| नामी | फ़ा० | नामी | نامی | प्रसिद्ध |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नामुमकिन | फ़ा० अ० | नामुम्किन | ناممکن | असंभव |
| नामुनासिब | ,, | नामुनासिब | نامناسب | अनुचित |
| नायब | ,, | नायब | نایب | सहायक |
| नारंगी | फ़ा० (सं०?) | नारंगी | نارنگی | × |
| नारा | अ० | नारः | نعره | × |
| नाराज़ | फ़ा० अ० | नाराज़ | ناراز | अप्रसन्न |
| नाराज़गी | ,, | × | | × |
| नाराज़ी | अ० | नाराज़ी | ناراضی | अप्रसन्नता |
| नाल | अ० | ना'ल | نعل | × |
| नालायक | फ़ा० अ० | नालाइक़ | نالائق | अयोग्य, निकम्मा |
| नालिश | फ़ा० | नालिश | نالش | *दावा, आर्त्तनाद |
| नाव | ,, | नाव | ناو | नौका |
| नावाक़िफ़ | फ़ा० अ० | नावाक़िफ़ | ناواقف | अज्ञात, अपरिचित |
| नाश्ता | ,, | नाश्ता | ناشتہ | जलपान |
| नासपाती | ,, | नाशपाती | ناشپاتی | × |
| नासाज | ,, | नासाज़ | ناساز | *प्रतिकूल |
| नासूर | अ० | नासूर | ناسور | × |
| नाहक | फ़ा० अ० | नाहक़ | ناحق | अकारण |
| नकाब | अ० | निक़ाब | نقاب | *मुखावरण |
| निकाह | ,, | निकाह | نکاح | विवाह |
| निकाहनामा | अ० फ़ा० | निकाह नामः | نکاح نامہ | विवाह पत्र |
| निगरानी | फ़ा० | निगरानी | نگرانی | देखभाल |
| निगाह | ,, | निगाह | نگاہ | दृष्टि |
| निगाहबान | ,, | निगाह बान | نگاہ بان | संरक्षक |
| नियामत | अ० | नेअमत | نعمت | × |
| निवाला | फ़ा० | निवालः | نوالہ | ग्रास, कौर |
| निशान | ,, | निशान | نشان | चिह्न |
| निशाना | ,, | निशानः | نشانہ | लक्ष्य |
| निशानी | ,, | निशानी | نشانی | स्मृति, चिह्न |
| निस्बत | ,, | निस्बत | نسبت | सम्बन्ध |
| निहायत | अ० | निहायत | نہایت | अत्यंत |
| निहाल | फ़ा० | निहाल | نہال | प्रफुल्ल, धन्य |
| नीयत | अ० | नीयत | نیت | *संकल्प, आशय, उद्देश्य |
| नील | फ़ा० (सं ?) | नील | نیل | × |
| नुकीला | ,, | नुकीला | نکیلا | तीक्ष्ण |
| नुक़्ता | अ० | नुक़्तः | نقطہ | बिंदु, बिंदी |
| नुक़्ताचीन | अ० फ़ा० | नुक़्तःचीन | نقطہ چیں | मीनमेख, आलोचना |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नुकसान | अ० | नुक़्सान | نقصان | हानि, क्षति |
| नुक्स | " | नुक़्स | نقص | दोष, त्रुटि |
| नुमाइन्दा | फ़ा० | नुमाइंदः | نمائندہ | प्रतिनिधि |
| नुमाइश | " | नुमाइश | نمائش | प्रदर्शन |
| नुस्खा | अ० | नुस्खः | نسخہ | × |
| नूर | " | नूर | نور | प्रकाश, आभा |
| नेक | फ़ा० | नेक | نیک | *सच्चा, सज्जन |
| नेकख़याल | " | नेकख़याल | نیک خیال | उत्तम विचार |
| नेक दिल | " | नेकदिल | نیک دل | पुण्यात्मा |
| नेकनाम | " | नेकनाम | نیک نام | यशस्वी |
| नेकनामी | " | नेकनामी | نیک نامی | कीर्ति, यश |
| नेकनीयत | " | नेकनीयत | نیک نیت | सदाशय |
| नेकी | " | नेकी | نیکی | भलाई, उपकार |
| नोक | फ़ा० | नोक | نوک | *सिरा |
| नोकदार | " | नौकदार | نوک دار | × |
| नौकर | तु० | नौकर | نوکر | *सेवक, कर्मचारी |
| नौकरानी | तु० + हिं० | नौकरानी | نوکرانی | *सेविका |
| नौकरशाही | तु० फा० | नौकरशाही | نوکرشاہی | × |
| नौकरी | फ़ा० | नौकरी | نوکری | सेवा |
| नौसादर | " | नौसादर | نوسادر | × |
| नौजवान | फ़ा० | नौजवान | نوجوان | नवयुवक |
| नौजवानी | " | नौजवानी | نوجوانی | युवावस्था |
| नौनिहाल | " | नौनिहाल | نونہال | बालक, शिशु |
| नौबत | अ० | नौबत | نوبت | *दुर्दशा |

## प

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पंजा | फ़ा० (सं० ?) | पंजः | پنجہ | × |
| पंचसाला | " | पंचसालः | پنجسالہ | पंचवर्षीय |
| पनीर | " | पनीर | پنیر | × |
| पनाह | " | पनाह | پناہ | आश्रय, शरण |
| पयाम | " | पयाम | پیام | संदेश |
| परिंदा | " | परिंदः | پرندہ | पक्षी |
| पर | " | पर | پر | पंख |
| परकार | " | परकार | پرکار | × |
| परवाना | " | परवाना | پروانہ | पतंगा, शलभ, आज्ञापत्र |
| परवानगी | " | परवानगी | پروانگی | आज्ञा, अनुमति |
| परहेज | " | परहेज़ | پرہیز | *पथ्य |
| परी | " | परी | پری | अप्सरा |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| परेशान | फ़ा० | परीशान | پریشان | व्याकुल |
| परेशानी | ,, | परीशानी | پریشانی | व्याकुलता |
| परगना | ,, | परगन: | پرگنہ | × |
| पर्चा | ,, | पर्च: | پرچہ | प्रश्नपत्र |
| पर्चम | ,, | पर्चम | پرچم | झंडा, पताका |
| पर्दा | ,, | पर्द: | پردہ | आड़, घूंघट |
| पर्दानशीन | ,, | पर्द:नशीं | پردہ نشیں | × |
| परवा | ,, | पर्वा | پروا | *चिंता, ध्यान |
| परवरिश | ,, | पर्वरिश | پرورش | पालन-पोषण |
| पलक | ,, | पलक | پلک | × |
| पलीता | ,, | पलीत: | پلیتہ | × |
| पल्ला | ,, | पल्ल: | پلہ | *पलड़ा |
| पसंद | ,, | पसंद | پسند | रुचिकर, प्रिय |
| पस्त | ,, | पस्त | پست | टूटना |
| पस्तहिम्मत | ,, | पस्तहिम्मत | پست ہمت | हतोत्साह |
| पहलवान | ,, | पहलवान | پہلوان | मल्ल |
| पहलवानी | ,, | पहलवानी | پہلوانی | × |
| पहलू | ,, | पहलू | پہلو | *पार्श्व, पक्ष |
| पाक | ,, | पाक | پاک | पवित्र, स्वच्छ |
| पाकीज़ा | ,, | पाकीज़: | پاکیزہ | पवित्र, स्वच्छ |
| पाख़ाना | ,, | पाख़ान: | پاخانہ | शौच, शौचालय, टट्टी |
| पाजामा | ,, | पाजाम: | پاجامہ | × |
| पाजी | ,, | पाजी | پاجی | पामर, अधम, नीच |
| पानदान | ,, | पानदान | پان دان | × |
| पाबंद | ,, | पाबंद | پابند | × |
| पाबंदी | ,, | पाबंदी | پابندی | बाध्यता, रोक |
| पारसाल | ,, | पारसाल | پارسال | गतवर्ष |
| पासंग | ,, | पासंग | پاسنگ | × |
| पिस्ता | ,, | पिस्त: | پستہ | × |
| पुख़्ता | ,, | पुख़्त: | پختہ | दृढ़ |
| पुरजोश | ,, | पुरजोश | پرجوش | *उत्साही |
| पुर्ज़ा | ,, | पुर्ज़: | پرزہ | खंड, टुकड़ा |
| पुल | ,, | पुल | پل | सेतु |
| पुलाव | ,, (सं० ?) | पलाव | پلاو | × |
| पुश्त | ,, | पुश्त | پشت | पीढ़ी |
| पुश्त दर पुश्त | ,, | पुश्त् दर पुश्त | پشت در پشت | पीढ़ी दर पीढ़ी |
| पुश्तैनी | ,, | पुश्तैनी | پشتینی | पैत्रक, वंशानुकाल |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पेच | फ़ा० | पेच | پیچ | घुमाव, चक्कर |
| पेंचकस | ” | पेचकश | پیچکش | × |
| पेंचदार | ” | पेचदार | پیچ دار | घुमावदार |
| पेचिश | ” | पेचिश | پیچش | अतिसार |
| पेचीदगी | ” | पेचीदगी | پیچیدگی | जटिलता |
| पेचीदा | ” | पेचीद: | پیچیدہ | टेढ़ा |
| पेशा | ” | पेश: | پیشہ | उद्योग, व्यवसाय |
| पेश | ” | पेश | پیش | उपस्थित, सम्मुख |
| पेशकार | ” | पेशकार | پیش کار | × |
| पेशगी | ” | पेशगी | پیشگی | अग्रिमधन |
| पेशानी | ” | पेशानी | پیشانی | ललाट, भाल |
| पेशाब | ” | पेशाब | پیشاب | मूत्र |
| पेशावर | ” | पेश:वर | پیشہ ور | व्यावसायिक |
| पेशी | ” | पेशी | پیشی | × |
| पैगंबर | ” | पैग़ंबर | پیغمبر | अवतार |
| पैगाम | ” | पैग़ाम | پیغام | संदेश |
| पैदा | ” | पैदा | پیدا | उत्पन्न, प्रसूत |
| पैदाइश | ” | पैदाइश | پیدائش | उत्पत्ति, जन्म |
| पैदावार | ” | पैदावार | پیداوار | उपज |
| पैमाइश | ” | पैमाइश | پیمائش | नाप, माप |
| पैमाना | ” | पैमान: | پیمانہ | *पान-पात्र |
| पैरवी | ” | पैरवी | پیروی | × |
| पैबंद | ” | पैवंद | پیوند | *जोड़ |
| पैसा | ” | पैस: | پیسہ | *धन |
| पोदीना | ” | पोदीन: | پودینہ | × |
| पोशाक | ” | पोशाक | پوشاک | *वसन, वस्त्र |
| प्याज | ” | पियाज़ | پیاز | × |
| प्यादा | ” | पियाद: | پیادہ | पैदल, पदाति |
| प्याला | ” | पियाल: | پیالہ | *कटोरा, चषक |

**फ-फ़**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फक | अ० | फ़क | فق | निष्प्रभ, निस्तेज |
| फकत | फ़ा० | फ़क़त | فقط | केवल |
| फकीर | ” | फ़क़ीर | فقیر | साधु, भिक्षुक |
| फ़ख्र | ” | फ़ख्र | فخر | गर्व, अभिमान |
| फजीहत | ” | फ़ज़ीहत | فضیحت | अपमान |
| फ़तह | ” | फ़तह | فتح | विजय |
| फ़न | ” | फ़न | فن | कला |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फ़ना | फ़ा० | फ़ना | فنا | प्रलय |
| फ़िरंगी | '' | फ़रंगी | فرنگی | अंग्रेज |
| फ़रफ़र | '' | फ़रफ़र | فرفر | *जल्दी-जल्दी |
| फ़रागत | अ० | फ़रागत | فراغت | अवकाश, निश्चितता |
| फ़रार | फ़ा० | फ़रार | فرار | *पलायन, भागना |
| फ़रिश्ता | '' | फ़िरिश्त | فرشتہ | देवता |
| फ़रेब | '' | फ़रेब | فریب | छलकपट, धोखा |
| फ़रोख्त | '' | फ़रोख्त | فروخت | बिक्री, विक्रय |
| फ़रक | '' | फ़र्क़ | فرق | अंतर, भेद |
| फ़र्ज | '' | फ़र्ज़ | فرض | कर्तव्य |
| फ़र्जी | '' | फ़र्जी | فرضی | बनावटी, कल्पित |
| फ़र्माबदार | '' | फ़र्माबर्दार | فرمانبرداری | आज्ञाकारी |
| फ़र्माइशी | '' | फ़र्माइशी | فرمائشی | × |
| फ़र्माइश | '' | फ़र्माइश | فرمائش | *याचना, मांगना |
| फ़र्मान | '' | फ़र्मान | فرمان | राजादेश |
| फ़रमाना | '' | फ़रमानः | فرمانہ | आज्ञादेना, कहना |
| फ़र्श | अ० | फ़र्श | فرش | × |
| फ़रार | '' | फ़िरार | فرار | भागना |
| फ़रियाद | फ़ा० | फ़र्याद | فریاد | *विनती |
| फ़लसफ़ | अ० | फ़ल्सफ़ः | فلسفہ | दर्शन |
| फ़लाना | '' | फ़ुलां | فلاں | अमुक |
| फ़व्वारा | '' | फ़व्वारः | فوارہ | × |
| फ़साद | '' | फ़साद | فساد | उपद्रव, विद्रोह |
| फ़साना | फ़ा० | फ़सानः | فسانہ | कहानी, कथा |
| फ़सल | अ० | फ़स्ल | فصل | ऋतु, पैदावार |
| फ़सील | '' | फ़सील | فصیل | परकोटा |
| फ़ायदा | '' | फ़ाइदः | فائدہ | लाभ |
| फ़ायदेमंद | '' | फ़इदःमंद | فائدہ مند | लाभदायक |
| फ़ाका | '' | फ़ाकः | فاقہ | निराहार |
| फ़ाकामस्त | अ०फ़ा० | फ़ाकःमस्त | فاقہ مست | × |
| फ़ाक्ता | अ० | फ़ाख़्तः | فاختہ | × |
| फ़ारिग | '' | फ़ारिग़ | فارغ | मुक्त, निश्चित, छुटकारा |
| फ़ासला | '' | फ़ासिला | فاصلہ | अंतर, दूरी |
| फ़िक्र | '' | फ़िक्र | فکر | चिंता |
| फ़िज़ा | '' | फ़ज़ा | فضا | वातावरण, दृश्य. |
| फ़ितरत | '' | फ़ित्रत | فطرت | प्रकृति, स्वभाव, प्रवृति |
| फ़िदा | '' | फ़िदा | فدا | मुग्ध,आसक्त |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फ़िरक़ा | फ़ा० | फ़िर्क़: | فرقہ | सम्प्रदाय, दल |
| फ़िरक़ापरस्त | " | फ़िर्क़: परस्त | فرقہ پرست | दलबंदी, साम्प्रदायिक |
| फ़िरक़ावारी | " | फ़िर्क़:वारी | فرقہ واری | दलबंदी |
| फ़िराक़ | अ० | फ़िराक़ | فراق | ध्यान, वियोग |
| फ़िलवक़्त | फ़ा० | फ़िलवक़्त | فی الوقت | × |
| फ़िलहाल | " | फ़िलहाल | فی الحال | × |
| फ़ीता | " | फ़ीत: | فیتہ | × |
| फ़ीसदी | " | फ़ीसदी | فیصدی | प्रतिशत |
| फ़िज़ूल | अ० | फ़ुज़ूल | فضول | निरर्थक, व्यर्थ |
| फ़िज़ूलखर्च | " | फ़ुज़ूलख़र्च | فضول خرچ | अपव्ययी |
| फ़ुर्सत | " | फ़ुर्सत | فرصت | अवकाश |
| फ़ेहरिस्त | " | फ़ेहरिस्त | فہرست | सूची |
| फ़ैसला | " | फ़ैसल: | فیصلہ | निर्णय |
| फ़ौज | " | फ़ौज | فوج | सेना |
| फ़ौजदारी | अ० फ़ा० | फ़ौजदारी | فوجداری | × |
| फ़ौरन | अ० | फ़ौरन | فوراً | तुरंत, शीघ्र |
| फ़ौलाद | " | फ़ौलाद | فولاد | × |
| फ़ौलादी | " | फ़ौलादी | فولادی | × |
| फ़ौवारा | " | फ़व्वार: | فوارہ | × |

**ब**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बंदा | फ़ा० | बंद: | بندہ | दास, भक्त, सेवक |
| बंद | " | बंद | بند | × |
| बंदर | अ० | बंदर | بندر | × |
| बंदगी | फ़ा० | बंदगी | بندگی | पूजा, वंदना |
| बंदिश | " | बंदिश | بندش | × |
| बंदी | " | बंदी | بندی | × |
| बंदूक | अ० | बंदूक़ | بندوق | *शतघ्नी |
| बंदोबस्त | फ़ा० | बंदोबस्त | بندوبست | प्रबंध, व्यवस्था |
| बाअदब | फ़ा० अ० | बाअदब | باادب | सविनय |
| बक़ाया | अ० | बक़ाय: | بقایہ | शेष |
| बख़ुशी | फ़ा० | बख़ुशी | بخوشی | प्रसन्नतापूर्वक |
| बख़ूबी | " | बख़ूबी | بخوبی | × |
| बख्शिश | " | बख्शिश | بخشش | दान-दक्षिणा |
| बग़ल | " | बग़ल | بغل | पार्श्व |
| बगावत | अ० | बग़ावत | بغاوت | विद्रोह, अवज्ञा |
| बग़ैर | फ़ा० | बग़ैर | بغیر | बिना |
| बच्चा | " | बच्च: | بچہ | बालक, शिशु |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बच्चादानी | फ़ा० | बच्च।दानी | بچہ دانی | गर्भाशय |
| बजा | " | बजा | بجا | उचित, ठीक |
| बजाज | अ | बज़्ज़ाज़ | بزاز | × |
| बजाये | फ़ा० | बजाए | بجائے | × |
| बतख़ | अ० | बत (बतख़) | بط (بطخ) | × |
| बद | " | बद | بد | *निकृष्ट, बुरा |
| बदक़िस्मत | फ़ा० अ० | बदक़िस्मत | بدقسمت | दुर्भाग्य, अभागा |
| बदजात | " " | बदज़ात | بدذات | नीच,अधम |
| बदतमीज | " " | बदतमीज़ | بدتمیز | अशिष्ट, असभ्य |
| बददुआ | " " | बददुआ | بددعا | शाप |
| बदन | अ० | बदन | بدن | शरीर, देह |
| बदनसीब | फ़ा०अ० | बदनसीब | بدنصیب | दुर्भाग्यवान, अभागा |
| बदनाम | " | बदनाम | بدنام | *कुख्यात, कलंकित |
| बदनामी | " | बदनामी | بدنامی | *कुख्याति, कलंक |
| बदनीयत | फ़ा०अ० | बदनीयत | بدنیت | × |
| बदनुमा | " | बदनुमा | بدنما | कुरूप |
| बदबू | " | बदबू | بدبو | दुर्गन्ध |
| बदबूदार | " | बदबूदार | بدبودار | दुर्गन्धयुक्त |
| बदमाश | फ़ा०अ० | बदमआ़श | بدمعاش | × |
| बदमाशी | " " | बदमआ़शी | بدمعاشی | × |
| बदमज़ा | फ़ा० | बदमज़: | بدمزہ | *कुस्वाद, कुरुचि, |
| बदरंग | " | बदरंग | بدرنگ | × |
| बदला | अ० | बदला | بدلا | प्रतिकार, विनिमय |
| बदली | अ० | बदली | بدلی | स्थानांतरण, परिवर्तन |
| बदशक्ल | फ़ा०अ० | बदशक्ल | بدشکل | कुरूप |
| बदसूरत | फ़ा०अ० | बदसूरत | بدصورت | कुरूप |
| बदस्तूर | फ़ा० | बदस्तूर | بدستور | यथावत, नियमानुसार |
| बदहवास | फ़ा०अ० | बदहवास | بدحواس | *हतबुद्धि, विकल |
| बदौलत | " " | बदौलत | بدولت | कारण |
| बयान | अ० | बयान | بیان | वर्णन,वक्तव्य |
| बयानी | अ०फ़० | बैआनः | بیعانہ | × |
| बरकत | अ० | बरकत | برکت | *बढ़ती, वृद्धि |
| बरकरार | फ़ा०अ० | बरक़रार | برقرار | स्थिर, उपस्थित,विद्यमान |
| बरखास्त | फ़ा० | बरख़ास्त | برخاست | समाप्त, निकालना |
| बरखुर्दार | " | बरख़ुर्दार | برخوردار | पुत्र, सौभाग्यशाली |
| बरतरफ़ | फ़ा०अ० | बरतरफ़ | برطرف | पदच्युत |
| बरदाश्त | फ़ा० | बरदाश्त | برداشت | सहन, सहिष्णुता |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बरबाद | फ़ा० | बरबाद | برباد | ध्वस्त, नष्ट, विनष्ट |
| बरबादी | " | बरबादी | بربادی | विनाश, नाश |
| बरायेनाम | " | बराएनाम | برائے نام | नाम मात्र |
| बिरादर | " | बिरादर | برادر | भाई |
| बिरादरी | " | बरादरी | برادری | जाति |
| बरामदा | " | बरामद: | برامدہ | × |
| बरी | अ० | बरी | بری | मुक्त |
| बरामद | फ़ा० | बरामद | برامد | निर्यात |
| बराबर | " | बराबर | برابر | समान, तुल्य |
| बराबरी | " | बराबरी | برابری | समानता |
| बर्फ़ | " | बर्फ़ | برف | हिम |
| बर्फ़ानी | " | बर्फ़ानी | برفانی | हिमाच्छादित |
| बर्फ़ी | " | बर्फ़ी | برفی | × |
| बर्फ़ीली | फ़ा + हिं० | बर्फ़ीली | برفیلی | हिममय |
| बल्कि | अ० | बल्कि | بلکہ | अपितु, वरन् |
| बलगम | " | बल्ग़म | بلغم | × |
| बल्वा | " | बल्वा | بلوا | विद्रोह, उपद्रव |
| बला | " | बला | بلا | विपत्ति |
| बल्दिया | " | बल्दिय: | بلدیہ | नगरपालिका |
| बस | फ़ा० | बस | بس | पर्याप्त, अलम |
| बवासीर | अ० | बवासीर | بواسیر | × |
| बस्ता | फ़ा० | बस्त: | بستہ | × |
| बहरहाल | फ़ा०अ० | बहरहाल | بہرحال | *अस्तु |
| बहादुर | तु० | बहादुर | بہادر | शूर, वीर |
| बहादुरी | " | बहादुरी | بہادری | शूरता, वीरता |
| बहाना | फ़ा० | बहान: | بہانہ | व्याज, निमित्त |
| बहानेबाज | " | बहान:बाज़ | بہانہ باز | × |
| बहार | " | बहार | بہار | वसन्तऋतु |
| बहाल | " | बहाल | بحال | पुनर्नियुक्त |
| बहाली | ,, | बहाली | بحالی | पुनर्नियुक्ति |
| बहस | अ० | बह्स | بحث | वादविवाद |
| बांग | फ़ा० | बांग | بانگ | *स्वर, ध्वनि |
| बाअदब | फ़ा०अ० | बाअदब | باادب | शिष्टतापूर्वक, विनयपूर्वक |
| बाकमाल | ,, ,, | बाकमाल | باکمال | × |
| बाक़ायदा | ,, | बाक़ाइद: | باقاعدہ | विधिवत्, नियमानुसार |
| बाकी | अ० | बाक़ी | باقی | शेष |
| बाग | फ़ा० | बाग़ | باغ | उद्यान |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बागबाग | ,, | बाग़बाग़ | باغباغ | *आनन्दातिरेक, अतिप्रसन्नता |
| बागवान | ,, | बाग़बान | باغبان | माली |
| बागी | अ० | बाग़ी | باغی | विद्रोही |
| बाज | फ़ा० | बाज़ | باز | श्येन |
| बाज़ | ,, | बा'ज़ | بعض | कुछ, कतिपय |
| बाजार | ,, | बाज़ार | بازار | हाट |
| बाज़ी | ,, | बाज़ी | بازی | × |
| बाजीगर | ,, | बाज़ीगर | بازی گر | × |
| बाजू | ,, | बाज़ू | بازو | बाहु, पार्श्व |
| बाजूबंद | ,, | बाज़ूबंद | بازوبند | भुजबंद |
| बाद | ,, | बा'द | بعد | पश्चात् |
| बादशाह | ,, | बादशाह | بادشاه | शासक, राजा |
| बादाम | ,, | बादाम | بادام | × |
| बादामी | ,, | बादामी | بادامی | × |
| बादी | ,, | बादी | بادی | × |
| बाबत | ,, | बाबत | بابت | संबंध |
| बाबा | अ० | बाबा | بابا | पिता, दादा |
| बारिश | फ़ा० | बारिश | بارش | वर्षा |
| बारी | ,, (सं०?) | बारी | باری | पारी |
| बारीक | ,, | बारीक | باریک | महीन, सूक्ष्म |
| बारूद | ,, | बारूद | بارود | × |
| बालिग | अ० | बालिग़ | بالغ | वयस्क |
| बालिश्त | फ़ा० | बालिश्त | بالشت | × |
| बावर्ची | ,, | बावर्ची | باورچی | रसोइया, पाचक |
| बावजूद | ,, अ० | बावुजूद | باوجود | *यद्यपि |
| बियाबान | फ़ा० | बियाबान | بیابان | वन |
| बिरयानी | ,, | बिर्यानी | بریانی | × |
| बिलावजह | अ० | बिलवज्ह. | بالوجه | अकारण |
| बिल्कुल | ,, | बिल्कुल | بالکل | नितांत |
| बिलानागा | अ०तु० | बिलानाग़: | بلاناغه | *नित्यप्रति, निरंतर |
| बिलाशक | अ० | बिलाशक | بلاشک | निःसंदेह |
| बिसात | ,, | बिसात | بساط | सामर्थ्य |
| बिसाती | ,, | बिसाती | بساطی | × |
| बिस्तर | फ़ा० | बिस्तर | بستر | शैय्या |
| बहिश्त | ,, | बिहिश्त | بهشت | स्वर्ग |
| बीमार | ,, | बीमार | بیمار | रोगी |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बीमारी | " | बीमारी | بیماری | रोग |
| बुख़ार | फ़ा० | बुख़ार | بخار | ज्वर |
| बुज़दिल | " | बुज़दिल | بزدل | भीरु |
| बुज़दिली | " | बुज़दिली | بزدلی | भीरुता |
| बुजुर्ग | " | बुज़ुर्ग | بزرگ | वयोवृद्ध, पूर्वज |
| बुजुर्गाना | " | बुज़ुर्गाना | بزرگانہ | × |
| बुत | " | बुत | بُت | मूर्ति |
| बुतखाना | " | बुतखान: | بت خانہ | मंदिर |
| बुतपरस्त | " | बुतपरस्त | بت پرست | मूर्तिपूजक |
| बुनियाद | " | बुन्याद | بُنیاد | *आधार, मूल, नींव |
| बुनियादी | " | बुनियादी | بنیادی | आधारभूत, मौलिक |
| बुरादा | " | बुराद: | بُرادہ | × |
| बुर्का | अ० | बुर्क़ा | برقع | *मुखपट |
| बुर्कापोश | अ०फ़ा० | बुर्क़ापोश | برقع پوش | × |
| बुर्ज | अ० | बुर्ज | برج | गुंबद |
| बुलंद | फ़ा० | बलंद | بلند | उच्च, ऊँचा, उन्नत |
| बुलंदी | " | बलंदी | بلندی | उच्चता, उन्नति ऊँचाई |
| बुलबुल | " | बुलबुल | بُلبُل | × |
| बू | " | बू | بو | गंध |
| बेअक़ल | फ़ा०अ० | बेअक़्ल | بے عقل | मूर्ख |
| बेअदब | " " | बेअदब | بے ادب | धृष्ट, असभ्य |
| बेअसर | " " | बेअसर | بے اثر | निष्फल, प्रवाहहीन |
| बेइज्जत | " " | बेइज़्ज़त | بے عزت | अपमानित, अवमानित |
| बेइज्जती | " " | बेइज़्ज़ती | بے عزتی | अपमान, अवमान |
| बेईमान | " " | बेईमान | بے ایمان | × |
| बेईमानी | " " | बेईमानी | بے ایمانی | × |
| बेकरार | " " | बेक़रार | بے قرار | व्याकुल, अशांति |
| बेकाबू | फ़ा० | बेक़ाबू | بے قابو | *निरंकुश |
| बेकार | " | बेकार | بے کار | व्यर्थ, निष्फल |
| बेकारी | " | बेकारी | بے کاری | *प्रयोगहीनता, निष्प्रयोजन |
| बेकसूर | " | बेक़ुसूर | بے قصور | निर्दोष, निरपराध |
| बेख़बर | " | बेख़बर | بے خبر | *संज्ञाहीन, सुधहीन, अज्ञात |
| बेखुदी | फ़ा० | बेख़ुदी | بے خودی | *अचैत्य, संज्ञाशून्यता |
| बेगम[1] | तु० | बेगम | بیگم | श्रीमती, पत्नी, महोदया |
| बेगाना | फ़ा० | बेगान: | بے گانہ | अपरिचित, पराया |
| बेगार | " | बेगार | بے گار | × |
| बेगारी | " | बेगारी | بے گاری | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बेगुनाह | ,, | बेगुनाह् | بے گناہ | निर्दोष, निरपराध |
| बेचारा | ,, | बेचारः | بیچارہ | *दीन, निस्सहाय |
| बेजबान | ,, | बेज़बान | بے زبان | मूक |
| बेजा | ,, | बेजा | بے جا | अनुचित |
| बेजान | ,, | बेजान | بے جان | निर्जीव, निष्प्राण |
| बेज़ार | ,, | बेज़ार | بے زار | *विमुख, दुःखी |
| बेतकल्लुफ़ | ,, | बेतकल्लुफ़ | بے تکلف | निःसंकोच |
| बेताब | ,, | बेताब | بے تاب | व्याकुल, अशांत |
| बेतहाशा | ,, | बेतहाशा | بے تحاشا | अंधाधुंध |
| बेदख़ल | ,, | बेदख़्ल | بے دخل | अधिकारच्युत, पदच्युत |
| बेदम | ,, | बेदम | بے دم | अशक्त, निर्बल |
| बेदर्दी | ,, | बेदर्दी | بے دردی | निर्दयता |
| बेदाग | ,, | बेदाग़ | بے داغ | निर्दोष, निरपराध |
| बेदाना | ,, | बेदानः | بے دانہ | × |
| बेनसीब | फ़ा०अ० | बेनसीब | بے نصیب | भाग्यहीन, अभागा |
| बेफ़िक्र | ,, ,, | बेफ़िक्र | بے فکر | निश्चित |
| बेफ़िक्री | ,, ,, | बेफ़िक्री | بے فکری | निश्चितता |
| बेबाक | ,, ,, | बेबाक़ | بے باق | *ऋणमुक्त, चुकता |
| बेबुनियाद | फ़ा० | बेबुन्याद | بے بنیاد | निराधार |
| बेमजा | ,, | बेमजः | بے مزہ | नीरस |
| बेमानी | ,, | बेमानी | بیمانی | निरर्थक |
| बेमिसाल | ,, ,, | बेमिसाल | بے مثال | अनुपम, अतुल्य |
| बेमौका | ,, ,, | बेमौक़अ़ | بے موقعہ | अनुचित, असमय |
| बेरहम | ,, ,, | बेरह्म | بے رحم | निर्दय |
| बेरोजगारी | ,, | बेरोज़गारी | بے روزگاری | × |
| बेलगाम | फ़ा० | बेलगाम | بے لگام | निरंकुश |
| बेलदार | ,, | बेलदार | بیلدار | × |
| बेवा | ,, | बेवः | بیوہ | विधवा |
| बेवक़्त | फ़ा०अ० | बेवक़्त | بے وقت | असमय |
| बेवजह | ,, ,, | बेवजह | بے وجہ | अकारण |
| बेवफ़ा | ,, ,, | बेवफ़ा | بے وفا | कृतघ्नता |
| बेवफ़ाई | ,, ,, | बेवफ़ाई | بے وفائی | कृतघ्न |
| बेवक़ूफ़ | ,, ,, | बेवक़ूफ़ | بے وقوف | मूर्ख, अज्ञानी |
| बेशक | ,, ,, | बेशक | بے شک | निःसंदेह |
| बेशकीमत | ,, ,, | बेशक़ीमत | بیش قیمت | अमूल्य, बहुमूल्य |
| बेशर्म | ,, ,, | बेशर्म | بے شرم | निर्लज्ज |
| बेशर्मी | ,, ,, | बेशर्मी | بے شرمی | निर्लज्जता |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बेशुमार | " " | बेशुमार | بےشمار | असंख्य, अगणित |
| बेसबब | " " | बेसबब | بےسبب | अकारण |
| बेसब्र | " " | बेसब्र | بےصبر | अधीर |
| बेहद | " " | बेहद | بےحد | अत्यधिक, अनन्त |
| बेहया | " " | बेहया | بےحیا | निर्लज्ज |
| बेहयाई | " " | बेहयाई | بےحیائی | निर्लज्जता |
| बेहिसाब | " " | बेहिसाब | بےحساب | असंख्य, अगणित |
| बेहूदा | फ़ा० | बेहूदः | بیہودہ | अशिष्ट, मूर्ख, असभ्य |
| बेहूदगी | " | बेहूदगी | بیہودگی | अशिष्टता, मूर्खता |
| बेहोश | " | बेहोश | بےہوش | अचेत, निश्चेष्ट |
| बेहोशी | " | बेहोशी | بےہوشی | निश्चेष्टता, अचैतन्य |
| बोरिया | " | बोरिया | بوریا | चटाई |
| बोसा | " | बोसः | بوسہ | चुंबन |

म

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मंज़र | अ० | मंज़र | منظر | दृश्य |
| मंज़िल | " | मंज़िल | منزل | *पड़ाव, गंतव्य |
| मंज़ूर | " | मंज़ूर | منظور | स्वीकृत |
| मंशा | " | मंशा | منشا | आशय, अर्थ |
| मंसब | " | मंसब | منصب | *पद, अधिकार |
| मंसबदार | अ० फ़ा० | मंसबदार | منصبدار | पदाधिकारी |
| मंसूबा | अ० | मंसूब: | منصوبہ | योजना |
| मकान | " | मकान | مکان | गृह, घर |
| मकानदार | अ० फ़ा० | मकानदार | مکان دار | गृहस्वामी |
| मकानात | अ० | मकानाता | مکانات | घर |
| मुकाम | " | मक़ाम | مقام | स्थान, घर, स्थल |
| मक्कार | " | मक्कार | مکار | धूर्त |
| मक्कारी | " | मक्कारी | مکاری | धूर्तता |
| मकबरा | " | मक़बर: | مقبرہ | समाधि |
| मक़सद | " | मक़सद | مقصد | आशय, उद्देश्य |
| मख़मल | फ़ा० | मख़्मल | مخمل | × |
| मख़मली | " | मख़्मली | مخملی | × |
| मगर | " | मगर | مگر | परन्तु |
| मगज | " | मग़्ज़ | مغز | मस्तिष्क |
| मगरिब | " | मग़्रिब | مغرب | पश्चिम |
| मगरिबी | अ० | मग़्रिबी | مغربی | पश्चिमी |
| मगरूर | " | मग़्रूर | مغرور | अहंकारी, घमंडी |
| मजा | फ़ा० | मज़: | مزہ | स्वाद, आनन्द |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मजेदार | ,, | मज़:दार | مزہ دار | स्वादिष्ट, मनोरंजक |
| मजाकिया | अ़० | मज़ाकिया | مزاقیہ | × |
| मज़ार | फ़ा० | मज़ार | مزار | समाधि |
| मजाल | अ़० | मजाल | مجال | *शक्ति, सामर्थ्य |
| मजदूर | फ़ा० | मज़्दूर | مزدور | श्रमिक |
| मज़दूरी | ,, | मज़्दूरी | مزدوری | पारिश्रमिक |
| मज़बूत | अ़० | मज़्बूत | مضبوط | दृढ़, शक्तिशाली |
| मजबूती | ,, | मज़्बूती | مضبوطی | दृढ़ता, शक्ति |
| मजनूं | ,, | मज्नूं | مجنوں | *पागल, प्रेमी |
| मजबूर | ,, | मज्बूर | مجبور | विवश, बाध्य |
| मजबूरन | ,, | मज्बूरन | مجبوراً | विवशतापूर्वक |
| मजबूरी | ,, | मज्बूरी | مجبوری | विवशता, लाचारी |
| मजमा | ,, | मज्मअ़ | مجمع | भीड़, समूह, जमघट |
| मजमून | ,, | मज़्मून | مضمون | निबंध, लेख, विषय |
| मजलिस | ,, | मज्लिस | مجلس | सभा, समिति |
| मतलब | ,, | मत्लब | مطلب | उद्देश्य, स्वार्थ, अर्थ, आशय |
| मतलबी | ,, | मत्लबी | مطلبی | स्वार्थी |
| मदद | ,, | मदद | مدد | सहायता, सहयोग |
| मददगार | अ़०फ़ा० | मददगार | مددگار | सहायक |
| मदरसा | अ़० | मदरिस: | مدرسہ | पाठशाला |
| मदहोश | फ़ा० | मद्होश | مدہوش | बेसुध, उन्मत, निश्चेष्ट |
| मदहोशी | ,, | मद्होशी | مدہوشی | उन्मतता, बेसुधपन, निश्चेष्टता |
| मन | ,, | मन | من | × |
| मनाही | ,, | मनाही | مناہی | निषिद्ध, रोक, निषेध |
| मना | ,, | मन्अ़ | منع | रोकना, निषेध, निषिद्ध |
| मनहूस | ,, | मन्हूस | منحوس | *अशुभ, अभागा |
| मयस्सर | ,, | मयस्सर | میسّر | प्राप्त, उपलब्ध |
| मुनाफा | ,, | मनाफ़अ़ | منافع | लाभ |
| मरतबा | ,, | मरतब: | مرتبہ | बार |
| मरम्मत | ,, | मरम्मत | مرمت | जीर्णोद्धार, ठीक, |
| मर्ज़ | ,, | मर्ज़ | مرض | रोग, व्याधि |
| मरीज | ,, | मरीज़ | مریض | रोगी |
| मरकजी | ,, | मर्कज़ी | مرکزی | केन्द्रीय |
| मर्जी | फ़ा० | मर्ज़ी | مرضی | इच्छा, स्वीकृति |
| मर्दाना | ,, | मर्दान: | مردانہ | पुरुषोचित |
| मर्द | ,, | मर्द | مرد | पुरुष, पति |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मर्दानगी | " | मर्दानगी | مردانگی | पुरुषत्व |
| मर्दुमशुमारी | " | मर्दुमशुमारी | مردم شماری | जनगणना |
| मरहम | " | मर्हम | مرہم | × |
| मलाल | अ० | मलाल | ملال | दुःख, कष्ट, पश्चात्ताप |
| मल्लाह | " | मल्लाह | ملاح | नाविक |
| मवाद | " | मवाद् | مواد | पीप, रक्त |
| मवेशी | " | मवाशी | مویشی | पशु |
| मशक्कत | " | मशक़्क़त | مشقت | कष्ट, परिश्रम |
| मश्क | " | मश्क़ | مشق | अभ्यास |
| मशक | फ़ा० | मश्क | مشک | × |
| मशगूल | अ० | मश्गूल | مشغول | प्रवृत्त लीन, व्यस्त |
| मशविरा | " | मश्वुरः | مشورہ | परामर्श |
| मशहूर | " | मश्हूर | مشہور | प्रसिद्ध |
| मशाल | " | मशअ्ल | مشعل | × |
| मसीहा | " | मसीहा | مسیحا | × |
| मसखरा | " | मस्ख़रः | مسخرہ | विदूषक, हंसोड़ |
| मसला | " | मस्अ्लः | مسئلہ | समस्या, विषय |
| मस्जिद | " | मस्जिद | مسجد | × |
| मस्त | फ़ा० | मस्त | مست | मदोन्मत्त |
| मस्ताना | " | मस्तानः | مستانہ | मत्त, उन्मत्त |
| मस्ती | " | मस्ती | مستی | नशा, उन्माद |
| मस्नद | अ० | मस्नद | مسند | × |
| मसनवी | " | मस्नवी | مثنوی | × |
| मसरूफ़ | " | मस्रूफ़ | مصروف | प्रवृत्त, संलग्न; व्यस्त |
| मसबिदा | " | मुसव्वदः | مسودہ | प्रारूप |
| मुहब्बत | " | महब्बत | محبت | प्रेम, प्यार, स्नेह |
| महल | " | महल | محل | प्रासाद |
| मुहल्ला | " | महल्लः | محلہ | × |
| महफ़िल | " | महफ़िल | محفل | सभा, गोष्ठी |
| महीना | फ़ा० | महीनः | مہینہ | मास |
| महकमा | " | महकमः | محکمہ | विभाग |
| महज | अ० | महज़ | محض | केवल, शुद्ध |
| महबूबा | " | महबूबः | محبوبہ | प्रेयसी |
| महबूब | " | महबूब | محبوب | प्रेमी |
| महसूल | " | महसूल | محصول | चुंगी, लगान, राजस्व |
| महसूस | " | महसूस | محسوس | अनुभूति |
| माकूल | अ० | मा'कूल | معقول | उचित, पर्याप्त |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| माजरा | ,, | माजरा | ماجرا | वृतांत, घटना |
| मात | ,, | मात | مات | पराजय |
| मातम | फ़ा० | मातम | ماتم | मृत्यु, शोक |
| मातहत | अ० | मातहत | ماتحت | अधीन |
| मादा | फ़ा० | मादः | مادہ | नारी, स्त्री |
| मानिंद | ,, | मानिंद | مانند | समान, तुल्य |
| मानी | अ० | मा'नी | معنی | अर्थ, अभिप्राय, भाव |
| माफ | ,, | मुआफ़ | معاف | क्षमा |
| मामूल | ,, | मामूल | معمول | *नित्यनियम, रीति |
| माफ़िक | ,, | मुआफ़िक़ | موافق | अनुकूल, समान |
| मामूली | ,, | मामूली | معمولی | साधारण |
| मायूस | ,, | मायूस | مایوس | निराश |
| मारफ़त | ,, | मारफ़त | معرفت | द्वारा |
| माल | ,, | माल | مال | धन, सम्पत्ति, वस्तु |
| मालगुजारी | ,, | मालगुज़ारी | مال گزاری | भूमिकर |
| मायूसी | ,, | मायूसी | مایوسی | निराशा |
| माल | फ़ा० | माल | مال | धन, सम्पत्ति, वस्तु |
| मालदार | अ०फ़ा० | मालदार | مالدار | धनी, धनवान |
| मालामाल | फ़ा० | मालामाल | مالامال | सम्पन्न |
| मालिक | अ० | मालिक | مالک | स्वामी |
| मालियत | ,, | मालियत | مالیت | *धन, सम्पत्ति, मूल्य |
| मालिश | फ़ा० | मालिश | مالش | *मर्दन |
| माली | अ० | माली | مالی | आर्थिक |
| मालूम | ,, | मा'लूम | معلوم | ज्ञात |
| मालूमात | ,, | मालूमात | معلومات | ज्ञान, जानकारी |
| माशा | फ़ा० | माशः | ماشہ | × |
| माशाअल्ला | अ० | माशाअल्लाह | ماشاءاللہ | साधु-साधु, धन्य-धन्य |
| माशूका | ,, | मा'शूक़ः | معشوقہ | प्रेयसी |
| माशूक | ,, | माशूक़ | معشوق | प्रियतम |
| मासूम | ,, | मा'सूम | معصوم | निष्पाप, कोमल, भोला |
| मासूमियत | ,, | मा'सूमियत | معصومیت | भोलापन |
| माह | फ़ा० (सं०?) | माह | ماہ | मास |
| माहवार | ,, (सं०?) | माहवार | ماہوار | मासिक |
| माहवारी | ,, (सं०?) | माहवारी | ماہواری | मासिकधर्म |
| माहिर | ,, | माहिर | ماہر | दक्ष, कुशल |
| महिना | फ़ा० | माहीनः | ماہینہ | मास |
| मेकदार | अ० | मिक़्दार | مقدار | मात्रा, तौल |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मिजाज | ,, | मिज़ाज | مزاج | स्वभाव, प्रकृति |
| मिजाजपुर्सी | ,, | मिज़ाजपुर्सी | مزاج پرسی | × |
| मिलकियत | ,, | मिल्कियत | ملکیت | संपत्ति |
| मियान | फ़ा० | मियान | میان | × |
| मिसाल | अ० | मिसाल | مثال | उदाहर |
| मिसरा | ,, | मिस्रअ् | مصرعہ | चरण |
| मेहतर | फ़ा० | मिहतर | مہتر | भंगीण |
| मेहतरानी | फ़ा०हि० | मिह्तरानी | مہترانی | भंगिन |
| मेहरबानी | फ़ा० | मिह्रबानी | مہربانی | कृपा, दया |
| मेहरबान | ,, | मिह्रबान | مہربان | दयालु, कृपालु |
| मियाद | अ० | मीआद | میعاد | अवधि, निश्चितकाल |
| मिसरी | ,, | मिस्री | مصری | × |
| मीनाकारी | फ़ा० | मीनाकारी | میناکاری | जड़ाऊ काम |
| मील | अ० (अंग्रेज़ी?) | मील | میل | × |
| मुंशी | अं० | मुंशी | منشی | लिपिक, लेखक |
| मुंसिफ़ | ,, | मुंसिफ़ | منصف | न्यायाधिकर्त्ता, न्यायकर्त्ता |
| मुअत्तिल | ,, | मुअत्तल | معطل | निलंबित |
| मुआमला | ,, | मुआमलः | معاملہ | घटना, विषय |
| मुआयना | ,, | मुआयनः | معاینہ | निरीक्षण |
| मुआवजा | ,, | मुआवज़ः | معاوضہ | × |
| मुकद्दमा | ,, | मुक़द्दमः | مقدمہ | *नालिश, दावा |
| मुकद्दर | ,, | मुक़द्दर | مقدر | भाग्य |
| मुकम्मिल | ,, | मुकम्मल | مکمل | संपूर्ण, पूरा, पूर्ण |
| मुकर्रर | ,, | मुकर्रर | مکرر | निश्चित |
| मुकाबला | ,, | मुक़ाबलः | مقابلہ | आमना-सामना, प्रतियोगिता, तुलना |
| मुख़बिर | ,, | मुख़बिर | مخبر | भेदिया, गुप्तचर |
| मुख़ातिब | ,, | मुख़ातब | مخاطب | *सम्बोधन |
| मुख़ालिफ़ | ,, | मुख़ालिफ़ | مخالف | विरोध, विरुद्ध |
| मुख़्तलिफ़ | ,, | मुख़्तलिफ़ | مختلف | विभिन्न, विविध |
| मुख़्तसर | ,, | मुख़्तसर | مختصر | संक्षिप्त |
| मुजरिम | ,, | मुज्रिम | مجرم | दोषी, अपराधी |
| मुताबिक | ,, | मुताबिक़ | مطابق | अनुसार |
| मुद्दा | ,, | मुद्दआ | مدعا | आशय, उद्देश्य |
| मुद्दई | ,, | मुद्दई | مدعی | वादी |
| मुद्दत | ,, | मुद्दत | مدت | *अवधि |
| मुनक्का | ,, | मुनक़्क़ा | منقیٰ | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मुनादी | ,, | मुनादी | منادی | घोषणा |
| मुनाफा | ,, | मुनाफ़अ: | منافعہ | लाभ |
| मुनासिब | ,, | मुनासिब | مناسب | उचित |
| मुनीम | ,, | मुनीम | منیم | × |
| मुफ़ीद | ,, | मुफ़ीद | مفید | उपयोगी, लाभकारी |
| मुफ़्त | फ़ा० | मुफ़्त | مفت | *निर्मूल्य |
| मुफ़्तखोर | ,, | मुफ़्तख़ोर | مفت خور | × |
| मुबारक | अ० | मुबारक | مبارک | बधाई, शुभ, मंगलप्रद, |
| मुबारकबाद | अ० फ़ा० | मुबारकबाद | مبارک باد | शुभकामना, बधाई |
| मुबाहसा | अ० | मुबाहस: | مباحثہ | तर्क-वितर्क |
| मुरब्बा | ,, | मुरब्बा | مربّی | × |
| मुरव्वत | ,, | मुरव्वत | مروت | शील-संकोच |
| मुराद | ,, | मुराद | مراد | अभिलाषा, कामना |
| मुर्गा | फ़ा० | मुर्ग़: | مرغہ | कुक्कुट |
| मुर्दा | ,, | मुर्द: | مردہ | मृत, निष्प्राण |
| मुर्दनी | फ़ा० | मुर्दनी | مردنی | × |
| मुलाकात | अ० | मुलाक़ात | ملاقات | भेंट, साक्षात्कार |
| मुलम्मा | ,, | मुलम्मअ़ | ملمع | × |
| मुलाजिम | ,, | मुलाज़िम | ملازم | सेवक, नौकर |
| मुलाहजा | ,, | मुलाहज: | ملاحظہ | देखना, सम्मुख, अनुशीलन |
| मुलायम | ,, | मुलाइम | ملائم | कोमल, मृदुल |
| मुल्तवी | ,, | मुल्तवी | ملتوی | स्थगित |
| मुल्जिम | ,, | मुल्ज़म | ملزم | अपराधी |
| मुल्क | ,, | मुल्क | ملک | देश, राष्ट्र |
| मुल्ला | ,, | मुल्ला | مُلّا | पंडित |
| मुवक्किल | ,, | मुवक्किल | موکل | × |
| मुशायरा | ,, | मुशाअ़र: | مشاعرہ | कवि सम्मेलन |
| मुश्किल | ,, | मुश्किल | مشکل | कठिन |
| मुसलमान | ,, | मुस्लमान | مسلمان | × |
| मुसलमानी | ,, | मुस्लमानी | مسلمانی | × |
| मुसाफिर | ,, | मुसाफ़िर | مسافر | यात्री, पथिक |
| मसावी | ,, | मसावी | مساوی | समान, तुल्य, सम |
| मुसीबत | ,, | मुसीबत | مصیبت | संकट, विपत्ति |
| मुस्तकिल | ,, | मुस्तक़िल | مستقل | अटल, स्थायी |
| मोहताज | ,, | मुहताज | محتاج | दरिद्र, भिखारी |
| मुहर | फ़ा० | मुहर | مہر | मुद्रिका, ठप्पा |
| मुहावरा | अ० | मुहावर: | محاورہ | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मूसक | अ़ | मूसा | موسیٰ | × |
| मेज़ | फ़ा | मेज़ | میز | × |
| मेजवान | " | मेज़बान | میزبان | अतिथेय |
| मेहमान | " | मेह्मान | مہمان | अतिथि |
| मेवा | " | मेव: | میوہ | × |
| मेहरबान | " | मेह्रबान | مہربان | दयालु, मित्र, कृपालु |
| मयखाना | " | मैख़ान: | میخانہ | मधुशाला |
| मैदा | " | मैद: | میدہ | × |
| मैदान | " | मैदान | میدان | × |
| मैदानजंग | " | मैदानजंग | میدان جنگ | युद्धक्षेत्र |
| मौजा | " | मोज़: | موزہ | × |
| मोम | " | मोम | موم | × |
| मोमजामा | " | मोमजाम: | موم جامہ | × |
| मोरचा | " | मोरच: | مورچہ | *युद्ध |
| मोहरा | " | मोहर: | مہرہ | गोट |
| मोहलत | अ० | मुहलत | مہلت | अवकाश, समय |
| मौका | " | मौक़अ़ | موقعہ | अवसर |
| मौज | " | मौज | موج | तरंग, आनंद, उत्साह |
| मौज़ | " | मौज़ | موز | केला, कदली |
| मौज़ूं | " | मौज़ूं | موزوں | उचित, यथोचित, ठीक-ठी |
| मौजूदा | " | मौजूद: | موجودہ | वर्तमान, आधुनिक |
| मौजूद | " | मौजूद | موجود | उपस्थित |
| मौत | " | मौत | موت | मृत्यु |
| मौलवी | " | मौल्वी | مولوی | विद्वान |
| मौलाना | " | मौलाना | مولانا | × |
| मौसम | " | मौसिम | موسم | ऋतु |

### य

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यक ब यक | फ़ा० | यक ब यक | یک بیک | अचानक, सहसा |
| यकाएक | " | यकायक | یکایک | अकस्मात, सहसा |
| यकसां | " | यकसां | یکساں | समान |
| यकीन | अ़० | यक़ीन | یقین | विश्वास, भरोसा |
| यकीनन | " | यक़ीनन | یقیناً | निःसंदेह, विश्वासपूर्वक |
| यक्का | फ़ा० | यक्क: | یکہ | इक्का, एक्का |
| यतीम | अ़० | यतीम | یتیم | अनाथ |
| या | फ़ा० | या | یا | अथवा |
| याद | " | याद | یاد | स्मृति, स्मरण |
| यादगार | " | यादगार | یادگار | स्मृति-चिह्न, स्मारक |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| याददाश्त | फ़ा० | याददाश्त | یادداشت | स्मरणशक्ति, स्मति |
| यानी | अ़० | या'नी | یعنی | अर्थात् |
| यार | फ़ा० | यार | یار | *मित्र, सहायक |
| यारी | " | यारी | یاری | *मित्रता |
| | | **र** | | |
| रंग | " | रंग | رنگ | वर्ण |
| रंगत | अ़० | रंगत | رنگت | दशा, शोभा |
| रंगरेज | फ़ा० | रंगरेज़ | رنگریز | × |
| रंगसाज | " | रंगसाज़ | رنگ ساز | × |
| रंगसाजी | " | रंगसाज़ी | رنگ سازی | × |
| रंगारंग | " | रंगारंग | رنگارنگ | चित्र-विचित्र |
| रंगीन | " | रंगीन | رنگین | * विलासी |
| रंज | " | रंज | رنج | दु:ख, शोक |
| रंजीदा | " | रंजीद: | رنجیدہ | दु:खी, संतप्त, शोकाकुल |
| रंजीदगी | " | रंजीदगी | رنجیدگی | संताप, दु:ख, शोक |
| रंजोगम | " | रंजोग़म | رنج و غم | कष्ट और दु:ख |
| रंदा | " (सं.) | रंद: | رندہ | बढ़ई का |
| रईस | अ़० | रईस | رئیس | धनाढ्य, धनी |
| रकम | " | रक़म | رقم | रुपया, धन |
| रकाबी | फ़ा० | रिकाबी | رکابی | × |
| रग | " | रग | رگ | स्नायु, नस |
| रजामंद | अ़० फ़ा० | रिज़ामंद | رضامند | सहमत |
| रजामंदी | " | रिज़ामंदी | رضامندی | सहमति |
| रद्द | अ़० | रद (द्द) | ردّ | * निरस्त |
| रफू | " | रफ़ू | رفو | × |
| रद्दोबदल | " | रद्दोबदल | ردوبدل | परिवर्तन |
| रफ्तार | फ़ा० | रफ़्तार | رفتار | चाल, गति |
| रबी | अ़० | रबीअ | ربیع | × |
| रवाना | फ़ा० | रवान: | روانہ | * प्रस्थित, प्रेषित |
| रवानगी | " | रवानगी | روانگی | प्रस्थान, प्रयाण |
| रवानी | " | रवानी | روانی | बहाव, धार, प्रवाह |
| रसद | अ़० | रसद | رسد | * खाद्य सामग्री |
| रसीद | फ़ा० | रसीद | رسید | * प्राप्ति पत्र |
| रस्म | अ़० | रस्म | رسم | परंपरा, रीति |
| रस्मी | " | रस्मी | رسمی | * परंपरित, साधारण |
| रहगीर | फ़ा० | रहगीर | رہگیر | पथिक |
| रहनुमा | " | रहनुमा | رہنما | पथप्रदर्शक |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रहनुमाई | फ़ा | रहनुमाई | رہنمائی | पथ प्रदर्शन |
| रहबर | " | रहबर | رہبر | पथप्रदर्शक |
| रहन | " | रह्‌न | رہن | बंधक |
| रहननामा | अ॰ फ़ा॰ | रह्‌न नामः | رہن نامہ | बंधक पत्र |
| रहम | अ॰ | रह्‌म | رحم | करुणा, दया |
| रहमदिल | अ॰ फ़ा॰ | रहमदिल | رحم دل | सदय, दयालु |
| राज | फ़ा॰ | राज़ | راز | रहस्य, भेद |
| राजी | अ॰ | राज़ी | راضی | सहमत, सम्मत |
| राजीनामा | अ॰ फ़ा॰ | राज़ीनामा | راضی نامہ | संधिपत्र |
| राय | अ॰ | राय | رائے | विचार, मत |
| रास्ता | फ़ा॰ | रास्तः | راستہ | मार्ग, पथ |
| राह | " | राह | راہ | मार्ग, पथ |
| राह ख़र्च | " | राह ख़र्च | راہ خرچ | मार्गव्यय |
| राहगीर | " | राहगीर | راہگیر | पथिक |
| राहत | अ॰ | राहत | راحت | सुख, शांति |
| राही | फ़ा॰ | राही | راہی | पथिक |
| रियाज | अ॰ | रियाज़त | ریاضت | अभ्यास, प्रयास |
| रियाया | " | रिआया | رعایا | प्रजा |
| रियासत | " | रियासत | ریاست | * राज्य |
| रियायत | " | रिआयत | رعایت | × |
| रिवाज | " | रिवाज | رواج | प्रथा, चलन |
| रिश्ता | फ़ा॰ | रिश्तः | رشتہ | सम्बन्ध |
| रिश्तेदार | " | रिश्तःदार | رشتہ دار | स्वजन, सम्बन्ध |
| रिश्तेदारी | " | रिश्तःदारी | رشتہ داری | स्वजनता, सम्बन्ध |
| रिश्वत | अ॰ | रिश्वत | رشوت | घूस |
| रिसाला | " | रिसालः | رسالہ | पत्रिका |
| रिहाई | फ़ा॰ | रिहाई | رہائی | मुक्ति, छुटकारा |
| रुखसत | अ॰ | रुख़सत | رخصت | बिदाई, अवकाश |
| रुतबा | " | रुत्बः | رتبہ | पद, महत्ता, प्रभाव |
| रुबाई | " | रुबाई | رباعی | × |
| रुस्तम | फ़ा॰ | रुस्तम | رستم | शूरवीर |
| रुसवाई | " | रुस्वाई | رسوائی | कलंक, निंदा, अपयश |
| रूबरू | " | रूबरू | رو برو | प्रत्यक्ष, सम्मुख |
| रूह | अ॰ | रूह | روح | प्राणवायु, जीवात्मा, आत्मा |
| रूहानी | " | रूहानी | روحانی | आत्मिक, आध्यात्मिक |
| रेगिस्तान | फ़ा॰ | रेगिस्तान | ریگستان | मरुस्थल |
| रेगमाल | " | रेगमाल | ریگ مال | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रेख्ता | फ़ा | रेख़्त: | ریختہ | × |
| रेजगारी | ,, | रेज़गारी | ریزگاری | छुट्टा |
| रेशा | ,, | रेश: | ریشہ | * तंतु |
| रेशम | ,, | रेशम | ریشم | × |
| रेशमी | ,, | रेश्मी | ریشمی | × |
| रोज | ,, | रोज़ | روز | प्रतिदिन |
| रोजगारी | ,, | रोज़गारी | روزگاری | उद्योग, व्यवसाय |
| रोज-ब-रोज | ,, | रोज़ ब रोज़ | روز بروز | प्रतिदिन |
| रोजमर्रा | अ० फ़ा० | रोज़मर्र: | روزمرّہ | प्रतिदिन |
| रोज-रोज | ,, | रोज़-रोज़ | روز روز | प्रतिदिन |
| रोजा | ,, | रोज़: | روزہ | व्रत, उपवास |
| रोज़ाना | ,, | रोज़ान: | روزانہ | प्रतिदिन |
| रोज़ी | ,, | रोज़ी | روزی | आजीविका, वृत्ति |
| रोब | अ० | रोब | رعب | आतंक, धाक |
| रोबदार | अ० फ़ा० | रोबदार | رعب دار | * आतंकी, आतंकपूर्ण |
| रोगन | अ० | रोग़न | روغن | × |
| रौनक | ,, | रौनक़ | رونق | शोभा, छटा |
| रोशन | ,, | रोशन | روشن | प्रकाशित |
| रोशनदान | ,, | रोशनदान् | روشن دان | झरोखा |
| रोशनाई | ,, | रौशनाई | روشنائی | * मसि |
| रोशनी | ,, | रौशनी | روشنی | प्रकाश, आभा |
| रौ | फ़ा० | रौ | رَو | प्रवाह, झोंका |

## ल

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लंगर | फ़ा० | लंगर | لنگر | × |
| लंगरखाना | ,, | लंगरख़ान: | لنگرخانہ | * अन्न-सत्र |
| लगाम | ,, | लगाम | لگام | रास |
| लज्जत | अ० | लज़्ज़त | لذت | स्वाद |
| लत | ,, | लत | لت | व्यसन |
| लतीफा | ,, | लतीफ़: | لطیفہ | चुटकुला |
| लफंगा | फ़ा० | लफ़ंग: | لفنگہ | * अधम, नीच |
| लफ्ज | ,, | लफ़्ज़ | لفظ | शब्द, बोल |
| लबादा | ,, | लबाद: | لبادہ | × |
| लब | ,, | लब | لب | ओष्ठ |
| लबालब | ,, | लबालब | لبالب | भरपूर, मुहाँमुँह |
| लमहा | ,, | लम्ह: | لمحہ | क्षण, पल |
| लश्कर | ,, | लश्कर | لشکر | सेना |
| लहजा | अ० | लह्ज: | لہجہ | *ढंग, शैली |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लाचार | " | लाचार | لاچار | असमर्थ, असहाय |
| लायक | " | लाइक़ | لائق | योग्य, उपयुक्त |
| लाइलाज | " | लाइलाज | لاعلاج | दुष्कर, असाध्य |
| लाजबाब | " | लाजबाब | لاجواب | *अद्वितीय, निरुत्तर |
| लाजमी | " | लाज़िमी | لازمی | आवश्यक, अनिवार्य |
| लानत | " | ला'नत | لعنت | धिक्कार |
| लाला | फ़ा० | लाला | لالا | *दास, सेवक |
| लावारिस | अ़० | लावारिस | لاوارث | × |
| लाश | फ़ा० | लाश | لاش | शव |
| लिबास | " | लिबास | لباس | वस्त्र, वसन |
| लियाकत | अ़० | लियाक़त | لیاقت | योग्यता, क्षमता |
| लिहाज़ | " | लिहाज़ | لحاظ | आदर, संकोच, ध्यान |
| लिहाज़ा | " | लिह् ज़ा | لہذا | इसलिए, अत: |
| लिहाफ़ | " | लिहाफ़ | لحاف | × |
| लुंगी | फ़ा० | लुंगी | لنگی | जांघिया |
| लुत्फ़ | अ़० | लुत्फ़ | لطف | *आनन्द |
| लिफ़ाफ़ा | फ़ा० | लिफ़ाफ़: | لفافہ | × |
| लेकिन | फ़ा० | लेकिन | لیکن | परन्तु |
| लेजिम | " | लेज़म | لیزم | × |
| लोबिया | " | लोबिया | لوبیا | × |

**व**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वकालत | अ़० | वकालत | وکالت | × |
| वकील | " | वकील | وکیل | × |
| वक्त | " | वक़्त | وقت | समय, काल |
| वग़ैरह | " | वग़ैरह | وغیرہ | आदि, इत्यादि |
| वज़न | " | वज़न | وزن | भार, बोझ |
| वज़ीफ़ा | " | वज़ीफ़ा | وظیفہ | छात्रवृत्ति, वृत्ति, निवृत्तिवेतन |
| वज़नी | " | वज़्नी | وزنی | भारी, बोझिल |
| वज़ीर | " | वज़ीर | وزیر | मंत्री |
| वजह | " | वजह | وجہ | कारण, हेतु |
| वतन | " | वतन | وطن | स्वदेश, जन्मभूमि |
| वफ़ा | अ़० | वफ़ा | وفا | *भक्ति |
| वफ़ादार | अ़०फ़ा० | वफ़ादार | وفادار | *भक्त, आज्ञापालक |
| वफ़ादारी | " " | वफ़ादारी | وفاداری | *भक्ति, आज्ञापालन |
| विरासत | अ़० | वरासत | وراثت | उत्तराधिकार |
| वर्जिश | फ़ा० | वर्ज़िश | ورزش | व्यायाम |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बर्ना | ,, | वर्नः | ورنہ | अन्यथा |
| वरदी | अं० | वर्दी | وردی | × |
| वल्लाह | ,, | वल्लाह | وللہ | × |
| वसीयत | ,, | वसीयत | وصیت | × |
| वसीयतनामा | अ़०फ़ा० | वसीयतनामः | وصیت نامہ | × |
| वहम | अ़० | वह्‌म | وہم | भ्रम, शंका |
| वहमी | ,, | बह्‌मी | وہمی | शंकालु |
| वाकया | ,, | वाक़िअ़: | واقعہ | घटना, वृत्तांत, समाचार |
| वाकयात | ,, | वाक़िआ़त | واقعات | समाचार, वृत्तांत |
| वाकई | ,, | वाक़िई | واقعی | यथार्थतः, सच |
| वाकिफ़ | ,, | वाक़िफ़ | واقف | अभिज्ञ, परिचित |
| वाजिब | ,, | वाजिब | واجب | उचित, ठीक |
| वादा | ,, | वा'दाः | وعدہ | प्रतिज्ञा, वचन |
| वादाखिलाफ | ,, | वा'दाख़िलाफ़ | وعدہ خلاف | × |
| वापस | ,, | वापस | واپس | प्रत्यावर्तन, लौटना |
| वापसी | ,, | वापसी | واپسی | प्रत्यागमन, लौटना |
| वार | ,, | वार | وار | आघात |
| वारदात | अ़० | वारि़दात | واردات | दुर्घटनाएँ |
| वारिस | ,, | वारिस | وارث | उत्तराधिकारी |
| वालिदा | ,, | वालिदः | والدہ | माता |
| वालिद | ,, | वालिद | والد | पिता, जनक |
| वास्ता | ,, | वासितः | واسطہ | संबंध, संपर्क |
| वाह | फ़ा० | वाह | واہ | धन्य, साधु |
| वाह वाह | ,, | वाह वाह | واہ واہ | धन्य, धन्य |
| वाहियात | अ़० | वाहियात | واہیات | निरर्थक |
| विदा | ,, | वदाअ़ (विदाअ़) | وداع | जाना, गमन |
| विलायत | ,, | विलायत | ولایت | इंग्लैंड |
| विलायती | ,, | विलायती | ولایتی | × |
| वीरान | फ़ा० | वीरान | ویران | निर्जन स्थान, वन, खंडहर |
| वसूल | अ़० | वुसूल | وصول | प्राप्त |
| वसूली | ,, | वुसूली | وصولی | प्राप्ति |

**श**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शऊर | ,, | शुऊ़र | شعور | विवेक, समझ, शिष्टता |
| शक | ,, | शक | شک | शंका, आशंका |
| शक्कर | फ़ा० (सं०) | शकर | شکر | सर्करा, खांड, चीनी |
| शकरकंद | ,, | शकरक़ंद | شکرقند | × |
| शकरपारा | ,, | शकरपारः | شکرپارہ | × |

| शक्की | अ० | शक्की | شکی | शंकालु |
|---|---|---|---|---|
| शकल | ,, | शक्ल | شکل | आकृति, आकार |
| शिकवा | ,, | शक्वा | شکوا | × |
| शख़्स | ,, | शख़्स | شخص | व्यक्ति |
| शख़्सी | ,, | शख़्सी | شخصی | व्यक्तिगत |
| शतरंज | फ़ा० (सं०) | शत्रंज | شطرنج | × |
| शतरंजी | ,, | शत्रंजी | شطرنجی | दरी |
| शिनाख़्त | ,, | शनाख़्त | شناخت | पहचान, लक्षण |
| शब | ,, | शब | شب | निशा, रात्रि |
| शबनम | ,, | शबनम | شبنم | ओस |
| शमा | अ. | शमअ् | شمع | *दीपक |
| शमला | ,, | शम्लः | شملہ | *पगड़ी |
| शमशीर | फ़ा० | शम्शीर | شمشیر | असि, कृपाण |
| शराब | अ० | शराब | شراب | मदिरा |
| शराबख़ाना | अ०फ़ा० | शराबख़ाना | شراب خانہ | मदिरालय |
| शराबख़ोर | अ. | शराबख़ोर | شراب خور | *मद्यप |
| शराबी | ,, | शराबी | شرابی | मद्यप |
| शराफ़त | ,, | शराफत | شرافت | शालीनता, सज्जनता |
| शरारत | ,, | शरारत | شرارت | उपद्रव, दुष्टता |
| शरारतन | ,, | शरारतन | شرارتاً | × |
| शरारतपसंद | अ० फ़ा० | शरारतपसंद | شرارت پسند | उपद्रवप्रिय |
| शरारती | अ० | शरारती | شرارتی | उपद्रवी |
| शरीक | ,, | शरीक | شریک | साझीदार, प्रवेश, सम्मिलित |
| शरीफ़ | ,, | शरीफ़ | شریف | कुलीन, शालीन,सुशील |
| शरीर | ,, | शरीर | شریر | दुष्ट, उपद्रवी |
| शर्त | ,, | शर्त | شرط | दांव |
| शर्बत | ,, | शर्बत | شربت | × |
| शर्बती | ,, | शर्बती | شربتی | × |
| शर्म | फ़ा० | शर्म | شرم | लज्जा, लाज |
| शर्मनाक | ,, | शर्मनाक | شرمناک | लज्जाजनक |
| शर्मिन्दा | ,, | शर्मिन्दः | شرمندہ | लज्जित |
| शर्मोहया | ,, | शर्मोहया | شرم وحیا | लाज और शर्म |
| शह | ,, | शह | شہہ | × |
| शहजादा | ,, | शहज़ादः | شہزادہ | राजकुमार |
| शहतीर | ,, | शहतीर | شہتیر | × |
| शहतूत | ,, | शहतूत | شہتوت | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शहनाई | अ० | शहनाई | شہنائی | × |
| शहादत | ,, | शहादत | شہادت | साक्षी, प्रमाण |
| शहीद | ,, | शहीद | شہید | हुतात्मा |
| शहद | फ़ा० | शहद | شہد | मधु |
| शहर | ,, | शह्र | شہر | नगर |
| शहरी | ,, | शह्री | شہری | नगरनिवासी, नागरिक |
| शायर | अ० | शाईर | شاعر | कवि |
| शायरी | ,, | शाइ़री | شاعری | कविता |
| शाया | ,, | शायअ़ | شائع | प्रकाशित |
| शाख | फ़ा० (सं०) | शाख़ | شاخ | शाखा |
| शागिर्द | ,, | शागिर्द | شاگرد | विद्यार्थी, शिष्य |
| शागिर्दी | ,, | शागिर्दी | شاگردی | शिष्यत्व |
| शादी | ,, | शादी | شادی | विवाह |
| शादीशुदा | ,, | शादीशुदः | شادی شدہ | विवाहित |
| शान | अ० | शान | شان | वैभव, भव्यता |
| शानो-शौकत | ,, | शानोशौकत | شان وشوکت | ठाटबाट, तड़क-भड़क |
| शाबाश | ,, | शाबाश | شاباش | धन्य |
| शाबाशी | ,, | शाबाशी | شاباشی | साधुवाद |
| शाम | फ़ा० | शाम | شام | संध्या, सायंकाल |
| शामत | अ० | शामत | شامت | दुर्भाग्य, विपत्ति |
| शामियाना | फ़ा० | शामियानः | شامیانہ | तंबू |
| शामिल | अ० | शामिल | شامل | सम्मिलित |
| शायद | फ़ा० | शायद | شاید | कदाचित् |
| शाल | ,, | शाल | شال | × |
| शाहंशाह | ,, | शाहंशाह | شہنشاہ | सम्राट् |
| शाहजादा | ,, | शाहज़ादः | شاہزادہ | युवराज |
| शाही | ,, | शाही | شاہی | राजकीय |
| शिकंजा | ,, | शिकंजः | شکنجہ | × |
| शिकन | फ़ा० | शिकन | شکن | झुर्री, बल |
| शिकस्त | ,, | शिकस्त | شکست | पराजय, हार |
| शिकायत | अ० | शिकायत | شکایت | पिशुनता, उपालंभ |
| शिकार | फ़ा० | शिकार | شکار | मृगया, आखेट |
| शिकारी | ,, | शिकारी | شکاری | आखेटक |
| शीरा | ,, | शीरः | شیرہ | × |
| शीशा | फ़ा० | शीशः | شیشہ | दर्पण |
| शुक्र | अ० | शुक्र | شکر | कृतज्ञता, धन्यवाद |
| शुक्रगुजार | अ० फ़ा० | शुक्रगुज़ार | شکرگذار | कृतज्ञ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शुक्रिया | अ० | शुक्रियः | شکریہ | धन्यवाद |
| शुतुरमुर्ग | फ़ा० | शुतुरमुर्ग़ | شترمرغ | × |
| शुबहा | अ० | शुब्हः | شبہ | आशंका, संदेह |
| शुमार | फ़ा० | शुमार | شمار | गिनती, गणना |
| शुरू | ,, | शुरूअ् | شروع | आरम्भ, आदि, प्रारम्भ |
| शुरुआत | ,, | शुरुआ़त | شروعات | आरम्भ, प्रारम्भ |
| शेख़ी | ,, | शेख़ी | شیخی | डींग |
| शेर | ,, | शेर | شیر | व्याघ्र, सिंह |
| शेरदिल | ,, | शेरदिल | شیردل | × |
| शैतान | ,, | शैतान | شیطان | दुष्ट, उपद्रवी |
| शोर | फ़ा० | शोर | شور | कोलाहल |
| शोरा | ,, | शोरः | شورہ | × |
| शोरबा | ,, | शोरबः | شوربہ | *रसा |
| शोरगुल | ,, | शोरोग़ुल | شوروغل | कोलाहल |
| शोला | अ० | शुअ़लः | شعلہ | अग्नि ज्वाला |
| शोहरत | ,, | शुहरत | شہرت | प्रसिद्धि, ख्याति, आकांक्षा |
| शौक | ,, | शौक़ | شوق | चाह, लालसा |
| शौकिया | ,, | शौक़ियः | شوقیہ | × |
| शौकीन | ,, | शौक़ीन | شوقین | × |
| शौहर | फ़ा० | शौहर | شوہر | पति, स्वामी |

स

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| संगतराश | फ़ा० | संगतराश | سنگ تراش | × |
| संगतराशी | ,, | संगतराशी | سنگ تراشی | × |
| संगदिल | ,, | संगदिल | سنگ دل | निर्दय, वज्र, हृदय |
| संगीन | ,, | संगीन | سنگین | कठिन, विकट |
| संगमर्मर | ,, | संगमर्मर | سنگ مرمر | × |
| संजीदा | ,, | संजीदः | سنجیدہ | गम्भीर, शांत |
| संजीदगी | ,, | संजीदगी | سنجیدگی | गम्भीरता |
| संदल | अ० | संदल | صندل | चन्दन |
| संदूक | ,, | संदूक़ | صندوق | पेटी |
| सख्त | फ़ा० | सख़्त | سخت | कठोर, कड़ा |
| सख्ती | ,, | सख़्ती | سختی | कठोरता, कड़ाई |
| सजा | ,, | सज़ा | سزا | दण्ड |
| सजाएकत्ल | फ़ा० अ० | सज़ाए मौत | سزائے موت | मृत्युदण्ड |
| सतह | अ० | सत्हः | سطح | पृष्ठभाग, तल |
| सतही | ,, | सत्ही | سطحی | ऊपरी |
| सदी | फ़ा० | सदी | صدی | शताब्दी |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सदका | अ० | सदक: | صدقہ | उतारा |
| सदाकत | ,, | सदाक़त | صداقت | सच्चाई, सत्य, यथार्थता |
| सदारत | ,, | सदारत | صدارت | सभापतित्व |
| सदमा | ,, | सद्म: | صدمہ | आघात, चोट, धक्का |
| सदर | ,, | सद्र | صدر | सभापति, अध्यक्ष |
| सन् | ,, | सन: | سنہ | संवत, वर्ष |
| सनद | ,, | सनद | سند | उपाधि, प्रमाणपत्र |
| सनम | ,, | सनम | صنم | प्रिया, प्रेमिका |
| सफ़र | ,, | सफ़र | سفر | यात्रा |
| सफाई | अ० | सफ़ाई | صفائی | स्वच्छता, शुद्धता |
| सफाया | ,, | सफ़ाया | صفایا | विनाश, नष्ट, समाप्त |
| सफरा | ,, | सफ़्रा | صفرہ | पित्त |
| सफेद | फ़ा० | सफ़ेद | سفید | शुभ्र, श्वेत |
| सफ़ा | अ० | सफ़्ह: | صفحہ | पृष्ठ |
| सफ़ेदी | फ़ा० | सफ़ेदी | سفیدی | श्वेतता, शुभ्रता |
| सबक | अ० | सबक़ | سبق | पाठ, शिक्षा |
| सबब | ,, | सबब | سبب | कारण, हेतु |
| सब्जी | फ़ा० | सब्ज़ी | سبزی | शाक-भाजी |
| सब्र | अ० | सब्र | صبر | धैर्य, धीरज |
| समा | ,, | समाँ | سماں | × |
| सर | फ़ा० (सं० ?) | सर | سر | शिर |
| सरकार | ,, | सरकार | سرکار | शासन, राज, प्रभुत्व |
| सरकारी | ,, | सरकारी | سرکاری | राजकीय, शासकीय |
| सरगर्मी | ,, | सरगर्मी | سرگرمی | *उत्साह |
| सरताज | ,, | सरताज | سرتاج | शिरोमणि, स्वामी |
| सरदार | ,, | सरदार | سردار | नायक, स्वामी |
| सरे बाजार | ,, | सरे बाजार | سربازار | × |
| सरपरस्त | ,, | सरपरस्त | سرپرست | अभिभावक, संरक्षक |
| सरपरस्ती | ,, | सरपरस्ती | سرپرستی | पालन पोषण, अभिभावकता, संरक्षकता |
| सरमायदार | ,, | सरमाय:दार | سرمایہ دار | पूंजीपति |
| सरसब्ज़ | ,, | सरसब्ज़ | سرسبز | हरा-भरा |
| सरसरी | ,, | सरसरी | سرسری | उचटती |
| सरहद | ,, | सरहद | سرحد | सीमा |
| सरहदी | ,, | सरहदी | سرحدی | सीमांत |
| सरासर | ,, | सरासर | سراسر | नितांत |
| सराय | अ़ | सराय | سرائے | *धर्मशाला |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सरोकार | फ़ा० | सरोकार | سروکار | प्रयोजन, सम्बन्ध, |
| सर्द | ,, | सर्द | سرد | शीतल, ठंडा |
| सर्दी | ,, | सर्दी | سردی | शीत, ठंडक |
| सर्फ़ | अ० | सर्फ़ | صرف | व्यय, उपभोग |
| सर्राफ़ | ,, | सर्राफ़ | صراف | × |
| सलाम | ,, | सलाम | سلام | प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते |
| सलामत | ,, | सलामत | سلامت | सुरक्षित |
| सलामती | ,, | सलामती | سلامتی | सुरक्षा |
| सलामी | ,, | सलामी | سلامی | × |
| सलाह | ,, | सलाह | صلاح | परामर्श |
| सलाहकार | अ० फ़ा० | सलाहकार | صلاح کار | परामर्शदाता |
| सलीका | ,, | सलीक़: | سلیقہ | शिष्टता, सभ्यता |
| सल्तनत | ,, | सल्तनत | سلطنت | राज्य, शासन |
| सबाब | ,, | सवाब | ثواب | पुण्य |
| सवार | फ़ा | सवार | سوار | × |
| सवारी | ,, | सवारी | سواری | × |
| सवाल | अ० | सुवाल | سوال | प्रश्न |
| सवालात | ,, | सुवालात | سوالات | प्रश्नावली, प्रश्न |
| सहर | ,, | सह्‌र | سحر | प्रातःकाल |
| सही | फ़ा० | सही | سہی | सत्य, यथार्थ |
| सहारा | अ० | सहारा | سہارا | आश्रय |
| सहन | ,, | सह्‌न | صحن | आंगन |
| सहम | फ़ा० | सहम | سہم | भयभीत, आतंकित |
| साईस | अ० | साईस | سائیس | × |
| साकी | ,, | साक़ी | ساقی | × |
| साज | फ़ा० | साज़ | ساز | उपकरण, वाद्य |
| साजिश | ,, | साज़िश | سازش | षडयंत्र |
| साजसमान | ,, | साज़ोसामान | سازوسامان | उपकरण, सामग्री |
| सादा | ,, | साद: | سادہ | निश्छल, सरल |
| सादगी | ,, | सादगी | سادگی | निश्छलता, सरलता |
| सानी | अ० | सानी | ثانی | *जोड़, समतुल्य |
| साफ़ा | ,, | साफ़: | صافہ | पगड़ी, उष्णीष |
| साफ़ | ,, | साफ़ | صاف | पवित्र, स्वच्छ |
| साबित (साबुत) | ,, | साबित | ثابت | प्रमाणित, पूरा, कुल |
| साबुन | ,, | साबुन | صابن | × |
| सामान | फ़ा० | सामान | سامان | उपकरण, सामग्री, वस्तुएँ |
| साया | ,, (सं०) | साय: | سایہ | छाया |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सालाना | फ़ा (सं०) | साल़ान: | سالانہ | वार्षिक |
| साल | ,, | साल | سال | वर्ष |
| सालगिरह | ,, | सालगिरिह् | سالگرہ | जन्मदिन |
| साहब | अ० | साहिब | صاحب | स्वामी, महाशय, महोदय |
| सिक्का | ,, | सिक्क: | سکّہ | मुद्रा |
| सितम | फ़ा० | सितम | ستم | अत्याचार |
| सितमगर | ,, | सितमगर | ستمگر | अत्याचारी |
| सितारा | ,, | सितार: | ستارہ | तारा, भाग्य, नक्षत्र |
| सिपाहसालार | ,, | सिपहसालार | سپہ سالار | सेनापति |
| सिपाही | ,, | सिपाही | سپاہی | सैनिक |
| सिफ़ारिश | ,, | सिफ़ारिश | سفارش | *अनुशंसा, संस्तुति |
| सिफ़त | अ़ | सिफ़त | صفت | गुण, लक्षण |
| सिफ़र | ,, | सिफ़्र | صفر | बिंदु, शून्य |
| सियासत | ,, | सियासत | سیاست | राजनीति, राजनय |
| सियासतदाँ | ,, | सियासतदाँ | سیاستداں | राजनीतिज्ञ, राजनयज्ञ |
| सियासी | अ० फ़ा० | सियासी | سیاسی | राजनीतिक |
| सियाह | फ़ा० | सियाह् | سیاہ | काला |
| सियाही | ,, | सियाही | سیاہی | *मसि, कालिमा |
| सिरका | , | सिर्क: | سرکہ | × |
| सिर्फ़ | अ० | सिर्फ़ | صرف | निरा, केवल |
| सिवा | फ़ा० | सिवा | سوا | अतिरिक्त, बिना |
| सीख़चा | ,, | सीख़च: | سیخچہ | × |
| सीख़ | ,, | सीख़ | سیخ | शलाका |
| सीना | ,, | सीन: | سینہ | वक्षस्थल, छाती |
| सीरत | ,, | सीरत | سیرت | स्वभाव, गुण, चरित्र |
| सुकून | अ० | सुकून | سکون | शांति |
| सुपुर्द | फ़ा० | सुपुर्द (सपुर्द) | سپرد | सौंपना |
| सिफारिश | ,, | सुफ़ारिश | سفارش | संस्तुति |
| सुबूत | अ० | सुबूत (सबूत) | ثبوت | प्रमाण, तर्क |
| सुबह | ,, | सुबह | صبح | प्रातःकाल |
| सुराख | फ़ा० | सुराख़ | سُراخ | छिद्र, रंध्र |
| सुराग | तु० | सुराग़ | سُراغ | अनुसंधान, खोज, ठिकाना |
| सुराही | अ० | सुराही | صراحی | × |
| सुराहीनुमा | अ० फ़ा० | सुराहीनुमा | صراحی نما | × |
| सुर्ख़ | फ़ा० | सुर्ख़ | سُرخ | लाल |
| सुर्ख़ी | ,, | सुर्ख़ी | سرخی | लालिमा |
| सुर्मा | ,, | सुर्म: | سرمہ | × |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सुलूक | अ॰ | सुलूक़ | سلوک | व्यवहार |
| सुल्तान | ,, | सुल्तान | سلطان | शासक, नरेश |
| सुलह | ,, | सुल्ह | صلح | मेल, संधि |
| सुस्त | फ़ा॰ | सुस्त | سست | अशक्त, मन्द, आलसी |
| सुस्ती | अ॰ | सुस्ती | سستی | आलस्य, मन्दता |
| सहूलत | ,, | सुहूलत | سہولت | सुगमता, सरलता |
| सूद | फ़ा॰ | सूद | سود | ब्याज, लाभ |
| सूदखोर | ,, | सूदख़ोर | سودخور | × |
| सूदखोरी | ,, | सूदख़ोरी | سودخوری | × |
| सूद-दर-सूद | ,, | सूद दर सूद | سوددرسود | चक्रवृद्धि |
| सूफी | अ॰ | सूफ़ी | صوفی | ब्रह्मज्ञानी |
| सूबा | ,, | सूबः | صوبہ | प्रान्त, प्रदेश |
| सूबेदार | अ॰ फ़ा॰ | सूबःदार | صوبہ دار | × |
| सूबेदारी | ,, | सूबःदारी | صوبہ داری | × |
| सूबापरस्ती | ,, | सूबःपरस्ती | صوبہ پرستی | प्रांतीयता, प्रादेशिकता |
| सूरत | अ॰ | सूरत | صورت | रूप, आकृति |
| सूरतेहाल | ,, | सूरतेहाल | صورتِ حال | स्थिति |
| सेब | फ़ा॰ | सेब | سیب | × |
| सेहत | अ॰ | सेहत | صحت | स्वास्थ्य |
| सेहतमंद | अ॰ फ़ा॰ | सेहतमंद | صحت مند | स्वस्थ |
| सैर | अ॰ | सैर | سیر | पर्यटन, भ्रमण |
| सैलानी | ,, | सैलानी | سیلانی | पर्यटक |
| सैलाब | अ॰ फ़ा॰ | सैलाब | سیلاب | जल प्लावन |
| सोहबत | अ॰ | सुह्‌बत | صحبت | संगत, मित्रता |
| सौगात | तु॰ | सौग़ात | سوغات | भेंट, उपहार |
| सौदा | ,, | सौदा | سودا | *क्रयविक्रय |
| सौदागर | फ़ा॰ तु॰ | सौदागर | سوداگر | वणिक, व्यापारी |
| सौदागरी | ,, ,, | सौदागरी | سوداگری | वाणिज्य, व्यापार |

## ह

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हंगामा | फ़ा | हंगामः | ہنگامہ | उपद्रव, क्रांति |
| हक | अ॰ | हक़ | حق | अधिकार, स्वत्व |
| हकदार | अ॰ फ़ा॰ | हक़दार | حق دار | अधिकारी |
| हकारत | अ॰ | हक़ारत | حقارت | तिरस्कार |
| हकीकत | ,, | हक़ीक़त | حقیقت | यथार्थता, सत्यता |
| हकीकतपसंद | अ॰ फ़ा॰ | हक़ीकतपसंद | حقیقت پسند | × |
| हकीकी | अ॰ | हक़ीक़ी | حقیقی | सच्चा, यथार्थ |
| हकीम | ,, | हकीम | حکیم | वैद्य, चिकित्सक |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हजामत | ,, | हजामत | حجامت | क्षौर |
| हज़ार | फ़ा० | हज़ार | ہزار | सहस्र |
| हजारहा | ,, | हजारहा | ہزارہا | सहस्रों |
| हज्जाम | ,, | हज्जाम | حجام | नाई, नापित |
| हज़म | ,, | हज़्म | ہضم | पचन, पचना |
| हज़रत | ,, | हज़्रत | حضرت | श्रीमान |
| हद | ,, | हद | حد | सीमा, पराकाष्ठा |
| हदबंदी | अ० फ़ा० | हदबंदी | حدبندی | सीमांकन |
| हफ्ता | फ़ा० (०स०) | हफ्तः | ہفتہ | सप्ताह, शनिवार |
| हफ्तेवार | ,, | हफ्तःवार | ہفتہ وار | साप्ताहिक |
| हमउम्र | फ़ा० अ० | हमउम्र | ہم عمر | समवयस्क |
| हमकद | ,, ,, | हमक़द | ہم قد | *समकाय |
| हमकदम | ,, ,, | हमक़दम | ہم قدم | सहचर |
| हमखयाल | ,, ,, | हमख़याल | ہم خیال | × |
| हमजात | ,, ,, | हमज़ात | ہم ذات | *सहजाति, सहगोत्र |
| हमदम | फ़ा० | हमदम | ہمدم | मित्र, साथी |
| हमदर्दी | ,, | हमदर्दी | ہمدردی | सहानुभूति |
| हमदिल | ,, | हमदिल | ہم دل | *मित्र |
| हमराज | ,, | हमराज़ | ہم راز | *मित्र |
| हमराह | ,, | हमराह | ہم راہ | साथी, सहयात्री |
| हमवतन | फ़ा० अ० | हमवतन | ہم وطن | × |
| हमवार | फ़ा० | हमवार | ہموار | समतल |
| हमशक्ल | फ़ा० अ० | हकशक्ल | ہم شکل | अनुरूप, समरूप |
| हम सफर | ,, ,, | हमसफ़र | ہم سفر | सहयात्री |
| हमसाया | फ़ा० | हमसायः | ہمسایہ | पड़ोसी |
| हमेशा | ,, | हमेशः | ہمیشہ | सर्वदा, सदा |
| हम्माल | अ० | हम्माल | حمّال | × |
| हम्माम | ,, | हम्माम | حمام | स्नानागार |
| हिमाकत | ,, | हमाक़त | حماقت | *मूर्खता |
| हमला | ,, | हम्लः | حملہ | आक्रमण |
| हया | ,, | हया | حیا | लज्जा |
| हर | फ़ा० | हर | ہر | प्रत्येक |
| हरकत | अ० | हरकत | حرکت | गति, चाल |
| हरगिज़ | फ़ा० | हरगिज़ | ہرگز | कदापि |
| हरचन्द | ,, | हरचन्द | ہرچند | × |
| हरदम | ,, | हरदम | ہردم | प्रतिक्षण |
| हरसाला | ,, | हरसालः | ہرسالہ | वार्षिक |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हराम | फ़ा० अ० | हराम | حرام | *अविहित, अनुचित |
| हरामखोर | ,, ,, | हरामख़ोर | حرام خور | *कामचोर, आलसी |
| हरामज़ादा | ,, ,, | हरामज़ादः | حرام زادہ | दुष्ट, वर्णसंकर, दुष्ट |
| हरामी | फ़ा० | हरामी | حرامی | जारज, संकर, दुष्ट |
| हरारत | ,, | हरारत | حرارت | उष्णता, ज्वर, ताप |
| हरीरा | अ० | हरीरः | حریرہ | × |
| हर्जाना | फ़ा० | हर्जानः | ہرجانہ | क्षतिपूर्ति |
| हर्जा | ,, | हर्जः | ہرج | हानि, बाधा |
| हर्फ़ | अ० | हर्फ़ | حرف | अक्षर, वर्ण |
| हल | ,, | हल | حل | समाधान |
| हलाल | ,, | हलाल | حلال | विहित |
| हलक़ा | ,, | हल्क़ः | حلقہ | मंडल, क्षेत्र |
| हलक़ | ,, | हल्क़ | حلق | कंठ, गला |
| हलफ़ | ,, | हल्फ़ | حلف | शपथ, सौगन्ध |
| हलफ़नामा | अ० फ़ा० | हलफ़नामः | حلف نامہ | शपथपत्र |
| हलवा | अ० | हल्वा | حلوا | × |
| हलवाई | ,, | हलवाई | حلوائی | × |
| हवस | ,, | हवस | ہوس | लोभ, लालसा |
| हवा | ,, | हवा | ہوا | वायु |
| हवाई | ,, | हवाई | ہوائی | वायवीय |
| हवाखोरी | अ० फ़ा० | हवाख़ोरी | ہواخوری | वायुसेवन, भ्रमण |
| हवादार | ,, ,, | हवादार | ہوادار | × |
| हवाबाज | ,, ,, | हवाबाज़ | ہواباز | × |
| हवाला | ,, ,, | हवालः | حوالہ | हस्तांतरण, सौंपना, दृष्टांत |
| हवलदार | ,, ,, | हवालदार | حولدار | × |
| हवालात | अ० | हवालात | حوالات | × |
| हवेली | फ़ा० | हवेली | حویلی | भवन |
| हव्वा (हौआ) | अ० | हौआ | حوّا | × |
| हश्र | ,, | हश्र | حشر | आपत्ति, विपदा, दुर्गति |
| हसीना | ,, | हसीनः | حسینہ | सुन्दरी, रूपवती |
| हसीन | ,, | हसीन | حسین | सुन्दर, रूपवान |
| हस्ती | फ़ा० | हस्ती | ہستی | अस्तित्व, सामर्थ्य |
| हसरत | अ० | हस्रत | حسرت | अभिलाषा, कामना |
| हाकिम | ,, | हाकिम | حاکم | स्वामी, शासक |
| हाजिमा | ,, | हाज़िमः | ہاضمہ | पाचन शक्ति |
| हाजिर | ,, | हाज़िर | حاضر | उपस्थिति, विद्यमान |
| हाजिर जवाब | ,, | हाज़िर जवाब | حاضر جواب | प्रगल्भ, प्रत्युत्पन्न |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हाजिरी | ,, | हाज़िरी | حاضری | उपस्थिति |
| हामी | ,, | हामी | حامی | स्वीकारोक्ति, सहमति |
| हार | फ़ा० (सं०) | हार | ہار | माला |
| हाल | अ० | हाल | حال | दशा, समाचार |
| हालत | ,, | हालत़ | حالت | दशा, अवस्था |
| हालांकि | अ०फ़ा० | हालांकि | حالانکہ | यद्यपि |
| हालात | अ० | हालात् | حالات | दशा, अवस्थाएँ |
| हावी | ,, | हावी | حاوی | × |
| हाशिया | ,, | हाशिय: | حاشیہ | × |
| हासिल | ,, | हासिल | حاصل | प्राप्त, उपलब्ध |
| हिन्द | ,, | हिन्द | ہند | भारत |
| हिन्दसा | अ० | हिन्दस: | ہندسہ | गणित, संख्या, अंक |
| हिन्दी | फ़ा० | हिन्दी | ہندی | आर्यभाषा, हिन्दुस्तानी |
| हिन्दी दाँ | ,, | हिन्दीदाँ | ہندی داں | × |
| हिन्दुस्तान | ,, | हिन्दुस्तान | ہندوستاں | भारत |
| हिन्दुस्तानी | ,, | हिन्दुस्तानी | ہندوستانی | भारतीय |
| हिन्दू | ,, | हिन्दू | ہندو | आर्य |
| हिज्जे | ,, | हिज्जे | ہجے | वर्तनी |
| हिदायत | ,, | हिदायत | ہدایت | शिक्षा, आदेश, सीख |
| हिकमत | ,, | हिक्मत | حکمت | बुद्धिमत्ता, युक्ति |
| हिफ़ाजत | ,, | हिफ़ाज़त | حفاظت | रक्षा, बचाव |
| हिमायत | अ० | हिमायत | حمایت | पक्षपात, सहायता |
| हिमायती | ,, | हिमायती | حمایتی | पक्षपाती, सहायक |
| हिम्मत | ,, | हिम्मत | ہمت | साहस, पराक्रम |
| हिरासत | ,, | हिरासत | حراست | * निरीक्षण, देखरख, संरक्षण |
| हिरस | ,, | हिर्स | حرص | लोभ |
| हिसाब | ,, | हिसाब | حساب | गणना, गणित |
| हिसाबी | ,, | हिसाबी | حسابی | * गणितज्ञ |
| हिस्सा | ,, | हिस्स: | حصہ | अंश, साझा, भाग |
| हिस्सेदार | अ०फ़ा० | हिस्सेदार | حصہ دار | भागीदार, साझेदार |
| हीला | अ० | हील: | حیلہ | बहाना, छल |
| हुकूमत | ,, | हुकूमत | حکومت | शासन, सत्ता |
| हुक्का | ,, | हुक़्क़: | حقہ | गुड़गुड़ी |
| हुक्काबाज | अ०फ़ा० | हुक्क:बाज | حقہ باز | × |
| हुक्काम | अ० | हुक्काम | حکام | प्रशासक, शासक |
| हुकुम | ,, | हुक्म | حکم | आदेश, आज्ञा |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हुकुमनामा | अ० | हुक्मनामः | حکم نامہ | आदेशपत्र, आज्ञापत्र |
| हुजूर | अ० | हुजूर | حضور | महोदय, महाशय, श्रीमान |
| हुजूरी | " | हुजूरी | حضوری | उपस्थिति, सामीप्य |
| हुज्जत | " | हुज्जत | حجت | * तर्क, वितर्क, विवाद |
| हुनर | फा० | हुनर | ہنر | कला, विद्या |
| हुनरमंद | " | हुनरमंद | ہنرمند | गुणवान, कलाविद |
| हुर्रे | " (अंग्रे०) | हुर्रा | ہُرّا | * कोलाहल, शोर |
| हुस्न | " | हुस्न | حسن | सौंदर्य, शोभा |
| हूबहू | फ़ा० | हूबहू | ہو بہو | समान, तुल्य |
| हेच | " | हेच | ہیچ | तुच्छ, घृणित |
| हैज़ा | अ० | हैज़: | ہیضہ | * विसूचिका |
| हैबत | " | हैबत | ہیبت | भय, आतंक |
| हैरत | " | हैरत | حیرت | आश्चर्य |
| हैरतअंगेज़ | अ०फ़ा० | हैरतअंगेज़ | حیرت انگیز | आश्चर्यजनक |
| हैसियत | " | हैसियत | حیثیت | सामर्थ्य, शक्ति |
| हैरान | " | हैरान | حیران | चकित, स्तब्ध |
| हैरानी | फ़ा० | हैरानी | حیرانی | विस्मय, आश्चर्य |
| हैवान | अ० | हैवान | حیوان | पशु |
| होश | फ़ा० | होश | ہوشیار | चेतना, बुद्धि, विवेक, संज्ञा |
| होशियार | " | होशियार | ہوش | चतुर |
| होशियारी | " | होशियारी | ہوشیاری | चतुरता |
| होशहवास | " | होशोहवास | ہوش و حواس | चेतना, संज्ञा, समझ, विवेक |
| हौज | " | हौज़ | حوض | * कुंड |
| हौसला | " | हौसलः | حوصلہ | धीरज, साहस |
| हौसलामंद | अ०फ़ा० | हौसलःमंद | حوصلہ مند | धैर्यवान, साहसी |

# Resumé

1. The present work is a part of a project of the Institute on Urdu-Hindi Dictionary allotted to me. I have planned to complete the work in three phases. The present work belongs to the first phase. The second phase (a practical Urdu-Hindi dictionary) and the third phase are in progress. I would prefer to call these three as Introductory Dictionary, Intermediate Dictionary, (Pl. see 'GAVEESNAA' No. 16) and Advanced Dictionary respectively.

2. The following are the target of the Introductory Dictionary: (a) Collection of Urdu (Arabic, Persian and Turkie) vocables used spontaneously in everyday speech by the educated Hindi speakers, (b) arrangement of the vocables in the alphabatical order and details leading to their linguistic identity, e.g. origin, original pronounciation (in Devnagari and Persian scripts) and synonym (See the word-list), (c) description of Phonological and morphrogical characteristics of the vocables (See the Introduction).

3. The word list has been prepared on Survey method. My friends, who observed and studies the colloquial speech of a number of educated Hindi speakers engaged in different occupations, have helped me in collecting words.

4. Following are the main points of the present Survey: (a) the present word-list consists of 2300 words; (b) the origin-wise break-up is arabic 1000, Persian 1060, Turkie 35, and Perso-Arabic 205.

5. From the standpoint of synonymy 1600 words, have (complete) Hindi (Sanskrit) synonyms, and 250 words have semisynonyms, 450 words of Perso-Arabic origin in Hindi cannot be assigned to any synonym from Hindi (Sanskrit) origin. They cannot be substituted and hence are to be considered as the essential words of Hindi.

रविप्रकाश

# मध्य भारतीय आर्यभाषाओं में क्रिया-व्यवस्था का स्थूल विकास

मध्यभारतीय आर्यभाषा का समय पाँचवीं शता० ई० पूर्व से लेकर 10वीं या 11वीं शताब्दी तक माना जाता है। म०भा० आर्यभाषा के काल को क्रमशः तीन अवस्थाओं में प्राकृतों के विकास के कारण बाँटा गया है। ये अवस्थाएँ पूर्व, मध्य और अन्तिम भागों में इस प्रकार विकसित हुई हैं। मध्य भा० आर्यभाषा की पूर्व अवस्था में अशोकीय प्राकृत, हीनयान बौद्धों की पाली, श्वेताम्बर जैनों की अर्द्धमागधी तथा पैशाची प्राकृतें आती हैं किन्तु पैशाची प्राकृत की अधिक सामग्री उपलब्ध न होने के कारण इसका अध्ययन यहाँ नहीं किया गया है। मध्य भा० आर्यभाषा की मध्य अवस्था में नाटकीय प्राकृतें शौरसेनी, मागधी और महाराष्ट्री आती हैं। इसके अतिरिक्त माहा० में लिखे हुए पद-संग्रहों का भी अध्ययन यहाँ किया गया है।

इस अवस्था से कुछ बाद का समय, दिगम्बर जैनों की जैन शौरसेनी तथा श्वेताम्बर जैनों के लौकिक साहित्य जैन महाराष्ट्री का है। म० भ० आर्यभाषा की अन्तिम अवस्था का अवलोकन हम उपलब्ध अपभ्रंश साहित्य में कर सकते हैं।

जहाँ तक संभव हो सका है प्रत्येक प्राकृत में क्रिया-पदों के विकास के आधार पर तीन अवस्थाएं पूर्व, मध्य, अन्तिम रखी गई हैं, किंतु कुछ प्राकृतों में जैसे जैन, शौरसेनी और अपभ्रंश में क्रिया-पदों में विकास के कारण केवल दो ही अवस्थाएँ पूर्व और अन्तिम पायी जाती हैं क्योंकि तीन अवस्थाओं में विभाजित करना विकास के कारण संभव नहीं।

मध्य भा० आर्यभाषाओं में स्थूल रूप से विकास के अतिरिक्त बोलियों में अन्तर पाए जाते हैं किन्तु इन अन्तरों के कारण सरलता से क्रमिक विकास को स्पष्ट करना संभव नहीं।

व्याकरणिक कोटि की उपस्थिति तथा अनुपस्थिति से इन क्रमिक अवस्थाओं के विकास का पर्यवेक्षण किया गया है। मध्य भा० आ० की प्राचीन भारतीय आर्यभाषा की तुलना करने से मध्य भा० आर्यभाषा के विकास में किन पुरानी प्रवृत्तियों का दर्शन इस काल में होता है तथा कौन सी नई प्रवृत्तियाँ आकर म० भा० आर्यभाषा में नवीनता लाती हैं जो भाषा की प्रवृत्तियाँ कही जा सकती हैं। इनके स्पष्टीकरण के लिए इन विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन अवश्य होगा।

### काल और वृत्ति का अभाव

मध्य भा० आर्यभाषाओं की तुलना प्राचीन भा० आर्यभाषा तथा उसकी बोलियों से करने पर सुस्पष्ट हो जाता है कि वैदिक भाषा में चार काल हैं–वर्तमान, परोक्ष भूत (लिट्), लुङ (सामान्यभूत) भविष्य। इसके अलावा इन सभी कालों में ये वृत्तियाँ पायी जाती हैं जैसे निश्चय वृत्ति, विध्यर्थक, इच्छार्थक तथा आज्ञार्थक।

| काल | वृत्ति | रूप | |
|---|---|---|---|
| वर्तमान काल | निश्चय-वृत्ति | च'रसि | Present Indicative mood |
| | आज्ञार्थक वृत्ति | क्रन्द | Present Imperative mood |
| | इच्छार्थक वृत्ति | चरेयम् | Present Optative mood |
| | विध्यर्थक वृत्ति | च्यवम् चरत्, | Present Injunctive mood |
| | संभावनार्थक वृत्ति | भवासि, गच्छासि, यजासि | Present Subjunctive mood |
| परोक्ष भूतकाल | नि. वृ. | चकर | Prefect Ind. mood |
| | आज्ञा. वृ. | चाकन्धि | Pf. Imp. mood |
| | इच्छा. वृ. | चक्रिवस् | Pf. Opt. mood |
| | संभा. वृ. | अनज | Pf. Subjunctive mood |
| सामान्यभूतकाल | नि. वृ. | अ'करम् | Aorist Ind. mood |
| | आ. वृ. | दातु | Aor. Imp. mood |
| | इच्छा. वृ. | अ'स्याम् | Aor. Opt. mood |
| | विध्य. वृ. | ऋदस, जेष्म, | Aor. Injunctive mood |
| | हेतुमद्वृत्ति | अभरिष्यत् | Aor. Conditional mood |
| | संभा. वृ. | करिष्यास् | Aor. Subjunctive mood |

किन्तु पाणिनीय संस्कृत में हम वर्तमान काल में विधि, लिङ् और लोट् वृत्तियाँ पाते हैं और अन्य वृत्तियों के रूप समाप्त हो जाते हैं। लेट् लकार पाणिनीय संस्कृत में बिलकुल जीवित कोटि के रूप में समाप्त हो जाता है। प्राचीन, भा० आर्यभाषा की यही सरलीकरण की प्रवृत्ति मध्य भा० आर्यभाषा में प्रविष्ट होकर म० भा० आर्यभाषा को सरल बनाती है और यही कारण है कि मध्य भारतीय आर्यभाषा में प्राकृत की पूर्व अवस्था में वर्तमान काल, भविष्य में लृट्, लुट्, भूत में लिट् और लुङ्, लङ् पाते हैं। इनके उदाहरण क्रमशः समापिका क्रिया के रूप हैं। एति, इच्छति (अशोकीय प्राकृत), अर्हाभि, भासति भजति (पाली); भविष्यकाल के रूप लिखियिसन्ति (अशोकीय प्राकृत), करिस्यामि (पाली); लुट् लकार आगन्तारों (पाली), लुङ् Aor रूप जैसे निक्रमि (अशोकीय प्राकृत), अदस्सम् (पाली), लिट् लकार के रूप (आह, आहु) (एक नया बहुवचन) (अशोकीय प्रा. पाली, अर्द्ध मागधी) तथा जगाम (पाली), लङ् अहो (अशोकीय प्राकृत), आसिम् आसम् (पाली), इसके ठीक दूसरी दिशा में मध्य भा० अ० की मध्य अवस्था में और अन्तिम अवस्था में लुट् लकार, लुङ् लकार, लङ् लकार के रूप जीवित कोटि के रूप में नहीं मिलते किन्तु एक या दो रूप मिलते हैं। इन दो या एक रूपों को हम अवशिष्ट रूप कह सकते हैं।

जहाँ तक वृत्तियों का संबंध है, निश्चयार्थक वृत्ति का प्रयोग मध्य भा० आर्यभाषा की सभी अवस्थाओं में होता है। म० भ० आर्यभाषा की पूर्व अवस्था में संभावनार्थक वृत्ति के रूप जैसे, अशोकीय प्राकृत सुसुसातु कालसी, पलकमातु कालसी, तथा विध्यर्थक वृत्ति के रूप पाली में पुच्छि। पाली भाषा

में संभावनार्थक वृत्ति के रूप संदिग्ध हैं। इसके विपरीत मध्य तथा अन्तिम अवस्थाओं में संभावनार्थक वृत्ति तथा विध्यर्थक वृत्ति के रूप समाप्त हो जाते हैं। पाली में केवल तीन-चार रूप हेतुमद् वृत्ति के जैसे अधिगच्छिस्सम् आदि मिलते हैं किन्तु म० भा० आ० में बिल्कुल समाप्त हो गए हैं।

प्रा० भा० आ० में कर्तृ (Medial) अंत्य प्रत्ययों में अर्थ की दृष्टि से काफी अन्तर है जहाँ कर्तृ वाच्य के लिए कर्तृ प्रत्यय, भाव तथा कर्म वाच्य के लिए अकर्तृ (Medial termination) प्रत्यय लगते हैं। प्रा० भा० आ० की पाणिनीय संस्कृत में प्रायः धातुओं का विभाजन प्रत्ययों के आधार पर हुआ है। किन्तु म० भा० आ० में एक ही धातु कर्तृ तथा अकर्तृ प्रत्ययों से प्रयुक्त की गई है जैसे गच्छाम और गच्छामसे (वर्तमान काल उत्तम पुरुष बहुवचन)। यहाँ तक कि कर्मवाच्य कर्तृ प्रत्ययों में प्रयुक्त होता है जो संस्कृत (विशेषकर पाणिनीय) में नितान्त असंभव है। अशोकीय प्राकृत में कर्म-वाच्य दोनों अंत्य प्रत्ययों के साथ (वुचित वुचते अशोकीय) आता है। इसी प्रकार पाली में कयिरति, चीयते, अर्द्धमागधी में लब्भामि, कामिअसि शौर; इश्चीअदि मागधी में, हीरइ माहा; रवीयदि जैन शौ; लहिज्जइ जै माहा; णिज्जामि और पाविज्जए अपभ्रंश में मिलते हैं। निष्कर्ष निकलता है कि कर्तृ प्रत्यय अकर्तृ प्रत्ययों पर अपना अधिकार जमा लेते हैं, और अकर्तृ प्रत्यय अवशिष्ट रूप में मध्य भा० आर्यभाषा की अन्तिम अवस्था में देखने को मिलते हैं। अशोकीय प्राकृत से लेकर अपभ्रंश अवस्था तक सभी प्राकृतों में कर्तृ प्रत्ययों का ही बोलबाला है।

प्र० भा० आ० के गणप्रत्ययों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। ये हैं विकरणयुक्त और विकरणहीन गणप्रत्यय। विकरण-युक्त प्रत्ययों में प्रथम, चतुर्थ, षष्ट एवं दशम गण आते हैं तथा विकरणहीन गणप्रत्ययों में द्वितीय, तृतीय, पंचम, सप्तम, अष्टम, एवं नवम् गण आते हैं। इस प्रकार का परिच्छेदक लक्षण समाप्त सा हो चला है और विकरणयुक्त धातुओं की संख्या पूर्व से अन्तिम काल उत्तरोत्तर बढ़ती गई है। म० भा० आ० की पूर्व अवस्था में -अ-, -आ- और -ए- गण प्रत्यय पाए जाते हैं। -अ- गण प्रत्यय विकरणयुक्त और विकरणहीन प्रत्ययों का प्रतिनिधित्व करता है।

म० भा० आ०/-अ-
और प्रा० भा० आ०/-अ- { भवति, इच्छति, पूजयति, अशोकीय, पाली,
भवइ, अर्द्धमागधी, मग्गदि मागधी, मग्गइ महा, कहइ अपभ्रंश

म० भा० आ० /-अ-
और प्रा० भा० आ० विकरणहीन { ससति अशोकीय प्रा.
सुणति पाली
सुवइ जैन-माहा० { सुणेइ अर्द्धमागधी,
पवइ माहा०

म० भा० आ० की मध्य अवस्था में तीन गण-प्रत्यय के स्थान पर केवल दो गण-प्रत्यय -अ- और -ए- रह जाते हैं। निस्संदेह यह सत्य है कि एक या दो धातुओं में विकरणहीन रूप मिलते हैं किन्तु इन रूपों को हम जीवित कोटि में नहीं रख सकते। ऐसे रूप -अय- > -ए- में प्राप्त होते हैं जैसे—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनुनेति | अशोकीय | प्राकृत | |
| पटिपुजेति | " | " | और |
| गच्छेइ | माहा | " | कहेइ माहा |
| गच्छेदि | शौर | | |
| नेइ | अपभ्रंश | | |

म० भा० आ० की अन्तिम अवस्था अपभ्रंश में केवल एक ही गण-प्रत्यय -अ- रह जाता है।

**क्रियाओं के अन्त्य प्रत्यय** में विशेषकर क्रियार्थक संज्ञा प्रत्ययों में काफी सरलता आ गईहै।

प्रा० भा० आ० में तुमर्थ प्रत्ययों में जैसे -य और -त्वा में काफी भेद था और परिसर युक्त था किन्तु म० भा० आ० में इसके अन्तर की प्रामाणिकता जाती रही, जिसके फलस्वरूप -त्वा का प्रयोग सर्वसामान्य हो गया है। उदाहरण के लिए, आलभितु अशोकीय, सन्तप्पेत्वा पाली, उवागच्छित्ता अर्द्धमागधी, विसम्भित्ता जैन शौर; सम्पहारेत्ता जैन माहा०। -त्वा का प्रयोग अपभ्रंश में नहीं हुआ है और वैदिक संज्ञार्थक प्रत्यय -त्वी > ति लिए गए हैं।

इन कुछ विशेष लक्षणों में परिवर्तन के आधार पर हम कह सकते हैं कि म० भा० आ० में प्रा० भा० आर्यभाषा से काफी सरलीकरण हुआ है।

---

## संदर्भ ग्रंथ

Pischel R : 'A Comparative Grammar of Prakrit Languages' (tr. in Eng. from German by S. Jha)

Sen S : 'A Comparative Grammar of M I A'

Prakash R : 'Verb — morphology in MIA' — 'Ph.D. dissertation,' Poona Varsity 1965 .

SUMMARY

The paper aims at the development of Verbal forms in historical perspective in MIA Form Asokan Prakrit to Apabhramsa.

विजयराघव रेड्डी

# मलयालम भाषियों की हिन्दी वर्तनी की त्रुटियों का विश्लेषण—एक नमूना सर्वेक्षण

I प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य हैं—(1) नमूना सर्वेक्षण (Sample survey) के आधार पर मलयालम भाषियों के हिन्दी लेखन में प्राप्त वर्तनीगत त्रुटियों का संकलन (2) संकलित त्रुटियों का भाषावैज्ञानिक विश्लेषण और (3) विश्लेषण के आधार पर मलयालम भाषियों के लिए हिन्दी वर्तनी शिक्षण के पाठ्य बिन्दुओं का संकलन।

नमूना सर्वेक्षण के लिए संस्थान द्वारा 1-12-72 से संचालित एक मासीय 23वें नवीकरण पाठ्यक्रम में केरल सरकार द्वारा प्रतिनियुक्त 35 हिन्दी अध्यापकों से लिखवाये गये 35 लेखों को आधार बनाया गया। लेख तीन विषयों से संबंधित हैं। 18 लेख यात्रा विवरण से संबंधित, 13 लेख केरल में हिन्दी शिक्षण से संबंधित और शेष 4 केरल की लोक कथाओं से। पूरी सामग्री 70 पृष्ठों में प्राप्त हुई जिसमें लगभग 24,000 शब्द प्रयुक्त हैं। इन 24,000 शब्दों में से 191 शब्दों को अध्यापकों ने गलत लिखा। गलतियों के प्रकार और गलत शब्दों की आवृत्ति को मिलाकर पूरी सामग्री में 646 गलतियाँ पायी गयीं। अर्थात औसतन :

(i) प्रत्येक अध्यापक ने 18 गलतियाँ की हैं।

(ii) प्रत्येक 37 शब्दों के पीछे एक गलती पायी गयी।

गलत वर्तनी वाले 191 शब्दों की सूची सही वर्तनी के अकारादि क्रम से इसे लेख के अन्त में परिशिष्ट 1 में दी गयी है।

गलत वर्तनी वाले 191 शब्दों में से 37 शब्द ऐसे मिले हैं जिनकी आवृत्ति 4 से लेकर 116 तक है। इन शब्दों की अलग सूची आवृत्ति क्रम में परिशिष्ट 2 में दी गयी है।

35 अध्यापकों की सूची, जिनके लेखों को इस अध्ययन के लिए आधार बनाया गया, परिशिष्ट 3 में दी गयी है।

II गलत वर्तनी वाले शब्दों का विभाजन निम्नलिखित चार श्रेणियों में किया गया :

(क) स्वर संबंधी

(ख) व्यंजन संबंधी

(ग) विशेषक चिह्न ( ँ, ं, और : ) संबंधी

(घ) अन्य

## स्वर संबंधी

इस श्रेणी के अंतर्गत (1) स्वर आगम, (2) स्वर लोप, (3) स्वर दीर्घीकरण, (4) स्वर ह्रस्वीकरण, (5) स्वर परिवर्तन और (6) श्रुति की गलतियाँ पायी गयीं। इनका विवरण नीचे क्रमशः दिया जा रहा है :

(1) **स्वरागम** : इसके अंतर्गत (i) 'आ' और (ii) 'ई' का आगम पाया गया।

(i) **'आ' का आगम**
बदलकर-बदलाकर

(ii) **'ई' का आगम**
खलबली-खलीबली
मिर्च - मिर्ची

(2) **स्वर लोप** : इसके अंतर्गत (i) 'ए' और (ii) 'ओ' का लोप प्राप्त हुआ।

(i) **'ए' का लोप**
एक्स प्रेस—एक्सप्रस
बुलेटिन—बुलटिन

(ii) **'ओं' का लोप**
सरसों—सरस

(3) **स्वर दीर्घीकरण** : इसके अंतर्गत (i) 'अ', (ii) 'इ' और (iii) 'उ' स्वरों का दीर्घीकरण पाया गया।

(i) **अ→आ**
आंध्र—आँध्रा
वर्धा—वार्धा

(ii) **इ→ई**
धूलि—धूली

(iii) **उ→ऊ**
आहुति—आहूति
कुली—कूली
मुँह—मूँह
रुपये—रूपये

(4) **स्वर ह्रस्वीकरण** : इसके अंतर्गत (i) 'ई' और (ii) 'ऊ' के स्वरों का ह्रस्वीकरण पाया गया।

(i) **ई→इ**
काजीपेट—काशिपेट

(ii) **ऊ→उ**
खूब—खुब
जाऊँगा—जाउंगा
पूछताछ—पुछताछ
बापूजी—बापुजी
भूख—भुख
स्कूल—स्कुल

(5) **स्वर परिवर्तन** : इसके -> अंतर्गत पाँच स्थितियाँ मिली हैं। (i) अ→ऐ, (ii) इ→ए, (iii) ए → अ / आ / ऐ (iv) ऐ→आ और (v) औ→ओ, इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है :

(i) **अ→ऐ**
कुचले—कुचैले

(ii) **इ→ए**
हिलमिल—हेल मेल

(iii) ए → अ / आ / ऐ

ए→अ
एजिटेशन—अजिटेषन

ए→आ
टेढ़ी-मेढ़ी —डेटी माटी

ए→ऐ
कुचले—कुचैले

(iv) ऐ→आ
कैंट—कान्ट
कैंटीन—कान्टीन

(v) औ→ओ
शौक्त—शोक्त

(6) श्रुति : इसके अंतर्गत (i) 'य' और (ii) 'व' की श्रुति मिली है।

(i) 'य' श्रुति (ए→ये)
इसलिए—इसलिये
के लिए—के लिये
चाहिए —चाहिये
हटाएँ—हटायें
जाए—जाय
परीक्षाएँ—परीक्षायें
पुस्तिकाएँ—पुस्तिकायें
योग्यताएँ—योग्यतायें
विशेषताएँ—विशेषतायें
शालाएँ—शालायें
समस्याएँ—समस्यायें
सुविधाएँ—सुविधायें

(ii) 'व' श्रुति (ओ—वो)
आशाओं में—आशावों में

## (ख) व्यंजन संबंधी

इस श्रेणी के अंतर्गत (1) व्यंजन आगम, (2) व्यंजन लोप, (3) व्यंजन संयोग, (4) व्यंजन विपर्यय और (5) व्यंजन परिवर्तन की स्थितियाँ मिली हैं।

(1) **व्यंजन आगम** : इसके अंतर्गत (i) 'ग' और (ii) 'ण' का आगम मिला।

(i) **'ग' आगम**
जीता-जागता—जीगता-जागता

(ii) **'ण' आगम**
मंत्रालय—मंत्रणालय

(2) **व्यंजन लोप** : इसके अंतर्गत (i) 'ट' (ii) 'त' और (iii) 'र' व्यंजनों का लोप पाया गया।

(i) **'ट' लोप**
अट्ठाईस —अठाईस

(ii) **'त' लोप**
पत्ता—पता
सत्ताईसवीं—सताईसवीं

**'र' लोप**
धूम्रपान—धूमपान
प्रार्थना—प्राथना
फ़ारम—फाम

(3) **व्यंजन संयोग** : इसके अंतर्गत 'र' का संयोग पाया गया।
आगरा—आग्रा, सरकार --सर्कार

(4) **व्यंजन विपर्यय** : इसके अंतर्गत एक ही शब्द मिला।

**क→त**

मुक्त—मुत्क

(5) **व्यंजन परिवर्तन** : इसके अंतर्गत निम्नलिखित दस स्थितियाँ मिलती हैं।

(i) क < ग / ख

**क→ग (घोषीकरण)**

लिंक एक्स प्रेस—लिंग एक्स प्रेस

**क→ख (महा प्राणीकरण)**

हट्टे कट्टे→हठे खठे

(ii) ज < श / स

**ज→श**

काजीपेट—काशिपेट

**ज→स**

काजीपेट—कासीपेट

रिजर्व —रिसर्व

(iii) **ट→ड**

घंटे —घण्डे

टेढ़ी मेढ़ी —डेटी माटी

(iv) **ड़→ड**

उड़-उड, एड़ी-एडी, कपड़े-कपडे, करोड़ों-करोडों, खड़ा-खडा, खड़ी-खडी, खड़े-खडे, खिड़की-खिडकी, गड़बड़ी-गडबडी, गाड़ियाँ-गाडिया, गाड़ी-गाडी, घड़ों-घडों, चमगीदड़-चमगीदड, चिंघाड़ती-चिंघाडती, चौड़ी-चौडी, चौड़े-चौडे, छोड़-छोड, छोड़ा-छोडा, जाड़ा-जाडा, जोड़ते-जोडते, जोड़ना-जोडना,झगड़ालुओं-झगडालुओं,झगड़े-झगडे, झाड़ियाँ-झाडियाँ,झोंपड़ी-झोंपडी, थोड़ा-थोडा, थोड़ी-थोडी, थोड़े-थोडे, दौड़-दौड, दौड़धूप-दौडधूप, दौड़ते-दौडते, पकड़-पकड, पड़-पड, पड़ता-पडता,पड़ा-पडा,पड़ी-पडी, पड़े-पडे, पड़ेगा-पडेगा, पड़ेगी-पडेगी, पड़ोसी-पडोसी, पहाड़ियाँ-पहाडियाँ, पहाड़ों-पहाडों, पिछड़े-पिछडे, पेड़-पेड, पेड़ों-पेडों, बड़ा-बडा, बड़ी-बडी, बड़े-बडे, बीड़ी-बीडी, भीड़-भीड, भेड़-भेड, मुखड़े-मुखडे, रबड़-रबड, लड़का-लडका, लड़कियाँ-लडकियाँ, लड़के-लडके, लड़ाई-लडाई, सड़क-सडक, सड़कें-सडकें, सड़ी-सडी।

(v) ढ़ < ट / ढ

**ढ़→ट**

टेढ़ी-मेढ़ी-डेटी-माटी

**ढ़→ढ**

**ओढ़-ओढ, चढ़-चढ, चढ़ता-चढता, चढ़ा-चढा, चढ़ाते-चढाते, डेढ़-डेढ, पढ़-पढ, पढ़ना-पढना, पढ़ते-पढते, पढ़ाना, पढाना, पढ़ाते-पढाते, पढ़े-पढे, बढ़-बढ, बढ़ती-बढती, बढ़ते-बढते, बढ़ाने-बढाने, बढ़िया-बढिया, बढ़ी-बढी, बाढ़-बाढ, बूढ़े-बूढे, मढ़ी-मढी, साढ़े-साढे, सीढ़ी-सीढी।**

(vi) **थ→त (अल्प प्राणीकरण)**

**बर्थ—बर्त**

(vii) ण→न
अरणाकुलम—अरनाकुलम

(viii) र→य
कार्रवाई—कार्यवाई

(ix) श→ष
रिक्शा-रिक्षा, स्टेशन-स्टेषन

(x) ट्ट→ठ (द्वित्व→महाप्राण व्यंजन)
हट्टे-कट्टे—हठे खठे

## (ग) विशेषक चिह्न संबंधी

इस श्रेणी के अंतर्गत (1) ँ और ं का आगमन (2) ँ, ं और : का लोप, (3) ँ और ं का विपर्यय (4) विशेषक चिह्न → व्यंजन और (5) व्यंजन → विशेषक चिह्न की गलतियाँ पायी गयी हैं।

(1) अनुनासिक ( ँ ) चिह्न और अनुस्वार चिह्न ( ं ) का आगम

| ँ आगम | ं आगम |
|---|---|
| वाञ्छा-वाँञ्छा | भीख-भींख |
| | मानो-मानों |
| | मिट्टी-मिंट्टी |

(2) अनुनासिक ( ँ ) चिह्न, अनुस्वार ( ं ) चिह्न और विसर्ग (:) चिह्न का लोप

| ँ लोप | ं लोप | : लोप |
|---|---|---|
| गेहूँ-गेहू | ओंठों-ओठो | प्रात:काल-प्रातकाल |
| पहुँच-पहुंच | नहीं-नही | |
| | मर्यादाओं-मर्यादाओ | |
| | मैं-मै | |
| | सरसों-सरसो | |

(3) **विशेषक चिह्न का विपर्यय** :—इसके अंतर्गत (i) ँ → ं और (ii) ं → ँ

(i) ँ → ं

| | |
|---|---|
| अँग्रेजी-अंग्रेजी | झाँक-झांक |
| अँधियारी-अंधियारी | झाँसी-झांसी |
| अँधेरी-अंधेरी | ताँगे-तांगे |
| आँखों में-आंखों में | परीक्षाएँ-परीक्षायें |
| आँसू-आंसू | पहुँच-पहुंच |
| उँगली-उंगली | पहुँची-पहुंची |
| ऊँघ-ऊंघ | पाँच-पांच |
| कहानियाँ-कहानियां | पुस्तिकाएँ-पुस्तिकायें |

| | |
|---|---|
| गाँव-गांव | बाँटना-बांटना |
| चाँद-चांद | बूँदें-बूंदे |
| छटाएँ-छटायें | महँगा-महंगा |
| जाऊँगा-जाउंगा | साँप-सांप |
| मूँछ-मूंछ | स्त्रियाँ-स्त्रियां |
| योग्यताएँ-योग्यतायें | सुविधाएँ-सुविधायें |
| वहाँ-वहां | हँसी-हंसी |
| विशेषताएँ-विशेषतायें | |
| शालाएँ-शालायें | |
| समस्याएँ-समस्यायें | |

(ii) ं → ँ

आंध्र प्रदेश—आँध्र प्रदेश

(4) **विशेषक चिह्न → व्यंजन** : इसके अंतर्गत

(i) ँ → न और (ii) ं → ण मिला है।

(i) ँ → **न** (ii) ं → **ण**

अँधेरा-अन्धेरा घंटे-घण्टे

(5) **व्यंजन—विशेषक चिह्न** : इसके अंतर्गत ह् → : मिला।

ह् → :

छह् → छः

## (ग) अन्य

इस श्रेणी में (1) अमानक वर्ण संयोग और (2) गलत वर्ण के प्रयोग मिले हैं।

(i) **अमानक वर्ण संयोग** : इसके अंतर्गत (i) क, (ख), और (iii) त वर्णों का संयोग अमानक रूप से किया गया।

| (i) **क** | (ii) **ख** | (iii) **त** |
|---|---|---|
| क्लास—क्‌लास | बखिशश—बख्‌शिश | साक्षात्कार—साक्षात्‌कार |

(2) **गलत वर्णों का प्रयोग** : इसके अंतर्गत घ→ध मिला है।

**घ—ध**

घुसकर—धुसकर

(III) उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि मलयालम भाषियों के लिए हिन्दी वर्तनी शिक्षण के लिए निम्नलिखित पाठ्यबिंदु निर्धारित किये जा सकते हैं :—

(1) ठ ↔ ड़ (62)

(2) ँ ↔ ं (46)

(3) ढ ↔ ढ़ (26)

(4) य और व की श्रुति (13)

(5) उ ↔ ऊ (१०)

(6) ज < श, स (5)

(7) अघोष वर्ण → सघोष वर्ण (4)

(8) र और उसका वर्ण संयोग (4)

(9) मानक वर्ण और उनका संयोग (4)

(कोष्ठकों में जो संख्या दी गयी हैं वह शब्द आवृत्ति को सूचित करती है।)

उपर्युक्त 9 पाठ्यबिंदुओं पर वैज्ञानिक तरीके से वर्तनी पाठ और सुधारात्मक वर्तनी अभ्यास निर्माण कर हिन्दी सीखने और सिखाने वाले व्यक्तियों को उपलब्ध कराया जाए तो आशा है कि उनकी वर्तनीगत त्रुटियों को सुगमता से दूर कराया जा सकता है।

परिशिष्ट—1

# लेखन में प्राप्त गलत वर्तनी वाले शब्दों की सूची (सही शब्दों के साथ)

| | | |
|---|---|---|
| 1. | अँग्रेजी | अंग्रेजी (23) |
| 2. | अँधियारी | अंधियारी |
| 3. | अँधेरा | अन्धेरा |
| 4. | अँधेरी | अंधेरी |
| 5. | अट्ठाईस | अठाईस |
| 6. | आँखों में | आंखों में (3) |
| 7. | आंध्र | आंध्रा (3) |
| 8. | आंध्र प्रदेश | आँध्र प्रदेश (3) |
| 9. | आँसू | आंसू |
| 10. | आगरा | आग्रा (23) |
| 11. | आशाओं में | आशावों में |
| 12. | आहुति | आहूति |
| 13. | इसलिए | इसलिये |
| 14. | उँगली | उंगली |
| 15. | उड़ | उड |
| 16. | ऊँघ | ऊंघ |
| 17. | एक्सप्रेस | एक्सप्रस |
| 18. | एजिटेशन | अजिटेषन |
| 19. | एड़ी | एडी |
| 20. | एरणाकुलम | एरनाकुलम (2) |
| 21. | ओढ़ | ओढ |
| 22. | ओंठों | ओठों |
| 23. | कपड़े | कपडे (8) |
| 24. | करोड़ों | करोडों |
| 25. | कहानियाँ | कहानियां (3) |
| 26. | काजीपेट | काशीपेट<br>काषिपेट |
| 27. | कार्रवाई | कार्यवाई |
| 28. | कुचले | कुचैले |
| 29. | कुली | कूली (3) |
| 30. | के लिए | के लिये |
| 31. | कैंट | केन्ट<br>कान्ट (3) |
| 32. | कैंटीन | कान्टीन |
| 33. | क्लास | क्लास |
| 34. | खड़ा | खड़ा (7) |
| 35. | खड़ी | खडी (3) |
| 36. | खड़े | खडे (2) |
| 37. | खलबली | खलीबली |
| 38. | खिड़की | खिडकी |
| 39. | खूब | खुब |
| 40. | गड़बड़ी | गड़बडी (9) |
| 41. | गाँव | गांव |
| 42. | गाड़ियाँ | गाडियाँ |
| 43. | गाड़ी | गाडी (116) |
| 44. | गेहूँ | गेहू |
| 45. | घंटे | घण्टे (2) |
| 46. | घड़ों | घडों |
| 47. | घुसकर | धुसकर |
| 48. | चढ़ | चढ (8) |
| 49. | चढ़ता | चढता |
| 50. | चढ़ा | चढा (3) |
| 51. | चढ़ाते | चढाते |
| 52. | चमगीदड़ | चमगीदड |
| 53. | चाँद | चांद |
| 54. | चाहिए | चाहिये (8) |
| 55. | चिंघाड़ती | चिंघाडती |
| 56. | चौड़ी | चौडी |
| 57. | चौड़े | चौडे (4) |
| 58. | छटाएँ | छटायें |
| 59. | छह | छः (10) |
| 60. | छोड़ | छोड (8) |
| 61. | छोड़ा | छोडा |
| 62. | जाऊँगा | जाउंगा |

| | | |
|---|---|---|
| 63. | जाए | जाय |
| 64. | जाड़ा | जाडा |
| 65. | जीता-जागता | जीगता-जागता |
| 66. | जोड़ते | जोडते |
| 67. | जोड़ना | जोडना |
| 68. | झगड़ालुओं | झगडालुओं |
| 69. | झगड़े | झगडे (4) |
| 70. | झाँक | झांक |
| 71. | झाँसी | झांसी |
| 72. | झाड़ियाँ | झाडिया |
| 73. | झोंपड़ी | झोंपडी |
| 74. | टेढ़ी-मेढ़ी | डेटी माटी |
| 75. | डेढ़ | डेढ |
| 76. | ताँगे | तांगे |
| 77. | थोड़ा | थोडा (2) |
| 78. | थोड़ी | थोडी (3) |
| 79. | थोड़े | थोडे (3) |
| 80. | दौड़ | दौड (4) |
| 81. | दौड़धूप | दौडधूप (2) |
| 82. | दौड़ने | दौडने (2) |
| 83. | धूम्रपान | धूमपान |
| 84. | धूलि | धूली |
| 85. | नहीं | नही (4) |
| 86. | पकड़ | पकड |
| 87. | पकड़ा | पकडा (3) |
| 88. | पड़ | पड |
| 89. | पड़ता | पडता (15) |
| 90. | पड़ा | पडा (9) |
| 91. | पड़ी | पडी (9) |
| 92. | पड़े | पडे |
| 93. | पड़ेगा | पडेगा |
| 94. | पड़ेगी | पडेगी |
| 95. | पड़ोसी | पडोसी |
| 96. | पढ़ | पढ |
| 97. | पढ़ना | पढना (3) |
| 98. | पढ़ने | पढने (3) |
| 99. | पढ़ाई | पढाई (5) |
| 100. | पढ़ाकर | पढाकर (3) |
| 101. | पढ़ाते | पढाते (3) |
| 102. | पढ़ाना | पढाना |
| 103. | पढ़ाने | पढाने (16) |
| 104. | पढ़े | पढे |
| 105. | पत्ता | पता |
| 106. | परीक्षाएँ | परीक्षायें |
| 107. | पहाड़ियाँ | पहाडियाँ |
| 108. | पहाड़ों | पहाडों (4) |
| 109. | पहुँच | पहुंच, पहुच (3) |
| 110. | पहुँची | पहुंची |
| 111. | पाँच | पांच (4) |
| 112. | पिछड़े | पिछडे |
| 113. | पुस्तिकाएँ | पुस्तिकायें |
| 114. | पूछताछ | पुछताछ |
| 115. | पेड़ | पेड (11) |
| 116. | पेड़ों | पेडों |
| 117. | प्रातःकाल | प्रातकाल |
| 118. | प्रार्थना | प्राथना |
| 119. | फ़ारम | फाम |
| 120. | बख्शिश | बख्शिश |
| 121. | बड़ा | बडा (9) |
| 122. | बड़ी | बडी (25) |
| 123. | बड़ी-बड़ी | बडी-बडी |
| 124. | बड़े | बडे (16) |
| 125. | बढ़ | बढ (16) |
| 126. | बढ़ती | बढती |

| | | |
|---|---|---|
| 127. | बढ़ने | बढने |
| 128. | बढ़ाने | बढाने (3) |
| 129. | बढ़िया | बढिया |
| 130. | बढ़ीं | बढी |
| 131. | बदलकार | बदलाकर |
| 132. | बनाई | बनाइ |
| 133. | बर्थ | बर्त |
| 134. | बाँटना | बाँटना |
| 135. | बाढ़ | बाढ |
| 136. | बापूजी | बापुजी |
| 137. | बीड़ी | बीडी (3) |
| 138. | बुलेटिन | बुलटिन |
| 139. | बूंदे | बूदें |
| 140. | बूढ़े | बूढे (4) |
| 141. | भीख | भींख |
| 142. | भीड़ | भीड (7) |
| 143. | भूख | भुख |
| 144. | भेड़ | भेड |
| 145. | मंत्रालय | मंत्रणालय |
| 146. | मढ़ी | मढी |
| 147. | मर्यादाओ | मर्यादाओं |
| 148. | महँगा | महंगा |
| 149. | मानो | मानों |
| 150. | मिट्टी | मिंट्टी |
| 151. | मिर्च | मिर्ची |
| 152. | मुँह | मूंह |
| 153. | मुखड़े | मुखडे |
| 154. | मुफ्त | मुत्फ |
| 155. | मूँछ | मूंछ |
| 156. | मैं | मै |
| 157. | योग्यताएँ | योग्यतायें |
| 158. | रबड़ | रबड |
| 159. | रिक्शा | रिक्षा |
| 160. | रिजर्व | रिसर्व |
| 161. | रुपये | रुपये |
| 162. | लड़का | लडका (1) |
| 163. | लड़कियाँ | लडकियाँ |
| 164. | लड़के | लडके (3) |
| 165. | लड़ाई | लडाई |
| 166. | लिंक एक्सप्रेस | लिंग एक्सप्रेस |
| 167. | वर्धा | वार्धा |
| 168. | वहाँ | वहां |
| 169. | वाच्छा | वाँच्छा |
| 170. | विशेषताएँ | विशेषतायें |
| 171. | शालाएँ | शालायें |
| 162. | शौकत | शोकत |
| 173. | सड़क | सडक |
| 174. | सड़कें | सडकें |
| 175. | सड़ी | सडी |
| 176. | सत्ताईसवीं | सताईसवीं |
| 177. | समस्याएँ | समस्यायें (5) |
| 178. | सरकार | सर्कार |
| 179. | सरसों | सरस |
| 180. | साँप | सांप |
| 181. | साक्षात्कार | साक्षात्कार |
| 182. | साढ़े | साढे (14) |
| 183. | स्त्रियाँ | स्त्रियां |
| 184. | सीढ़ी | सीढी |
| 185. | सुविधाएँ | सुविधायें |
| 186. | स्कूल | स्कुल |
| 187. | स्टेशन | स्टेषण (5) |
| 188. | हँसी | हंसी |
| 189. | हट्टे-कट्टे | हठे-खटे |
| 190. | हिलमिल | हेल-मेल |
| 191. | हैं | है (8) |

टिप्पणी — (1) गलत शब्दों के बाद कोष्ठकों में दी गई संख्या आवृत्ति को सूचित करती है।
(2) (×) में शब्द रूप भी आजकल प्रचलित हैं।

परिशिष्ट-2

# अधिक ग़लत आवृत्ति वाले शब्दों की सूची (सही शब्द सहित)

| क्रम सं० | सही शब्द | ग़लत शब्द | आवृत्ति संख्या |
|---|---|---|---|
| 1 | गाड़ी | गाडी | 116 |
| 2 | बड़ी | बडी | 25 |
| 3 | अँग्रेजी | अंग्रेजी | 23 |
| 4 | आगरा | आग्रा | 23 |
| 5 | पढ़ाने | पढाने | 16 |
| 6 | बड़े | बडे | 16 |
| 7 | बढ़ | बढ | 16 |
| 8 | पड़ता | पडता | 15 |
| 9 | साढ़े | साढे | 14 |
| 10 | पेड़ | पेड | 11 |
| 11 | छह | छः | 10 |
| 12 | गड़बड़ी | गडबडी | 9 |
| 13 | पड़ा | पडा | 9 |
| 14 | पड़ी | पडी | 9 |
| 15 | बड़ा | बडा | 9 |
| 16 | कपड़े | कपडे | 8 |
| 17 | गाड़ियाँ | गाडियाँ | 8 |
| 18 | चढ़ | चढ | 8 |
| 19 | चाहिए | चाहिये | 8 |
| 20 | हैं | है | 8 |
| 21 | खड़ा | खडा | 7 |
| 22 | भीड़ | भीड | 7 |
| 23 | लड़का | लडका | 7 |
| 24 | पढ़ाई | पढाई | 5 |
| 25 | समस्याएँ | समस्यायें | 5 |
| 26 | साँप | सांप | 5 |
| 27 | स्टेशन | स्टेषण | 5 |
| 28 | चौड़े | चौडे | 4 |
| 29 | झगड़े | झगडे | 4 |
| 30 | दौड़ | दौड | 4 |
| 31 | नहीं | नही | 4 |
| 32 | पड़ | पड | 4 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 33 | पढ़ | पढ | 4 |
| 34 | पढ़े | पढे | 4 |
| 35 | पहाड़ों | पहाडों | 4 |
| 36 | पाँच | पांच | 4 |
| 37 | बढ़े | बढे | 4 |

परिशिष्ट-3

## हिन्दी अध्यापकों के नाम

| क्रम सं. | नाम | स्थान |
|---|---|---|
| 1 | श्री. ए. के. भास्करन नायर | तलयोलटपरम्पु |
| 2 | ,, एस. सुकुमारन नायर | तुण्डत्तिल |
| 3 | ,, के. जी. श्री धरन | तिरुवल्लम |
| 4 | ,, के. पुरुषोत्तमन | नेड्डङ्ङुण्डा |
| 5 | ,, एम. ए. वर्की | कुळत्तुवायिल |
| 6 | ,, के. जोण | कोट्टारक्करा |
| 7 | ,, के. एम कुंजिराम नंबियार | पट्टियम |
| 8 | ,, टी. के. विश्वनाथन | एङ्ङण्डियूर |
| 9 | ,, के. के. भरतन | अय्यन्तोळि |
| 10 | ,, टी. पी. चेरु | पुन्नयूरकुळम |
| 11 | ,, के. पी. बालकृष्णन नंबियर | माय्यील |
| 12 | ,, के. कुंजिकृष्णन नायर | पेरिया |
| 13 | ,, पी. शंकर मेनोन | कुरुक्कञ्चेरी |
| 14 | ,, एम. अप्पुकुट्टी | कोषिक्कोड |
| 15 | ,, ए. पी. नारायणन नंबूदिरी | तिरुवल्लूर |
| 16 | ,, वी. रामन मेनोन | कुट्टूर |
| 17 | ,, पी. के. गोविन्दन नंबियार | ओट्टपालम |
| 18 | ,, एम. जी. कृष्णन नायर | कैंपुषा |
| 19 | ,, के. वी. कुरियन | मुळक्कुषा |
| 20 | ,, वी. एस. रामकृष्ण पिल्ले | काट्टूर |
| 21 | श्रीमती ग्रेसियम्मा वरगीस | कुम्पनाड |
| 22 | श्री. पी. ए. अब्रहाम | वषिन्तका |
| 23 | ,, पी. जे. वरगीस | किषक्कञ्चेरी |
| 24 | श्रीमती सी. पी. सुभद्रा | अडक्कापुलूर |
| 25 | श्री. के. वी. भरतन | तृश्शेरी |
| 26 | श्रीमती के. राजम्मा | तानूर |
| 27 | श्री. के. भाई. तंकप्पन | रामनाट्टुकरा |
| 28 | ,, पी. वी. जोर्ज | चुंगप्तरा |
| 29 | ,, सी. जे. चाक्को | चेर्तला |
| 30 | ,, बी. पुरुषोत्तमन पिल्लै | वेञ्ञारमूड |

| | | |
|---|---|---|
| 31 | ,, आर. पुरुषोत्तमन | मोरयूर |
| 32 | श्रीमती एलिरू जोर्ज | काञ्जिरक्कोड |
| 33 | श्री. के. एस. मौहन्नन | नेडुमकुन्नम |
| 34 | ,, एम. के. रामकृष्णन | कूडाळि |
| 35 | ,, पी. वी. कृष्णन | कळमश्कोरी |

## SUMMARY

The paper is concerned with an error-analysis of the Hindi spellings of the Malayalam speakers. The analysis is based on the sample survey; essays written in Hindi by 35 Hindi Teachers who were deputed by the State Government of Kerala to the 23rd Hindi Orientation Course (1.12.72-30.12.72) conducted by the C.I.H. Agra are taken as samples. Out of 24,000 words used in the essays 191 words are wrongly spelt and the total spelling mistakes are numberd to 646. Teacher and word-wise ratio of the mistakes are counted as 1 : 18 and 37 : 1 respectively. In the part two of the paper, all the mistakes are analysed linguistically and in the the third part the following teaching points for Hindi spelling teaching are enlisted as the result of the study.

(1) ड↔ड़ (2) ँ ↔ ं (3) ढ↔ढ़ (4) य और व की श्रुति (5) उ↔ऊ (6) ज < श / स (7) अघोष वर्ण→सघोष वर्ण (8) र और उसके संयोग (9) मानक वर्ण और उनके संयोग

तेजनारायण लाल

# हिन्दी बंगला के कुछ वाक्य-साँचों का विश्लेषण : भाषा अधिगम के परिप्रेक्ष्य में

.० देश में भावात्मक एकता, साँस्कृतिक समन्वय, व्यापार-विनिमय की दृष्टि से जिस प्रकार किसी हिन्दी भाषी को अपनी पड़ोसी भाषा बंगला* को सीखना अपेक्षित है उसी प्रकार किसी बंगला भाषी को हिन्दी सीखना भी अपरिहार्य है। जब हम परस्पर एक दूसरे की भाषा सीखते हैं और उसे बोलते हैं तो हम निश्चय ही उसको अपनी ओर खींचते हैं और रागात्मक संबंध स्थापित करते हैं, बहुत सारी गलतफहमियों, भ्रांतियों को दूर करते हैं और स्पष्ट बोध के कारण अनावश्यक गलत धारणाओं का मूलोच्छेदन भी करते हैं। एशिया खंड में केवल बंगला भाषा को ही नोबेल प्राइज पाने का सुयोग मिला है। उसका आधुनिक साहित्य भारत की भाषाओं में सर्वोत्कृष्ट है। चूंकि, बंगला के कुछ अच्छे-अच्छे ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद हो चुका है और उस अनुवाद को पढ़कर मूल ग्रंथ को पढ़ने की भी उत्कंठा होती है। इस दृष्टि से भी बंगला सीखना आवश्यक प्रतीत होता है।

हिन्दी और बंगला की वाक्यगत संरचनाओं में भिन्नता की अपेक्षा समानता के ही तत्त्व अधिक पाये जाते हैं। इससे परस्पर दोनों भाषाओं को सीखने में और भी सहजता एवं सरलता बढ़ जाती है। प्रस्तुत शोधपत्र में दोनों भाषाओं के मूलाधार में सन्निहित वाक्य-साँचों को विश्लेषित करना ही अभिप्रेत है। यह एक बानगी के रूप में ही निरूपित किया गया है और इसके आधार पर दोनों भाषाओं की विशिष्टताओं का मूल्यांकन किया जा सकता है।

यह भी उल्लेख्य है कि हिन्दी और बंगला में जो कुछ सीमित संख्या में वाक्य-सांचे प्रचलित हैं उनके आधार पर बहुसंख्यक वाक्य रचे जा सकते हैं। ये वाक्य-साँचे दोनों भाषाओं की गहन या आंतरिक संरचनाओं को द्योतित करते हैं। जे० सी० कैटफ़ोर्ड ने प्रतिपादित किया कि भाषा मानव के

---

*श्री कमलाकर तिवारी, और श्री बलाइमोहन दे, से बंगला के सूचक के रूप में सहयोग लिया गया है। ये दोनों, क्रमशः माल्दह और नदिया के रहने वाले हैं और संस्थान में चलने वाले सोलहवें नवीकरण पाठ्यक्रम शिविर (बंगला) के प्रभागी हैं। हिन्दी का सूचक मैं स्वयं हूँ।

संरूपित व्यवहार की विधा है। वास्तव में साँचा ही भाषा है।[1] किसी भी इकाई की व्यवस्थित कोटि भाषा की क्रियाशीलता के उन विस्तारों को प्रश्रय देती है जो निरंतर अर्थ युक्त साँचे को अग्रसर करती है। साँचे अपने तईं ऐसे तत्त्व माने जाते हैं जिन्हें हम संरचनाएँ कहते हैं।[2] जे० एफ़० वालवर्क की स्थापना है कि तत्त्वतः भाषा तो साँचों की समस्त श्रेणियों की बनी हुई है, इनकी इकाई की प्रत्येक विधा अपने साँचे से संपृक्त रहती है और प्रत्येक साँचा अन्य स्तरों पर दूसरे साँचों से संगुफित तथा संबंधित रहता है।[3] उन्होंने यह भी लिखा है कि भाषा के व्याकरणिक साँचे रूपिम, शब्द-समूह, उपवाक्य और वाक्य—इन पाँच विभिन्न प्रकार की इकाइयों से निर्मित किये जाते है और प्रत्येक की अपनी संरचना होती है।[4] पॉल रॉबर्ट्स का कथन है कि कभी-कभी हम वाक्यों के बारे में सोचते हैं कि वे पूर्ण विचारों को व्यक्त करते हैं। एक दृष्टि से वे पूर्ण हो सकते हैं, किंतु दूसरी दृष्टि से यह तथ्य है कि वे सर्वथा पूर्ण नहीं होते। वाक्य तो बहुधा घनिष्ठ रूप से शब्दों की बनावट और अर्थवत्ता में पूर्व और पश्च वाक्यों से संबंधित किये जाते हैं।[5] कोई भी वाक्य व्यावहारिक रूप से अर्थ में पूर्ण नहीं है। वाक्य इस माने में पूर्ण है कि यह शब्द साँचों की संख्या से सम्बद्ध रहता है और यह तभी पूर्ण होता है,

---

1 G. C. Catford : A Linguistic Theory of Translation, Oxford Univarsity Press, London 1965. pp. 1-2

"Language is a type of patterned human behavior. It is, indeed, the pattern which is the language."

2. Ibid, P. 6

"The unit is the category set up to account for those stretches of language-activity which carry recurrent meaningful patterns. The Patterns themselves still have to be accounted for and these are what we call structures."

3. J. F. Wallwork (Ed) : Languages and Linguistics, An Introduction to the study of language.

Heinemann Educational Book, London 1969, P. 62

"Language, infact, is built up of a whole series of patterns, each type of unit having a pattern of its own and each interlocking with other patterns at other levels."

4. "The grammatical patterns of language are made up five different types of unit, morpheme, word group, clause, and sentence, each with its own structure."

5. Paul Roberts : Pattern of English, Harcourt, Brace & world, New York 1956 P. 57

"We, sometimes, think of sentences as being complete thoughts' they are complete in a way, but in another way, they are not complete at all. Most sentences are closely connected in form and meaning with sentences that so before and sentences that come after."

जबकि साँचा भी पूर्ण कर लिया जाता है।[1]

1. यों तो हिन्दी और बंगला के वाक्यों में नाना प्रकार की विविधताएँ पायी जाती हैं, फिर भी उनकी संरचना में समान तत्त्वों पर ही दृष्टिपात करना यहाँ समीचीन जान पड़ता है। यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि जब कोई भी हिन्दी भाषी, हिन्दी बोलता या लिखता है तो वह हिन्दी के वाक्य-साँचों को सुसज्जित एवं अनुक्रमित रूप में ही बोलता या लिखता है। यों तो प्रत्येक व्यक्ति किसी भाषा कों स्वनिम तथा संस्वन में ही बोलता है, लेकिन वह अपने भावों एवं विचारों को समाज में निर्धारित पूर्ववर्ती वाक्य साँचों में ही अभिव्यक्त करता है। ये वाक्य-साँचे विविध प्रकार से परिवर्तित तथा सम्मिश्रित किये जा सकते हैं। लेकिन मूलतः कुछ चयनित इनगिने बीज वाक्यों को ही अधिगम-बिंदु बनाकर बारंबार दुहराया जा सकता है। इस प्रक्रिया के आधार पर हिन्दी और बंगला को परस्पर सीखने और सिखाने में सुविधा हो सकती है और भाषा-अधिगम की विधि भी सुगम हो सकती है। इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध-पत्र में हिन्दी और बंगला के कुछ सरल वाक्य साँचों का विश्लेषण किया जा रहा है।

**प्रतीकाक्षरी चिह्नांक**

| | | | |
|---|---|---|---|
| संज्ञा (सं) | : 1 | क्रिया विशेषण (क्रि०वि०) | : 4 |
| सर्वनाम (सर्व) | : 2 | क्रिया और सहायक क्रिया (क्रि०सहा०क्रि०) | 5 |
| विशेषण (विशे०) | : 3 | प्रश्न बोधक (प्र० बो०) | 6 |

दुमुखी तीर की नोक ↔

2. हिन्दी और बंगला के कुछ प्रमुख सरल वाक्य-साँचे को दुमुखी तीर की नोक के द्वारा संज्ञा को क्रिया से संबद्ध किया गया है :

1↔5

| हिन्दी | बँगला |
|---|---|
| 1 ↔ 5<br>बच्चे \| दौड़े | 1 ↔ 5<br>छेलेरा \| दौड़ाइलो। |
| 1 ↔ 5<br>कुत्ता \| भूंका। | 1 ↔ 5<br>कुकुर \| डाकिलो। |
| 1 ↔ 5<br>भालू \| लेटा। | 1 ↔ 5<br>भल्लुक \| शुइलो। |
| 1 ↔ 5<br>घोड़ा \| रुका। | 1 ↔ 5<br>घोड़ा \| थामिलो। |

1. Ibid.

"A sentence is usually not complete in meaning. It is complete in sense that it consists of one of a number of world patterns, and the sentence is complete when the pattern has been completed."

1 ← 5
चाय | पिओ।

1 ↔ 5
चा | खाओ।

1 ↔ 5
कपड़े | धोओ।

1 ↔ 5
कापड़ | काचो।

1 ↔ 5
रास्ता | बताओ।

1 ↔ 5
पथ | बोलेदाओ।

1 ↔ 5
खाना | लाओ।

1 ↔ 5
खाबार | नियेएशो।

1 ↔ 5
गठरी | उठाओ।

1 ↔ 5
मोट् | तौलो

1 ↔ 1 5
राधा | पानी | लायी।

1 ↔ 1 5
राधा | जल | आनिलो

सं + सं + क्रि: 1 ↔ 1 5

सं + विशे + सहाक्रि : 1 ↔ 3 5 सहाक्रि

1 ↔ 3 5 सहाक्रि
फूल | लाल | है।

1 ↔ 3 5 सहाक्रि
फुल | लाल | आछे

1 ↔ 3 5 सहाक्रि
पेड़ | लंबा | है।

1 ↔ 3 5 सहाक्रि
गाछटि | लंबा | आछे

हिन्दी

बंगला

सर्व + प्रबो + क्रि : 2 6 ↔ 5 : आपको | क्या | चाहिए ?

2 6 ↔ 5
तुमि | की | चाओ

सर्व + सं + प्रबो + सहाक्रि : 2 ↔ 1 6 5 सहाक्रि.

सं + प्रबो + क्रि, सहाक्रि : 1 6 5 क्रि, सहाक्रि :

1 6 5 क्रि, सहाक्रि — 1 6 5 क्रि, सहाक्रि

बस | कहाँ | जाती है ? — बास | कोथाय | जाय ?

सं + विशे + सं + क्रिवि + क्रि, सहः क्रिः 1 3 ↔ 1 4 ↔ 5 सहाक्रि

1 3 ↔ 1 4 ↔ 5 क्रि, सहाक्रि — 1 3 ↔ 1 4 ↔ 5 क्रि, सहाक्रि

बकरी | हरी | घास | बहुत | खाती है। — छागल | शबुज | घास | खूब | खाय।

3. एक ही वाक्य-साँचे के आधार पर संज्ञा, विशेषण, क्रिया-विशेषण संबंधी शब्दों को उनके स्थान में बदल-बदल कर अन्य सहगामी शब्दों की पूर्ति के द्वारा भी हिन्दी और बंगला के अनेक वाक्य बनाये जा सकते हैं। दोनों भाषाओं के वाक्य साँचों की पूर्तियाँ द्रष्टव्य हैं :

**हिन्दी**

| सर्व | सं | सहाक्रि |
|---|---|---|
| यह<br>वह | कुर्सी<br>कलम<br>पुस्तक<br>खिड़की | है। |

**बंगला**

| सर्व | सं | सहाक्रि |
|---|---|---|
| एटा<br>ओटा | चेयर<br>कलम<br>बोयि<br>वातायन | (आछे।) |

---

*बंगला के प्रश्नबोधक में अंतिम सहायक क्रिया लगाना आवश्यक नहीं होता।

| कर्त्ता | कर्म | क्रि, सहाक्रि |
|---|---|---|
| वह | पानी<br>शर्बत<br>दूध<br>कोकाकोला<br>कॉफी | पीता है। |

| कर्त्ता | कर्म | क्रि, सहाक्रि |
|---|---|---|
| से | जल<br>शर्बत<br>दुध<br>कोकोकोला<br>कॉफी | खाया। |

| कर्त्ता | अधिकरण स्थानवाचक | कर्म | क्रि, सहाक्रि |
|---|---|---|---|
| हरि | मैदान में | गेंद<br>लुका-छुपी | खेलता है। |

| कर्त्ता | अधिकरण स्थानवाचक | कर्म | क्रि, सहाक्रि |
|---|---|---|---|
| हरि | माठे | बॉल<br>लुको<br>चुरि | खेला करे। |

| सर्वनामिकविशे. | विशे. | सं | क्रि, सहाक्रि |
|---|---|---|---|
| वह | अच्छा<br>छोटा<br>काला<br>दुबला | लड़का | आता है। |

| सर्वनामिक विशे. | विशे. | सं | क्रि, सहाक्रि |
|---|---|---|---|
| सेइ | भालो<br>छोटो<br>कालो<br>दुर्वल | छेलेटि | आसितेछे |

| सं | क्रिवि | क्रि, सहाक्रि |
|---|---|---|
| गिरि | खूब<br>शीघ्र<br>ठीक<br>धीरे-धीरे | पढ़ता है। |

| सं | क्रिवि | क्रि, सहाक्रि |
|---|---|---|
| गिरि | खूब<br>(ताड़ाताड़ी)<br>ठीक<br>आस्ते-आस्ते<br>(धीरे-धीरे) | पड़े। |

उपर्युक्त हिन्दी और बंगला के वाक्य-साँचों को समानता की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है और उनका विश्लेषण किया गया है। यह भी स्पष्ट है कि जब दोनों भाषाओं में समान वाक्य साँचे पाये जाते हैं तो उनके नियम भी सर्वथा समान ही हो सकते हैं। ऐसे समान तत्त्वों को प्रतीकाक्षरी चिह्नांकों के द्वारा सूत्रबद्ध रूप में प्रस्तुत करते समय और श्रम की बचत हो सकती है और भाषा-अधिगम की प्रक्रिया भी सुगम हो सकती है।

## SUMMARY

This research-paper shows the analysis of the patterns and structures of the kernel sentences of Hindi and Bengali. Due to derivation from the Sanskrit language, there is similarity is Hindi and Bengali sentences and it is the benefit

ıor the learners of the both language. In this paper the preference goes to the comparative study not contrastive and therefore the simple sentences of the both language have been selected for analysing them minutely and carefully, so that the learners can take advantages from this analysis.

---

टीप:

यहाँ बंगला के उच्चारण संबंधी कुछ विलक्षणताओं पर भी प्रकाश डालना समीचीन प्रतीत होता हैं। हिन्दी में श्/ष्/स्/ व्यंजन सर्वनाम हैं, लेकिन उच्चारण करते समय केवल्/श्/और/स्/ सर्वनाम का उच्चारण हो पाता है, /ष्/का उच्चारण सही रूप में नहीं किया जाता। बंगला में/श्/, /ष्/, /स्/के लिए केवल<शा >का प्रयोग होता है। वैसे बंगला की वर्णमाला में ये तीनों स्वनिम विद्यमान हैं। जहाँ /स/ की संधि /ल/ /थ/ या /न/ से होती है वहाँ /स/ को /स/ ही उच्चरित करते हैं। /क्ष/ को /क्ख/ और /य/ को /ज/ कहा जाता है। जब /य/ किसी शब्द के मध्य या अंत में आता है तो उसके नीचे बिंदु /य/ देने की प्रथा है उसका उच्चारण /य/ही होता हैं। शब्द के अंतिम अकार /अ/का उच्चारण ओकार /ओ/ के जैसा होता है। बंगला वर्णमाला में /ब/ और /व/ के लिए केवल<व >को ही लिखा जाता है और /व/ के स्थान पर /ब/ बोला जाता है। /ण/को /न/ की तरह उच्चरित किया जाता है। जहाँ दो व्यंजन स्वनिम जुड़े होते हैं वहाँ आदि में स्थित स्वनिम को ही दोहरा दिया जाता है। जैसे— [पद्म] को [पोद्दो] [सत्य] को [शोत्तो]। हिन्दी में जिस प्रकार /ड़/ और /ढ़/ व्यंजन स्वनिम प्रचलित हैं उसी प्रकार बंगला में भी। तथ्य तो यह है कि किसी भी हिन्दी भाषी को बंगाली सीखने में विशेष कठिनाई नहीं हो सकती और इसी प्रकार किसी बंगला भाषी को हिन्दी सीखने में। क्योंकि हिन्दी और बंगला भाषा का उत्स है संस्कृत। दोनों आर्य परिवार की भाषायें हैं और उनके वाक्य साँचे एक-दूसरे से अधिक मिलते-जुलते हैं।

Smt. Y. Sakuntalamma

# A Contrastive Study of Hindi and Telugu Phonology

The purpose of this paper is to examine the phonological aspects of Hindi and Telugu, and to show their mutual similarities and dissimilarities, and to enumerate the areas or difficulties of teaching points for Telugu people learning Hindi as a second language and Vice Versa.

Each language having its own structure, there is no one-to-one corrospondence between one language structure and another. Second language teaching must be based on accurate description and contrastion, at all levels of both source and target languages.

Contrastive linguistics is an important branch of applied linguistics. In second language learning, it is necessary to present a detailed contrastive study of the systems of native and second languages. All languages have their own structural peculiarities, and in second language learning, peculiarities between native and second languages may cause interferences at any level of language, because the learners mind is not a clean state. He knows the phonology and grammar of his native language very well. When learning second language he naturally compares the second language phonology and grammar with his mother tongue. So it is necessary for the language teachers to teach against the background of the mother-tongue. There arises the need of contrastive study between the source and target languages and to isolate the similarities, partial similarities and differences between these two languages, so that teaching problems caused by the interference of native language may be tackled.

When contrasting the phonemes of two languages we determine which phonemes of a second language do not exist in the native language, and which phonemes are simply pronounced differently. The so-called similar phonemes may cause greater difficulty to the learner than that of different ones. Because of differences in place, or manner of articulation, we notice wrong pronunciation of a learner while learning second language. Phonemes which are found in first

are not found in second language and the phonemes which are found in second are not found in first language.

As both the languages, Telugu and Hindi are having different phonological patterns we can list out the common and uncommon phonemes and their allophonic distribution.

By making a table of the vowels in Hindi and Telugu, by putting these tables side by side we can see which vowel-phonemes and their allophones are lacking in each language.

**Quadrilaterls of the Vowels in Hindi and Telugu.**
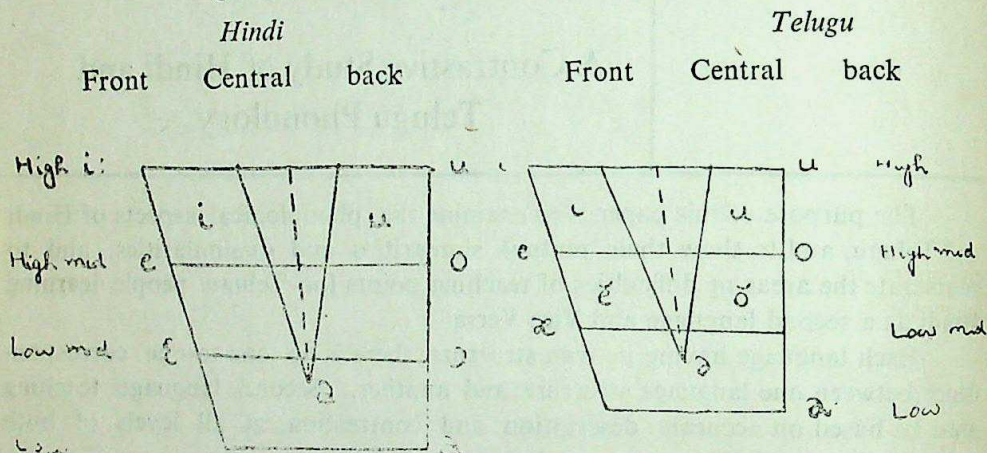
Dipht hongs:—ai, au    Diphthongs:—ai, au

After examining the above chart we can make a list of common and uncommon and vowel phonemes in Hindi and Telugu.

**Common Vowel Phonemes in Hindi and Telugu**

Hindi and Telugu has the following common vowel phonemes.
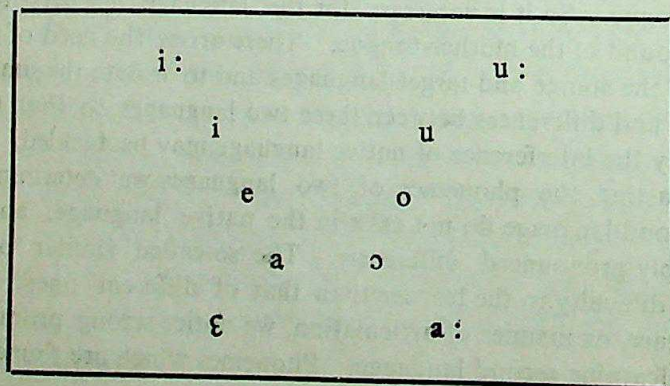
/i :/ In both Hindi and Telugu it is High-front unrounded long vowel.

eg:—(H) i : kh=Sugarcane, d i :va: r=wall, c i : n i :=Sugar
(T) i : ka=feather, p i : ka=whistle, kati:=coffee
Final/i :/ in Hindi is a bit shorter than initial and medial."[1]

/ i / High-front unrounded short vowel in both Hindi and Telugu.

eg :—(H) itana :=this much, kisa :n=former, mati=mind
(T) ituka=brick, katika=stiff, pani=work

As compared to initial and medial final /i/ in Hindi is a bit longer. This is reflected incorrect spelling of the words ending in /i/. For example, mati:/ for /mati/[2]

/ e / Mid-front unrounded long vowel in both Hindi and Telugu.

eg :—(H) ek=one, anek=more than one, de=give.
(T) enugu=elephant, dega=eagle, nene=(only) myself

In Hindi, there are two lengths of /e/ (though in script there is only one character) short and long. This can be noticed if the native speaker pronunces the following :

[ek] but [ĕkka:], [meh.], [deh] but [meh-ma : n] or [dĕh-li][3]

The above examples show that /e/ is shortened in word containing more than one syllable or followed by geminated consonant.

/ a / Mid-central unrounded short vowel in both Hindi and Telugu.

eg : (H) ab=now, saral=easy.
(T) adavi=forest, kala=dream, atta = mother-in-law

But in Hindi /a/ has different pronunciations. In words like /kamala/= lotus and /kamala:/=name of a lady. First is pronounced as /kamal/ and second is pronounced as /kamla:/[4]

The final inherent /a/ is not pronounced generally /ra : ma/=ram is pronounced as /ra : m/

Telugu /a/ is more open than Hindi /a/

/a :/ Low—back unrounded in both Hindi and Telugu.

eg : (H) a:g=fire, pa:ni:=water, kha:na:=food.
(T) a-ku=leaf, pa:lu=milk, pa:vala:=four annas.

In Hindi, it has an allophone [ă] occurs only in English loan words. For example, ăphis=office, kălEs=College etc.

/ o / Mid-back rounded long vowel in both Hindi and Telugu.

1. R.N. Sahai Report, 5th Orientation Course C.H.I. page 6
2. Ibid

eg : (H) or=side kathor=strong, do=two

(T) oda=boat, poka=betel nit, po=go

In Hindi, there are two lengths of /o/ (though in script there is only one character) short and long. This can be noticed if the native speaker pronounces the following : [do], [doha:] but [dŏhra:] or [dŏp·har]

The above shows that /o/ is shortned if words containing more than one syllable or geminated consonant follows.

In Telugu /o/ never occurs in word final position in citation. The phoneme /o/ occurs finally in one word sentences like /po/=go

/u :/ High-back rounded long vowel in both Hindi and Telugu.

eg : (H) u:par=up, bh u:lna:=forget, bhalu :=bear
(T) u :ru=village, gu:du=nest. nenu:=I also

/ u / High-back rounded short vowel in both Hindi and Telugu.

eg : (H) uthna:=standing, cun=select, guru=teacher
(T) ukku=steel, urumu= thunder, peru=name

/ ɛ / In Hindi, this sound has more than one phonetic value.

[ɛ] a monophthong (a low front vowel)

/ ɛ / [aĕ] a diphthong
[ai] a diphthong

[ɛ] ɛnak=spects, mɛ̃=my, kɛ=vomitting

[aĕ] is the normal pronunciation as in /paĕsa/=money, /kaesa/—How do you.

This does not occur in initial and final positions

[ai] is the standard pronunciation where /ɛ/ is followed by /y/ as in /gaiya/=cow, /bhaiya/=brother etc.

This does not occur in initial and final positions.
In Telugu, this sound has only /a i/ diphthong value.

eg :—aidu=five, paisa=money, Mi :kai=for you

/ ɔ / In Hindi this sound has more than one phonetic value.

/ɔ/
- [ɔ] a monophthong (a low back vowel)
- [aɔ] a diphthong
- [au] a diphthong

[ɔ] ɔrat = lady
It occurs only in initial position.

[aɔ] is the normal pronunciation—kaɔn = who, it occurs only in medial position.

[au] is the standard pronunciation.
kaua = crow
It occurs only in medial position.

In Telugu this sound has only /au/ diphthong value.
eg :—aunu = yes, gaunu = frack

**Telugu vowel phonemes lacked in Hindi.**

/ĕ/ mid-front short vowel
eg :—ĕluka = rat, nĕla = mouth, kaṭṭĕ = stick

Hindi speakers pronounce this sound as /e/ eg : tĕluguo > telugu

/ŏ/ mid-back rounded short vowel
eg :—okaṭi = one, komma = branch, emo = don't know.

Hindi speakers pronounce this sound as /o/

/æ/ low-mid front unrounded long vowel which does not occur in old Telugu is a phoneme in modern Telugu.
eg :—koṭṭæka = after beaten, cesæḍu = he did, fæsan = fashion etc.

In Telugu there is no seperate graphemic symbol for this sound and it is generally represented by equivalent /a :/ or /e/ but more often by /a :/

**Common consonant phonemes in Hindi and Telugu**

Hindi and Telugu have the following common consonant phonemes.

p b t d ṭ ḍ c j k g
m
f ś ṣ h
y
w

**Chart showing the consonant phonemes of Hindi and Telugu**

| | Bilabial | | Labio-dental | | Dental | | Alveolar | | Palatal | | Retroflex | | Velar | | glottal | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | H | T | H | T | H | T | H | T | H | T | H | T | H | T | H | T |
| Stops | | | | | | | | | | | | | | | | |
| voiceless | p | p | | | t | t | | | | | ṭ | ṭ | k | k | | |
| ,, asp | ph | ph | | | th | | | | | | ṭh | ṭh | kh | kh | | |
| voiced | b | b | | | d | d | | | | | ḍ | ḍ | g | g | | |
| ,, asp | bh | bh | | | dh | dh | | | | | ḍh | ḍh | gh | gh | | |
| Affricates | | | | | | | | | c,ch<br>j, jh | c,ch<br>j,jh | | | | | | |
| nasals | m,mh | m | | | | n | n,nh | | | | ṇ | ṇ | | | | |
| lateral | | | | | | | l,lh | l | | | | l | | | | |
| rolled | | | | | | | r, rh | | | | | | | | | |
| Flopped | | | | | | | | r | | | | | | | | |
| Fricative | | | f | f | | s | s | | ś | ś | ṣ | s | | | h | h |
| Semi-Vowel | w | w | | | | | | | y | y | | | | | | |

*Note* :=H—Hindi, T=Telugu

/ p / voiceless unaspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg :—(H) pa:ni := water. papi:ta = poppy, a:p = you
(T) pani = work, ci:puru = broom

/ b / voiced unaspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg :—(H) bal = strength, caba:na = chewing, kab = when.

/ t / voiceless unaspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg :—(H) ta:l = lake, kita:b = book, sa:t = seven
(T) tappu = mistake, ta:ta = grand father

/ d / voiceless unaspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg :—(H) da:l = gram, badal = change, ya:d = rememberance

/ ṭ / voice less unaspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg :—(H) ṭi:la = leap, a:ṭa: = flour, peṭ = stomach

(T) ṭakkari = a cunning person, ma:ṭa = word

/ ḍ / voiced unaspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg :—(H) ḍa:l = branch, haḍḍi: = bone, danḍ = punishment.

(T) ḍa:ba = roof, danḍa = chain

In medial position /ḍ/ in Hindi occurs either in loan words (eg : soḍa) or in cluster combination. In final position / ḍ / occurs only after homorganic sound.

/ k / voiceless unaspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg :—(H) kam = little, maka:n = house, na:k = nose
(T) ka:lu = leg, paluku = voice.

/ g / voiced unaspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg :—(H) gadha: = donkey, magar = crocodile,
(T) ga:li = wind, panḍaga = festival

/ c / voiceless, unaspirated palatal Affricate sound in both Hindi and Telugu.

eg :—(H) ca:val = rice, ca:ca : = uncle, sac = real
(T) ci:ra = saree, teracu = to open

---

*Note* :—generally consonants in Telugu does not occur in word final position.

In Hindi / c / is prepalatal sound and is affricated with fricative quality in the off glide. It has a weaker affrication.

"In Telugu / c / is pronounced as dental affricate [ts] (eg/tsali/=cold) before the back vowels and as palatal affricates [c] before the front vowels eg : /c̆ :ma/=ant."[5]

/ j / voiced unaspirated palatal affricate in both Hindi and Telugu.

eg : (H) jal=water, khojna :=to sear, ana:j=food grain.

(T) ja:ru=to glide, gajamu=yard.

In Hindi / j / is prepalatal sound and is affricated with a fricative quality in the off glide. It has a weaker affrication [dz].

"In Telugu / j / is pronounced as dental affricate [dz] before the back vowels (eg.—dzada=plait) and as palatal affricate / j / before the front vowels (eg: jebu=pocket)"[6]

/ m / bilabial voiced nasal in both Hindi and Telugu.

eg : (H) matar=peas, namak=salt, a:m=mango

(T) mi:ru=you (honorofic), ci:ma=ant

/ l / voiced, alveolar lateral in both Hindi and Telugu.

eg : (H) la:l=red, ni:la=blue, tel=oil

(T) la:ri=truck, kala=dream.

/ f / Aspirated, voiceless, labiodental fricative in both Hindi and Telugu. It occurs in Arabic—persian and English loan words.

eg : (H) fi:s=fee, ăfi:s=office, saf=cleanliness

(T) fi:ju=fee, ka:fi=coffee.

/ ś / palatal fricative in both Hindi and Telugu.

eg : (H) śahar=town, khuśi=happiness, si:ś=glass

(T) śa:la=shed, praśa :nlam=calm

In Hindi [ṣ] retroflex fricative treated as an allophone of /ś/

eg : bha:ṣa=language, doṣ=mistake.

/ ṣ / In telugu it is retroflex fricative.

eg : ṣa:ku=shock, lakṣa=lakh

/ h / glottal fricative in both Hindi and Telugu.

5. G. N. Reddy. A Note on the Phonetic system of the Telugu Language, p. 2
6. ibid

eg : (H) haldi = termeric powder, pahan=to wear, ca:h=wish.
(T) ha:yi=happy, maha:=great.

/ w / bilabial frictionless constituent in both Hindi and Telugu.

eg : (H) wan=garden, mewa :=dry fruit
(T) wo:da=boat, trowa=way

In Hindi it has an allophone [v] occurs in word medial, as consonant cluster and in final position.

eg : gva:la=shephered na:v=boat

In Telugu also it has an allophone [v] labiodental occurs before front vowels and in gemination.

eg : vaddu=not necessary, veru=root.

/ y / palatal semi-vowel in both Hindi and Telugu.

eg : (H) yah=this, koyal=cuckoo, ga:y=cow
(T) ya:tana=difficulty, loya=valley

**Common consonant phonemes with different pronunciation**

/ n / In Hindi it is alveolar nasal, where as in Telugu it is dental nasal.

eg : (H) na:m=name, na:na=grand father, ka:n=ear.
(T) nadu=to walk, pani=work

In Hindi /n/ has three allophones, [n] front palatal nasal, occurs in word medial position before palatal consonants (eg : pa:ric=five)

[ ṇ ] Retroflex nasal occurs before retroflex consonants (eg : anda : =egg)

[ṅ] velar nasal occurs before velar consonants (eg : ank=number)

In Telugu also /n/ has the following allophones.

[ n ] palatal nasal occurs before palatal consonant (kança=boundary)

[ ṇ ] Retroflex nasal occurs before retroflex consonant (eg : ganta=ball )

[ ṅ ] velar nasal occurs before velar consonants. (eg : kanknmu=bangle)

/ r / In Hindi, it is alveolar trill, where as in Telugu it is alveolar flap.

eg : (H) ra : t=night, karna :=to do, matar=peas.
(T) roju=day, peru=name

In Telugu /r/ in pronounced as a trill in gemination (eg : karra=stick)

/s/ In Hindi, it is alveolar fricative, where as in Telugu it is dental fricative.

eg : (H) sab=all, a:sa:n=easy, ras=juice
(T) sa:ku=pretext, pesalu=green gram

**Hindi consonants which are used in Telugu only in loan words**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ph | | ṭh | kh |
| bh | dh | ḍh | gh |
| | ch | | |
| | jh | | |

/ph/ voiceless, bilabial, aspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg : (H) phir=again, saphal=success, reph=allograph of <r>
(T) phalitam=result, maphtla:l=mafatlal

/bh/ voiced, bilabial aspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg : (H) bha:i=brother, abhi:=now, ji:bh=tongue.
(T) bhu:mi=earth, nalabhay=forty.

/dh/ Voiced, dental, aspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg : (H) dho=wash, udha:r=loan, du:dh=milk
(T) dha:nyamu=food grains, bodha=to teach

/ṭh/ Voiceless retroflex aspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg : (H) ṭhi:k=correct, miṭha:i:=sweet, pi:ṭh=back

(T) ṭhi:vi=tip top, pi:ṭhamu= base

/ḍh/ Voiced retroflex aspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg : (H) ḍher=more, medhak=frog, ṭhṇḍh=cold
(T) ḍhi:konu=to dash, ga:ḍhamu=thick.

/kh/ Voiceless velar aspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg : (H) khu:n=blood, dekhna:=to see,m ukh=face
(T) khadha=story, śa:kha=branch

/gh/ Voiced velar aspirated stop in both Hindi and Telugu.

eg : (H) ghar=house, ra:ghav=name of the person, megh=cloud
(T) ghanamu=great, sanghamu=society.

/ch/ Voiceless aspirated affricate in both Hindi and Telugu.

eg : (H) chat=roof, machal:=fish, pu:ch=to ask
(T) chandassu=prosody, swacchamu=pure

/jh/ Voiced aspirated affricate in both Hindi and Telugu.

eg : (H) jha:ḍu=broom, samajahna:=understanding, bojh=load.
(T) jhanḍa=flag, jhngha=wind.

In Telugu substandard speech aspirated sounds are replaced by the corrosponding unaspirated ones.

These sounds are pronounced by educated people only. It is difficult to pronounce these sounds by uneducated people because they are not found in native vocabulary.

eg : /katha/ as /kata/, /kashṭam/ as /kaṭṭam/ etc.

**Hindi consonant phonemes lacked in Telugu**

| | | |
|---|---|---|
| th | ṛ | ṛh |
| mh | | nh |
| | | lh |

/ ṛ / unaspirated, retroflex flapped sound never occur initially

eg : laṛka=boy, la:ṛ=love.

/ṛh/ aspirated, retroflex flapped sound never occurs initially.

eg : paṛha:i=reading, caṛh=to climb.

/mh/ bilabial aspirated nasal, counterpart of /m/

eg : kumha:r=potmaker, brahm=god,

/nh/ alveolar aspirated nasal, counterpart of /n/

eg : unhẽ=to them, ka:nh=lord krishna.

/lh/ Alveolar aspirated lateral, counterpart of / l /

eg : culha:=oven

/th/ aspirated, voiceless dental stop.

eg : katha=story, ha:th=hand

In Telugu the contrast between /th/ and /dh/ is eliminated, only /dh/ occurs for both.

**Hindi loan sounds lacked in Telugu**

/ q / voiceless radicle stop.

eg : qa:bil=fit, ta:qat=strength, śauq=interest

/ z / voiced alveolar fricative.

eg : zara:=little, maza:=happy, gaz=yard

/ x / Aspirated, voiceless radicle fricative.

eg : xabar=news, buxa:r=fever.

/ γ / voiced radicle fricative

eg : γari:b=poor, baγal=side, ba:γ=garden

**Telugu consonant phonemes lacked in Hindi**

/ḷ/ Retroflex lateral sound.

eg : kaḷa=art, koḷḷu=hens.

Vowel sequence is a characterstic feature of Hindi. It occurs in all positions.

eg : a:ie=please come, ja:o=to go etc.

Consonant clusters : Hindi has a wider range of consonant clusters in all positions of the word, where as in Telugu these clusters are found only in loan words.

eg : (H) prakash=light, patthar=stone, parvat=Hill etc.
(T) kanya=unmarried girl, drama=play etc.

Consonant gemination is a characteristic feature of Telugu. Gemination occurs only in medial position.

eg : kukka=dog, anna=brother, atta=mother-in-law, katti=knife etc.

In Hindi also we can find a few geminated consonants.

eg : cappal=shoes, uttar=reply miṭṭi:=clay etc.

## Modifications in Hindi Pronunciation

The following modifications in pronunciation must be noted.

(1) [ah]>[ɛ] in some verbs [ah] is pronounced as [ɛ].

k*a*hna>kɛhna
r*a*hna>rɛhna
ṭ*a*halna>ṭɛhalna etc.

(2) ah>e, o

The pronouns [y*a*h] and [v*a*h] are pronounced [ye] and [vo]

(3) [ah]>a

In some numerals [*a*h] pronounces as [a]

bar*a*h>bara
ter*a*h>tera
gyar*a*h>gyara etc.

(4) -*a*hi->*a*h->ɛ. In certain words these modification will take place

b*a*hin>b*a*hn>bɛhn
p*a*hila>p*a*hla>pɛhla

(5) u>o. In certain words short u pronounces as o

bahut>bahot
pahũc>pahõc

(6) y>e final, medial /y/ in some words pronounced as /e/

gay>gae
bajay>b*a*jae
koyla>koela

(7) v>o In certain words [V] is pronounced as [o̮]

gãv>gãõ
nav>nao̮

(8) When two aspirated consonants occurs side by side the second one gets weakened and loses its aspiration.

bhukh>bhuk
ṭhaṭh>ṭhaṭ
bhikh>bhik

(9) If words have long vowels both in first and second syllables, there is a tendency to reduce the first one.

di:va:li>diva:li :
tu:fa:n>tufān

## Modifications in Telugu pronunciation.

(1) *vowel changes*

(a) ja>je

jaḍa>jeḍa
janumu>jenumu
jalaga>jelaga

(b) ca>ce

ca:pa>ce:pa
campa>cempa
caraku>ceraku

(c) śa>śe

śani>śeni
śanaga>śenaga
śarma>śerma 'a name'

(2) *Consonant changes*

a. c>s

| | |
|---|---|
| caduvu>saduvu | 'studies' |
| camuru>samuru | 'oil mustard' |
| campu>sampu | 'to kite' |
| ce:nu>se:nu | 'farm' |
| ci:ma>si:ma | 'insect' |

b. m>v

ma:ma>ma:va
manumaḍu>manuvaḍu

c. ṣ>s Retroflex /ṣ/ changes into dental /s/
pariṣka : ramu>pariska : ramu

d. th>d

katha>kada
vidyarthi>vidyardi

e. th>t

paristhiti>paristiti

a. tya>cce

sa:hityamu>sa:hiccemu
satyamu>saccemu
satyana:ra:yaṇa>saccena:ra:yaṇa

b. dya>dde

padyamu>paddemu
gadyamu>gaddemu

c. dhya:>dde :

dhya:namu>dde:namu
adhya:yamu>adde:yamu
madhya:hnamu>madde:hnamu

d. ṭṭ>tt

juṭṭu>juttu

e. vv>u:

uvvu>u:gu
puvvulu>pu:lu
nuvvulu>nu:gulu
navvu>nagu

f. ty>cy

satya:graha>sachy:graha

atya:śa> acha:śa

g. dy>jh

udgo:gam>ujyo:gam

h. th>dh

natha>nadha
katha>kadha
mαnmαthudu>mαnmαdhudu

i. k>g

kαnnu>gannu

j. ṣt>ṭṭ

kαṣhtαmu>kαṭṭαmu

In borrowd words due to interference, in Telugu wrong pronunciation. Will be noticed. The word final /a/, /I/ etc. becomes short, where as in Hindi these vowels pronounces as long one's

| a>a : | *Telugu* | | *Hindi* |
|---|---|---|---|
| | lata | > | lata: |
| | kala | > | kala: |
| | kavita | > | kavita: |
| | bhasa | > | bhasa: |
| i>i | | | |
| | nadi | > | nadi: |
| h>gh | | | |
| | simh | > | singh |
| ttu>t | | | |
| | jagattu | > | jagat |

**Teaching Points for the Telugu Speaking Students**

(1) /i/ in final position
(2) /ĕ/ followed by (i) gemination (ii) h
(3) /a/ dropping of /a/ in medial position
(4) Inherent dropping of /a/ in final position
(5) [ă] allophone as /a:/
(6) /ŏ/followed by (i) gemination (ii) h
(7) /u:/ in final position.
(8) [aĕ] and (ii) [ai] diphthongs of /ɛ/
(9) (i) [aɔ] and (ii) [au] diphthongs of /ɔ/
(10) All consonants in final position.
(11) /c/ in all positions
(12) / j / in all positions
(13) /s/ in all positions
(14) /ś/ ,, ,,
(15) /n/ ,, ,,
(16) /r/ ,, ,,
(17) All aspirate cosonants in all positions.
(ph, bh, th, ṭh, dh, ḍh, kh, gh, ch, jh)
(18) (i) ṛ, (ii) ṛh, (iii) mh, (iv) nh, and (v) th with their distribution.
(19) loan sounds (q, z, x, γ) in all positions.
(20) consonant clusters
(21) vowel sequence
(22) Modified pronunciation of the following phonemes and phoneme sequences.

(ii) [əh]>[ɛ], (ii) [əh]>[e], [o] (iii) [əh]>[a] (ii) [-əhi-]>[-əh-], [ɛ,] (v;) [u]>[o] (vi) [y]>[e]; (vii) [v]>[o]

# Reference Books


## English

1. Hall (Jr), Robert — An Introduction to Linguistics; Delhi-Moti lal Banarasi Dass (1969)
2. Krishnamurty. B.H. — Telugu Verbal Bases, Ist ed;Losangeles—University of California (1961)
3. Krishnaswamy, N. — Transformational Grammar and Contrastive Analysis—Gaveshana, January (1969) page 131-136.
4. ,, — Introduction to Linguistics for language teachers, Somaiya Publications. Bombay (1971)
5. Mackey. W.F. — Language Teaching Analysis—London, Longmans, Green & Co. Ltd. (1961)
6. Moulton.G. William. — The Sounds of English and German
7. Nickel. G — Papers in Contrastive Linguistics—London-Cambridge University Press (1971)
8. Parthasarathi, J. — Contrastive Linguistics and Language Teaching, Gaveshana—January(1969) page 25-30.
9. Reddy. G. N. — A Note on the Phonetic System of the Telugu Language
10. Sahai. R. N. — Report 5th Orientation courses, October 1969.
11. Sivaramamurthi, N. — Cognate language teaching (Malayalam, Kannada & Telugu)

## हिन्दी

12. डॉ० चतुर्भुज सहाय — हिन्दी और असमिया के व्यंजनों की तुलना, गवेषणा (अंक 16) नवम्बर (1971) पृष्ठ 67-72.
13. डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा — हिन्दी की ध्वनि-संघटना, गवेषणा (अंक 16) नवम्बर 1971, पृष्ठ 83-100
14. विश्वामित्र — गुंटूरू जिले की तेलुगु और आगरा की हिन्दी के विशेष संदर्भ में 'गवेषणा (अंक14) अक्तूबर 1970.

## सारांश

इस अध्ययन में हिन्दी और तेलुगु की स्वन प्रक्रिया का व्यतिरेकात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए दोनों में विद्यमान समानता, असमानता और अर्द्ध समानता का विवरण दिया गया है। अंत में तेलुगु भाषियों को हिन्दी उच्चारण सिखाने के लिए २२ आवश्यक शिक्षण बिंदुओं का चयन किया गया जोकि इस अध्ययन का निष्कर्ष है। इस अध्ययन में निम्नलिखित विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है :—

दोनों भाषाओं के स्वर स्वनिमों के चार्ट दोनों में उपलब्ध समान स्वर स्वनिम, उनका विवरण, वितरण तेलुगु में उपलब्ध किन्तु हिन्दी में अनुपलब्ध स्वर स्वनिम, दोनों भाषाओं के व्यंजन स्वनिमों के चार्ट दोनों मे उपलब्ध समान व्यंजन स्वनिम, उनका विवरण, वितरण, भिन्न रूप से उच्चरित समान व्यंजन स्वनिम, हिन्दी के ऐसे व्यंजन स्वनिम जोकि तेलुगु में केवल आगत शब्दों में प्रयुक्त होते हैं, हिन्दी में उपलब्ध किंतु तेलुगु में अनुपलब्ध व्यंजन स्वनिम, हिन्दी में आगत ध्वनियाँ जो तेलुगु में उपलब्ध नहीं हैं, तेलुगु में उपलब्ध किंतु हिन्दी में अनुपलब्ध व्यंजन स्वनिम और हिन्दी तथा तेलुगु में उच्चारण की विवृत्ति।

# गवेषणा
## की
# नई सम्पादन योजना

1. **सम्पादकीय नीति** (Editorial Policy) : स्वदेश-विदेश का कोई भी विद्वान लेख भेज सकता है। लेख का संबंध **हिन्दी के भाषा, साहित्य (भाषावादी दृष्टिकोण), और शिक्षण विधि** में से ही किसी पक्ष से हो। सामान्य रूप से लेख हिन्दी में ही हों; परन्तु अंग्रेजी में लिखे लेख भी स्वीकार किये जायेंगे। हिन्दी में लिखे लेख का अंग्रेजी में सारांश तथा अंग्रेजी में लिखे लेख का हिन्दी सारांश भी अवश्य भेजा जाए। सारांश 250 शब्दों से अधिक का न हो।

   लेख निम्नलिखित वर्गों में से किसी एक के अंतर्गत हो :
   (क) मौलिक निबंध और (ख) समीक्षा-निबंध (review article), (ग) चर्चा-परिचर्चा, (घ) पुस्तक-समीक्षा तथा सूचना। पुस्तक-समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजी जाएँ।

   प्रकाशनार्थ वही लेख भेजे जाएँ जो अन्यत्र न तो पहले प्रकाशित हुए हों और न भेजने के समय प्रकाशनार्थ विचाराधीन हों। लेखों पर कापीराइट लेखकों का होगा। गवेषणा में प्रकाशित होने के बाद यदि लेख अन्यत्र पुनः प्रकाशित हो तो उसके मूलतः गवेषणा में प्रकाशित होने का उल्लेख अवश्य किया जाए।

2. **पाण्डुलिपि** (Typescript) : लेखक लेख को टंकित अथवा स्पष्टाक्षरों में हाथ से लिखी पाण्डुलिपि भेजें। कागज के एक तरफ ही टंकित हो या लिखा जाए/पंक्तियों के बीच दुगुनी जगह छोड़ें और चारों ओर पर्याप्त हाशिया छोड़ें जो बाईं ओर $1\frac{1}{2}$" से कम न हो। प्रकाशनार्थ मूल टंकित प्रति (typecopy) भेजें और कार्बन प्रति अपने पास सुरक्षित रखें। शीर्षक के नीचे बीच में अपना नाम दें। शैक्षणिक उपाधियों (एम० ए०, पी० एच० डी०, आदि) अथवा उसके प्रतीकों (आचार्य; डा०, आदि) का प्रयोग न करें। नाम के नीचे अपना कार्यस्थान वाला पता (official address) दें, जिसमें पदनाम (प्रोफ़ेसर, रीडर, लेक्चरर आदि) का उल्लेख न हो। जिनका किसी कार्य-स्थान का पता न हो वे अपना निजी पता पाण्डुलिपि के अंत में दें। संशोधन केलिए प्रूफ लेखकों के पास न भेजे जा सकेंगे। इसलिए लेखक टंकण और सुलेखन की निर्दोषता का विशेष ध्यान दें।

3. **उदाहरण, अवधारण और उद्धरण** (Examples, Emphasis and citations) : भाषागत उदाहरणों, संक्षिप्तियों (abbreviations) और जिन शब्दों पर बल देना अभीष्ट हो उन्हें पाण्डुलिपि में अधोरेखांकित कर दें। ये काले टाइप में छपेंगे। उद्धत

अंशों का युगल उद्धरण चिन्हों में दें। और उद्धृतांश के अनुवाद को एकल उद्धरण चिन्हों में दें। अनुवाद को मूल के तुरन्त बाद रखें; उनके बीच में कोई विरामचिन्ह न हों। अंग्रेजी या रोमन वर्णमाला में लिखी जाने वाली अन्य भाषाओं (फ्रेंच, जर्मन आदि), के उद्धरण या संदर्भ-संकेत रोमन वर्णमाला में ही दें। हिन्दी में लिखते समय यदि किसी तकनीकी शब्द के आगे अंग्रेजी शब्दादि देना चाहते हैं तो उसे तुरन्त बाद कोष्ठक में रखें।

4. **संदर्भ संकेत** (References) : संदर्भ का संकेत लेख में ही कोष्ठक के द्वारा करें (पादटिप्पणियां न दें), जिसका क्रम यह हो : संदर्भित लेखक का नाम (केवल कुलनाम या उपनाम, परन्तु कुलनाम या उपनाम का प्रयोग न करने वाले का वैयक्तिक नाम) पुस्तक का प्रकाशन वर्ष (यदि यह विक्रमी संवत् में हो तो वि०सं० और शक संवत् में हो तो श०सं० लिखें; यदि यह ईसवी सन् में हो तो कुछ न लिखें), उद्दिष्ट पृष्ठ की संख्या : (द्विवेदी, 1915 : 45)। यदि संदर्भित लेखक का नाम लेख ही में देना आवश्यक हो तो उसे कोष्ठ से बाहर देकर शेष सूचना कोष्ठ के अन्दर दें : द्विवेदी (1915 : 45) का विचार है······'। यदि संदर्भित पुस्तक के लेखकों की संख्या एक से अधिक है तो पहली बार सबके नाम दें : (शर्मा, वर्मा, गुप्त, 1956 : 73); इसके बाद केवल पहले का नाम देना ही पर्याप्त है : (शर्मा तथा अन्य 1956 : 85)। यदि एक ही बार में एक लेखक की एक से अधिक रचनाओं को संदर्भित करना हो तो उनके बीच अर्धविराम (सेमीकोलन) का प्रयोग करें; (मदान, 1970 : 20; 1972 : 32)। यदि लेखक की एक ही वर्ष में प्रकाशित एक से अधिक रचनाओं का संदर्भ देना हो तो उनके क्रम को स्पष्ट करने के लिए प्रकाशन वर्षों के साथ क, ख आदि वर्णों का क्रम से प्रयोग करें : (सक्सेना, 1935 क : 15; 1935 ख : 20); यदि एक साथ दो लेखक संदर्भित करने हों तो उन्हें सेमीकोलन से अलग करें (नागप्पा, 1965 : 21; अय्यर, 1967 : 18)। यदि एक ही कुलनाम के एक से अधिक लेखक उसी लेख में संदर्भित करने हों तो उनके वैयक्तिक नाम या केवल आद्यक्षर भी दें : (महावीर प्रसाद द्विवेदी, 1926 : 40)/(ह० प्र० द्विवेदी 1945 : 148)।

सब संदर्भों को लेख के अन्त में **संदर्भ संकेत** शीर्षक के अन्तर्गत अकारादिक्रम से सूची बना दें। इसी सूची में उन ग्रन्थों का भी समावेश हो सकता है जो लेख में संदर्भित नहीं परन्तु लेख के प्रतिपाद्य से संबंधित हैं। अलग-अलग भाषाओं के संदर्भ-संकेतों की सूची अलग-अलग हो। इस सूची को अलग कागज पर टाइप करें और इसके लिए निम्नलिखित मानक का प्रयोग करें :

1. वर्मा, धीरेन्द्र 1953 : **हिन्दी भाषा का इतिहास**, प्रयाग, हिन्दुस्तानी एकेडमी (प्र०सं० 1933)
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद 1967 : लालित्यसर्जना और विविक्तवर्ण भाषा, **आलोचना** 40.28-35
3. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ 1968 : काव्य भाषा और शैलीविज्ञान,

आलोचना 42.11-20; संकलित रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव 1972 : **शैलीविज्ञान और आलोचना की नयी भूमिका**, आगरा; केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

4. वर्मा, व्रजेश्वर तथा अन्य (सं०) 1969 : **भाषा शिक्षण और भाषा विज्ञान**, आगरा, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

5. जी० वान्द्रियेज़ 19 : **भाषा** (अनु० जगवंश किशोर बलवीर) लखनऊ, हिन्दी समिति, सूचना विभाग।

5. **पादटिप्पणा** (Footnotes) :लेख में प्रतिपादित विषय से संबंधित ऐसे उल्लेख जो **संदर्भ-संकेत** और **टिप्पणी** की सीमा में नहीं आते और जिनकी अप्रयोजनता विशिष्ट प्रतिपाद्य बिंदु तक सीमित है, **पादटिप्पणी** में दिये जायेंगे। परन्तु उनमें भी संदर्भ-संकेत पूर्ववत् होंगे। पादटिप्पणियों का संकेत लेख में ही ऊपर उठाई हुई संख्या से किया जाएगा। सारे लेख में ये संख्याएँ लगातार क्रम में रहेंगी, प्रति पृष्ठ अलग-अलग नहीं। सब पाद टिप्पणियाँ एक साथ लेख के अन्त में क्रम से दी जाएँगी। इनका स्थान **संदर्भ-संकेत** के बाद होगा। पादटिप्पणियों को अलग कागज़ पर टाइप करेंगे।

6. **अंत्य टिप्पणी** (Colophon) : आभार प्रदर्शन, लेख का किसी विद्वद् गोष्ठी में पढ़ा गया होना आदि के उल्लेख इस शीर्षक के अन्तर्गत होंगे, और इसका स्थान **पादटिप्पणियों** के बाद होगा। टिप्पणी को अलग कागज पर टाइप किया जाएगा।

7. **समीक्षा** (Review) : समीक्षा निबंध या पुस्तक समीक्षा के लिए पुस्तक का चुनाव लेखक स्वयं भी कर सकते हैं। परन्तु पुस्तक ऐसी हो जिसकी समीक्षा **गवेषणा की सम्पादकीय नीति** की परिधि में आती हो। समीक्षित पुस्तक का नामोल्लेख इस प्रकार करें :

1. रघुवंश : **समसामयिकता और आधुनिक हिन्दी कविता : स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद,** दशाब्दी ग्रंथ प्रकाशन —2, आगरा, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, 1972, 56+29, रु० 6.00

समीक्षक का नाम और उसका अधिकारिक पता, पुस्तक समीक्षा हो तो अंत में तथा समीक्षा निबंध हो तो आरम्भ में रहेंगे।

8. **सम्पादन** (Editing) : सम्पादक को अधिकार होगा कि वह कोई विशिष्ट कारण बताए बिना भी लेख अस्वीकृत कर दे। इस विषय में कोई पत्राचार न हो सकेगा। लेख की स्वीकृति-अस्वीकृति की सूचना यथासंभव लेख प्राप्त होने के दो मास के भीतर भेज दी जाएगी। अस्वीकृत लेख साधारण बुक पोस्ट से लौटाए जाएँगे।

लेखकों की स्थापनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। सम्पादक को अधिकार होगा कि वह किसी स्थापना के विषय में लेख के अन्त में अपनी सम्मति प्रकट करे।

9. **अनुमुद्रण** : (Offprints) : लेखकों को अपने लेख के पचास अनुमुद्रण और उस अंक की एक प्रति निःशुल्क प्राप्त होंगे।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान-आगरा

# गवेषणा

संपादक :

ब्रजेश्वर वर्मा

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

वर्ष : 1[illegible]

1973

अंक 21

प्रकाशक :
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
नया आगरा
आगरा–5

मूल्य : 4.00

तिथि : फ़रवरी, 1974

मुद्रक :
दी एजुकेशनल प्रेस
आगरा–28003

# गवेषणा

विश्वजीत

# हिन्दी में 'क्रिया' तथा 'विशेषण' की समधर्मिता

In this paper it is propounded that the distinction between the verb and adjective with regard to Hindi language is superficial. Traditionally they are two different parts of speech but actually at the deeper level they are the same. It would be economical to posit a common class for both the verbs and adjectives and to derive them by grammatical rules at the later stage. In favour of this proposition some arguments have been given in the paper. It is shown that Hindi adjectives and verbs have common features. They are very similar to each other with regard to their syntactic nature, selectional restrictions etc. Adjectives may also be classified as transitive and intransitive on the pattern of verbs. However, originality is not claimed for this idea in the paper anywhere. The deeper level identity of the verb and adjective has been very much discussed in English linguistics already.

प्रस्तुत निबन्ध तीन खण्डों में विभाजित है । प्रथम खण्ड निबन्ध के प्रति परिचयात्मक टिप्पणी है, दूसरे खण्ड में मूल विषय पर विचार किया गया है, तीसरे और अन्तिम खण्ड में निष्कर्ष की कुछ पंक्तियाँ हैं ।

**खण्ड--1**

परिचयात्मक टिप्पणी :

किसी भी निबन्ध की मौलिकता दो आधारों पर परखी जा सकती है—

1. लेखक का अध्ययन प्रतिपाद्य विषय पर कितना पूर्ण है ।
2. लेखक कितना मासूम है ।

उदाहरण के लिए, यदि हम हिन्दी संयुक्त क्रियाओं पर, अथवा हिन्दी के पदबन्धों पर, अथवा भारतीय आर्य भाषा के संबंध कारक परसर्गों पर विचार कर रहे हैं और यदि हमें अब तक उन विषयों पर किये गये कार्यों का पता नहीं है, तो हम अपनी उन बातों को भी ब्रह्म-वाक्य की तरह प्रस्तुत करेंगे, जिन्हें हो सकता है कि पहले के विद्वानों ने बहुत सी सशक्त ढंग से कह दिया हो । ऐसी स्थिति में, मासूम विद्वान अपने व्यक्तित्व की चिन्ता किये बगैर' 'मैं ऐसा नहीं मानता' अथवा 'मेरा मत है' जैसे खोखले वाक्यों को दुहराएगा । प्रस्तुत निबंध इस मासूसी मौलिकता की दृष्टि से नितांत अमौलिक है ।

मौलिकता की पहली शर्त बहुत कठिन है, इसके अन्तर्गत अपने विषय पर हुए कार्यों के अध्ययन

स्वरूप एक अपनी दृष्टि विकसित होती है। प्रस्तुत निबन्ध इस दृष्टि से भी मौलिक नहीं है। पालपोस्टल, लेस्टर राइस, जार्ज लेकोफ़, रोजेनबाम तथा लैंग्डन ने अँग्रेजी की क्रियाओं तथा विशेषणों की समधर्मिता के सम्बन्ध में जो बातें, जिस ढंग से की हैं यहाँ उन्हीं बातों को हिन्दी के प्रसंग में दुहराया गया है। लेकोफ़ ने इन सभी विद्वानों को उद्धृत किया है, मैंने इन सभी उद्धृत विद्वानों की सम्बन्धित कृतियों को पढ़ा है। फिर भी मेरा अपना कोई अलग दृष्टिकोण सिवा इस स्वीकृति के कि हिन्दी में भी लगभग वही स्थिति है, विकसित नहीं हो सका है। मैंने जार्ज लेकोफ़ को ही मॉडल बनाया है।

भाषाई विश्लेषण के परिकल्पित विभाग, एक दूसरे से इतने अलग नहीं हैं कि हम दावा कर सकें कि हम खण्डों में बांट कर बिना दूसरे खण्ड की सहायता के किसी भी एक खण्ड का पूर्ण विश्लेषण कर सकेंगे। अर्थ, ध्वनि और व्याकरण, एक दूसरे से कितने गहरे में जुड़े हुए हैं, इसका तीखा एहसास तब होता है जब हम किसी एक ही खण्ड पर विचार करने लगते हैं और हर निष्कर्ष फिसल कर किसी दूसरे निष्कर्ष की प्रतीक्षा करने लगता है। इस पर विद्वानों ने काफ़ी चर्चा की है, मैं तो केवल उस खतरे को बताना चाहता था जो बार-बार हमें उठाना पड़ा है, जैसे इस अमौलिक निबन्ध को लिखते समय भी मुझे लगा कि पहले हमें हिन्दी की उन क्रियाओं पर विचार कर लेना चाहिए जो किसी संज्ञा के साथ आती हैं, conjunct कह देने से ही काम नहीं चल जाता। कभी ऐसा लगा कि कुछ संज्ञाएँ भी विशेषण क्रियाएँ ही हैं। जैसे—स्वीकार, प्रणाम, प्रार्थना, प्यार आदि। मैंने इन पर यहाँ विचार नहीं किया है। इन पर विस्तार से विचार अन्यत्र करूँगा।

**खण्ड—2**

2.00 इस खण्ड में उन तर्कों को रखा गया है, जिनके आधार पर हम कह सकते हैं कि क्रिया और विशेषण दोनों को ही एक प्रमुख कोटि के अन्तर्गत रखना चाहिए।

### 2.1 पहला तर्क

निम्न वाक्य-युग्म एक ही तरह से समझे जाते हैं :

अ : 1 : क. यह विद्वान नकल करता है।
ख. यह विद्वान नकलची है

2 : क. यह आदमी बहुत घूमता है।
ख. यह आदमी बहुत घुमक्कड़ है।

3 : क. यह आदमी डरता है।
ख. यह आदमी डरपोक है।

आ : 1 : क. जाड़ा मुझे दुख देता है।
ख. जाड़ा मेरे लिए दुखद है।

2. क. विद्यापीठ की राजनीति हमें हानि पहुँचाती है।
ख. विद्यापीठ की राजनीति हमारे लिए हानिप्रद है।

3. क. सिगरेट हमें उत्तेजित करता है।
ख. सिगरेट हमारे लिए उत्तेजक है

2.1.1. ऊपर के वाक्य-युग्मों में जहाँ 'क' वाक्य में क्रिया पदबन्ध है, वहीं 'ख' वाक्य के अन्तर्गत 'विशेषण' तथा 'है' का प्रयोग हुआ है। 'है' केवल काल लक्षक (Tense marker) है। इसे हम सुविधापूर्वक वर्तनी-नियमों के अन्तर्गत रख सकते हैं। इस स्थिति को नीचे स्पष्ट किया गया है।

2.1.2. ऊपर के वाक्य-युग्मों पर ध्यान देने से एक बात और स्पष्ट हो जाती है कि 'विद्वान' का जो सम्बन्ध 'नकल करने' से है, ठीक वही सम्बन्ध 'विद्वान' का 'नकलची' से है। इसे हम उलट कर भी कह सकते हैं कि 'नकल करने' का जो सम्बन्ध 'विद्वान' से है, वही सम्बन्ध 'नकलची' का 'विद्वान' से है।

2.1.3. इस प्रसंग में कहा जा सकता है कि अर्थ-बोध की प्रक्रिया व्याकरणिक प्रक्रिया से भिन्न है, किन्तु यदि यह मान लें कि क्रिया और विशेषण दोनों एक ही वर्ग के सदस्य हैं तो वाक्य रचना के सूत्रीकरण में हमारा काम एक सामान्य नियम से ही चल जाता है। एक बात और, इन वाक्य-युग्मों की तलीय रचना भी लगभग समान ही है।

(यह) विद्वान नकलची है—

1—तलीय संरचना
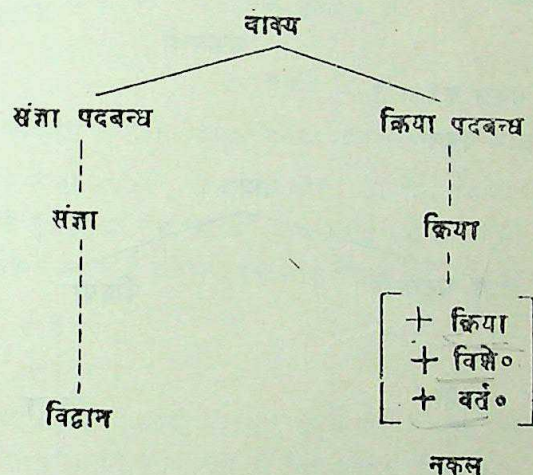
2—काल-वर्तनी
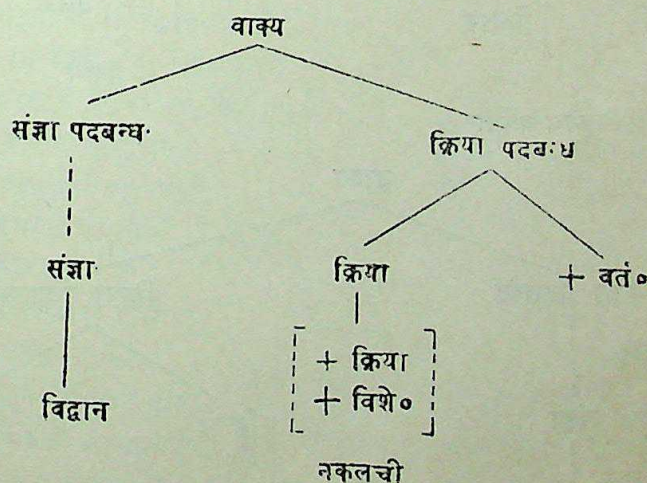
3—हो-संयोजन
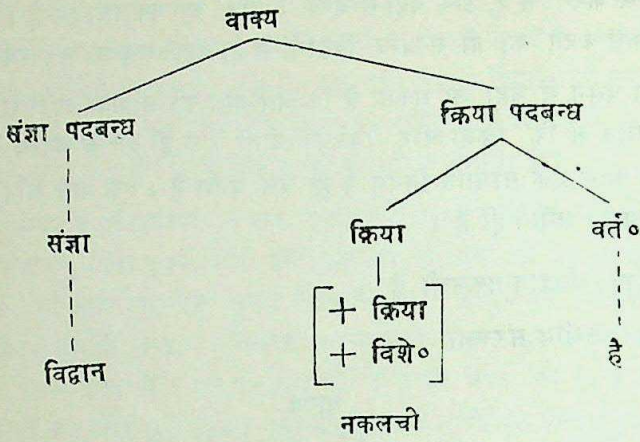
(यह) विद्वान नकल करता है—

1—तलीय रचना—
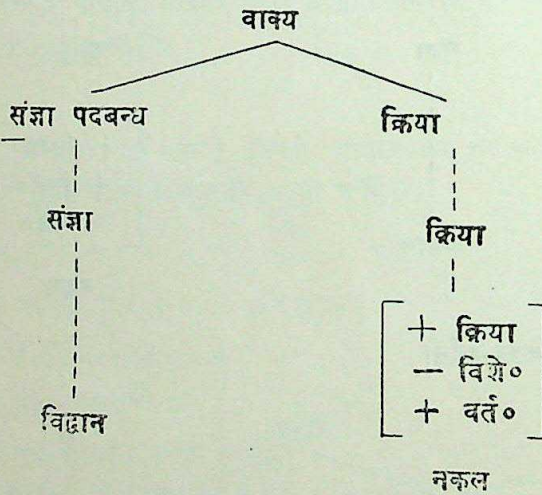
2—काल-वर्तनी
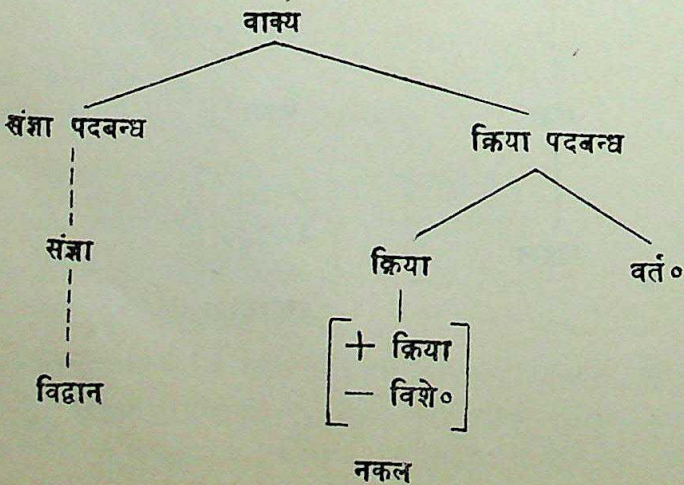
3—हो-संयोजन
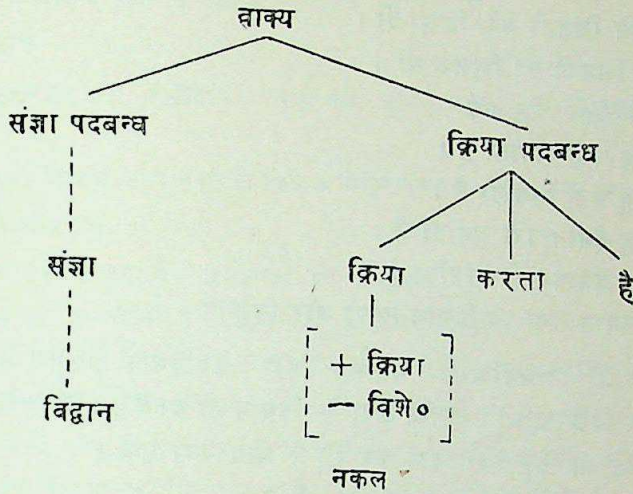
2.1—दूसरा तर्क : चयनीय मर्यादा (selectional restriction)

जिस प्रकार क्रियाओं के दो उपवर्ग 'अकर्मक' और 'सकर्मक' किये जाते हैं, उसी प्रकार विशेषणों के उपवर्ग किये जा सकते हैं। प्रथम तर्क के 'अ' के अन्तर्गत रखे गए सभी वाक्य अकर्मक तथा 'आ' के अन्तर्गत रखे गए सभी वाक्य सकर्मक हैं। हम इनके लिए निम्न प्रकार के नियम बना सकते हैं--

सकर्मक : [+सं— ]
अकर्मक : [+ — ]

2.2. इसी तरह, जिस प्रकार क्रियाओं के लिए चयन-मर्यादा निर्धारित कर सकते हैं कि वे किस तरह के कर्ता अथवा कर्म के साथ आएँगे, ठीक वैसे ही विशेषणों के लिए भी।

अ : जीवधारी कर्ता
राम क्रिकेट खेलता है
* दरवाजा क्रिकेट खेलता है
राम क्रिकेट का खिलाड़ी है
* दरवाजा क्रिकेट का खिलाड़ी है

आ : भौतिक वस्तु कर्ता
कपड़े गीले हो गए हैं
* ईमानदारी गीली हो गई है
कपड़े गीले हैं
* ईमानदारी गीली है

इ : भावबोधक कर्ता
कहना आसान होता है
* खिड़की आसान होती है।
कहना आसान है।
* खिड़की आसान है।

ई : जीवधारी कर्म
मैंने विद्यार्थियों को शिक्षा दी।

मैं विद्यार्थियों का शिक्षक था ।

* मैंने खिड़की को शिक्षा दी ।

मैं खिड़की का शिक्षक था ।

उ : भौतिक वस्तु कर्म

वह घड़ी बनाता है ।

वह घड़ी निर्माता है ।

* वह ईमानदारी बनाता है ।

* वह ईमानदारी निर्माता है ।

तीसरा तर्क : गतिमान तथा अगतिमान क्रिया और विशेषण

जिस प्रकार क्रियाओं का वर्गीकरण 'गतिमान' और 'अगतिमान' अर्थगुण के आधार पर किया
ा सकता है, उसी प्रकार विशेषण भी गतिमान तथा अगतिमान हो सकते हैं । गतिमान क्रियाएँ वे क्रियाएँ
, जो आज्ञार्थक वाक्यों में आ सकें तथा 'क्या कर रहे हैं' बोध करा सकें ।

क. आज्ञार्थक

पुस्तक पढ़ो ।

* इसे जानो ।

बेचैन मत हो ।

* गोरे मत होओ

ख. क्या कर रहे हैं ?

हम आजकल पढ़ रहे हैं ।

* हम आजकल जान रहे हैं ।

हम जागरूक हो रहे हैं ।

* हम गोरे हो रहे हैं ।

इन क्रियाओं का वर्गीकरण गतिमान अर्थगुण के आधार पर निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा
ाकता है—

| | पढ़ो | जानो | बेचैन | गोरे |
|---|---|---|---|---|
| गतिमान | + | — | + | — |

चौथा तर्क : विशेषण—स्थानान्तरण

अँग्रेज़ी की ही भाँति हिन्दी में भी सम्बन्धवाचक उपवाक्यों से विशेषणीय संरचना व्युत्पन्न करने के
ो नियम हैं :

1. सम्बन्ध लोप ।
2. विशेषण स्थानांतरण

वह लड़का जो तेज़ है→तेज़ लड़का

वे अध्यापक जो व्यापारी हैं→व्यापारी अध्यापक

लड़के जो गहरी नींद में सोए हुए हैं→गहरी नींद में सोए हुए लड़के ।

पाँचवाँ तर्क : कर्म लोप

क्रियाओं तथा विशेषणों के साथ समान रूप से कर्म का लोप हो जाता है, यथा—

क्रियाओं के साथ—

क : मोहन कुछ खा रहा है→मोहन खा रहा है
ख : मोहन कुछ पढ़ रहा है→मोहन पढ़ रहा है

विशेषण के साथ—

इन्जीनियर की बल्लेबाजी सभी को आनन्ददायक थी→इन्जीनियर की बल्लेबाजी आनन्ददायक थी।

उसका भाषण अध्यापकों के लिए आपत्तिजनक था→उसका भाषण आपत्तिजनक था।

छठा तर्क : नाम्नीकरण

अध्यापक चीखता है→अध्यापक का चीखना
अध्यापक व्यवसायी है→अध्यापक की व्यावसायिकता
मैं निदेशक की विद्वत्ता का आदर करता हूँ→निदेशक की विद्वत्तता के प्रति मेरा आदर।
मैं उससे सतर्क था→उसके प्रति मेरी सतर्कता

ऊपर के उदाहरणों को प्रस्तुत करने का अभिप्राय यह है कि हम दिखा सकें कि लगभग एक ही तरह के नियमों का प्रयोग क्रिया तथा विशेषण के नाम्नीकरण के दौरान होता है। इस सम्बन्ध में लेकोफ़ की टिप्पणी यह है कि 'क्योंकि इन नियमों के व्यवहार से व्युत्पन्न संरचनाएँ एक ही जैसी दिखती हैं, यह निश्चत रूप से नहीं कहा जा सकता है कि एक ही तरह के नियम दोनों प्रकारों की संरचनाओं के लिए लागू होते हैं अथवा इन दोनों प्रकार की संरचनाओं को व्युत्पन्न करने के लिए अलग अलग नियम होते हैं, जो एक जैसे हैं। यदि पहली स्थिति है तो हम कह सकते हैं कि एक और नियम मिला जो विशेषण। क्रिया पर लागू हो सकता है, और यदि हम यह मान लें कि एक से अधिक नियम लागू होने हैं तो हमारी बात के लिए और भी दृढ़ आधार मिल जाता है।

सातवाँ तर्क : पूरक

हिन्दी में भी क्रिया और विशेषण दोनों एक ही तरह के 'पूरक' हो सकते हैं। यथा—

(क) वह जाना चाहता है।
वह जाने को उत्सुक। इच्छुक है।

(ख) मैं डरता था कि वह आ न जाए।
मैं आशंकित था कि वह आ न जाए।

(ग) मैं दो आदमियों को पीटना चाहता हूँ।
मैं दो आदमियों को पीटने का इच्छुक हूँ।

**खण्ड—3**

जिस प्रकार क्रिया की अन्विति कर्त्ता के साथ होती है, उसी प्रकार विशेषण की अन्विति भी कर्त्ता के साथ होती है—

{ (अ) लड़की जाती है। (इ) लड़की अच्छी है।
{ (आ) लड़का जाता है। (ई) लड़का अच्छा है।

ये कुछ प्रमुख बातें थीं जिनके आधार पर हम कह सकते हैं कि क्रिया तथा विशेषण दोनों ही वाक्य-रचना प्रक्रिया में एक जैसा व्यवहार करते हैं। यदि हम दो भिन्न कोटियों के स्थान पर इन्हें एक ही कोटि मान लें तो नियमों में सरलता होगी तथा बार-बार 'क्रिया' तथा 'विशेषण' दो प्रतीक विकल्पों के स्थान पर एक ही प्रतीक से काम चल जाएगा।

पूरी विवेचना में कहीं भी मैंने भारतीय परम्परा का हवाला नहीं दिया है, यह एक संयोग नहीं, अपनी व्याकरणिक परम्परा के प्रति मेरा अज्ञान है। अन्त में 'परिभाषा' से लिया गया जो संस्कृत

उद्धरण अपनी बात की पुष्टि के लिए मैं यहाँ दे रहा हूँ वह भी मैंने 'लैम्ब' के स्ट्राटिफ़िकेशनल ग्रामर से लिया है :

"अर्धमात्रा लाघवेन पुत्रोत्सवम् मन्यते वैयाकरणा:"

परिभाषा, पृ० 122।

## सन्दर्भ ग्रन्थ


(1) लैम्ब : आउट लाइन आफ़ स्ट्राटिफ़िकेशनल ग्रामर।
(2) लेकोफ़ जार्ज : इर्रेगुलरटी इन सिंटैक्स।
(3) लैंग्डन : द स्टडी आफ़ सिन्टैक्स।
(4) पोस्टल पाल : लिमीटेशन्स आफ़ फ्रेज़ स्ट्रैक्चर ग्रामर
(5) रोज़ेन बाम एण्ड जैकोब : रीडिंग्स इन इंगलिश ट्रान्सफ़ार्मेशनल ग्रामर
(6) स्टेफ़ैन्सन मार्गेट : ए डीबरबल एनालाईसिस आफ़ एडवरबियल्स इन हिन्दी।
(7) विश्वजीत एवं रश्मि वर्मा : पोजेसिवस कान्स्ट्रक्शन इन हिन्दी (अप्रकाशित)।
(8) विश्वजीत : हिन्दी में 'होना' क्रिया (भारतीय साहित्य में प्रकाश्य)।

विजयराघव रेड्डी

# गुजराती भाषियों की हिन्दी वर्तनीगत अशुद्धियों का विश्लेषण---एक नमूना सर्वेक्षण

The paper presents an errors-analysis of Hindi spellings of Gujrati speaking people. The study is based on a sample survey conducted by the author in December 1971. 12 essays written in Hindi in 24 foolscap pages on the topic of their journey to Agra are taken as base material for the study. These essays are written by 12 Hindi Teachers of the High Schools of Gujrat State who attended the 15th re-orientation course conducted by the Central Hindi Institute, Agra in Nov-Dec. 1971. The whole material consists of 40,000 words in which 150 words are mis-spelt.

All the above 150 mis-spelt words are analysied in 5 major categories according to mistakes ; (1) mistakes related to anuswar (ं) anunasik (ँ) and visarg ( : ) symbols (2) mistakes related to vowel symbols, (3) mistakes related to consonant symbols, (4) mistakes related to letters, and (5) mistakes related to suffixes ; and further the mistakes are sub-categorised in small groups as augument, elision and substitution etc. Thirteen. Hindi spelling teaching points are arrived at as the findings of the present study.

**0.0** गुजराती भाषी हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में सीखते हैं। इस कारण उनकी हिन्दी पर अपनी मातृ भाषा का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। गुजराती तथा हिन्दी दोनों एक ही परिवार की भाषाएँ हैं और भाषाई घटकों तथा उनकी संरचनात्मक तत्त्वों में काफी समानता है। फिर भी कुछ ऐसे तत्व हैं जो दोनों में भिन्न हैं। हिन्दी की कुछ ऐसी विशिष्ट ध्वनियाँ हैं जो गुजराती में नहीं हैं, और कुछ ऐसे समान स्रोतीय-समानार्थी शब्द हैं जो कि विविध कारणों से दोनों भाषाओं में अलग-अलग वर्तनी (Spelling) में प्रचलित हैं। प्रमुखतः इन दो कारणों से गुजराती भाषी के हिन्दी लेखन में वर्तनीगत अशुद्धियाँ हो जाती हैं। अन्य अनन्य कारण जैसे असावधानी, लेखन की शीघ्रता, वाचन उपेक्षा, व्याकरण का अधूरा ज्ञान, अशुद्ध उच्चारण, ध्वनि-सादृश्य और लिपि का अपूर्ण ज्ञान आदि जो शिक्षा शास्त्रियों द्वारा अक्सर गिनाये जाते हैं, वे या तो वैयक्तिक होते हैं या समय-सापेक्ष्य। किसी एक पूरे भाषा-भाषी वर्ग की सामान्य त्रुटियों के आकलन करने, सामान्य स्थापनाएँ स्थापित करने और कठिनाइयों के बिंदुओं तथा पाठ्य बिंदुओं (Teaching points) के चयन करते में ये सहायक सिद्ध नहीं होते। इन बिन्दुओं के चयन के लिए अन्य भाषा-भाषियों की हिन्दी में लिखित सामग्री और उस सामग्री में प्राप्त त्रुटियाँ तथा उनका वैज्ञानिक विश्लेषण अधिक सहायक हो सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन इस दिशा में एक प्रयास है।

**0.1 अध्ययन की सीमाएँ**—इस अध्ययन की अपनी कुछ सीमाएँ हैं।(1)यह अध्ययन यह दावा नहीं करता कि इसके जरिए उन तमाम अशुद्ध वर्तनी से सम्बन्धित कठिनाइयों के बिन्दुओं का चयन हो पाया है। यह मात्र एक नमूना-सर्वेक्षण (Sample survey) है। इस अध्ययन के शीर्षक में भी इसका उल्लेख किया गया है। (2) इस सर्वेक्षण के लिए किसी एक ही आयु वर्ग को आधार नहीं बनाया गया है। इसमें 25 वर्ष की आयु से लेकर 45 वर्ष तक की आयु वालों की लिखित सामग्री को विश्लेषण के लिए लिया गया है। (3) इस में एक ही पेशेवाले; हिन्दी के अध्यापक, एक ही स्तर के अध्यापकों; हाई स्कूल के अध्यापकों को लिया गया है। (4) एक ही प्रदेश; गुजरात तथा एक ही भाषा-भाषी; गुजराती मातृभाषी को लिया गया है। (5) न तो इसमें एक ही जिले के व्यक्तियों को लिया गया और न तो प्रत्येक जिले से किसी को प्रतिनिधि के रूप में। इसमें केवल 9 जिलों के 12 हिन्दी अध्यापकों के हिन्दी में लिखित कुछ सामग्री को आधार बनाया गया है। (6) प्रत्येक अध्यापक की त्रुटियों की आवृत्ति निकाली नहीं गयी है, अपितु त्रुटि विशेष की आवृत्ति गणना की गयी है। इससे अध्ययन में एक प्रकार की वैज्ञानिकता आ पायी है जिसके कारण वर्तनीगत कठिनाइयों के बिंदुओं का अनुक्रमण सम्भव हो पाया है।

**0.2 प्रस्तुतीकरण**—भारत सरकार के शिक्षा और समाज कल्याण मन्त्रालय द्वारा स्थापित केन्द्रीय हिन्दी संस्थान (Central Hindi Institute) आगरा में 22-11-71 से 21-12-71 तक गुजरात के हिन्दी अध्यापकों के लिए आयोजित 15 वाँ एक-मासीय नवीकरण पाठ्यक्रम में सम्मिलित 12 हिन्दी अध्यापकों से प्रारम्भ में ही यात्रा-वर्णन के बारे में निबन्ध लिखवाये गये। इन 12 हिन्दी अध्यापकों के द्वारा लिखित 25 फुल स्केल साइज, लगभग 40,000 शब्द वाली सामग्री ही इस अध्ययन का आधार है। इन 12 अध्यापकों के नाम (उनके जिलों के नाम सहित) अध्ययन के अन्त में परिशिष्ट 1 में दिये गये हैं। 40,000 शब्दों वाली सामग्री में 150 शब्द ऐसे मिले हैं जिनकी वर्तनी अशुद्ध है। इन 150 शब्दों की अकारादी-क्रम सूची सही वर्तनी के साथ अध्ययन के अन्त में परिशिष्ट 2 में दी गयी है। परिशिष्ट 3 में अशुद्ध वर्तनी वाले शब्दों की आवृत्ति-क्रम (Order of Frequency) सूची दी गयी है। इनमें एक ही बार प्रयुक्त अशुद्ध वर्तनी वाले शब्दों को जोड़ा नहीं गया। लेखन में प्राप्त अशुद्ध वर्तनी वाले शब्दों को पहले अशुद्धियों के आधार पर वर्गीकृत किया गया तथा बाद को अशुद्धियों को भाषा-वैज्ञानिक विश्लेषण के अन्तर्गत विश्लेषित कर क्रमबद्ध किया गया। यहाँ क्रमशः विश्लेषण, वर्तनीगत कठिनाइयों से सम्बन्धित बिंदुओं की सूची और अशुद्धियों की अधिकता के आधार पर उनकी आवृत्तिगत सूची प्रस्तुत की जा रही हैं।

**1.0 विश्लेषण**—विश्लेषण के लिए ली गयी सामग्री में वर्तनीगत अशुद्धियाँ निम्नलिखित 5 प्रकार की पायी गयी हैं—

(I) अनुस्वार, अनुनासिक और विसर्ग सम्बन्धी
(II) स्वर सम्बन्धी
(III) व्यंजन सम्बन्धी
(IV) अप्रचलित और गलत वर्णों के प्रयोग सम्बन्धी
(V) प्रत्यय लोप सम्बन्धी

**1.1 I. अनुस्वार अनुनासिक और विसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ—**

इस विभाग के अन्तर्गत आगम (Augment) लोप (elision) और आदेश (Substitntion) की त्रुटियाँ पायी गयी हैं। वे इस प्रकार की है—(क) अनुस्वार-आगम, (ख) अनुस्वार-लोप, (ग) अनु-

नासिक चिह्न के स्थान पर अनुस्वार चिह्न का आदेश अर्थात् ँ → ं और (घ) विसर्ग आगम। प्रत्येक के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं। कोष्ठकों में जो संख्या दी गयी है, वह आवृत्ति सूचक है।

**(क) अनुस्वार-आगम—**

| * आदि में (1) | मध्य में (2) | अन्त में (3) |
|---|---|---|
| × | हिम्मत—हिंमत | सुधार—सुधारें |

**(ख) अनुस्वार लोप**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | उन्होंने—उन्होने | आँखें—आँखे (4) |
| | चारों ओर—चारो ओर | करें—करे (2) |
| | प्रसाधनों में—प्रसाधनो में | थीं—थी |
| | भोंपू—भोपू | नहीं—नही (2) |
| | वर्षों से—वर्षो से | निगाहें—निगाहे |
| | शुभारंभ—शुभारभ | पुस्तकें - पुस्तके |
| | होंगी—होगी | फसलें—फसले |
| | | मैं—मै (3) |
| | | रहीं—रही |
| | | हैं—है (3) |
| | | हुईं—हुई |

**(ग) ँ →**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| अँधेरा—अंधार (4) | पहुँचा—पहोंचा | × |
| आँख—आंख (3) | मुँह माँगे—मुँह मांगे | |
| चाँदनी—चांदनी | | |
| ढँग—ढंग | | |
| बूँदी - बुंदी | | |

**(घ) विसर्ग आगम**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | दुर्घटना—दुःर्घटना | × |

1.2 II. **स्वर संबंधी अशुद्धियाँ—**

इस विभाग में निम्नलिखित प्रकार की अशुद्धियाँ पायी गयी हैं—

(क) ई—आगम, (ख) ए—आगम, (ग) आ—लोप

(घ) ई—लोप, (ङ) ए—लोप, (च) अ→आ

(छ) इ→ई, (ज) ई→इ, (झ) उ→ऊ

(ञ) उ→ओ, (ट) ऊ→उ, (ठ) ए→आ

(ड) ऐ→ए, (ढ) ओ→ऊ, (ण) ओ→ए

(त) श्रुति का आदेश

* आगे भी यही क्रम है।

इनके उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं—

**(क) 'ई' का आगम :—**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | टिकट—टिकीट (4) | आखिर—आखिरी |

**(ख) 'ए' का आगम :—**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | मिल जाने—मिले जाने | सुधार—सुधारें |

**(ग) 'आ' का लोप :—**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | × | पहला—पहल<br>वग़ैरा—वगेर |

**(घ) 'ई' का लोप :—**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | × | बिदाई—बिदाय |

**(ङ) 'ए' का लोप :—**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | आयेगा—आयगा (2)<br>जायेगा—जायगा (2) | जोड़े—जोड़<br>मुझे—मुझ (2)<br>वास्ते—वास्त |

**(च) अ → आ (स्वर दीर्घीकरण)**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | ताजमहल—ताजमहाल | × |

**(छ) इ → ई (स्वर दीर्घकरण)**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | कि—की<br>गुजरातियों की—गुजरातीयों की<br>जिंदगी—जींदगी<br>जितना—जीतना (2)<br>तैयारियाँ—तैयारीयाँ<br>दिया—दीया (2)<br>देशवासियों के—देशवासीयों के<br>निकलना—नीकलना<br>परिपत्र—परीपत्र<br>रिजर्वेशन—रीसर्वेशन (2)<br>वासियों को—वासीओं को<br>शनिवार—शनीवार<br>सिखाने—सीखने | ग्लानि—ग्लानी<br>रात्रि—रात्री |

### (ज) इ → ई (स्वर ह्रस्वीकरण)

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| | नींद—निंद (5) | कई—कइ |
| | बातचीत—बातचित (6) | |
| × | बीच में—बिच मे (6) | |
| | महीना—महिना (2) | |
| | स्वीकृति पत्र—स्विीकृति पत्र | |

### (झ) उ → ऊ (स्वर दीर्घीकरण)

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| | खुराक—खूराक | |
| | चुके—चूके (3) | |
| | छुट्टी—छूटी | |
| × | दुर्घटना—दूर्घटना | × |
| | बुरे—बूरे | |
| | भुलाये—भूलाये | |
| | रुकते—रूकते (4) | |
| | सुना—सूना | |
| | हिन्दुस्तान—हिन्दूस्तान | |

### (ञ) उ → ओ :—

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | पहुँचा—पहोंचा | × |

### (ट) ऊ → उ (स्वर ह्रस्वीकरण)

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| ऊपर—उपर (2) | कानून—कानुन (2) | चीकू-चीकु |
| ऊब—उब (4) | छूटने—छुटने | बाजू—बाजु |
| | छूटी—छुट्टी | बाबू—बाबु (2) |
| | | शुरू—शुरु |
| | | हिन्दू—हिन्दु |

### (ठ) ए → आ—

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | अँधेरा—अंधार (4) | × |

### (ड) ऐ → ए

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | वगैरा—वगेरा | × |
| | वगेर | |

### (ढ) ओ → ऊ

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | रोएँ—रूएँ | × |

(ण) ओ → ए

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | × | मानो—माने |

(त) श्रुति का आदेश :—

इस के अन्तर्गत य श्रुति का आदेश मिला। जैसे ई → यी और ए → ये।

ई → यी—

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | × | कमाई—कमायी |

ए → ये

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| | | इसलिए—इसलिये<br>चाहिए—चाहिये<br>मेरेलिए—मेरेलिये |

**1.3 III. व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ—**

इस विभाग में निम्नलिखित प्रकार की अशुद्धियाँ प्राप्त हुई हैं—

(क) द्वित्वागम, (ख) व्यंजन लोप, (ग) द्वित्वलोप, (घ) व्यंजन-आदेश

प्रत्येक के उदाहरण क्रमशः नीचे दिये जा रहे हैं—

(क) द्वित्वागम (सम-व्यंजन आगम)

इस के अन्तर्गत ट, ठ, त और ल व्यंजनों का आगम हुआ। उपस्थित समान व्यंजन द्विख बन गये।

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | छुटी—छुट्टी<br>सड़सठ--सडछठ्ठ<br>उतरकर—उत्तर कर<br>जिला—जिल्ला (3) | × |

(ख) व्यंजन लोप

इस के अन्तर्गत ट, और ह व्यंजनों का लोप मिला।

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| | उलटता—उलता<br>उन्हों ने—उन ने<br>गेहूँ—गेऊँ | |

(ग) द्वित्व लोप (सम-व्यंजन लोप)

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| | छुट्टी—छुटी | |

(घ) व्यंजन-आदेश

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित 15 स्थितियाँ प्राप्त हुई हैं—

(1) अल्प प्राण → महाप्राण, (2) महाप्राण → अल्प प्राण

(3) सघोष → अघोष, (4) व्यंजन → स्वर, (5) ज → स

(6) ड → ड़, (7) ड़ → ड, (8) ड़ → र, (9) ढ़ → ढ,
(10) न → ण, (11) फ़ → फ, (12) व → ब, (13) श→ष,
(14) स → छ (15) संयुक्तीकरण।

**(1) अल्प प्राण → महाप्राण (क → ख, ट → ठ, द → ध)**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | चिट्ठी —चिठ्ठी<br>युद्ध— युध्ध (4)<br>सिद्धि —सिध्धि (2)<br>श्रद्धा—श्रध्धा | शौक—शौख |

**(2) महाप्राण → अल्पप्राण (झ → ज)**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | मुझे —मुजे | × |

**(3) सघोष → अघोस (ग → क)**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| गरीब—करीब | × | × |

**(4) व्यंजन → स्वर (यो → ओ)**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | वासियों को—वासीओं को | × |

**(5) ज → स**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | रिजर्वेशन—रिसर्वेशन | × |

**(6) ड → ड़**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| | गुंडा—गुंड़ा | × |

**(7) ड़ → ड**

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | कपड़े—कपडे<br>गड़वड़—गडबड़ (2)<br>गाड़ी—गाडी (49)<br>घड़ी—घडी<br>चौड़ी —चौडी<br>छिड़क—छिडक<br>छोड़कर—छोडकर<br>छोड़ा — छोडा<br>जाड़ा —जाडा (3)<br>जोड़ी —जोडी<br>जोड़े—जोड<br>थोड़ा —थोडा (7) | गड़बड़—गड़बड<br>गुड़—गुड<br>पेड़— पेड<br>बिगाड़—बिगाड<br>मेवाड़ — मेवाड |

थोड़े—थोडे (6)
दौड़ने—दौडने
पगड़ी—पगडी
पड़ता—पडना (14)
पड़ा—पडा (7)
पड़ेंगे—पडेंगे
पहाड़ी—पहाडी
पूड़ी—पूडी
बड़ा—बडा (5)
बड़े—बडे (4)
रबड़ी—रबडी
लड़ाई—लडायी
सड़सठ—सडसठ
सैकड़ों—सैकडों

(8) ड़→र

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| | गड़बड़—गरबड़ | |
| × | गड़बड़ी—गरबड़ी | × |

(9) ढ़→ढ

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| | गाढ़ी कमाई—गाढी कमाई (3) | आरूढ़—आरूढ |
| | चढ़ते—चढते | |
| | पढ़कर—पढकर | |
| × | | |
| | पढ़ा—पढा | |
| | बढ़ता—बढता (4) | |
| | बढ़ा—बढा (3) | |

(10) न→ण

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | × | अड़चन—अड़चण |

(11) फ़→फ

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| फ़सलें—फसले | × | × |

(12) व→ब

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | देशवासियों को—देशबासियों को | × |

(13) श→ष

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | रिक्शा—रिक्षा (8) | × |

(14) स→छ

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| सैंतालीस—छैंतालीस | सड़सठ—सडछठ्ठ | × |

(15) संयुक्तीकरण (ग+र)

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| × | आगरा—आग्रा (17) | × |

**1.4 IV अप्रचलित और ग़लत वर्णों के प्रयोग सम्बन्धी :—**

इ, ई, उ, ए, ऐ, वर्णों के स्थान पर अप्रचलित वर्ण तथा घ के स्थान पर गलत वर्ण प्रयुक्त किये गये हैं। उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

| (1) | (2) | (3) |
|---|---|---|
| इतना—अितना | घनघोर—धनधोर | कई—कअी |
| इसलिए—अिसलिये | | कमाई—कमाअी |
| उसमें—अुस में (16) | | खाई—खाअी |
| एक—अेक (9) | | गई (गयी)—गअी (5) |
| ऐतिहासिक—अैतिहासिक (2) | | मिठाई—मिठाअी |
| ऐसी—अैसी | | लड़ाई—लडाअी |
| घनघोर—धनधोर (6) | | हुई—हुअी (6) |

**1.5 V प्रत्यय लोप सम्बन्धी :—**

इसके अन्तर्गत 'में' प्रत्यय का लोप पाया गया।

बारे में पूछा—बारे पूछा

**2.0** उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर गुजराती भाषियों कि हिन्दी वर्तनीगत कठिनाइयों से सम्बन्धित बिन्दुओं का चार्ट नीचे दिया जा रहा है। संख्याएँ प्रत्येक प्रकार की स्थिति में प्राप्त शब्दों की संख्या को प्रकट करती है। × चिन्ह शून्य का द्योतक है।

| क्रम संख्या | आगम | लोप | आदेश |
|---|---|---|---|
| 1 | (अनुस्वर)<br>× 1 1 | (अनुस्वर)<br>× 7 11 | ँ → ं<br>5 2 × |
| 2 | : (विसर्ग)<br>× 1 × | आ<br>× × 2 | अ→आ<br>× 1 × |
| 3 | ई<br>× 1 1 | ई<br>× × 1 | इ→ई<br>× 13 2 |
| 4 | ए<br>× 1 1 | ए<br>× 2 3 | ई→इ<br>× 5 1 |
| 5 | ट<br>× 1 × | ट<br>× 2 × | उ→ऊ<br>× 9 × |
| 6 | ठ<br>× × 1 | ह<br>× 2 × | उ→ओ<br>× 1 × |
| 7 | त<br>× 1 × | | ऊ→उ<br>2 3 5 |

| क्रम संख्या | आगम | लोप | आदेश |
|---|---|---|---|
| 8 | ल<br>× । × | | ए→आ<br>× 1 × |
| 9 | | | ऐ→ए<br>× । × |
| 10 | | | ओ→ऊ<br>× । × |
| 11 | | | ओ→ए<br>× × । |
| 12 | | | ई→यी<br>× × । |
| 13 | | | ए→ये<br>× × 3 |
| 14 | | | क→ख<br>× × । |
| 15 | | | ग→क<br>। × × |
| 16 | | | ज→स<br>× । × |
| 17 | | | झ→ज<br>× । × |
| 18 | | | ट→ठ<br>× । × |
| 19 | | | ड→ड़<br>× । × |
| 20 | | | ड़→ड<br>× 26 5 |
| 21 | | | ड→र<br>× 2 × |
| 22 | | | ढ़→ढ<br>× 5 1 |
| 23 | | | व→ध<br>× 3 × |
| 24 | | | न→ण<br>× × 1 |
| 25 | | | फ़→फ<br>। × × |
| 26 | | | यो→ओ<br>× । × |
| 27 | | | व→ब<br>× । × |
| 28 | | | श→ष<br>× । × |
| 29 | | | स→छ<br>। । × |

2.1 अशुद्धियों की आवृत्ति गणना के आधार पर वर्तनीगत कठिनाइयों की स्थिति निम्न प्रकार है। इसमें 2 से कम अशुद्धि वाली स्थितियों को छोड़ दिया गया।

(1) ड़ और ड के प्रयोग
(2) अनुस्वार ( ं ) के प्रयोग
(3) ह्रस्व और दीर्घ स्वर —इ—ई के प्रयोग
(4) ह्रस्व और दीर्घ स्वर उ—ऊ के प्रयोग
(5) अनुनासिक चिह्न ( ँ ) के प्रयोग
(6) ढ़ और ढ के प्रयोग
(7) ए के प्रयोग और ए और ये के प्रयोग में अन्तर
(8) समस्थानीय अल्प प्राण और महाप्राण वर्णों के संयोग के प्रयोग
(9) ह्रस्व और दीर्घ स्वर अ—आ के प्रयोग
(10) ड़ और र के प्रयोग
(11) ह वर्ण के प्रयोग
(12) स और छ वर्ण के प्रयोग
(13) अरबी और फ़ारसी ध्वनियों के लिए प्रयुक्त विशेषक चिह्नों के प्रयोग

उपर्युक्त 13 बिन्दु गुजराती भाषियों को हिन्दी वर्तनी सिखाने तथा सुधारात्मक पाठ बनाने के लिए पाठ्य बिन्दु हो सकते हैं। इन पाठ्य बिन्दुओं के अतिरिक्त मानक वर्ण, वर्णों की शिरो रेखा पर अधिक जोर देना तथा घ और ध वर्णों के अन्तर को स्पष्ट रूप से बताना जरूरी है। इन बातों पर विशेष ध्यान रखकर वैज्ञानिक और उपयोगी पाठ्य सामग्री का निर्माण किया जाए तो आशा है कि बहुत हद तक गुजराती भाषियों की हिन्दी वर्तनीगत अशुद्धियों को कम समय में सुधारा जा सकता है और सही वर्तनी का अभ्यास कराया जा सकता है।

## परिशिष्ट—1

### अध्यापकों के नाम जिनकी लिखित सामग्री को विश्लेषण के लिए आधार बनाया गया

| क्र० सं० | नाम | जिला |
|---|---|---|
| (1) | श्री आदित्य भाई छगन भाई पटेल | गांधी नगर |
| (2) | श्री चन्द्रवदन अम्बालाल आचार्य | गांधी नगर |
| (3) | श्री फता भाई बालाजी भाई पटेल | अहमदाबाद |
| (4) | श्री जगदीशचन्द्र रविशंकर दवे | नडियाद |
| (5) | श्री भूरा भाई रणजी भाई सरविया | बलसाड |
| (6) | श्री छगन भार्थी मोना भार्थी भार्थी | राजकोट |
| (7) | श्री चीमनलाल मोहनलाल पंचाल | पंचमहाल |
| (8) | श्री शंकरलाल जटाशंकर दवे | अमरेली |
| (9) | श्री मगनलाल माधवलाल पटेल | मेहसाना |
| (10) | श्री कांतिलाल बी० पटेल | मेहसाना |
| (11) | श्री महेन्द्र कुमार लाल भाई पटेल | अहमदाबाद |
| (12) | श्री कालीदास नारणजी पटेल | सूरत |

## परिशिष्ट—2

### अशुद्ध वर्तनीवाले शब्दों की सूची शुद्ध वर्तनी के साथ

| क्रम संख्या | शुद्ध वर्तनी | अशुद्ध वर्तनी | आवृत्ति की संख्या | क्रम संख्या | शुद्ध वर्तनी | अशुद्ध वर्तनी | आवृत्ति की संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 1. | अँधेरा | अंधार | 4 | 21. | कपड़े | कपडे | |
| 2. | अड़चन | अड़चण | | 22. | कमाई | कमाओ<br>कमायी | |
| 3. | आँख | आंख | 3 | 23. | करें | करे | 2 |
| 4. | आँखें | आँखे | 4 | 24. | कानून | कानुन | |
| 5. | आखिर | आखिरी | | 25. | कि | की | |
| 6. | आगरा | आग्रा | 17 | 26. | खाई | खाओ | |
| 7. | आयेगा(आएगा) | आयगा | 2 | 27. | खुराक | खूराक | 5 |
| 8. | आरूढ़ | आरूढ़ | | 28. | गयी (गई) | गओ | 2 |
| 9. | इतना | अितना | | 29. | गड़बड़ | गडबड<br>गरबड | |
| 10. | इसलिए | इसलिये*<br>अिसलिये | | 30. | गड़बड़ी | गरबडी | |
| 11. | उतरकर | उत्तर कर | | 31. | गरीब | करीब | |
| 12. | उन्होंने | उन्हो ने<br>उन ने | | 32. | गाड़ी | गाडी | 49 |
| 13. | उलटता | उलता | | 33. | गाढ़ी | गाढी | 3 |
| 14. | उसमें | अुस में | 16 | 34. | गुंडा | गुंड़ा | |
| 15. | ऊपर | उपर | 2 | 35. | गुजरातियोंकी | गुजरातीओकी | |
| 16. | ऊब | उब | 4 | 36. | गुड़ | गुड | |
| 17. | एक | अेक | 9 | 37. | गेहूँ | गेऊँ | |
| 18. | ऐतिहासिक | अैतिहासिक | 2 | 38. | ग्लानि | ग्लानी | |
| 19. | ऐसी | अैसी | | 39. | घड़ी | घडी | |
| 20. | कई | कओ | | 40. | घनघोर | धनधोर | 6 |
| | | | | 41. | चढ़ते | चढते | |

| 1 | 2 | 3 | 4 |
|---|---|---|---|
| 42. | चाँदनी | चांदनी | |
| 43. | चारों ओर | चारो ओर | |
| 44. | चाहिए | चाहिये* | |
| 45. | चिट्ठी | चिठ्ठी | |
| 46. | चीकू | चीकु | |
| 47. | चुके | चूके | 3 |
| 48. | चौड़ी | चौडी | |
| 49. | छिड़क | छिडक | |
| 50. | छुट्टी | छूटी | |
| 51. | छूटने | छुटने | |
| 52. | छूटी | छुट्टी | |
| 53. | छोड़कर | छोडकर | |
| 54. | छोड़ा | छोडा | |
| 55. | जायेगा(जाएगा) | जायगा | 2 |
| 56 | जाड़ा | जाड़ा | 3 |
| 57 | जिन्दगी | जीन्दगी | 2 |
| 58 | जितना | जीतना | |
| 59 | जिला | जिल्ला | 3 |
| 60 | जोड़ी | जोड़ी | |
| 61 | जोड़े | जोड़ | |
| 62 | टिकट | टिकीट | 4 |
| 63 | ढंग | ढंग | |
| 64 | ताजमहल | ताजमहाल | 2 |
| 65 | तैयारियाँ | तैयारीयाँ | |
| 66 | थीं | थी | |
| 67 | थोड़ा | थोड़ा | 7 |
| 68 | थोड़े | थोड़े | 6 |
| 69 | दिया | दीया | |
| 70 | दुर्घटना | दुःर्घटना | |
| | | दूर्घटना | |
| | | दूरघटना | 2 |
| 71 | देशवासियों के | देश बासियों के | |
| 72 | दौड़ने | दौड़ने | |
| 73 | नहीं | नहीं | 2 |
| 74 | निकलना | नीकलना | |
| 75 | निगाहें | निगाहे | |
| 76 | नींद | निंद | 5 |
| 77 | पगड़ी | पगडी | |
| 78 | पड़ता | पडता | 13 |
| 79 | पड़ा | पडा | 7 |
| 80 | पड़ेंगे | पडेंगे | |

| 5 | 6 | 7 | 8 |
|---|---|---|---|
| 81 | पढ़ कर | पढ कर | |
| 82 | पढ़ा | पढा | |
| 83 | परिपत्र | परीपत्र | |
| 84 | पहला | पहल | |
| 85 | पहाड़ी | पहाडी | |
| 86 | पहुँचा | पहोंचा | |
| 87 | पुस्तकें | पुस्तके | |
| 88 | पूछा | पुछा | |
| 89 | पूड़ी | पूडी | |
| 90 | पेड़ | पेड | |
| 91 | प्रसाधनों में | प्रसाधनों में | |
| 92 | फसलें | फसले | |
| 93 | बड़ा | बडा | 5 |
| 94 | बड़े | बडे | 4 |
| 95 | बढ़ता | बढता | 4 |
| 96 | बढ़ा | बढा | 3 |
| 97 | बजू | बाजु | 6 |
| 98 | बातचीत | बातचित | 2 |
| 99 | बाबू | बाबु | |
| 100 | बारे में पूछा | बारे पूछा | |
| 101 | बिगाड़ | बिगाड | |
| 102 | बिदाई | बिदाय | |
| 103 | बीच में | बिच में | 6 |
| 104 | बुरे | बूरे | |
| 105 | बूँदी | बुंदी | |
| 106 | भुलाये | भूलाये | |
| 107 | भोंपू | भोपू | |
| 108 | महीना | महिना | 2 |
| 109 | मानो | माने | |
| 110 | मिठाई | मिठाओ | |
| 111 | मिल जाने | मिले जाने | |
| 112 | मुँह माँगे | मुँह माँगे | |
| 113 | मुझे | मुअ | 2 |
| | | मुजे | |
| 114 | मेरे लिये | मेरे लिये* | |
| 115 | मेवाड़ | मेवाड | 3 |
| 116 | मैं | मै | 4 |
| 117 | युद्ध | युध्ध | |
| 118 | रबड़ी | रबडी | |
| 119 | रहीं | रही | |
| 120 | रात्रि | रात्री | 8 |
| 121 | रिक्शा | रिक्षा | 2 |
| 122 | रिजर्वेशन | रिजर्वेशन | |

| 1 |
|---|
| 123 |
| 124 |
| 125 |
| 126 |
| 127 |
| 128 |
| 129 |
| 130 |
| 131 |
| 132 |
| 133 |
| 134 |
| 135 |

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 123 | रुकते | रूकते | | 136 | सीखने | सिखाने | |
| 124 | रोएँ | रूएँ | 4 | 137 | सिद्ध(सिद्धि) | सिध्धि | 2 |
| 125 | लड़ाई | लडाओी | | 138 | सुना | सूना | |
| 126 | वगैरा | वगेरा | | 139 | सुधार | सुधारें | |
| | | वगेर | | 140 | सैंतालीस | छेंतालीस | |
| 127 | वर्षों से | वर्षो से | | 141 | सैकड़ों | सेकडों | |
| 128 | वासियों को | वासीओं को | | 142 | श्रद्धा | श्रध्धा | |
| 129 | वास्ते | वास्त | | 143 | स्वीकृति पत्र | स्विकृति पत्र | |
| 130 | शनिवार | शनीवार | | 144 | हिन्दुस्तान | हिन्दूस्तान | 2 |
| 131 | शुभारंभ | शुभारल | | 145 | हिन्दू | हिन्दु | |
| 132 | शुरू | शुरु | | 146 | हिम्मत | हिंमत | |
| 133 | शौक | शोख | | 147 | हुईं | हुई | |
| 134 | सड़सठ | सडसठ | 2 | 148 | हुई | हुओी | 6 |
| | | सडछठ्ठ | | 149 | हैं | है | 3 |
| 135 | समझ कर | समजकर | | 150 | होंगी | होगी | |

नोट :—(1) कोष्ठकों में जो शब्द दिये गये हैं, वे वैकल्पिक वर्तनी के शब्द है। यह वर्तनी अधिक प्रचलित है।

(2) * चिहि्नत शब्द रूप भी प्रचार में हैं।

## परिशिष्ट—3

आवृत्ति गणना के आधार पर अशुद्ध वर्तनी वाले शब्दों की सूची शुद्ध वर्तनी के साथ

| क्रम संख्या | शुद्ध वर्तनी | अशुद्ध वर्तनी | आवृत्ति की संख्या | क्रम संख्या | शुद्ध वर्तनी | अशुद्ध वर्तनी | आवृत्ति की संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | गाड़ी | गाडी | 49 | 26 | गाढ़ी | गाढी | 3 |
| 2 | आगरा | आग्रा | 17 | 27 | चुके | चूके | 3 |
| 3 | उस में | अुस में | 16 | 28 | जाड़ा | जाडा | 3 |
| 4 | पड़ता | पडता | 13 | 29 | जिला | जिल्ला | 3 |
| 5 | एक | अेक | 9 | 30 | बढ़ा | बढा | 3 |
| 6 | रिक्शा | रिक्षा | 8 | 31 | मैं | मे | 3 |
| 7 | थोड़ा | थोडा | 7 | 32 | हैं | है | 3 |
| 8 | पड़ा | पडा | 7 | 33 | आयेगा, आएगा | आयगा | 2 |
| 9 | घनघोर | धनधोर | 6 | 34 | ऊपर | उपर | 2 |
| 10 | थोड़े | थोडे | 6 | 35 | ऐतिहासिक | अैतिहासिक | 2 |
| 11 | बातचीत | बातचित | 6 | 36 | करें | करे | 2 |
| 12 | बीच में | बिच में | 6 | 37 | कानून | कानुन | 2 |
| 13 | हुई | हुअी | 6 | 38 | गड़बड़ | गडबड | 2 |
| 14 | गयी (गई) | गअी | 5 | 39 | जायेगा (जाएगा) | जायगा | 2 |
| 15 | नींद | निंद | 5 | 40 | जितना | जीतना | 2 |
| 16 | बड़ा | बडा | 5 | 41 | ताजमहल | ताजमहाल | 2 |
| 17 | अँधेरा | अंधार | 4 | 42 | दुर्घटना | दूर्घटना | 2 |
| 18 | आँखें | आंखे | 4 | 43 | नहीं | नही | 2 |
| 19 | ऊब | उब | 4 | 44 | बाबू | बाबु | 2 |
| 20 | टिकट | टिकीट | 4 | 45 | महीना | महिना | 2 |
| 21 | बड़े | बडे | 4 | 46 | मुझे | मुझ | 2 |
| 22 | बढ़ता | बढता | 4 | 47 | रिजर्वेशन | रीसर्वेशन | 2 |
| 23 | युद्ध | युध्ध | 4 | 48 | सड़सठ | सडसठ | 2 |
| 24 | रुकते | रुकते | 4 | 49 | सिद्धि | सिध्धि | 2 |
| 25 | आँख | आंख | 3 | 50 | हिन्दुस्तान | हिन्दूस्तान | 2 |

नोट—शेष 100 शब्दों की आवृत्ति गणना 2 से कम है।

## सन्दर्भ


(1) हिन्दी शिक्षक महाविद्यालय, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद द्वारा 'हिन्दी शिक्षण की कठिना-इयों' पर आयोजित कार्य सभा (work-shop) का प्रतिवेदन (साइक्लोस्टाइल)।

(2) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा 22-3-71 से 25-3-71 तक 'पूर्वांचल तथा पश्चिमांचल में हिन्दी ध्वनि शिक्षण' पर आयोजित कार्यगोष्ठी का प्रतिवेदन (अमुद्रित)।

(3) डॉ० वी. आर. जगन्नाथन—हिन्दी की लिपि—स्वरूप और समस्याएँ—गवेषणा-4, अंक 8 (1966) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा-5

(4) विजयराघव रेड्डी—हिन्दी में वर्ण व्यवस्था और वर्ण विन्यास (Graphemic system and orthography of Hindi)—गवेषणा वर्ष-10, अंक 20 (1973)—केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा-5

कु. पुष्पा श्रीवास्तव

# द्विभाषीयता और व्यक्तित्व

Language behaviour can be treated as the basic necessity of a human being to know oneself and make others aware of the fact. In modern times most of us have to face the problem of learning a second language. Thus bilingualism is a modern problem. In this paper linguistic, psycholinguistic and sociolinguistic studies, experiments and results are discussed, and the impact of dominance and interference of mother tongue on the development of personality is studied.

आज के अधुनातन समाज में किसी भी सामाजिक प्राणी के लिये अपने नित्यप्रति के कार्य कलाप को सुचारु रूप से चलाने के लिए एक से अधिक भाषाओं के ज्ञान और प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है। कम से कम दो या तीन भाषाएँ सीखना अधिकांश व्यक्तियों के लिये आवश्यक हो जाता है। भारतीय समाज में जहाँ संविधान ने 15 प्रमुख भाषाओं को मान्यता प्रदान की है और हिन्दी को राज भाषा तथा राष्ट्र-भाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित किया है, हिन्दीतर प्रान्तों के भाषा-भाषियों को हिन्दी सिखाने का कार्यभार हिन्दी के शिक्षकों और शिक्षा संस्थाओं पर आ गया है। अन्य देशों की भाँति, हमें भी यह ज्ञान प्राप्त करना है कि दो या दो से अधिक भाषाएँ किस प्रकार सीखी जा सकती हैं। दो या दो से अधिक भाषाएँ सिखाने में क्या कठिनाइयाँ हो सकती हैं; उन कठिनाइयों के कारण क्या हैं और उन्हें किस प्रकार दूर किया जा सकता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात है, दो भाषाओं का, विशेषकर द्विभाषीयता का द्विभाषी के व्यक्तित्व पर प्रभाव। अन्य भाषा के रूप में हिन्दी के अधिगम में मातृभाषा किस प्रकार सहयोग या व्याघात उत्पन्न कर सकती है, यह जानना भी आवश्यक है। क्योंकि जब अहिन्दी प्रान्त का वासी हिन्दी प्रान्त में आता है तो उसे अपने भावों और विचारों को व्यक्त करने में और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वहाँ के लोगों से सम्पर्क स्थापित करने में कठिनाई होती है। अतः उसे अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा के रूप में हिन्दी सीखनी पड़ती है। इस प्रकार अहिन्दी प्रदेशों में हिन्दी शिक्षण की कठिनाइयों और हिन्दी अधिगम की कठिनाइयों को हिन्दी के शिक्षक भलीभाँति जानते हैं। इस दृष्टि से द्विभाषीयता हमारी राष्ट्रीय समस्या है। राष्ट्र की एकता के लिए इस विषय पर गम्भीर विचार और गहन शोध की आवश्यकता है।

द्विभाषीयता को हम एक दृष्टिकोण से आधुनिक समस्या भी कह सकते हैं। आजकल जब एक स्थान से दूसरे स्थान पर, एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में या एक देश से दूसरे देश में आने जाने के प्रचुर साधन

आवश्यकता और अवसर प्राप्त हैं, हमारा काम एक ही भाषा से नहीं चल पाता है। जब तक इस प्रकार की आवश्यकता और अवसर कम थे द्विभाषीयता के अध्ययन का विकास व क्षेत्र भी इतना विस्तृत नहीं था। कुछ समय पूर्व तक द्विभाषीयता का अध्ययन जाति-भाषा-विज्ञान के अन्तर्गत आता था। केवल कुछ मानवशास्त्री विभिन्न जातियों के अध्ययन के लिए इस विषय का अध्ययन करते थे। किन्तु अब द्विभाषीयता का अध्ययन समाज-भाषाविज्ञान और मनोभाषा-विज्ञान के क्षेत्रों में भी किया जाने लगा है। द्विभाषीयता का सम्बन्ध जाति, समाज और व्यक्ति से है। इस कारण उसका सम्बन्ध तीनों विज्ञानों-जाति भाषा-विज्ञान, समाज भाषाविज्ञान और मनोभाषा-विज्ञान-से है। जाति-भाषाविज्ञान में किसी जाति या उपजाति के भाषा-व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

मानव समाज में विभिन्न संस्कृतियों को मानने वाले व्यक्ति विभिन्न भाषाएँ बोलते हैं और परस्पर आदान-प्रदान के समय एक दूसरे को अपनी-अपनी भाषाओं के माध्यम से प्रभावित करते हैं। इस प्रकार एक भाषा का प्रभाव दूसरी भाषा पर पड़ता है। इस प्रभाव की मात्रा व क्षेत्र का अध्ययन समाज-भाषा-विज्ञान के अन्तर्गत आता है। इसी प्रकार मानव-भाषा-व्यवहार का अध्ययन मानव भाषा विकास तथा भाषा-अधिगम की क्षमता के ज्ञान के लिये आवश्यक है।

द्विभाषीयता से तात्पर्य है एक साथ एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान और उपयोग। एक ऐसे परिवार की कल्पना कीजिए जहाँ माँ एक भाषा बोलती है और पिता दूसरी। बालक माता और पिता दोनों की भाषाएँ बोलना सीख लेता है और दोनों भाषाओं पर समान अधिकार प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार के बालक को ही सही अर्थ में द्विभाषी बालक कहा जा सकता है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या एक साथ दो भाषाएँ सीखने का व्यक्तित्व के विकास पर कोई प्रभाव पड़ता है। कुछ इस प्रकार के प्रश्न भी हमारे सामने उपस्थित होते हैं—क्या बालक की विधिवत् (formal) शिक्षा आरम्भ होने से पहले उसे दो भाषाएँ एक साथ सीखने का अवसर दिया जाये और क्या इसका प्रभाव उसके भावी ज्ञानात्मक विकास और व्यक्तित्व के समायोजन पर वांछनीय होगा? अकसर विकसित देशों में भाषा शिक्षकों के पास ऐसे अभिभावक आ जाते हैं जो इस प्रश्न का उत्तर जानना चाहते हैं। उनके बच्चे द्विभाषी हैं और उनकी सर्वोत्तम शिक्षा किस प्रकार से हो सकती है यह जानने के लिए वे उत्सुक हैं। भारत वर्ष में हिन्दी को अन्य भाषा के रूप में सिखाने का कार्य करने वाले शिक्षक भी इस प्रश्न का उत्तर जानने को इच्छुक होंगे। अमरीका में डोरोथिया मेकार्थी ने द्विभाषीयता पर किये गये अध्ययनों और उनसे प्राप्त निष्कर्षों का संकलन और वर्णन अपने एक लेख "भाषा-विकास" में किया है। पर इस दिशा में वैज्ञानिक प्रमाणों की कमी है। थोड़े से ही अनुसंधान इस क्षेत्र में किये गये हैं। कुछ अध्ययनों के आधार पर यह निष्कर्ष निकला है कि द्विभाषीयता बालक को स्कूल में समायोजन स्थापित करने में और शैक्षिक प्रगति में बाधा पहुँचाती है। सीजिल ने (Siegle) इटली के बच्चों का अध्ययन किया। उसने पाया कि द्विभाषीयता के कारण शाब्दिक बुद्धि और क्रियात्मक बुद्धि में 5-6 अंकों का अन्तर पड़ जाता है। शाब्दिक बुद्धिलब्धि में 5 या 6 अंक कम और क्रियात्यमक बुद्धि में 10 से 12 तक अंक अधिक पाये गये। इसी प्रकार के दूसरे अध्ययन में ट्राविस (Travis) और जाँनसन ने हकलाने पर द्विभाषीयता के प्रभाव का अध्ययन किया। हकलाने वाले बालकों में 2·3 प्रतिशत द्विभाषी और 1·8 प्रतिशत एक भाषाभाषी थे। स्मिथ ने 1939 में हवाई द्वीप में 1000 हवाई बच्चों का अध्ययन किया और निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले :

(1) द्विभाषीयता के कारण बालक अधिकतर सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते थे और वाक्यों तथा शब्दों का प्रयोग कम।

(2) सम्बोधन वाचक शब्दों का प्रयोग अधिक और प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग कम पाया गया। संयुक्त और मिश्र वाक्यों का प्रयोग बहुत ही कम पाया गया।

(3) सम्बन्ध वाचक शब्द और सर्वनाम प्रयोग में भी ये बालक पिछड़े हुए थे।

स्मिथ ने 1949 में 30 द्विभाषी चीनी बालकों का अध्ययन किया जिनकी आयु 37 माह से लेकर 77 माह तक थी। इनको क्रमशः अंग्रेजी और और चीनी भाषा में शब्दावली परीक्षण दिये गये। इन बच्चों का शब्द भण्डार दोनों भाषाओं के शब्द भण्डारों को जोड़ कर एक भाषा-भाषी सामान्य बालक के शब्द भण्डार का 2/5 भाग मात्र था। ये द्विभाषी बालक बुद्धि में सामान्य से कुछ ऊँचे स्तर के थे।

इन अध्ययनों के आधार पर स्मिथ इस निष्कर्ष पर पहुँचीं कि दो भाषाएँ अलग अलग स्रोत से सिखानी चाहिए; जैसे यदि माँ मातृभाषा सिखाती है तो पिता अन्य भाषा सिखाये। स्मिथ की यह भी धारणा है कि एक भाषीयता से द्विभाषीयता के कारण पर्यावरण में होने वाले परिवर्तन का बालक के मानसिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। यह परिवर्तन 12 से 18 माह के बच्चों के लिए अधिक कठिनाई प्रस्तुत करता है। यह अवरोध आरम्भ में स्पष्ट नहीं होता। किन्तु जब बालक प्रथम शब्द बोलना सीखना शुरू कर देता है तो भाषा-विकास में यह अवरोध स्पष्ट होता जाता है। अमरीका के उन शिक्षकों का जिन्हें द्विभाषी क्षेत्रों में शिक्षा देने का अवसर मिला है, यह अनुभव और धारणा है कि द्विभाषी बालकों के बौद्धिक विकास और भावी संवेदात्मक समायोजन में द्विभाषीयता कठिनाई उपस्थित करता है। उनके विचारों के अनुसार प्रायः यह अनुमान लगाया जाता है कि बालकों की कठिनाई का कारण उनके मस्तिष्क में आवश्यकता से अधिक बौद्धिक सामग्री है। दो भाषाओं के विभिन्न संकेत ग्रहण करने के कारण बालकों में एक प्रकार का हानिकारक मानसिक संघर्ष पैदा हो जाता है और यह भाषा-वैज्ञानिक संघर्ष बौद्धिक कमी का वास्तविक प्रमाण है। व्यक्तित्व सम्बन्धी कठिनाई भी फलस्वरूप पैदा हो जाती है। डार्सी, जेनसन, पील और लेम्बर्ट के अध्ययनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि द्विभाषीयता और निम्नबुद्धिलब्धि में सहसम्बन्ध है और एक भाषीय और द्विभाषीय व्यक्तियों की तुलना में व्यक्तित्व सम्बन्धी दोष द्विभाषियों में अधिक पाये जाते हैं।

यहाँ द्विभाषीयता और द्वितीय भाषा में अन्तर स्पष्ट करना अत्यन्त आवश्यक है। द्विभाषीयता से तात्पर्य शैशवकाल से ही दो या अधिक भाषाओं के पर्यावरण में रहना उनका श्रवण व भाषण करना सीखना और उपयोग करना है। जबकि द्वितीय भाषा से सही तात्पर्य सामान्य रूप से मातृभाषा सीख लेने के बाद दूसरी भाषा सीखना आरम्भ करना है। जहाँ द्विभाषीयता में दो या अधिक भाषा व्यवहारों को साथ-साथ सीखना है वहाँ द्वितीय भाषा अधिगम में मातृभाषा के आधार पर नई भाषा सीखना है। इसमें मातृभाषा सहायक भी हो सकती है और व्याघात भी उत्पन्न कर सकती है।

उपर्युक्त विवेचन व अध्ययन के निष्कर्षों से हमें निराश व चिन्तित नहीं होना चाहिए क्योंकि यह अध्ययन पुराने हैं और पूर्णतः वैज्ञानिक नहीं हैं। जिन अध्ययनों में एक भाषीय और द्विभाषीय व्यक्तियों की तुलना की गई थी वे वास्तव में एक भाषीय या द्विभाषीय नहीं थे और न ही उनमें सामाजिक स्तर, सांस्कृतिक स्तर व शैक्षिक स्तर आदि की समानता का ध्नान रखा गया था। ऐसे अध्ययन नहीं के बराबर हैं जो ऐसे बालकों पर किये गये हों जिन्हें बचपन से ही द्विभाषीय पर्यावरण में पाला गया हो और जिनका दोनों भाषाओं पर समान अधिकार हो और इन्हीं बालकों का अध्ययन दोनों भाषाओं के प्रभाव को जानने के लिए किया गया हो। विभिन्न भाषा-समुदायों के इस प्रकार के द्विभाषी व्यक्तियों के लम्बी अबधि के अध्ययन की आवश्यकता है, जिनसे भाषा और संस्कृति के मिले जुले प्रभाव को आँका जा सके।

विद्वानों का मत है कि द्विभाषीयता के कारण मानसिक संघर्ष पैदा हो जाता है क्योंकि दोनों भाषाओं के विभिन्न 'कोडों' या संकेतों में संघर्ष होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि बालक को विभिन्न भाषाओं के 'कोड' या संकेतों को सीखना पड़ता है जिनसे दोनों भाषाओं में संघर्ष पैदा हो जाता है और यह संघर्ष व्यक्तित्व सम्बन्धी समस्याएँ पैदा करता है। इस समस्या पर किये गये कुछ शोध कार्यों का उल्लेख पहले किया जा चुका है उदाहरण के लिए डार्सी का अध्ययन आदि। आधुनिक काल में 1950 के बाद के आन्तरविषयक अनुसंधानों (interdisciplinary researches) ने ऐसे तथ्य खोजे हैं जिनसे ज्ञानात्मक और व्यक्तित्व सम्बन्धी दोषों का कारण द्विभाषीयता का होना सिद्ध हुआ है।

यह एक मनो-भाषावैज्ञानिक तथ्य है कि प्रत्येक सामान्य बालक, जिसमें किसी प्रकार का अवयवी (गूंगापन, बहिरापन) या गामक (motor) दोष या व्यवहारिक दोष जैसे इन्फेन्टाइल ऑटिस्म आदि नहीं है तो वह अपनी क्रमिक शारीरिक परिपक्वता, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ अपने समाज में बोली जाने वाली भाषा बोलना सीख लेता है। यह एक आम धारणा है कि जो लोग बचपन से ही दो या अधिक भाषाएँ प्राथमिक भाषा के रूप में सीख लेते हैं वे दोनों भाषाएँ जन्म-भाषा जैसी सुगमता से बोलने लगते हैं। इनकी भाषाओं में एक भाषा का दूसरी भाषा में "संकेत प्रभुत्व" (Code dominance) के कारण व्याघात नहीं पाया जाता। जबकि मातृभाषा सीखने के बाद अन्य भाषा सीखने पर मातृभाषा का व्याघात 'संकेत-प्रभुत्व' के रूप में पाया जाता है। इस प्रगर के कुशल द्विभाषी व्यक्ति बहुत कम होते हैं इनकी तुलना अन्य द्विभाषी व्यक्तियों से जिनकी एक भाषा प्रमुख है और दूसरी उससे प्रभावित, करना ज्ञानप्रद होगी। इस प्रकार के द्विभाषियों को "सबॉर्डिनेट" या आश्रित द्विभाषी कहते हैं। जिन द्विभाषियों को बचपन से ही दोनों भाषाओं पर समान अधिकार प्राप्त होता है और जिनकी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार प्राप्त होता है और जिनकी दोनों भाषाओं में परस्पर व्याघात या संघर्ष नहीं होता, उन्हें कोआर्डिनेट द्विभाषी या (स्वतन्त्र द्विभाषी) कहते हैं। इस दिशा में भी पर्याप्त अनुसंधान और पर्यवेक्षण करने की आवश्यकता है।

मातृभाषा का उच्चारण, ध्वनि-व्यवस्था, शब्दावली, व्याकरण तथा भाषा-व्यवहार अन्य-भाषा के उच्चारण, व्याकरण आदि में व्याघात उत्पन्न करते हैं। इसी प्रकार अन्य भाषा का उच्चारण और व्याकरण मातृभाषा के उच्चारण और व्याकरण पर प्रभाव डालते है। एक प्रकार का संघर्ष उच्चारण और व्याकरण के नियमों के पालन करने में उत्पन्न हो जाता है। यह भाषा-विकास में बाधा उत्पन्न करता है और कभी-कभी मानसिक विकास और भावात्मक समायोजन में भी कठिनाई उपस्थित करता है। भाषा भावनाओं विचारों आदि के आदन-प्रदान का साधन है। इच्छित भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिये जब किसी व्यक्ति को आवश्यक और पर्याप्त शब्दावली और व्याकरणिक संरचनाओं के चयन में भाषाओं के परस्पर व्याघात के कारण कठिनाई होती है तो उसमें आक्रोश, उलझन, मानसिक तनाव या मानसिक अवरोध पैदा हो जाना कोई अचरज की बात नहीं है। इसी का प्रभाव व्यक्तित्व के समायोजन पर पड़ता है और व्यक्ति के व्यवहार में कठिनाई या दोष दिखाई पड़ते हैं।

प्रो० बी० कैरोल के अनुसार कोआर्डीनेट द्विभाषी के व्यक्तित्व और मानसिक विकास में पिछड़ापन नहीं पाया गया है। क्योंकि इस प्रकार के द्विभाषी दोनों भाषाओं को मातृभाषा के समान सीखते और प्रत्येक भाषा के संकेतों को अलग-अलग सीखते हैं जिससे भाषाओं का एक दूसरे पर प्रभुत्व या व्याघात नहीं पैदा हो पाता। मानसिक पिछड़ापन या व्यक्तित्व सम्बन्धी कठिनाइयाँ द्विभाषीयता में तब शुरू होती हैं जब प्रारम्भिक बाल्यकाल के बाद दूसरी भाषा सिखाना आरम्भ किया जाता है। उस

अवस्था तक बालक एक भाषा काफी अच्छी तरह से सीख चुका होता है जो उसे नई भाषा सीखने में कठिनाई उपस्थित करती है।

"व्याघात" और "प्रभुत्व" दोनों प्रत्ययों की व्याख्या करना आवश्यक है। इन दोनों का अर्थ कितने प्रकार से लगाया जा सकता है, यह जान लेना भी आवश्यक है। यदि एक समुदाय में दो भाषाएँ बोली जाती हैं तो भाष-वैज्ञानिकों के लिये यह जानना आवश्यक हो जाता है कि एक भाषा के कारण दूसरी भाषा में क्या परिवर्तन हो रहे हैं ? समाज शास्त्री और मानव शास्त्री की रुचि बोलने वालों के समुदाय के भाषा-व्यवहारों की ओर अधिक होगी। यदि उन दोनों भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाये तो स्पष्ट रूप से पता चल जाता है कि किस भाषा का प्रभाव किस भाषा पर अधिक है और उसके कारण एक भाषा की संस्कृति का प्रभाव दूसरी पर कितना पड़ रहा है और क्या परिवर्तन हो रहे हैं।

आगे की पंक्तियों में "प्रभुत्व" के प्रत्यय की व्याख्या की जा रही है। आमतौर पर भाषा के प्रभुत्व को तीन प्रकार का माना जाता है—भाषा-वैज्ञानिक, समाज-भाषा वैज्ञानिक या मानवभाषा-वैज्ञानिक और मनोभाषावैज्ञानिक। भाषा-वैज्ञानिक से तात्पर्य एक भाषा का दूसरी भाशा पर प्रभाव की मात्रा का अध्ययन है। समाज भाषा वैज्ञानिक या मानव भाषावैज्ञानिक से तात्पर्य एक भाषा का दूसरी भाषा पर प्रभाव के कारण दोनों भाषाओं को बोलने वाले समुदायों में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का अध्ययन करना। मनोभाषाविज्ञान के अन्तर्गत द्विभाषीयता का व्यक्तित्व के विकास पर प्रभाव, व्यक्तित्व-परिवर्तन, भाषा-व्यवहार में परिवर्तन और दोनों भाषाओं के व्यवहार के रूपों का अध्ययन आता है। मनोवैज्ञानिक का मुख्य ध्येय यह रहता है कि किस प्रकार एक व्यक्ति दो भाषाओं के 'कोड' या संकेत सीखकर किस सीमा तक दोनों को स्वतन्त्र रूप में व्यवहार में ला सकता है जिससे दोनों भाषाओं में किसी प्रकार का व्याघात या संघर्ष किसी एक भाषा के प्रभुत्व के कारण न पैदा हो पाये। इस बात के लिये निम्नलिखित बातों का अध्ययन करना पड़ेगा : (1) द्विभाषीयता का ज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव, (2) द्विभाषीयता का व्यक्तित्व पर प्रभाव (3) भाषा-वैज्ञानिक और समाज भाषावैज्ञानिक प्रभुत्व का तुलनात्मक विधि से मापन।

भाषा-वैज्ञानिक तथा समाज भाषा-वैज्ञानिक प्रभुत्व मापन तुलनात्मक रूप से अधिक सरल है। क्योंकि भाषा-वैज्ञानिक केवल यह मापना चाहते हैं कि दो भाषाएँ बोलने में दो भाषाओं के कारण कितना व्याघात हो रहा है। भाषा-विज्ञान दोनों भाषाओं के नियमों में भेद व समानता ढूंढता है, और समाज भाषाविज्ञान दो भाषाओं के बोलने वालों के व्यवहारों में दो भाषाओं के कारण उत्पन्न अन्तर खोजता है। इन अध्ययनों से यह तो पता चल जाता है कि द्विवभाषी "आश्रित" (Subordinate) द्विभाषी है या दोनों भाषाओं में "कुशल" (Proticient) द्विभाषी है। इससे यह नहीं पता चलता कि द्विभाषीयता के कारण दोनों भाषाओं के व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

समाजभाषा-वैज्ञानिक व्याख्या द्वारा द्विभाषी समुदाय में भाषाओं के प्रभुत्व या व्याख्या की मात्रा जानी जा सकती है। बारकर, डीवोल्ड, मैकी आदि ने इस पर कार्य किया है। विभिन्न सामाजिक स्थितियों में भाषाओं के प्रभाव, भाषा के व्यवहार के लिये समुदाय की मनोवृत्ति "भाषा के प्रति वफादारी" आदि तथा दोनों भाषाओं में साथ-साथ अदान-प्रदान के लिये अध्ययन व निष्कर्ष निकाले गये हैं। प्रमुख अध्ययन फिशरमैन और उनके साथी, गम्पर्ज, हाँगेन तथा मैकी के हैं।

मनोभाषा-वैज्ञानिक दृष्टिकोण से "प्रभुत्व" की व्याख्या करना अधिक कठिन समस्या है। केवल "कुशल द्विभाषीयता" स्तर से "आश्रित द्विभाषीयता" के स्तर तक शून्य से अधिकतम प्रभुत्व का पता

लगाना ही मनोभाषा-विज्ञान का कार्य नहीं है। क्योंकि यह पता लगा लेना काफी नहीं है कि कुशल द्विभाषी की भाषा में दोनों भाषाओं का परस्पर प्रभुत्व या व्याधात नहीं है और आश्रित द्विभाषी की एक भाषा पर दूसरी का प्रभाव है और उसके कारण व्याघात है। बल्कि यह भी जानकारी प्राप्त करना है कि किस प्रकार द्विभाषी की भाषा के शब्दों में (दोनों भाषाओं के) सम्धन्ध स्थापित कर लिया जाता है और उन शब्दों से किस प्रकार वस्तुओं और प्रत्ययों से अर्थ जोड़ा जाता है। यह प्रक्रिया जटिल प्रक्रिया है। सामान्य रूप से जब हम एक भाषा बोलना सीखना आरम्भ करते हैं तो वस्तुओं, व्यक्तियों या क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त कर उनके लिये भाषा में प्रयुक्त शब्दों का साहचर्य स्थापित कर लेते हैं और उनके शाब्दिक संकेत तथा प्रत्ययों में सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। दूसरे शब्दों में, शब्दों का सम्बध संज्ञाओं, क्रियाओं, विशेषणों, क्रियाविशेषणों से जुड़ जाता है और धीरे-धीरे वाक्य-संरचनाओं के व्यवहार की आदतों का निर्माण हो जाता है। द्विभाषीयता में इतनी सहजता से भाषा विकास के इस क्रम में साहचर्य-सम्बन्ध स्थापना की व्याख्या नहीं की जा सकती क्योंकि द्विभाषीय भाषा-व्यवहार इतना सरल भाषा-व्यवहार नहीं है। इसी कारण उसके कारण होने वाले व्यक्तित्व पर प्रभाव और व्यवहार-परिवर्तनों का अध्ययन भी जटिल मनोवैज्ञानिक विषय है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता कि द्विभाषीयता से उत्पन्न मानसिक विकास में पिछड़ापन और व्यक्तित्व सम्बन्धी कठिनाइयों का हल मनोभाषावैज्ञानिक अध्ययन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

**Reference**


1. Manual of child Ptychology-Language Development—Dorothes Macarthy—
2. Quoted by D. Macarth in Language Development.
3. Ibid
4. Ibid
5. Ibid
6. The study of Personality ; An Interdiscipliary Appraisal, Eds. E. Norbeek, D. Pprice-William & W. M. Mccord. Holt—Rinehart and winston Inc. New York, 1968.
7. Ibid
8. Ibid
9. Language and Thought : J.B. Carool
   Foundations of Modern psychological Series, 1964.

वि.कृष्णस्वामी अय्यंगार

# पाणिनीय पदविधान की समीक्षा

This paper is intended to be a brief introduction to Pāninian morphology. The famous Indian grammarian has given his own description of a Prātipadika and Dhātu. These two concepts cover between themselves the entire range of nominal and verbal roots as well as stems. The various kinds of Prātipadika and Dhātu have been discussed in some detail. Incidentally, an interesting problem of Samāsa or compound is considered at some length. My personal view is that the Samāsa, consisting of an Upasarga or preverb morph as its first member and a finite verb as its final member, which is called technically a "tingantottarapada "Samāsa" is untenable and better be discarded. Verbal stems ending with suffixes such as 'San' etc, are dealt with briefly.

The various kinds of Pratyayas or suffixes employed in Pāninian grammar have been divided into seven groups and each one of these groups is discussed briefly. A rare example of a Poorvapratyaya or prefix in Sanskrit is cited ; two examples of infixes or Antahpratyayas are discussed also. All other Pratyayas in Sanskrit are invariably suffixes. The mechanics of Pāninian morphophonemics including the system of Anubandhas is briefly mentioned. Some of the stem formative elements like 'yāsut' 'seeyut' etc have been commented upon. The problem of 'it'—a vowel addition occuring before the Ārdhadhātuka pratyayas—is just mentioned. It requires independent treatment.

In the very beginning, the concept of 'Pada' (which rougly corresponds to the concept of 'word') as propounded by Pānini is discussed in detail. The difference between a Pada and a 'morph' is distinctly brought out.

On the whole, this is only a humble introduction to Sanskrit morphology as enunciated in the Astādhyāyī.

भारतीय वैयाकरणों में महर्षि पाणिनि का नाम विश्वविख्यात है। पश्चिम के भाषाविज्ञानी भी मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा करते हैं। पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' को संसार का सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक व्याकरण कहा जाता है। पश्चिम के विद्वान आज भी कई दृष्टियों से पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन-अनुशीलन करते जा रहे हैं।

पाणिनि ने पदसंरचना के तत्त्वों की 'अष्टाध्यायी' में ऐसी विशद व्याख्या प्रस्तुत की है कि

संस्कृत वाङ्मय में व्याकरण को 'पद' कहने की परम्परा चल पड़ी है। **"पदवाक्य प्रमाण पारावार पारीण"** की उपाधि प्राचीन भारत में एक अत्यन्त आदर की उपाधि मानी जाती थी। मल्लिनाथ आदि प्रख्यात विद्वानों ने अपने ग्रन्थों में गर्व के साथ इस उपाधि का उल्लेख किया है। इसमें पद का अर्थ व्याकरणशास्त्र है, वाक्य का मीमांसा, तथा प्रमाण का न्यायशास्त्र, कहने की आवश्यकता नहीं कि मीमांसा और न्याय में पांण्डित्य पाने के लिए पहले व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इसीलिए 'पद' का प्रथम निर्देश किया गया है। पद संरचना की व्याख्या में पाणिनि की पद्धति कैसी रही ? प्रस्तुत निबन्ध में इसपर संक्षेप में विचार किया जाएगा।

पाणिनि 'पद' उन्हीं शब्दों को मानते हैं, जो लोक में स्वतंत्र रूप से प्रयोग करने योग्य हैं। अंग्रेजी में इन्हें (स्वतन्त्र रूप) "Free forms' कह सकते हैं। पद की परिभाषा पाणिनि ने निम्नांकित सूत्र में दी है—"सुप्तिङन्तं पदम्"। सुप् तथा तिङ् ये दोनों प्रत्याहार हैं। 'सुप् प्रत्याहार में इक्कीस' प्रत्यय हैं तथा तिङ् प्रत्याहार में अठारह प्रत्यय हैं। इनकी सूची नीचे दी जा रही है।

(१) 'सुप्' प्रत्याहार के प्रत्यय

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | सु | औ | जस् |
| द्वितीया | अम् | औट् | शस् |
| तृतीया | टा | भ्याम् | भिस् |
| चतुर्थी | ङ | भ्याम् | भ्यस् |
| पंचमी | ङसि | भ्याम् | भ्यस् |
| षष्ठी | ङस् | ओस् | आम् |
| सप्तमी | ङि | ओस् | सुप् |

(२) तिङ् प्रत्याहार के प्रत्यय

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम | तिप्, त | तस्, आताम् | झि, झ |
| मध्यम | सिप्, थास् | थस्, आथाम् | थ, ध्वम् |
| उत्तम | मिप्, इट | वस, वहि | मस, महिङ |

संस्कृत भाषा के प्रत्येक पद के अन्त में सुप् या तिङ् का कोई-न-कोई प्रत्यय अवश्य रहता है। इसका निष्कर्ष हुआ कि संस्कृत भाषा के सभी पद प्रत्ययान्त हैं—सुबन्त हैं या तिङन्त।

वास्तव में संस्कृत के कई पद प्रत्ययान्त नहीं होते। प्रत्यक्षमात्रदर्शी भाषाविज्ञानी की दृष्टि से पदों के दो वर्ग करने होंगे। पहले वर्ग के पद प्रत्ययान्त हैं, तो दूसरे वर्ग के पद प्रत्यय रहित हैं। उदाहरण के लिए राजा, रमा आदि पदों को ले सकते हैं। ये प्रथमा एकवचन के रूप हैं। इनमें एकवचन का प्रत्यय नहीं है। अतः ऐसे पदों को 'सुप्' से रहित कहा जा सकता है। अपि, तु, च, न आदि अव्यय हैं। इनमें तो किसी प्रकार का प्रत्यय नहीं है। ये सर्वथा प्रत्यय रहित हैं। किंतु प्रत्ययांत तथा प्रत्यय रहित पदों को मानने पर, व्यवस्था की एकरूपता का भंग होता है। दूसरे शब्दों में, प्रत्ययरहित पद की असंदिग्ध परिभाषा देना कठिन हो जाता है। शब्द का मूलरूप प्रत्ययरहित ही होता है। वह 'पद' नहीं है। इस पार्थक्य को समझाने का क्या उपाय है ? अत एव पाणिनि ने प्रत्ययरहित पदों को स्वीकार नहीं किया।

राजा, रमा, आदि पदों में भी उन्होंने प्रत्यय की कल्पना की। उसके लोप का विधान किया। हलंत प्रातिपदिकों के बाद 'सु' प्रत्यय का लोप हो जाता है। राजन्+सु=राजन्=राजा। इसी प्रकार 'टाप्' (एक स्त्री प्रत्यय, जिसमें सिर्फ 'आ' बचता है। लता, रमा आदि टाप् प्रत्ययांत शब्द हैं।) से अंत होने—वाले शब्दों के बाद भी 'सु' का लोप हो जाता है। रमा+सु=रमा। च, परंतु आदि अव्ययों में भी पाणिनि ने इसी प्रकार प्रत्ययके लोप की कल्पना की है—"अव्ययादाप्सुपः।" 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्य पृक्तं हल्"।

इस विवेचन से सिद्ध होता है कि पाणिनि के अनुसार पद दो प्रकार के हैं—कुछ पदों के अन्त में प्रत्यय श्रूयमाण रहते हैं तथा कुछ पदों के अन्त में प्रत्यय लुप्त रहते हैं। किन्तु दोनों प्रकार के पद प्रत्ययान्त ही हैं। श्रूयमाणप्रत्ययान्त तथा लुप्त प्रत्ययान्त पद ही स्वतन्त्र रूप से प्रयोगार्ह हैं। इसतरह विश्लेषण की व्यवस्था में एकरूपता की रक्षा होती है और पद की परिभाषा व्यवस्थित और सुनिश्चित बन जाती है।

प्रत्यय का लोप, प्रत्यय के कारण होनेवाले गुण, दीर्घ आदि विकार तथा प्रत्यय में होनेवाले रूपान्तर ये सब काल्पनिक हैं। पाणिनीय व्याकरण के आचार्यों ने भाषा के इस मूल तथ्य को असंदिग्ध शब्दों में स्वीकार किया है। 'वाक्यपदीय' के प्रसिद्ध लेखक भर्तृहरि का कहना है—

"पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च।
वाक्यात्पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन॥"

व्याकरण की प्रक्रिया में गुण, वृद्धि, संप्रसारण आदि कई विकारों की व्याख्या की जाती है। इस प्रकार एक तथाकथित मूल रूप से दूसरे निष्पन्न रूप (end product) की व्युत्पत्ति बतायी जाती है। भाष्यकार पतंजलि ने शंका उठायी कि क्या इस तरह के लोप, आगम और आदेश की व्यवस्था से शब्द अनित्यता या विकार्यता सिद्ध नहीं होती? इस शंका के समाधान में उन्होंने कहा कि शब्दों में होनेवाले ये विकार वास्तविक नहीं हैं। ये सब काल्पनिक हैं। 'भू+शप्+तिप्" के स्थान पर "भवति" कहना चाहिए—इतना ही शास्त्रकार का उदिष्ट है। "सर्वे सर्वपदादेशा दाक्षीपुत्रस्य पाणिनेः।"

पाणिनी का मत है कि सभी पद स्वतन्त्र हैं। किसी शब्द को किसी दूसरे शब्द के स्थान में आदेश कहने का इतना ही तात्पर्य है कि विवक्षित अर्थविशेष की प्रतीति के लिए शब्द का वही रूप ग्राह्य है। अतः शब्द से शब्दान्तर की निष्पत्ति की बात केवल कल्पना ही है। किन्तु भाषा की प्रकृति को समझने के लिए इस कल्पना का सहारा लेना अनिवार्य है। ऐसी शास्त्रीय कल्पना के बिना भाषा का विश्लेषण करना असम्भव हो जाता है। अतएव एकरूपता की रक्षा के लिए प्रत्ययलोप की कल्पना करना कोई दोष नहीं है।

इन प्रत्यायान्त पदों की संरचना का अध्ययन करने की सुविधा के लिए प्रत्येक पद के दो खण्ड किए जा सकते हैं। पद का पूर्वार्ध या प्रथम खंड 'प्रकृति' है और उसका उत्तरार्ध या द्वितीय खण्ड 'प्रत्यय' है। प्रकृति और प्रत्यय का समुदाय, जिसे सुबंत या तिङन्त कहते हैं, प्रयोग के लिए योग्य पद है। प्रत्यरहित प्रकृति या प्रकृतिरहित प्रत्यय प्रयोगार्ह नहीं है। "न केवला प्रकृतिः प्रयोक्तव्या नापि प्रत्ययः"। प्रयोगार्हता के कारण ही पद को स्वतन्त्र मानते हैं; स्वतन्त्रता का इस सन्दर्भ में अर्थ प्रयोगार्हता ही है।

पाणिनि ने 'पद' संज्ञा की व्याख्या में कुछ और बातें कही हैं, जिनका यहाँ उल्लेख करना सम्भावित भ्रान्ति के निराकरण के लिए अपेक्षित हैं। कहीं कहीं 'पद' संज्ञा पर आधारित कुछ कार्य—आदेश आदि विकारों को यहाँ 'कार्य' कहा जाता है—अपेक्षित है। उदाहरण के लिए 'राजभ्याम्' को लीजिए। यह 'राजन्' शब्द का तृतीया द्विवचन का रूप है। 'राजन्' एक नकारान्त संज्ञा है। यहाँ प्रत्यय के

कारण नकार का लोप हो जाता है। पाणिनि का एक नियम है—"न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य"। इसका अर्थ है कि जो प्रातिपदिक पद है, उसके अन्तिम नकार का लोप हो जाना है। नलोप के लिए पदसंज्ञा अनिवार्य है। "राजानौ, राजानः" इत्यादि में पदान्त न होने के कारण नकार का लोप नहीं होता। अब 'राजभ्याम्' (राजन्+भ्याम्) में तो लोप हुआ है। इस लोप की उपपत्ति के लिए यहाँ 'राजन्' को, जो प्रातिपदिक या प्रकृति मात्र है, 'पद' मानने की आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में, लोप आदि आवश्यक कार्यों की सिद्धि के लिए, पाणिनि ने केवल प्रातिपदिक को भी 'पद' के स्तर पर स्थान दिया। उनका सूत्र है—"स्वादिष्वसर्वनामस्थाने"। सुप् प्रत्ययों की सूची में पहले पाँच प्रत्ययों को 'सुट्' कहते हैं। वे हैं—सु, औ, जस्, अम् और औट्। नपुंसक लिंग के शब्द को छोड़कर अन्यत्र ये पाँच प्रत्यय 'सर्वनामस्थान' कहलाते हैं—"सुडनपुंसकस्य"। चतुर्थ अध्याय के प्रथम पाद के आरम्भ में 'सुप्' प्रत्ययों की सूची दी गयी है—"स्वौजसमौट्छष्टाभ्यांभिस्ङेभ्यांभ्यस्ङसिभ्यांभ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप्"। (अष्टाध्यायी, 4-1-2) पंचम अध्याय के अन्त में 'कप्' प्रत्यय विहित है। इस 'सु' से लेकर 'कप्' तक के समस्त प्रत्ययों को 'स्वादि' कहा गया है। पाँच सर्वनाम स्थान प्रत्ययों को छोड़कर बाकी स्वादि प्रत्ययों में, यकारादि प्रत्ययों को छोड़कर अन्य कोई हलादि प्रत्यय लगा हो तो पूर्ववर्ती प्रातिपदिक को 'पद' मानते हैं। "राजन्+भ्याम्" में 'भ्याम्' एक हलादि प्रत्यय है। अतः, 'राजन्' जो एक प्रातिपदिक है, यहाँ 'पद' कहलाता है। नकार पदान्त है; तो उसका लोप हो जाता है। इस प्रकार, "राजभ्याम्" शब्द की निष्पत्ति होती है।

एक दूसरा उदाहरण भी देखें। 'मरुत' एक तकारान्त प्रातिपदिक है। तृतीया बहुवचन में उसका रूप होता है—'मरुद्भिः'। यहाँ 'भिस्' प्रत्यय लगा है। यह भी एक हलादि प्रत्यय है, जिससे 'मरुत्' प्रातिपदिक होते हुए भी 'पद' बन जाता है। तकार पदान्त है। अतः उसका जश्त्व—घोषीकरण होता है; त के स्थान पर द का आदेश होता है। जश्त्व का विधायक सूत्र है—"झलां जशोऽन्ते"। इसका अर्थ है कि पद के अन्तिम झल् ('झल्' एक प्रत्याहार है। इस प्रत्याहार में वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण, श, ष, स तथा हकार सम्मिलित हैं। चौबीस वर्णों का यह प्रत्याहार है।) के स्थान पर जश् (यह भी एक प्रत्याहार है। इसमें वर्ग के तृतीय वर्ण सम्मिलित हैं। पाँच वर्णों का यह प्रत्याहार हैं।) का आदेश होगा। स्पष्ट है कि 'पद' संज्ञा के अभाव में 'मरुद्भिः' में जश्त्व नहीं हो सकता था। ऐसे कार्यों की सिद्धि के लिए पाणिनि ने प्रातिपदिक मात्र को भी 'पद' संज्ञा दी है।

प्रातिपदिक की पद संज्ञा का एक अभावात्मक फल भी सामने आता है। 'पार्श्व' शब्द समूहार्थक 'णस्' प्रत्यय से बना है। 'पर्श्वा णस् वक्तव्यः'। णस् प्रत्यय णित् है; अतः प्रातिपदिक में पहले स्वर की वृद्धि होती है। 'तद्धितेष्वचामादेः। यह प्रत्यय अजादि है। अजादि स्वादि प्रत्यय लगने पर पूर्ववर्ती प्रातिपदिक को भ' कहते हैं—'यचि भम्'। इस स्थिति में गुण प्राप्त होता है—'ओर्गुणः'। गुण हो जाय तो उकार के स्थान पर ओकार होगा और फिर अवादेश के बाद रूप बनेगा—"पार्शव"। यह रूप अभीष्ट नहीं है। गुण नहीं होना चाहिए; उसके बजाय यणादेश होना चाहिए। तब 'पार्श्व' रूप बनेगा। इसलिए पाणिनि ने विधान किया कि सित् (जिसमें सकार इत् हो) प्रत्यय परे होने पर पूर्ववर्ती प्रातिपदिक को 'पद' माना जाय। पद संज्ञा से भसंज्ञा बाधित होती है। भसंज्ञा के अभाव में गुण नहीं हो सकता। स्पष्ट है कि यहाँ गुण का निवारण ही पदसंज्ञा के विधान का प्रयोजन है।

किन्तु ये व्याकरण की प्रक्रिया की दृष्टि से 'पद' होने पर भी स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त हो सकते। ये 'प्रयोगार्ह पद' नहीं हैं। केवल सुबन्त या तिङन्त पद ही प्रयोगार्ह हैं। राजा, प्रजा इत्यादि शब्दो में सुप् का, 'अचकाः' आदि में तिङ् का लोप हो जाने पर भी, लुप्तप्रत्ययान्त होने के कारण वे पद प्रयोगार्ह हैं। 'प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्'। समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद में विभक्त का लोप हो जाता है। 'सुपो

धातुप्रातिपदिकयोः । फिर भी लुप्तप्रत्ययांत होने के कारण इन्हें भी 'पद' मानते हैं। स्वयं पाणिनि ने 'पूर्वपद' तथा 'अन्तरपद' का प्रयोग किया है—"पूर्वपदात् संज्ञायामगः", 'एकाजुत्तरपदे णः" । इस विवेचन से स्पष्ट है कि सुबन्त या तिङन्त शब्दरूप ही स्वतन्त्र प्रयोगार्ह पद माने जा सकते हैं।

कहीं कहीं लुप्तविभक्तिक पद को भी कार्यविशेष की सिद्धि के लिए पाणिनि ने 'पद' संज्ञा से बहिर्भूत कर रखा है। एक उदाहरण को लेकर इस बात बात को स्पष्ट कर सकते हैं। पाणिनि का एक सूत्र है—"सुप आत्मनः क्यच्" । इच्छा के अर्थ में सुबन्त पद के बात 'क्यच्' प्रत्यय लगता है। गाम् आत्मनः इच्छति=गव्यति। कोई अपने लिए गाय की कामना करता है; इस अर्थ में 'गाम्' सुबन्त शब्द के बाद 'क्यच्' प्रत्यय लगता है; क्यच् सनादि प्रत्ययों में एक है, अतः क्यजंत शब्द को धातु मानते हैं। 'सनाद्यन्ता धातवः' । धातु के अन्तर्गत सुप् प्रत्यय का लोप विहित है—'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' । अतः 'गाम्' में द्वितीया एकवचन प्रत्यय का लोप करने पर ओकारान्त गोशब्द बचता है। इस ओकार के स्थान में 'अव्' का आदेश होता है—'वान्तो यि प्रत्यये' । अब प्रक्रिया में शब्द की यह स्थिति है—"गव्+य" । यहाँ 'गव्' लुप्तविभक्तिक है। अतः स्वाभाविक रूप से इसे पद मानना चाहिए। किन्तु इसको पद मानने पर वकार के वैकल्पिक लोप की बाधा आ पड़ेगी। "लोपः शाकल्यस्य" । अकार के बाद आनेवाले पदान्त यकार तथा वकार का, अश् (इस प्रत्याहार में सभी स्वर, य, र, ल, व, ह, वर्ग के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण—यानी स्वर तथा बीस व्यंजन सम्मिलित हैं।) वर्ण परे होने पर, विकल्प से लोप विहित है। इस बाधा से बचने के लिए पाणिनि ने एक नियम बनाया—"नः क्ये" । इसका अर्थ है कि क्यच् तथा क्यङ् प्रत्यय लगने पर नकारान्त शब्दों को ही—लुप्तविभक्तिक हों तो—पद मानते हैं, अन्य शब्दों को नहीं। इस नियम के कारण 'गव्' शब्द, जो वकारान्त है, लुप्तविभक्तिक होने पर भी, पद नहीं है। पदान्त न होने के कारण वकार का लोप प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार कहीं-कहीं सुबन्त शब्दों को भी 'पद' संज्ञा से वंचित किया गया है। ऐसे अपवादात्मक विरल प्रसंगों को छोड़ दें, तो यही सामान्य स्थिति पायी जाती है कि सुबन्त या तिङन्त ही पद है।

पद का पूर्वार्ध प्रकृति है। इसके दो वर्ग किए जा सकते हैं—प्रातिपदिक और धातु। प्रातिपदिक के बाद 'सुप्' प्रत्यय लगते हैं और धातु के बाद तिङ् प्रत्यय लगते हैं। "ङ्याप्प्रातिपदिकात्, अनुदात्तङित आत्मनेपदम्, शेषात्कर्तरि परस्मैपदम्" । अब पहले प्रातिपदिक पर विचार कर लिया जाय।

प्रातिपदिक के दो प्रधान भेद होते हैं—व्युत्पन्न और अव्युत्पन्न किसी प्रत्यय के योग से निष्पन्न प्रातिपदकों को 'व्युत्पन्न' कहते हैं। कृत् और तद्धित दो प्रकार के प्रत्यय हैं। इन्हें 'व्युत्पादक प्रत्यय' कहा जाता है, क्योंकि इनके योग से प्रत्ययान्त या व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की निष्पत्ति होती है। एक शब्द के आधार पर दूसरा शब्द बनाना ही व्युत्पत्ति है। अतः कृदन्त या तद्धितान्त प्रातिपदिकों को व्युत्पन्न कहते हैं। इस सम्बन्ध में पाणिनि का यह सूत्र द्रष्टव्य है—"कृत्तद्धतसमासाइच" ।

इस सूत्र में समास के लिए भी प्रातिपदिक संज्ञा का विधान किया गया है। समास तो दो पदों का एकीकृत रूप है; 'समास' का शाब्दिक अर्थ ही इस बात का प्रमाण है। दो या दो से अधिक पदों के मेलन से बनने वाले समासों को भी 'व्युत्पन्न' कह सकते हैं। यद्यपि यहाँ प्रकृति-प्रत्यय-विभागात्मक व्युत्पन्न नहीं है। संस्कृत की प्रकृति ऐसी है कि इस भाषा में कई शब्दों के योग से बननेवाले दीर्घ समास भी प्रयुक्त होते हैं। बाणभट्ट की 'कादम्बरी' में ऐसे दीर्घ समासों के बहुत सारे उदाहरण मिलते हैं। अतः समास को व्युत्पन्न प्रातिपदिक मानने में कोई अनौचित्य नहीं है।

जो प्रातिपदिक समासात्मक या प्रत्ययान्त नहीं है, उसे 'अव्युत्पन्न' कहते हैं। संस्कृत के आचार्यों में इस सम्बन्ध में गहरा मतभेद पाया जाता है। यास्क के निरुक्त से मालूम होता है कि आचार्य शाक

टायन तथा कुछ नैरुक्त सिद्धान्त के आचार्य मानते थे कि संस्कृत के सभी प्रातिपदिक व्युत्पन्न ही होते हैं, अव्युत्पन्न प्रातिपदिक कोई नहीं है। "सर्वाणि नामानि आख्यातजानीति शाकटायनो नैरुक्तसमयः च।" कात्यायन ने 'उणादयो बहुलं' सूत्र पर टीका करते हुए इसी बात का समर्थन किया है—

"नाम च धातुजमाह निरुक्ते, व्याकरणे शकटस्य च तोकम्।"

किन्तु गार्ग्य और कुछ वैयाकरण मानते थे कि कुछ प्रातिपदिक अव्युत्पन्न भी होते हैं। "न सर्वाणीति गार्ग्यः, वैयाकरणानां चैके।" यास्क ने स्वयं इस मतभेद का उपर्युक्त शब्दों में उल्लेख किया है। पाणिनि गार्ग्य के अनुयायी हैं। वे अव्युत्पन्न प्रातिपदिकों का अस्तित्व स्वीकार करते हैं। अव्युत्पन्न शब्दों के लिए ही उन्होंने प्रातिपदिक संज्ञा का पहला सूत्र बनाया—"अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।"

शाकटायन ने सभी प्रातिपदिकों की व्युत्पत्ति सिद्ध करने के प्रयास में कुछ विशिष्ट प्रकार के कृत् प्रत्ययों की कल्पना की। इस सूची का पहला प्रत्यय 'उण' हैं; "कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण्"। अतः इन प्रत्ययों को 'उणादि' प्रत्यय कहते हैं। शाकटायन के मूल उणादि सूत्र आज उपलब्ध नहीं हैं। किन्तु उन्हीं पर आधारित, किसी परवर्ती आचार्य से प्रणीत उणादिसूत्र आज भी उपलब्ध हैं। इनमें कहीं-कहीं पाठभेद भी पाया जाता है। भट्टोजि दीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदी में लगभग सात सौ उणादि सूत्रों की व्याख्या की है। इन उणादि प्रत्ययों से बननेवाले प्रातिपदिकों को शाकटायन तो व्युत्पन्न मानते थे; इनके सम्बन्ध में पाणिनि का मत क्या है? यह प्रश्न कुछ हद तक विवादास्पद है।

पाणिनि ने उणादि प्रत्ययों का सर्वथा निराकरण नहीं किया। पूर्ण रूप से नहीं तो आंशिक रूप में ही सही, उन्होंने उणादि को मान्यता प्रदान की है। उनके दो सूत्र इस मान्यता के प्रमाण हैं—"उणादयो बहुलम्" और "ताभ्यामन्यत्रोणादयः"। इन दो सूत्रों में सामान्य रूप से उणादि प्रत्ययों का विधान किया गया है। किन्तु 'उणादि' की सही या पर्याप्त व्याख्या नहीं की। इस सूची में कौन-कौन से प्रत्यय हैं? कितने प्रत्यय हैं? कौन-सा प्रत्यय किस अर्थ में किस धातु के बाद लगता है? ऐसे प्रश्नों का उत्तर अष्टाध्यायी में नहीं मिलता। "बहुलम्" कहकर, किंचित् उपेक्षा के भाव से, इन प्रत्ययों को स्वीकार किया गया है। ये दोनों सूत्र इस प्रकार उपेक्षात्मक तथा आंशिक स्वीकृति के संकेत हैं। एक सूत्र में पाणिनि ने औणादिक प्रत्ययों का भी उल्लेख किया है—"अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु"।

लेकिन कुछ दिन अन्य प्रमाणों से स्पष्ट होता है कि पाणिनि उणादि निष्पन्न प्रातिपदिकों को अव्युत्पन्न मानते थे। अतः कृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीत्वनव्ययस्य"। इस सूत्र में 'कम्' धातु तथा 'कंस' प्रातिपदिक दोनों का ग्रहण किया गया है। 'कंस' की व्युत्पत्ति 'कम्' धातु से मान लें, तो 'कम्' के बाद 'कंस' का ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं रहती। किन्तु पाणिनि की राय में 'कंस' अव्युत्पन्न प्रातिपदिक है, 'कम्' से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। अतः 'कंस' का पृथक् ग्रहण अपेक्षित है।

"शङ्ख" शब्द में उणादि प्रत्यय 'ख' पाया जाता है। पाणिनि ने इस प्रत्यय को मान्यता नहीं दी। अन्यथा इसको 'ईन' आदेश से बचाने के लिए प्रयत्न करते। उनका सूत्र है—"आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्यादीनाम्"। इसका अर्थ है कि प्रत्यय के आदि में स्थित फ, ढ, ख, छ, और घ के स्थान पर क्रमशः आयन्, एय्, ईन्, ईय् और इय् आदेश होते हैं। यदि पाणिनि 'शंख' में 'ख' को प्रत्यय मानते, तो उसके स्थान पर सभावित ईनादेश के कारण के लिए कोई विधान करते। उन्होंने 'ख' को प्रत्यय के रूप में मान्यता नहीं दी। ऐसे कई प्रमाण देकर पतंजलि ने स्थापित किया है कि पाणिनि उणादि शब्दों को अव्युत्पन्न मानते हैं। "उणादयः अव्युत्पन्नानि प्रातिपदिकानि।"

किन्तु समस्त उणादि प्रत्ययों का निराकरण भी सम्भव नहीं है। "सर्पिः" शब्द को क्या अव्युत्पन्न प्रातिपदिक कह सकते हैं? यह शब्द मूलतः सकारान्त है। अत एव प्रथमा एकवचन में पदान्त सकार का

रुत्व (रेफ) हो जाता है—"सर्पिस्→सर्पिर्→सर्पिः।" सकारान्त होने के कारण ही 'सर्पिस्+भ्याम्" "सर्पिस्+भिस्" आदि में रुत्व होकर, "सर्पिर्भ्याम् सर्पिर्भिः" आदि इष्ट रूप सिद्ध होते हैं। यदि इस प्रातिपदिक को मूलतः षकारान्त मानते हैं, तो रुत्व की व्यवस्था में बाधा पड़ेगी। पर, "सर्पिस्+ई" "सर्पिस्+आ" इत्यादि में सकार का षकार होता है और "सर्पिषी" "सर्पिषा" इत्यादि रूप बनते हैं। यहाँ षत्व इष्ट है। षत्वविधायक सूत्र है—"इण् कोः, आदेश प्रत्यययोः।" इनका अर्थ है कि जो सकार स्वयं आदेश है या किसी प्रत्यय का अवयक है, वह यदि इण् [अकार को छोड़कर बाकी सब स्वर तथा य, र, ल, व, और ह् ये पाँच व्यंजन इस प्रत्याहार में सम्मिलित हैं।] और कवर्ग के बाद आता है तो उसका षकार होगा। 'सर्पिस्' का अंतिम सकार इण् के बाद तो हैं; लेकिन न तो वह आदेश है, न वह प्रत्यय का अवयव है। तो फिर षत्व कैसे हो सकता है? षत्व की उपपत्ति के लिए मानना पड़ेगा कि यहाँ 'इस्' एक कृत् प्रत्यय है, और प्रत्ययावयव होने के कारण सकार का षत्व हो सकता है। इस प्रकार कुछ उणादिप्रत्ययान्त प्रातिपदिकों में षत्व आदि कार्यविशेष की सिद्धि के लिए व्युत्पत्ति को स्वीकार करना पड़ता है। अतः पाणिनि का यही निष्कर्ष हो सकता है कि कुछ उणादिशब्द व्युत्पन्न हैं, प्रायः वे अव्युत्पन्न हैं। संक्षेप में, पाणिनि अव्युत्पत्ति पक्ष का ही समर्थन करते हैं।

व्युत्पन्न प्रातिपदिक को यौगिक शब्द कह सकते हैं। आलंकारिकों ने अवयवशक्ति को योग कहा है। जिस शब्द के अवयव भी सार्थक हैं, उसे यौगिक मानते हैं। योगरूढ़ 'पंकज' आदि शब्दों को भी इसी वर्ग में रख सकते हैं। इसके विपरीत, जो शब्द अवयवशक्ति से रहित है यानी जिसके अवयव स्वयं निरर्थक हैं और उनका समुदित रूप ही अर्थवान् या सार्थक है, उसको 'रूढ' कहते हैं। समुदाय-शक्ति को रूढि कहते हैं। अव्युत्पन्न प्रातिपदिक रूढ शब्द हैं।

व्युत्पन्न या यौगिक शब्द कई प्रकार के हो सकते हैं। पाणिनि ने तीन प्रकार तो स्वयं बताये हैं—"कृत्तद्धितसमासाश्च"। कृदन्त, तद्धितान्त और समास—ये तीन प्रमुख प्रकार हैं। "लेखक" आदि कृदन्त हैं। "वारुणी" आदि तद्धितान्त हैं। "राजकुमार" आदि समास हैं। "कुम्भकार" समास भी है तथा कृदन्त भी। कृदन्त प्रातिपदिक के बाद तद्धित प्रत्यय लगाकर कृदन्तप्रकृतिक-तद्धितान्त शब्द बना सकते हैं। 'पूज्य' (पूजा करने योग्य) कृदन्त है; इस पर भाववाचक 'त्व' प्रत्यय लगाकर, 'पूज्यत्व' शब्द बनाया जा सकता है। 'दूरदर्शी' समासात्मक कृदन्त प्रातिपदिक है। इससे 'दूरदर्शित्व' शब्द निष्पन्न होता है। इसी प्रकार, तद्धितांत के बाद एक और तद्धित लगाकर, तद्धितांत प्रकृतिक-तद्धितान्त शब्द बना सकते हैं। न्यायादनपेतं न्याय्यम्। न्याय्यस्य भावः न्याय्यत्वम्। यहाँ 'न्याय' कृदन्त शब्द है। इसमें 'नि' उपसर्ग और 'इण्' धातु का योग हुआ है। धातु और उपसर्ग का समास (धातु से यहाँ कृदन्त शब्द को ग्रहण करते हैं) भी हुआ है। यह समासात्मक कृदंत है। "कगतिप्रा दयः", "गतिकारको पय दानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः। 'न्याय' शब्द के बन्द 'य' प्रत्यय लगा है—"धर्म पथ्यर्थ न्यायादनपेते" इस प्रकार "न्याय्य" प्रथम तद्धितान्त रूप बना। उसके बाद त्वप्रत्यय लगाकर, द्वितीय तद्धितान्त रूप "न्याय्यत्व" बनाया गया है। समास से भी तद्धित की उत्पत्ति होती है। 'प्रजापति' एक समास है। इस शब्द के बाद प्राव्दीव्यतीय अर्थों में 'ण्य' प्रत्यय लगता है—"दित्यदित्यादित्यपत्युन्तरपदाण्ण्यः।" प्रजापतेरिदं प्राजापत्यम्। इस प्रकार प्रातिपदिक के कई मिश्रित भेदों के उदाहरण दिये जा सकते हैं।

समास तो स्वयं ही अनेक प्रकार का है। अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुब्रीहि और द्वन्द्व—ये चार भेद तो बहुत प्रसिद्ध हैं। इनके अलावा भी कुछ भेद हैं; पूर्वं भूतः=भूतपूर्वः। समास का यह एक विलक्षण

उदाहरण है। किंतु इसको उपर्युक्त चार प्रकारों में किसी के अन्तर्गत नहीं ले सकते। यह एक स्वतंत्र समास है। इसका विधायक सूत्र है—"सह सुपा"। इस सूत्र में योगविभाग करके, व्याख्या की गयी है कि सुबन्त का सुबन्त से समास होता है। 'सुप् सुपेति समासः। समास के सम्बन्ध में फिर आगे विचार किया जाएगा।

प्रातिपदिक संज्ञा के प्रकरण में पहला सूत्र है—"अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्" अर्थवान् शब्द को ही प्रातिपदिक कह सकते हैं। निरर्थक वर्ण या वर्ण समुदाय को प्रातिपदिक नहीं मान सकते। कुछ एकवर्णात्मक शब्द सार्थक होते हैं। 'अ' विष्णु का वाचक है, 'उ' शिव का वाचक है, 'इ' मन्मथ का वाचक हैं। ऐसे सार्थक शब्द, एक वर्णात्मक होने पर भी, प्रातिपदिक हैं। वर्ण समुदाय भी निरर्थक हों तो इस संज्ञा के अधिकारी नहीं हैं। संस्कृत भाषा में "काटपू" का कोई अर्थ नही है। इस समुदाय में तीन व्यंजनतथा तीन स्वर हैं। ऐसे षड्वर्णात्मक शब्द को भी, निरर्थक होने के कारण, प्रातिपदिक नहीं कह सकते। इस परिभाषा में सर्वप्रमुख पद है—"अर्थवत्"। अर्थ प्रतिपादन के लिए ही शब्दों का प्रयोग किया जाता है। सार्थक शब्दों से ही भाषा बनती हैं।

"सार्थक शब्द को प्रातिपदिक कहते हैं।" ऐसी परिभाषा में अतिव्याप्ति का दोष बहुत स्पष्ट है। प्रत्यय सार्थक हैं। कर्ता के अर्थ में 'कृत्' प्रत्यय विहित हैं—'कर्तरि कृत्'। 'लेखक' में 'अक", 'कुम्भकार' में 'अ", 'साधुकारी' में 'इन्' आदि कृत् प्रत्यय कर्ता के बोधक हैं। 'कृतिः' आदि में 'ति' आदि प्रत्यय भाववाचक हैं।, दशरथस्य अपात्यं पुमान् दाशारथिः। यहाँ तद्धित 'इ' प्रत्यय अपत्यार्थक हैं। इस प्रकार प्रायः सभी प्रत्यय किसी-न-किसी अर्थ विशेष में विहित हैं। अतः प्रत्ययों को सार्थक मानना अनिवार्य है। 'प्रत्यय' एक महासंज्ञा है, अन्वर्थ है। 'प्रतीयतेऽर्थः अस्मादिति प्रत्ययः'। सार्थक होने पर भी प्रत्यय प्रातिपदिक नहीं हैं। इस अतिव्याप्ति से बचने के लिए परिभाषा में पाणिनि ने एक नकारात्मक विशेषण जोड़ा—"अप्रत्ययः"। प्रत्यय को प्रातिपदिक नहीं मानते। परिभाषा को यों बदल लेते हैं—"प्रत्ययभिन्न सार्थक शब्द ही प्रातिपदिक हैं।" यही प्रत्यय के 'पर्युदास' (वर्जन) का तात्पर्य है।

प्रत्यय का पर्युदास करने पर भी परिभाषा निर्दोष नहीं हो सकती। 'रामेण' एक पद है—सुबन्त है। 'अकार्षित्" एक पद है, तिङन्त है। ये पद सार्थक हैं। इन्हें प्रातिपादिक क्यों नहीं मानते? टीकाकारो ने पाणिनि के 'अप्रत्ययः" के दो अर्थ लगाए—"प्रत्ययं प्रत्ययान्तं च वर्जयित्वा"। यानी, इस एक ही शब्द से प्रत्यय तथा प्रत्यगांत दोनों का पर्युदास किया गया है। अतः, रामेण, अकार्षीत् आदि प्रत्ययांत शब्द सार्थक होने पर भी प्रातिपदिक नहीं हैं। प्रत्ययांत के पर्युदास के कारण, तद्धितान्त और कृदन्त शब्दों का भी निषेध प्राप्त है; तो दूसरे सूत्र ("कृत्तद्धितसमासाश्च") से विशेष विधान के द्वारा कृदन्त और तद्धितान्त शब्दों को प्रातिपदिक संज्ञा प्रदान की गयी है। ऐसे निषेधोत्तर विधान को प्रति-प्रसव" कहते हैं।

धातु तो सार्थक शब्द हैं ही, क्रियावाची ही तो धातु बनता है। उनकी सार्थकता में किसीका वैमत्य नहीं है। लेकिन वे प्रातिपदिक नहीं हैं। पाणिनि ने धातु में अतिव्याप्ति के वारण के लिए फिर पर्युदास किया—"अधातुः"। "धातुं प्रत्ययं प्रत्ययान्तं च वर्जयित्वा अन्यत् अर्थवत् शब्दस्वरूपं प्रातिपदिकसंज्ञं स्यात्।" इसका निष्कर्ष संक्षेप में है—"सार्थक शब्द प्रातिपदिक हैं। किंतु, धातु, प्रत्यय तथा प्रत्ययान्त शब्दों को सार्थक होने पर भी प्रातिपदिक नहीं मानते।" इस विवेचन से मालूम होता है के प्रातिपदिक की सही परिभाषा बताना कितना कठिन है।

धातु, प्रत्यय तथा प्रत्ययांत का पर्युदास करने पर भी यह परिभाषा निर्दोष नहीं हो पायी। वाक्य में इसकी अतिव्याप्ति हो सकती है। 'वाक्य' पदों का समुदाय है। अमरकोष में कहा गया है— "सुप्तिङन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता"। कात्यायन ने भी वाक्य की परिभाषा दी है—एकतिङ् वाक्यम्। आख्यातं सविशेषणं वाक्यम्'। पद सार्थक हैं। अतः पदसमुदायात्मक वाक्य भी सार्थक हैं। नैयायिक और मीमांसक भी वाक्य की सार्थकता को स्वीकार करते हैं। पदार्थ संसर्गो हि वाक्यार्थः। वाक्य प्रत्ययांत नहीं हैं। वाक्य के घटक पद प्रत्ययांत हैं, किंतु इस आधार पर वाक्य को प्रत्ययांत नहीं कह सकते। "प्रत्ययग्रहणे यस्मात् स विहितस्तदादे स्तदन्तस्य ग्रहणम्"। जिस प्रकृति से प्रत्यय विहित है। उस प्रकृत उस प्रकृति को या उससे आरम्भ होने वाली (तदादि) प्रकृति को उस प्रत्यय की प्रकृति मान सकते हैं, अतः केवल उसी शब्द को प्रत्ययांत कह सकते हैं। "रामः राज्यंचकार"। इस वाक्य में तीन पद हैं। 'रामः' और 'राज्यम्" सुबंत पद हैं। "चकार" तिङन्त पद है। ये पद प्रत्ययान्त हैं। लेकिन इस वाक्य को सुबन्त या तिङन्त नहीं कह सकते। अतः प्रत्ययान्त का पर्युदास वाक्य के सम्बन्ध में लागू नहीं होता। वाक्य तो अर्थवान् भी है। अतः वाक्य में प्रातिपदिक की परिभाषा की अतिव्याप्ति का वारण कैसे किया जाय?

इस शंका के समाधान के लिए पाणिनि के व्याख्याकारों ने बड़ा प्रयास किया है। उनके तर्कों का सार आगे संक्षेप में दिया जाता है। पाणिनि ने समास के लिए विशेष रूप से प्रातिपदिक संज्ञा का विधान किया है—"कृत्तद्धितसमासाश्च"। इस विशेष विधान की क्या आवश्यकता है? कृत् और तद्धित के लिए तो विशेष विधान जरूरी था, क्योंकि प्रत्ययान्त के पर्युदास के कारण यहाँ संज्ञा का प्रतिप्रसव करना था। किन्तु समास में तो पर्युदास की प्राप्ति नहीं है, क्योंकि समास प्रत्ययांत नहीं है। वाक्य के समान समास भी पद समुदाय है। वाक्य में क्रिया कारक सम्बन्ध रहता है, समास में वह सर्वत्र नहीं होता। फिर भी समास को Phrase या पदबंध मानने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। समास के घटक पद प्रत्ययान्त हैं। किन्तु समास प्रत्ययांत नहीं है। अतः 'अर्थवत्' सूत्र से ही समास की प्रातिपदिक संज्ञा सिद्ध हो जाती है। उसके लिए विशेष विधान क्यों किया गया? "सिद्धे सति आरभ्यमाणो विधिर्नियमाय भवति"। समास ग्रहण नियमार्थ है। समासग्रहण से निष्पन्न होने वाला नियम यही है कि जिस समुदाय में पहला अंश पद है और दूसरा अंश प्रत्यय नहीं है, ऐसे समुदाय को प्रातिपदिक नहीं कहते; केवल समास ही ऐसा समुदाय होकर भी प्रातिपदिक कहलाता है। "यत्र संघाते पूर्वो भागः पद, मुत्तरस्तु प्रत्ययो न, तस्य चेद् भवति तर्हि समासस्वैव"। सरल शब्दों में कहें तो समासातिरिक्त पदसमुदाय को प्रातिपदिक नहीं कह सकते। यही इस नियम का चरम तात्पर्य है। समासातिरिक्त पद समुदाय में पदबंध (Phrase), उपवाक्य (Clause) और वाक्य (Sentence) आ जाते हैं।

पाणिनि को ऐसे नियम की कल्पना अभीष्ट थी या नहीं, व्याख्याकारों की ऐसी व्याख्या उनकी मौलिक कल्पना है या पाणिनि के शब्दों में ही ऐसी व्याख्या के संकेत भी मिलते हैं, नियम की शब्दावली ठीक कैसे निश्चित की गयी—ऐसे प्रश्नों पर विचार करना यहाँ अभीष्ट नहीं है। पाणिनि के इन दोनों सूत्रों पर विचार करने से यही निष्कर्ष निकलता है कि वाक्य, पद समुदाय तथा पद को प्रातिपदिक नहीं कह सकते। प्रातिपदिक की परिभाषा में पर्युदासों की एक लम्बी परम्परा चल पड़ती है—धातु, प्रत्यय, प्रत्ययान्त, पदबन्ध, उपवाक्य तथा वाक्य को छोड़कर बाकी सब सार्थक शब्दों को प्रातिपदिक कहते हैं।

आधुनिक भाषाविज्ञानी "Morph" शब्द का प्रयोग करते हैं। हिंदी में इसे 'रूप' कहते हैं। मार्फ का अध्ययन करने वाला शास्त्र 'मार्फोलजी' (Morphology रूपविज्ञान) है। मार्फ की परिभाषा है—"Minimum meaningful form or unit", जिसका हिंदी अनुवाद होगा—"लघुतम सार्थक

शब्द या इकाई', पाणिनि के 'प्रातिपदिक' में तथा भाषाविज्ञान के 'मार्फ' में बड़ा अन्तर है। 'लघुतम' विशेषण के कारण, प्रत्ययान्त शब्द, समास, पदबंध, उपवाक्य और वाक्य—इन सबकी व्यावृत्ति सिद्ध हो जाती है। ये शब्द सार्थक हैं, किंतु लघुतम रूप नहीं हैं। कृदन्त और तद्धितान्त की भी व्यावृत्ति ही अभीष्ट है। पाणिनि की दृष्टि में 'लेखक' कृदन्त प्रातिपदिक है और 'दाशरथि' तद्धितान्त प्रातिपदिक है। आधुनिक भाषाविज्ञान के अनुसार इन दोनों शब्दों में एक रूप नहीं है। लेखक में दो रूप हैं। पहला रूप धातु है, 'लेख्'। दूसरा रूप प्रत्यय है "अक"। "दाशरथि" में भी अंत का 'इ' एक अलग मार्फ या रूप है। 'दशरथ' स्वयं दो रूपों का एक समास है। इस प्रकार भाषाविज्ञान तथा पाणिनीय व्याकरण की दृष्टि में मौलिक अंतर पाया जाता है।

प्रत्यय और धातु भी सार्थक हैं। अतः भाषाविज्ञान उन्हें मार्फ़ या रूप ही मानता है। उनका पर्युदास करने की कोई आवश्यकता नहीं है। 'रूप' की संकल्पना (Concept) प्रतिपादक की संकल्पना से सर्वथा भिन्न है। अतएव रूप की परिभाषा जटिल न होकर सरल प्रतीत होती है। शब्द के मूल अंश को 'रूप' कहते हैं। दो या अधिक रूपों के योग से बनने वाला कोई मिश्रित या संयुक्त शब्द हो, तो उसको 'स्टेम' (Stem) अथवा 'वर्ड' (word) कह सकते हैं। मूल अंश को 'मार्फ़' मानने के कारण उसकी परिभाषा में सरलता से 'लघुतम' विशेषण को जोड़कर स्पष्टीकरण कर देना सम्भव हो सका। पाणिनि का प्रातिपदिक इससे नितांत भिन्न है। पाणिनि के अनुसार, रूप की परिभाषा देने की आवश्यकता नहीं है। प्रातिपदिक और धातु की परिभाषा देना ही पर्याप्त है। मूल शब्द भी प्रातिपदिक होते हैं, तथा अनेक शब्दात्मक समास भी प्रातिपदिक होते हैं। यही कठिनाई है, जिसके कारण पाणिनि को अपनी परिभाषा में पर्युदास और प्रतिप्रसव की पद्धति को ग्रहण करना पड़ा। इस मूल अन्तर को न समझें तो इस परिभाषा की जटिलता का रहस्य भी समझ नहीं सकेंगे।

प्रत्येक पद के दो खण्ड होते हैं—प्रकृति और प्रत्यय। प्रकृति को (Stem) का पर्याय मान सकते हैं। इसके दो प्रकार होते हैं—मूल और तभ्दिन्न। अंग्रेजी में इसे Root और non root कह सकते हैं। मूल के भी दो प्रकार होते हैं—नाम और धातु। नाम nominal root को तथा धातु verbal root को कहते हैं। 'तभ्दिन्न' (non-root) प्रकृति के भी दो भेद होते हैं—नामात्मक और धातुज। नामात्मक (nominal stem) को और धातुज (verbal stem) को कहते हैं। नामात्मक प्रकृति के तीन प्रकार होते हैं—कृदन्त, तद्धितान्त और सामासिक, इनकी तालिका नीचे दी जा रही है—
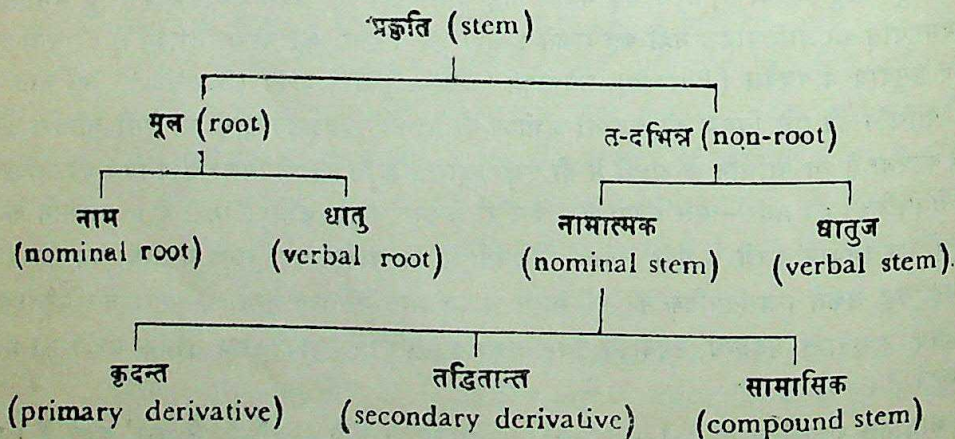
इस प्रकार हम देखते हैं कि पाणिनि का प्रातिपदिक Root या Morph का पर्याय नहीं है। इसमें नाम (nominal root) और नामात्मक (nominal stem) दोनों को संकलित किया गया है।

पाणिनि की इस परिभाषा में फिर भी अव्याप्ति का एक दोष रह जाता है। रमा, गौरी आदि शब्द स्त्रीप्रत्ययान्त हैं। संस्कृत में स्त्रीलिंग के बोधक कुछ प्रत्यय हैं। सभी स्त्रीलिंग शब्दों में स्त्रीप्रत्यय नहीं लगते। 'दृषत्' शब्द स्त्रीलिंग है; उसमें स्त्रीत्व को द्योतक कोई प्रत्यय नहीं है। कुछ शब्दों में ऐसे प्रत्यय लगते हैं। 'रमा' में टाप् स्त्रीप्रत्यय है। 'गौरी' में ङीष् है। 'वामोरू' में ऊङ प्रत्यय है। "अजाद्यतष्टाप् यङश्चाप्, डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्, ऋन्नेभ्यो ङीप् बहुव्रीहेरूधसो ङीष्, शार्ङ्गरवाद्यभो ङीन्, ऊङुतः" इत्यादि सूत्रों से स्त्रीप्रत्ययों का विधान किया गया है। ये प्रत्यय चतुर्थ अध्याय के प्रथम पाद में तद्धिताधिकार से पहले विहित हैं। अतः ये तद्धित नहीं हैं। स्त्रीप्रत्ययों में एक ही ऐसा है, जो तद्धिताधिकार में होने के कारण, स्त्री प्रत्यय होने के साथ-साथ तद्धित भी है। 'यूनस्तिः'। अतः तिप्रत्ययान्त 'युवति' शब्द तद्धितान्त प्रातिपदिक है। बाकी स्त्रीप्रत्यय तद्धित नहीं है। इन्हें तद्धित संज्ञा न देने का भी कारण है। अब, शंका यह है कि रमा, गौरी आदि स्त्रीप्रत्ययांत शब्दों को प्रातिपदिक नहीं हो सकते। तब इन शब्दों के बाद 'सुप्' प्रत्ययों की उत्पत्ति कैसे होगी? सुप् तो लगते ही हैं। अतः पाणिनि ने 'ङ्याप् प्रातिपदिकात्" कहकर 'ङी' (इसमें तीन प्रत्यय संकलित हैं—ङीप्, ङीष् और ङीन्) तथा 'आप्' (इसमें भी तीन प्रत्यय संकलित हैं—टाप्, डाप् और चाप्) से अन्त होने वाले शब्दों के लिए भी 'सुप्' का विधान किया है। यदि ये स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द भी प्रातिपदिक होते, तो प्रातिपदिक से अलग इनका ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं होती। इस पृथक् निर्देश से भी पाणिनि ने स्पष्ट कर दिया है कि स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों को वे प्रातिपदिक नहीं मानते। इसी -अव्याप्ति' की चर्चा ऊपर की गयी है। स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों को प्रातिपदिक मानने में क्या हानि है? कृदन्त और ताद्धितान्त शब्दों के समान स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द भी प्रातिपदिक हो सकते हैं। उन शब्दों के बाद सुप् और तद्धित भी लगते हैं। तो उन्हें प्रातिपदिक संज्ञा से वंचित करने का औचित्य क्या है?

पाणिनीय व्याकरण में एक परिभाषा (नियम) यह स्वीकार की गयी है कि "प्रातिपदिकग्रहणे लिङ्ग विशिष्टस्यापि ग्रहणम्।" इसका तात्पर्य है कि जहा प्रातिपदिक का ग्रहण (उसके सम्बन्ध में कोई कार्य-विधान किया गया है) होता है, वहाँ लिंगबोधक प्रत्ययों से विशिष्ट शब्दों का भी ग्रहण मानना चाहिए। अर्थात्, प्रातिपदिक के लिए जो विहित है, वह स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों के लिए भी लागू होता है। लिंगबोधक प्रत्यय तो इस सन्दर्भ में स्त्रीप्रत्यय ही हैं। पुलिंग या नपुंसकलिंग के द्योतन के लिए कोई प्रत्यय विहित नहीं है। अतः लिंग विशिष्ट का अर्थ होता है स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द। इस परिभाषा के अनुसार, जब प्रातिपदिक के बाद 'सुप्' का विधान होता है, तो स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों के बाद भी 'सुप्' की उत्पत्ति सिद्ध होती है। तो फिर ङी और आप् का पृथग् ग्रहण किस लिए? व्याख्याकारों ने कहा है कि तद्धित प्रत्यय स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों के बाद लगते हैं। स्त्रीलिंग के प्रातिपदिकों में पहले स्त्रीप्रत्यय लगेंगे और स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों के बाद तद्धित प्रत्यय लगेंगे। "ङ्याब्ग्रहणं ङ्याबन्तादेव ताद्धितोत्पत्तिर्यथा स्यात्, ङ्भ्यां प्राङ्मा भूदित्येवमर्थम्" इस व्याख्या से भी स्पष्ट है कि स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों के बाद 'सुप्' की उत्पत्ति में कोई बाधा नहीं है। 'ऊङ्' एक स्त्रीप्रत्यय है। "ऊरूत्तरपदादौपम्ये।" नागनासोरूः। 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' में ऊङ् का ग्रहण नहीं है। फिर भी लिंगविशिष्ट परिभाषा से ऊङन्त शब्द के बाद सुप् लगते हैं। श्वश्रूः। "श्वशुरः श्वश्रू"। इस सूत्र में श्व श्रू शब्द तृतीयान्त रूप में निर्दिष्ट है। इस निर्देश से भी सिद्ध होता है कि ऊङन्त शब्द से सुप् लगते हैं। 'युवतिः'। यहाँ तो ति प्रत्यय है, जो तद्धित है। तद्धितान्त होने से यह प्रातिपदिक ही है। इस प्रकार टीकाकारों ने स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों में सर्वत्र सुप् की व्यवस्था करके सिद्ध कर दिया कि स्त्री-प्रत्ययान्त शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा न हो तो भी कोई हानि नहीं है। किन्तु यह सब व्याख्या कौशल किस लिए? स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों को प्रातिपदिक मान लें तो कौन-सी हानि हो रही है? "कृत्तद्धित स्त्रीप्रत्ययसमासाश्च" कह देते, तो क्या समस्या का तर्कसंगत समाधान नहीं हो जाता? प्रातिपदिक के क्षेत्र से स्त्रीप्रत्ययान्त के बहिष्कार का क्या लाभ है?

नामात्मक (nominal stem) रूपों में स्त्री प्रत्ययान्त शब्दों को भी एक अलग भेद के रूप में मानना ही उचित है। इससे व्यवस्था की एकरूपता की रक्षा होती है। अब हम प्रकृति के दो वर्ग मान सकते हैं—धातु और प्रातिपदिक। क्रियावाची धातु है। उससे भिन्न समस्त शब्द प्रातिपदिक हैं। इसे हम यों दिखा सकते हैं।
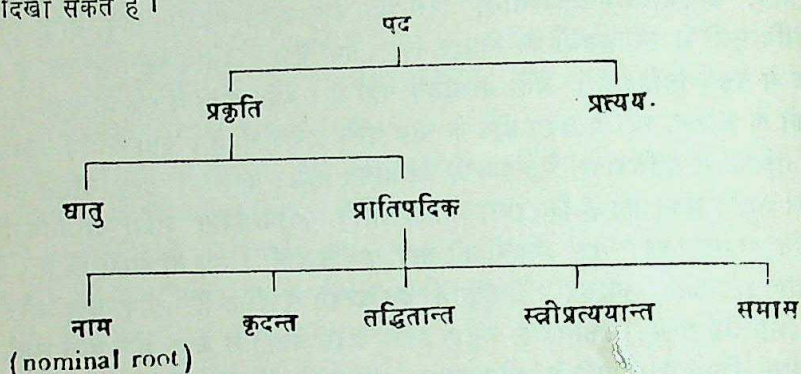
स्त्री प्रत्ययान्त शब्दों को प्रातिपदिक मान लें, तो इस प्रकार व्यवस्था में सुगमता होती है। यदि स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों को प्रातिपदिक नहीं मानते हैं, तो फिर प्रकृति के तीन वर्ग करके, इन्हें तीसरे वर्ग में रखना पड़ेगा और प्रातिपदिक संज्ञा के अभाव में भी सुप् की उत्पत्ति के लिए परिभाषा या ज्ञापक का सहारा लेकर व्यवस्था देनी पड़ेगी। स्पष्ट है कि इससे एकरूपता का भंग हो जाता है। अतएव मेरा सुझाव है कि स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों को प्रातिपदिक मानना उचित है।

अब हम समास के सम्बन्ध में विचार करें। समास कम-से-कम दो पदों का सम्मिलित रूप है। लेकिन समास में अधिक-से-अधिक कितने पद हो सकते हैं? इसका कोई नियम नहीं है। सैकड़ों पदों का एक समास हो सकता है। किन्तु यहाँ समास की दीर्घता विचारणीय बात नहीं हैं। समास के घटक 'पद' कैसे होते हैं? इसी पर संक्षेप में विचार किया जाता है।

समास में कहीं कहीं दो 'पद' नहीं होते। उत्तरपद केवल प्रातिपदिक हो सकता है। इस अर्थ की एक परिभाषा है—"गतिकार कोपपदानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः"। सुप् की उत्पत्ति से पूर्व ही कृदन्त प्रातिपदिकों के साथ यहाँ समास विहित है। कुम्भं करोतीति कुम्भकारः। इस शब्द में द्वितीय भाग "कार" एक कृदन्त प्रातिपदिक है। "कर्मण्यण्"। कर्मवाचक उपपद के साथ 'कृत्र्' धातु के बाद कर्ता के अर्थ में अण् प्रत्यय लगा, तो उसका रूप 'कार' हुआ। 'कुम्भ' एक सुबन्त पद है। उसका कृदन्त प्रातिपदिक से समास हुआ है। इस समास में पहला भाग सुबन्त है तो दूसरा भाग केवल प्रातिपदिक है, सुबन्त पद नहीं। किंतु समास स्वयं प्राति-पदिक है; अतः उसके बाद सुप् प्रत्यय लगते हैं,

सिद्धान्त कौमुदी में समास के छः भेदों का वर्णन किया गया है। पहला भेद है, जिसमें दोनों पद सुबन्त हैं। उदा—राजकुमारी। दूसरा भेद है, जिसमें पूर्वपद सुबन्त है और उत्तरपद तिङन्त है। उदा-अनुव्यचलत्। तीसरे भेद में पूर्वपद सुबंत है और दूसरा भाग 'नाम' या कृदन्त प्रातिपदिक है। उदा-कुम्भकारः। चतुर्भेद में पूर्वपद सुबन्त है और दूसरा शब्द धातु है। उदा-कटप्रूः, अजस्रम्। इन चारों भेदों में पूर्वपद सुबन्त है। आगे के दो भेदों में पूर्वपद तिङन्त रहता है। पंचम भेद में पूर्वपद तिङन्त है और दूसरा शब्द सुबन्त है। उदा—कृन्त-विचक्षणा। छठे भेद में दोनों पद तिङन्त हैं। उदा-पिबतखादता। सिद्धान्तकौमुदी में सर्वसमासशेष प्रकरण में एक श्लोक का उद्धरण देकर दीक्षितजी ने छः भेदों की व्याख्या निम्नांकित शब्दों में की है—

सुपां सुपा तिङा नाम्ना धातुनाथ्य तिङा तिङा ।
सुबन्तेनेति विज्ञेयः समासः षड्विधो बुधैः ॥

सुपां सुपा—राजपुरुषः । तिङा—पर्यं भूषत् । नाम्ना-कुम्भकारः । धातुना-कटप्रूः, अजस्रम् । तिङा तिङा-पिबत खादता, खादत मोदता । तिङा सुपा-कृन्त विचक्षणेति यस्यां क्रियायां सा कृन्तविचक्षणा । एहीडादयोऽन्यपदार्थे इति मयूर-व्यंसकादौ पाठात्समासः ।" [कौमुदी, पृ—२०६]

इन मासों के उदाहरणों को देखने से ज्ञात होता है कि सुबन्त पूर्वपद तथा तिङन्त उत्तरपद वाले एक भेद को छोड़कर बाकी सब समास 'प्रातिपदिक' हैं, और उनके बाद स्वादि प्रत्यय भी लगते हैं। राजपुरुषः, कुम्भकारः, कटप्रूः, पिबतखादता, कृन्तविचक्षणा—ये पाँचों उदाहरण सुबन्त रूप हैं। एक ही उदाहरण ऐसा मिलता है जो प्रगतिपदिक नहीं है। वह है—'पर्यभूषत्' । यदि यह प्रातिपदिक होता, तो इसके बाद स्वादि प्रत्यय क्यों नहीं लगते ? यदि मान लेते हैं कि यहाँ तो औत्सर्गिक प्रथमा का एक वचन प्रत्यय यहाँ लगा है और उसका लोप हो गया है, तो क्या 'पर्यभूषत्' को सुबन्त मान लिया जाय ? यह 'सुपूतिङ' समास एक समस्या को पैदा करता है ।

ऐसे समास का विधान कहाँ किया गया है ? भाष्यकार ने "सहसुपा" सूत्र के दो खण्ड करके सूत्र को ऐसे विभाजन को योगविभाग कहते हैं—व्याख्या की है। पहला खण्ड है—"सह" । इसका अर्थ है कि सुबन्त का समर्थ शब्द से समास होता है । सामर्थ्य यहाँ एकार्थीभाव है। एकार्थीभाव की स्थिति में ही समास हो सकता है। लेकिन, समर्थ के साथ समास का विधान करने के कारण, उत्तर खण्ड में सुबन्त पद की अनिवार्यता नहीं रह जाती । उत्तरखण्ड चाहे सुबन्त हो; चाहे तिङन्त हो । इस प्रकार, सुबन्त पूर्वपद तथा तिङन्त उत्तरपद के समास की सिद्धि होती है । इसका उदाहरण भाष्यकार ने दिया—"अनुव्यचलत्" । इस समास को स्वीकार न करें, तो क्या हानि होगी ? इसे समास मानने की क्या आवश्यकता है ? "रामः करोति" आदि में समास नहीं होता । समास होता, तो पूर्वपद में विभक्ति का लोप हो जाता । इस अतिप्रसंग के वारण के लिए कहा जाता है कि यह समास सार्वत्रिक नहीं है, क्वाचित्क है । दूसरे शब्दों में, सुबन्त और तिङन्त का समास औत्सर्गिक नहीं है। हर कहीं ऐसा समास नहीं होता । कहीं-कहीं होता है ।" योग विभागस्य इष्टसिद्ध्यर्थत्वात् कतिपयतिङन्तोन्तर पदोय्यं समासः । स च छन्दस्येव" । इन शब्दों में दीक्षितजी ने कौमुदी में स्पष्ट किया है कि ऐसा समास वेद में ही प्रयुक्त हुआ है; लोकभाषा में ऐसे समास का प्रयोग नहीं होता । तो फ़िर यह शंका और भी प्रबल होती है कि इसे समास मानने से क्या लाभ है ?

इस शंका के समाधान में भाष्य के टीकाकार कैयट ने कहा है कि "वि+अचलत्" में यदि समास नहीं होता, तो यहाँ प्रकृतिभाव हो सकता है । प्रकृतिभाव नहीं होना चाहिए; यणादेश ही होना चाहिए । इसीलिए समास आवश्यक है । प्रकृतिभाव का विधायक सूत्र है—"इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च" । पदान्त इक् के बाद असवर्ण अच् पर हो तो इक् का ह्रस्व होता है, और उस ह्रस्व का प्रकृतिभाव होता है। किन्तु यह वैकल्पिक है—उदा॰ चक्री+अत्र=चक्रि अत्र । ह्रस्व न हो तो यणादेश होता है—"चक्रात्र" । किंतु समास में प्रकृतिभाव का निषेध किया गया है—"न समासे" उदा॰—वाप्याम् अश्वः=वापी+अश्वः=वाप्यश्वः । समासा में 'वापि अश्वः" नहीं हो सकता । अनुव्यचलत्, पर्यभूषत् आदि में प्रकृतिभाव के वारण के लिए समास को स्वीकार किया गया है । कैयट के शब्द हैं—"तत्र समास संज्ञायां सत्यां शाकलप्रतिषेधाद्यणादेशो भवति ।"

वैकल्पिक प्रकृति भाव के वारण के लिए वेद में कहीं-कहीं ऐसे समास को स्वीकार करना पड़ा, तो लोक भाषा में क्या ऐसी आवश्यकता नहीं पड़ेगी ? 'व्याहरति, प्रत्यानयति" आदि हजारों प्रयोगों

में पाक्षिक प्रकृतिभाव का वारण कैसे होगा ? लोक में भी समास को मान लें, तो उसको 'क्वाचित्क' कहने का औचित्य है ? दीक्षितजी ने तो स्पष्ट किया है कि यह समास वेद में ही पाया जाता है। 'भाष्यप्रदीपोद्द्योत' के नाम से कैयट की टीका लिखनेवाले नागेशभट्ट ने भी कहा—"योगविभागस्य इष्टसिद्ध्यर्थतया छन्दसि तद्विषये एव एतत्समासप्रवृत्तिरिति भावः।" लोकभाषा में 'सुबन्त+तिङन्त' का समास नहीं होता—इस बात में ऐकमत्य पाया जाता है। तो व्याहरत्" इत्यादि में प्रकृतिभाव क्यों नहीं होता ? समास को स्वीकार करें, तो 'व्याहरन्" (लङ् प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप) में पदान्त नकार का लोप प्राप्त है। नलोपः "प्रातिपदिकान्तस्य"। 'व्याहरन्" पद भी है, प्रातिपदिक भी है। जैसे "राजान्+स्" में सु का लोप हो जाने के बाद, पदान्त नकार का भी लोप होता है, वैसे 'व्याहरन्" में भी नलोप प्राप्त है। समास न मानें तो प्रकृतिभाव प्राप्त है।

ऐसी दोषप्राप्ति को संस्कृत के शास्त्रकार "उभयतस्पाशा रज्जुः" कहते हैं। समास को स्वीकार करें, तो नलोप की प्राप्ति दुर्वार है; समास को स्वीकार न करें तो पाक्षिक या वैकल्पिक प्रकृतिभाव की प्राप्ति दुर्वार है। इस संकट से बचने का एक ही मार्ग है; ऐसे स्थलों में (धातूपसर्ग संयोग में) प्रकृतिभाव का निषेध करना चाहिए। समास को सर्वथा स्वीकार नहीं करना चाहिए।

धातु का उपसर्ग का समास नित्य नहीं है। स्वयं पाणिनि ने एक सूत्र में उपसर्ग और धातु के असमास की स्थिति का भी जिक्र किया है—"उपसर्गादसमासेपि णोपदेशस्य"। वेद में तो उपसर्ग और धातु के बीच में अन्य पदों का व्यवधानभी हो सकता है, हुआ है। "प्र ण आयूँषि तारिषत्"। कहीं-कहीं धातु के बाद उपसर्ग का प्रयोग हो सकता है। पाणिनि के सूत्रों से ज्ञात होता है कि भाषा में तो उपसर्ग धातु के पूर्व ही अव्यवहित होकर ही—प्रयुक्त होते हैं। किन्तु वेद में कहीं व्यवहित और कहीं पर भी प्रयुक्त होते हैं। "उपसर्गाः क्रियायोगे, ते प्राग् धातोः, छुन्दसि परेपि, व्यवहिताश्च।" अतः वेदों में सर्वत्र समास नहीं हो सकता। जहाँ समास स्वीकृत है, वहाँ भी उसकी स्वीकृति का प्रयोजन केवल प्रकृतिभाव का वारण है। यह तो मन्द प्रयोजन है। समास की स्वीकृति में कई दोष प्राप्त होते हैं। अतः सुबन्त पूर्वपद और तिङन्तोत्तरपद का समास स्वीकार करने योग्य नहीं है।

कैयट ने समास को मानकर शंका उठायी कि तो फिर प्रातिपदिक होने के कारण 'सु' आदि प्रत्यय क्यों नहीं होते ? उनका समाधान है कि तिङ् प्रत्यय से ही एकत्व का बोध हो जाने के कारण प्रत्यय की उत्पत्ति नहीं होती। स्वादि प्रत्यय कर्ता आदि कारकों के अर्थ में आते हैं तथा एकत्व आदि संख्या का भी बोध कराते हैं। 'व्याहरत' इत्यादि में कर्ता तिङ् से उक्त है। यहाँ तिङ् का 'कर्तरि प्रयोग' है। अतः कर्ता के अर्थ में तृतीया की प्राप्ति नहीं है। एकत्व भी तिङ् से ही उक्त है। अतः 'उक्तार्थानाम प्रयोगः' के न्याय से संख्या के अर्थ में भी प्रत्यय प्राप्त नहीं है। अतः, 'व्याहरत्' इत्यादि के समास और प्रातिपदिक मानने पर भी कोई दोष नहीं। यह कैयट का पहला समाधान है।

इससे शायद उन्हें खुद संतोष नहीं हुआ। प्रथमा विभक्ति का कोई विशिष्ट अर्थ नहीं है। 'प्रातिपदिकार्थ' में प्रथमा विहित है। प्रातिपदिकार्थ लिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा"। दूसरे शब्दों में, यह विभक्ति औत्सर्गिक है, स्वतः सिद्ध है, पदत्व की सिद्धि के लिए अनिवार्य है। एकवचन भी औत्सर्गिक है। एकत्व संख्या की विवक्षा हो या न हो, एक वचन की उत्पत्ति अवश्य होगी। तो 'व्याहरत्' इत्यादि में प्रथमा एकवचन 'सु' प्रत्यय तो अनिवार्य रूप से लगेगा। तब कैयट ने दूसरा समाधान प्रस्तुत किया—"सुप्रत्यय का लोप हो जाता है। हलन्त प्रातिपदिक के बाद 'सु' का लोप विहित है। 'हल् ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्'। अतः कोई दोष नहीं है। कैयट के शब्द हैं—

"तत्र तिङा एकत्वस्योक्तत्वात् प्रातिपदिकत्वेपि सुबनुत्पत्ति :। अन्ये त्वाहुः—वचनग्रहणा दुक्तेष्व-
र्थैकत्वादिषु प्रथमा स्यात्। केवलायाः च प्रकृतेः प्रयोगाभावात् भवितव्यमत्र प्रथमैक-वचनेन। तस्य तु
हल्ङ्यादिलोपः क्रियते।"

[कैयट, 2 – 1 — 4, पृ — 77]

पहला समाधान तो बिल्कुल दुर्बल है। एकत्व की उक्ति हो जाने के बाद भी प्रथमा एकवचन
ग सकता है, लगता ही है। 'एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुष्ठु प्रयुक्तः स्वर्गेलोके कामधुग् भवति।" इसमें
एकः' विशेषण से एकत्व उक्त है; फिर वहाँ भी एक वचन प्रत्यय लगा है। 'शब्दः' में भी वही प्रत्यय
गा है। 'द्वाविमौ पुरुषौ लोके' इत्यादि वाक्यों में भी यही स्थिति है। अतः एकत्व के उक्त हो जाने
े बाद भी एक वचन की प्राप्ति में बाधा नहीं पड़ती।

दूसरा समाधान भी संतोषजनक नहीं है। कैयट ने मान लिया कि एकवचन उत्पन्न होता है।
र उसके लोप की व्यवस्था दे रहे हैं। 'व्याहरत्' में तो समास हलन्त है; अतः सुलोप की संभावना
ठीक है। किन्तु वहाँ समास अजन्त होगा, वहाँ सुलोप के लिए क्या विधान है? 'व्याहरति" (वर्तमान-
ाल—लट् का रूप) में प्रातिपदिक इकरान्त है। यहाँ तो 'सु' का लोप प्राप्त नहीं है। पाणिनि के एक
त्र में इस शब्द का प्रयोग भी पाया जाता है "व्याहरति मृगः"। "अभिनिष्क्रामति द्वारम्" ऐसे पाणिनीय
योगों के आधार पर यदि कल्पना करें कि तिङन्त के बाद के सुप् का लोप ज्ञापित होता है, तो फिर
ही प्रश्न सामने आता है कि ऐसी क्लिष्ट कल्पना की आखिर आवश्कता क्या है? व्याहरन् इत्यादि
 नलोप का वारण कैसे होगा? 'व्याहरन्' इत्यादि में प्रातिपदिक संज्ञा के कारण 'सु' का लोप
ानते हैं, तो व्याहरन्' में भी संज्ञा को मानना अनिवार्य हो जाता है। इसलिए ऋजु मार्ग यही दीखता
 कि समास को स्वीकार न करें, और प्रकृति भाव का निषेध करें। तिङन्तोत्तर पद समास'खादतमोदता'
िवतखादता" इत्यादि शब्दों में पाया जाता है। वहाँ उसका प्रातिपदिकत्व निर्विवाद है। उसके बाद
क्रिया विशेष्य है, इसलिए) स्त्रीप्रत्यय भी लगा है किन्तु सुबन्त + तिङन्त का समास ऐसा प्रातिपदिक
हीं है।

धातु और उपसर्ग का समास भी विचारणीय विषय है। "कुगतिप्रादय." इस समास का विधा-
क सूत्र है। इसमें 'गति' के बाद 'प्रादि' का भी पृथग् ग्रहण किया गया है। वैसे प्रादि शब्द क्रियायोग
 'उपसर्ग' कहलाते हैं तथा 'गति' भी कहलाते हैं 'उपसर्गाः क्रियायोगे" "गतिश्च"। किन्तु 'गति' संज्ञा
ादि तक ही सीमित नहीं है। वह अधिक व्यापक संज्ञा है। 'ऊर्यादिच्विडाचश्च" इत्यादि सूत्रों से गति
ंज्ञा का निरूपण किया गया है। अतः समासविधायक सूत्र में गति के अलावा प्रादि का ग्रहण करके
ाणिनि बताते हैं कि गतिसंज्ञा के अभाव में भी प्रादि का समास होना अभीष्ट है। इसी बात को आधार
ानकर, वार्तिककार ने "प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया, अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया" इत्यादि वार्तिकों में
सका विस्तार किया है। भाष्यकार ने इस बात को स्पष्ट किया है। अब 'अधिगम्य" "ऊरीकृत्य" आदि
 नित्यसमास मानते हैं। यदि यहाँ समास को वैकल्पिक मानेंगे, तो 'अधिगत्वा" "ऊरीकृत्वा" जैसे
शुद्ध रूप प्राप्त हो सकते हैं। क्योंकि, भूतकालिक कृत् 'त्वा' के स्थान पर समास में ही 'ल्यप्' का
ादेश विहित है—"समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्"। समास के अभाव में 'त्वा' ही रहता है—'गत्वा, कृत्वा'।
तः, 'कुगतिप्रादयः' सूत्र में 'सुपा' शब्द की अनुवृत्ति न मानकार, व्याख्या करते हैं कि गति और प्रादि
ा 'समर्थ' के साथ समास होता है। 'समर्थ' के साथ समास का विधान करने के कारण तिङन्त के साथ
ी समास प्राप्त होता है। तिङन्त भी उपसर्ग के साथ मिलकर 'समर्थ' होता है। एकार्थीभाव ही तो
ामर्थ्य है। पाणिनीय वैयाकरण मानते हैं कि उपसर्ग केवल द्योतक हैं, वाचक नहीं है। अतः एकार्थी
ाव में किसी प्रकार की शंका नहीं हो सकती। समास होगा तो तिङन्त पद भी 'प्रातिपदिक' बन
ाएगा। अतः यहाँ तिङ्त समास का निषेध करना चाहिए।

धातु और उपसर्ग का समास न होने पर भी उपसर्ग का धातु से अव्यवहित पूर्व प्रयोग की सिद्धि में कोई बाधा नहीं पड़ती । 'ते प्राग् धातोः ।'' इस नियम से पूर्व प्रयोग की व्यवस्था सिद्ध होती है। वास्तव में यह नियम ही समास के अभाव का ज्ञापक है । यदि समास ही होता, तो पूर्वनिपात के नियम से ही इष्ट रूप की सिद्धि होने के कारण, इस नियम की आवश्यकता नहीं पड़ती । ''उपसर्गादसमासेपि णोपदेशस्य''—इस सूत्र में पाणिनि ने असमास की स्थिति की भी संभावना की है ''संहितैकपदे नित्या, धातूपसर्गयोः । नित्या समास वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते'' इस श्लोक में समास से पृथक् ''धातूपसर्गयोः'' कहा गया है । अतः यह विचारणीय है कि क्या धातु और उपसर्ग का समास सर्वत्र अनिवार्य है ? यदि उपसर्ग का तिङन्त से समास न मानें, तो क्या हानि हो सकती है ?

''अर्थवदधातुर प्रत्ययः प्रातिपदिकम्''—इस सूत्र की व्याख्या करते हुए वार्तिककार ने एक संशोधन प्रस्तुत किया 'निपातस्यानर्थकस्य प्रातिपदिकत्वं वक्तव्यम्' । कुछ निपात निरर्थक होते हैं । किन्तु उन्हें भी प्रातिपदिक मानना चाहिए । उदाहरण हैं—खञ्जति, निखञ्जति, लम्बते, प्रलम्बते । यहाँ 'नि' तथा 'प्र' निरर्थक निपात हैं । पाणिनि ने स्वीकार किया है कि कहीं-कहीं कुछ निपात निरर्थक होते हैं—''अधिपरी अनर्थकौ'' । उपसर्ग भी किसी निश्चित अर्थ के वाचक नहीं होते । 'अनुभवति'' ''पराजयते'' ''आगच्छति'' इत्यादि में यह निर्धारित करना कठिन है कि धातु का अर्थ क्या है तथा उपसर्ग का अर्थ क्या है ? उपसर्ग के बिना धातु उस विशिष्ट अर्थ का बोधक नहीं हो सकता, जिसका बोध उपसर्ग के साथ प्रयुक्त होकर वह करा रहा है । अतः वैयाकरणों ने उपसर्गों को 'द्योतक' कहा है । ऐसी स्थिति में कुछ निपातों का सही अर्थ निर्धारित न कर सकने पर भी, सामान्य रूप से यह मान सकते हैं कि वे किसी अर्थविशेष की प्रतीति में सहायक हैं । इसीसे उन्हें सार्थक माना जा सकता है । निपात सर्वथा निरर्थक तो नहीं होते । वास्तवमें कोई अर्थ ही नहीं है, तो उनका प्रयोग किसलिए होता है ? 'अर्थं शब्दाः प्रयुज्यन्ते,' शब्द का प्रयोग अर्थ प्रतीति के लिए ही होता है । यह दूसरी बात है कि हम उस निपात का सही अर्थ—विशिष्ट अर्थ में निपात से प्रतीत होने वाले अंश को सही अर्थ कहा जाता है—निश्चित करने में असमर्थ हैं । आधुनिक भाषाविज्ञान ने Contend, intend, extend आदि शब्दों में Con, in, ex आदि को सार्थक रूप माना है, यद्यपि इनके सही अर्थ का निर्णय करके बता नहीं सकते । इसी प्रकार निरर्थक निपात भी विशिष्ट अर्थ की विवक्षा से प्रयुक्त होने के कारण सार्थक ही हैं। यदि इन्हें सर्वथा निरर्थक मानें, तो फिर उसी प्रकार के निरर्थक वर्ण या वर्णसमुदाय को भी प्रातिपदिक क्यों नहीं मानते ? 'धन' तो प्रातिपदिक है । इसके दो अक्षर हैं—ध और न । ये दोनों निरर्थक हैं । इन्हें प्रातिपदिक नहीं मानते । इसी उद्देश्य से सूत्र में ''अर्थवत्'' विशेषण प्रयुक्त हुआ है । अतः निपातों में भी सर्वथा निरर्थकता स्वीकार्य नहीं है ।

प्रकृति-भाग में दूसरा भेद है धातु । धातु भी कई प्रकार के होते हैं । इनके दो प्रमुख भेद किए जा सकते हैं—धातु (verbal root) तथा धातुज (verbal stem or nonroot] । पाणिनि ने एक धातु पाठ की रचना की है । इसमें लगभग दो हजार धातु संगृहीत हैं । इन धातुओं को दस गणों में विभाजित किया है । प्रत्येक गण में कुछ विशेष कार्यों का विधान किया गया है । कुछ तो बिना किसी प्रत्यय के अपने मूल रूप में रहते हैं, जैसे अस्ति, याति इत्यादि । यहाँ 'ति' आख्यात प्रत्यय है । अद्, या इत्यादि धातु के मूलरूप हैं । इन मूलरूपों को (verbal roots) 'धातु' कहा जाता है । कुछ प्रत्यय 'धातु' बनाने में सहायक हैं । णिच्, यङ्, सन् आदि ऐसे प्रत्ययों का विधान तृतीयाध्याय के प्रथम पाद में हुआ है। पाणिनि ने इन प्रत्ययों से अंत होने वाले शब्दों को भी 'धातु' माना—''सनाद्यन्ता धातवः ।'' किन्तु ये मूलरूप नहीं हैं । अतः हमने इन्हें 'धातुज' (verbal nonroot) के वर्ग में स्थान दिया है।

शप्, इयन् आदि विकरण प्रत्यय हैं। विकरण प्रत्ययान्त रूप भी 'धातुज (verbal stem) ही हैं। नीचे धातु के भेदों की तालिका दी जाती है—
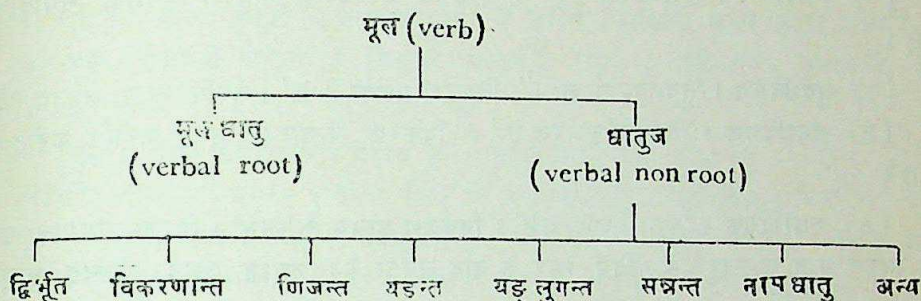
धातुज के आठ भेद यहाँ दिखाये गये हैं। वास्तव में णिजन्त, यङन्त, यङलुगन्त, सन्नन्त, नाम धातु और अन्य—इन छहों भेदों को एक उपवर्ग मानकर उसे "सनाद्यन्त" कह सकते हैं। 'लिट्' लकार में धातु का द्वित्व हो जाता है—'लिटि धातोरनभ्यासस्य'। 'लिट्' लकार आर्ध धातुक है, अतः उसमें शप् आदि विकरण प्रत्यय नहीं होते। लिट् का अपना कोई प्रत्यय नहीं है। उदा—बभूव। यहाँ "बभूव्" द्विर्भूत का उदाहरण है।

जुहोत्यादि गण की क्रियाओं के बारे में पाणिनि का विधान है कि वहाँ 'शप्' प्रत्यय का लोप हो जाता है। इस लोप को उन्होंने 'श्लु' कहा है। यह लोप की एक पारिभाषिक संज्ञा है। जहाँ ऐसा लोप होता है, वहाँ धातु का द्वित्व होता है। 'जुहोत्यादिभ्यः श्लुः", "श्लु"। उदाहरण हैं—जुहोति, बिभेति, ददाति इत्यादि। किन्तु इसे विकरणांत कह सकते हैं, क्योंकि विकरण प्रत्यय 'शप्' को लगाकर उसका लोप किया गया है। अदादि गण की क्रियाओं के बाद भी 'शप्' लगता है, और फिर उसका 'लुक्' होता है—"अदि प्रभृतिभ्यः शपः।" लुक् भी लोप का एक प्रकार है। इसमें द्वित्व नहीं होता उदाहरण हैं—अत्ति, याति इत्यादि। यहाँ सिर्फ 'धातु' बचा है। फिर भी कोई वैयाकरण चाहे तो इसे विकरणान्त रूप कह सकता है। किन्तु लिट् में जो द्वित्व होता है, उसके साथ कोई विकरण प्रत्यय नहीं है। इसीलिए द्विर्भूत को एक पृथक् भेद के रूप में मानना पड़ा। यङ् और सन् प्रत्यय में भी द्वित्व होता है—"सन्यङो"। किन्तु इन्हें सन्नन्त और यङन्त के नाम से अलग भेद माना गया है। ये भेद सनाद्यन्त वर्ग में हैं। अतः द्विर्भूत लिट् की प्रकृति है।

'लुङ्' लकार में कहीं-कहीं 'चङ्' विकरण प्रत्यय लगता है। इस प्रत्यय के कारण धातु का द्वित्व होता है। किन्तु द्वित्व के बावजूद यह विकरणांत रूप ही माना जाएगा।

विकरणांत रूपों को दो मुख्य वर्गों में बाँट सकते हैं। शप्, श्यन् आदि कुछ प्रत्यय किसी गण विशेष के लिए विहित हैं। ये चार लकारों में लगते हैं। इन चार लकारों को 'सार्वधातुक' कहा जाता है। [वास्तव में सभी लकारों के आदेश सार्वधातुक ही हैं। 'तिङ्शित्सार्वधातुकम्"। सभी तिङ् प्रत्यय सार्वधातुक ही हैं। किन्तु लिट् और आशीर्लिङ् आर्धधातुक हैं। "लिट् च" "लिङाशिषि"। किन्तु व्यवहार में चार लकारों को सार्वधातुक और बाकी को आर्धधातुक कहते हैं। ] ये हैं—लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ्। इन्हीं लकारों में 'शप्' आदि प्रत्यय लगते हैं। उदाहरण हैं—भवति (लट्), भवतु (लोट्), अभवत् (लङ्) और भवेत् (विधिलिङ्)।

इन चार लकारों में लगने वाले विकरण प्रत्ययों की गणानुसार सूची नीचे दी जा रही है—

(1) भ्वादिगण। 'कर्तरि शप्'। विकरण प्रत्यय है 'शप्'। भवति, भवतु, अभवत्, भवेत्।

(2) दिवादिगण। "दिवादिभ्यःश्यन्"। विकरण प्रत्यय है 'श्यन्"। दीव्यति, दीव्यतु, अदीव्यत्, दीव्येत्।

(3) स्वादिगण। 'स्वादिभ्यः श्नुः'। विकरण प्रत्यय है "श्नु"। सुनोति, सुनोतु, असुनोत्, सुनुयात्।

(4) तुदादिगण। 'तुदादिभ्यः शः।" विकरण प्रत्यय है 'श'। तुदति, तुदतु, अतुदत् तुदेत्।

(5) तनादिगण। 'तनादि कृञ्भ्य उः'। विकरण प्रत्यय है 'उ'। करोति, करोतु, अकरोत्, कुरूयात्।

(6) रुधादिगण। 'रूधादिभ्यः श्नम्'। विकरण प्रत्यय है 'श्नम्'। मित्त्वादन्त्यादचः परः। मित् होने के कारण धातु के स्वरों में अंतिम स्वर के बाद लगता है। रुणद्धि, रुणद्धु, अरुणत्, रून्ध्यात्।

(7) क्रयादिगण (क्री+आदि)। 'क्रयादिभ्यः श्ना'। विकरण प्रत्यय है 'श्ना'। क्रीणाति, क्रीणातु, अक्रीणात्, क्रीणीयात्।

ये सात प्रत्यय उपर्युक्त चार लकारों में ही लगते हैं। अन्य लकारों में ये प्रत्यय नहीं लगते। अदादि तथा जुहोत्यादि गण में सिद्धान्त की दृष्टि से 'शप्' लगता है और उसका लोप हो जाता है। जुहोत्यादि गण में इन चार लकारों में धातु का द्वित्व भी होता है। व्यवहार की दृष्टि से कह सकते हैं कि इन दोनों गणों में सार्वधातुक लकारों में कोई विकरण प्रत्यय नहीं होता।

(8) अदादि गण। "कर्तरि शप्, अदि प्रभृतिभ्यः शपः।" विकरण प्रत्यय है "शप्" और उसका 'लुक्' (लोप) हो जाता है। अत्ति, अत्त, आदत्, अद्यात्।

(9) जुहोत्यादि गण। 'कर्तरि शप्, जुहोत्यादिभ्यः श्लुः'। विकरण प्रत्यय है 'शप्', और उसका 'श्लु' (लोप) हो जाता है। लोप के कारण द्वित्व होता है। जुहोति, जुहोतु, अजुहोत्, जुहुयात्।

(10) दसवाँ गण है चुरादिगण। इसमें स्वार्थिक णिच् प्रत्यय लगता है। "···चुरादिभ्यो णिच्"।" णिच् के बाद चार सार्वधातुक लकारों में 'शप्' विकरण प्रत्यय लगता है। आर्धधातुक लकारों में भी 'णिच्' तो लगता ही है। किन्तु वहाँ 'शप्" नहीं होता। चोरयति, चोरयतु, अचोरयत्, चोरयेत्।

आर्धधातुक लकार छः हैं—लिट्, लुट्, लृट्, आशीर्लिङ्, लुङ् और लृङ्। इनमें लिट् और आशीर्लिङ् दोनों लकार स्वयं आर्धधातुक हैं। बाकी चार लकार—यानी उनके आदेश तिङ् प्रत्यय-सार्वधातुक हैं, किन्तु उनमें लगने वाले विकरण-प्रत्यय आर्धधातुक हैं, अतः उन लकारों को भी व्यावहारिक दृष्टि से आर्धधातुक ही कहा जाता है। लिट् तथा आशीर्लिङ् में कोई विकरण प्रत्यय नहीं लगता। आशीर्लिङ् में परस्मैपद में 'यासुट्' तथा आत्मनेपद में 'सीयुट्' आगम विहित हैं – "यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च" "लिङः सीयुट्"। किन्तु ये आगम हैं, तिङ् प्रत्यय के आगम हैं। अतः इन्हें विकरण प्रत्यय नहीं कह सकते। तो लिट् और आशीर्लिङ् में धातु अपने मूलरूप में (as a verbal root) पाया जाता है। विभिन्न गणों से उदाहरण दिये जा सकते हैं—

(1) लिट् में—बभूव, ययौ, जुहाव, दिदेव, सुषाव, तुतोद, ततान (चकार), चिक्राय, रुरोध। [चुरादिगण में 'णिच्' अनिवार्य है। उसमें लिट् का रूप होगा—चोरयामास, चोरयांबभूव, चोरयांचकार इत्यादि।]

(2) आशीर्लिङ् में—भूयात्, अद्यात्, हूयात्, दीव्यात्, सूयात्, तुद्यात्, तन्यात्, क्रीयात्, रुध्यात्, चोर्यात्।

(चुरादि में यहाँ 'णिच्' का लोप हो जाता है । 'णेरनिटि') सभी गणों में एक रूपता दिखाई पड़ती है ।

अब चार और लकार बचे । इनमें विशेष प्रत्यय विहित हैं । इनकी सूची नीचे दी जाती है—

(1) लुट् । 'स्यतासी लृलुटोः' । विकरण प्रत्यय है 'तासि' । भविता, अत्ता, होता इत्यादि ।

(2) लृट् । 'स्यतासी लृलुटोः' । विकरण प्रत्यय है 'स्य' । भविष्यति, अत्स्यति, होष्यति इत्यादि ।

(3) लुङ् । इसमें कई विकरण प्रत्यय हैं । सिच् अङ्, क्स और चङ् । "च्लि लुङि, च्लेः सिच्" । अकार्षीत् अहार्षीत् । अमंस्त इत्यादि 'सिच्' के उदाहरण हैं । 'पुषादिद्युतादिलृदितः परस्मैपदेषु" । अपुषत्, अद्युतत् इत्यादि 'अङ्' के उदाहरण हैं । 'शल इगुपधादनिटः क्सः' । अधुक्षत्, अलिक्षत् इत्यादि 'क्स' के उदाहरण हैं । 'णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्' । अचूचुरत्, अशिश्रियत् आदि 'चङ्' के उदाहरण हैं ।

केवल 'त' (आत्मनेपद में प्रथम पुरुष का एक वचन प्रत्यय] में कहीं कहीं 'चिण्' प्रत्यय लगता है । तब 'त' का लोप हो जाता है । 'चिण् ते पदः" "दीप जन बुध पूरितायिप्याभ्योऽन्यतरस्याम्" "चिणो लुक्" । अपादि, अजनि इप्यादि 'चिण्' के उदाहरण हैं ।

(4) लृङ् । स्यतासी लृलुटोः । विकरण प्रत्यय है 'स्य' । अभविष्यत्, आत्स्यत्, अहोष्यत्, अकरिष्यत् इत्यादि ।

इस प्रकार कुछ विकरण प्रत्यय सभी गणों में किन्तु किसी विशिष्ट लकार में लगते हैं । कुछ प्रत्यय चारों सार्वधातुक लकारों में किन्तु किसी विशिष्ट गण के धातुओं के बाद ही लगते हैं । विकरणान्त धातुज रूपों के सम्बन्ध में पाणिनि की यह व्यवस्था है ।

'णिच्' 'यङ्' 'सन्' आदि प्रत्यय विशेषविहित हैं । कहीं ये प्रेरणा, इच्छा क्रिया की आवृत्ति आदि अर्थविशेष का बोध कराते हैं तो कहीं अर्थविशेष को अभाव में केवल प्रकृत्यर्थ की प्रतीति में सहायक होते हैं । ऐसे विशिष्टार्थशून्य प्रत्ययों को 'स्वार्थिक' कहा जाता है । णिजन्त आदि भेदों को सनाद्यन्त उपवर्ग में स्थान दिया जा सकता है । 'गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः" इत्यादि 'आय' प्रत्ययान्त रूपों को इसी वर्ग में रख सकते हैं । इसीको 'अन्य' कहा गया है । 'अभवत्' अभूत्" "आयत्" "ऐच्छत्' "ऐक्षिष्ट" इत्यादि में "अट्" तथा "आट्" दो आगामों का विधान है । इन्हें विकरणान्त में अन्तर्भूत मान सकते हैं । ये 'धातु' के भेद हुए ।

धातु भी 'प्रातिपदिक' बन सकते हैं, क्योंकि वे अर्थवान् हैं । इस अतिव्याप्ति से बचने के लिए पाणिनि ने 'प्रातिपदिक' संज्ञा में धातु का भी पर्युदास किया—"अधातुः" । धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त शब्दों को छोड़कर बाकी सब अर्थवान् शब्दों को प्रातिपदिक कहते हैं । इस परिभाषा में 'धातु' शब्द आया है । अतः धातु का निष्कर्ष किये बिना प्रातिपदिक का निष्कर्ष नहीं किया जा सकता । परिभाषा के वाक्य में जितने घटक हैं, उन सब का ज्ञान परिभाषा के ज्ञान के लिए अनिवार्य है । 'नहि घटकपदार्थ ज्ञानं विना घटितपदार्थज्ञानं सं भवति" । अत, प्रातिपदिक का निर्णय करने के लिए धातु के स्वरूप की मीमांसा आवश्यक है ।

धातु क्या है ? इसका आंशिक उत्तर तो इस सूत्र से मिलता है—"सनाद्यन्ता धातवः' । सनादि प्रत्यय ज्ञात हैं । इन्हें "परिगणित" भी कह सकते हैं । यानी, हम जानते हैं कि ये प्रत्यय क्या-क्या हैं, और कितने हैं, इन प्रत्ययों के योग से निष्पन्न शब्द रूपों को 'धातु' कहते हैं । इनमें 'नामधातु' भी आ जाते हैं । पुत्रीयति, पुत्रकाम्य ति आदि नामधातु के उदाहरण हैं । क्यच्, काम्यच् आदि प्रत्ययों से येनिष्पन्न हैं । 'सुप् आत्मनः क्यच्" "काम्येच्च" इत्यादि । किन्तु यह तो केवल एक आंशिक लक्षण है ।

धातु की परिभाषा पाणिनि ने 'गणपाठ' के आधार पर दी है। "भूवादयो धातवः"। भू+आदय =भूवादयः। पाणिनि ने एक धातुपाठ (धातुकोश) की रचना की है। उसमें पहले "भू" का निर्देश किया है। 'भू' से आदि या आरम्भ होने वाले गण में पठित शब्दों को 'धातु' कहते हैं। पाणिनि ने धातु की कोई आन्तरिक विशेषता या विशिष्ट अर्थ न बताकर, केवल गणपाठ (listing) के आधार पर यह परिभाषा की है।

यहाँ एक शंका होती है कि 'भू+आदयः' की सन्धि करने पर"भ्वादयः" होना चाहिए, 'भूवादयः" कैसे बना ? ऊकार के स्थान पर वकार होना चाहिए। यह यणादेश है किन्तु वकार का आगम किया गया है। इस शंका के समाधान में कहा जाता है कि यहाँ का वकार मंगलार्थ है। ग्रन्थ के आदि, मध्य और अन्त में मंगलाचरण करना चाहिए। यह भारतीय ग्रन्थकारों की प्राचीन परम्परा है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी के प्रथम सूत्र "वृद्धिरादैच्" में मंगलार्थ वृद्धि शब्द का प्रयोग किया। अन्त में 'नोदात्तस्वरितोदयमगार्ग्यकाश्यपगालवानाम्" में 'उदय' शब्द के द्वारा मंगलाचरण किया। मध्य में भी 'भूवादयः" इत्यादि में वकार आदि के द्वारा मंगल का विधान किया है। इस प्रकार वकार की एक व्याख्या की गई है।

वार्तिककार ने यहाँ आक्षेप उठाया है कि पाठ के आधार पर 'धातु' संज्ञा का निर्णय करें, तो भ्वादि गण में पठित शब्द स्वरूपों के समान (समानाकृति या समरूप जिनमें ध्वनियाँ एकसी हों) शब्दान्तरों को भी धातु मानना पड़ेगा। यह 'अतिव्याप्ति का दोष है। 'या' एक धातु है; अदादिगण में पठित है। याति, ययौ, यास्यति आदि इसके रूप हैं। 'या" एक शब्दान्तर भी है; "यत्" का स्त्रीलिंग रूप; 'टाप्' प्रत्ययान्त शब्द। यह सम्बन्धवाचक सर्वनाम है। अब हमें कैसे मालूम होगा; कि यह टाबन्त शब्द धातुपाठ में विविक्षित नहीं है ? "वा" एक धातु है; अदादि गण में पठित है; वाति, ववौ आदि इसके रूप हैं 'वा' एक अव्यय भी है, जो विकल्पार्थक है। इस अव्यय को धातु न मानने का क्या कारण हो सकता है ? 'नु' एक धातु है; नौति; स्तुति करना इसका अर्थ है। 'नु' एक निपात भी है, जो वितर्क का द्योतक है। 'नु' एक प्रत्यय भी हैं; 'स्वादिभ्यः श्नः'; सुनोति। तो वितर्कार्थक निपात तथा विकरणप्रत्यय 'नु' को क्यों न 'धातु'मानें ? यही वार्तिककार के आक्षेप का तात्पर्य है।

भाष्यकार ने आक्षेप का उत्तर देते हुए कहा कि 'भूवादय" की व्याख्या हम दूसरे प्रकार से करते हैं। "भूः च वाः च भूवौ। आदिः च आदिः च आदी। भूवौ आदी येषां ते भूवादयः" पहला आदि शब्द आरम्भवाचक है। दूसरा आदिशब्द प्रकारवाची है। "भ्वादयः वाप्रकाराः धातवःस्युः"। 'भू' आदि तथा 'वा' के समान शब्द धातु कहलाते हैं। 'भू' आदि कहने से पाठ का आधार ग्रहण किया जाता है। 'वा' के समान कहने का तात्पर्य यह है कि 'वा' क्रियावाची है अतः भ्वादिशब्दों में जो 'वा' के समान 'क्रियावाची हैं, वे ही धातु हैं। क्रियावाची कहने के कारण 'या' (टाबन्त) 'वा' (विकल्पार्थक अव्यय) 'नु' (वितर्कार्थक अव्यय) आदि शब्दों की व्यावृत्ति सिद्ध हो जाती है।

इस व्याख्या कौशल को हम स्वीकार करें या न करें; किन्तु फलितार्थ यही है कि "क्रियावाची धातुः" कहने की आवश्यकता को स्वीकार किया गया है। क्रियावाची और 'भू' आदि गण में पठित शब्दों को धातु' कहते हैं इस परिभाषा में पाठ का आधार भी ग्रहण किया गया है और साथ ही क्रियावाचित्व' रूपी विशेष लक्षण को भी ग्रहण किया गया है।

फिर भी समस्या का समाधान सुलभ नहीं हैं। 'क्रियावाची' का अर्थ क्या है ? क्रिया किसे कहते हैं ? क्रिया के स्वरूप की जिज्ञासा करते हुए भाष्यकार के निम्नांकित शब्दों का उद्धरण देना उचित होगा—

"का पुनः क्रिया ? ईहा। का पुनरीहा ? चेष्टा। का पुनः चेष्टा ? व्यापारः। सर्वथा भवान् शब्देनैव शब्दानाचष्टे, न किंचिदर्थजातं निर्दिशति एवं जातीयिका क्रियेति। क्रिया नामेयमत्यन्ता परिदृष्टा। अशक्या क्रिया पिण्डीभूता निदर्शयितुम्।"

(महाभाष्य १—३—१, पृ०—१५८)

क्रिया की व्याख्या के लिए ईहा, चेष्टा व्यापार आदि पर्यायों का प्रयोग किया गया। इससे जिज्ञासु के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला, शब्द की व्याख्या शब्दान्तर से करना वस्तुस्वरूप के विश्लेषण में सहायक नहीं है। भाष्यकार यहाँ वैयाकरण की विवशता को स्पष्ट करके बता रहे हैं कि क्रिया तो दिखाई देने वाली वस्तु नहीं है; वह कोई मूर्त पदार्थ—पिण्डीभूत वस्तु (Concrete substance)—नहीं है, जिसे प्रत्यक्ष रूप में दिखाकर कहा जा सके कि यह क्रिया है। अतएव क्रिया की परिभाषा देना कठिन है लेकिन इसका मतलब यह नहीं हो सकता कि क्रिया प्रमाणगम्य नहीं है। वह अनुमानगम्य है। क्रिया भले ही प्रत्यक्ष नहीं हो; किन्तु क्रिया का फल तो प्रत्यक्ष होता है। उस फल से क्रिया का अनुमान किया जा सकता है। कालिदास के शब्दों में "फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव," यही भाष्यकार का समाधान है। आधुनिक भाषाविज्ञानी भी नाम, क्रिया आदि शब्दों का प्रयोग करते है; किन्तु इनकी सही परिभाषा देने में असमर्थ हैं Noun phrase (NP संज्ञा पदबन्ध) याVerb phrase (क्रिया पदबन्ध—VP) का व्यवहार करते हैं—परन्तु यह नहीं बता पाते कि Noun या Verb का ठीक अर्थ क्या है। परम्परागत व्याकरण में दी गयी परिभाषाएँ तो तिरस्कृत हो चुकी हैं। अतः भाषाविज्ञान की पहली समस्या है कि नाम और क्रिया के भेद को कैसे, किस आधार पर स्पष्ट कियाजाय।

यदि किसी प्रकार क्रिया के स्वरूप का निर्धारण किया भी जा सके, तो इससे भी समस्या का पूर्ण रूप से समाधान नहीं होता। क्रियावाची शब्द बहुत से हैं। क्रिया, कृतिः, कर्म, पाकः, वधः आदि शब्द भी तो क्रियावाची हैं; किन्तु ये कृदन्त प्रातिपदिक हैं, धातु नहीं हैं। पचति, लिखति इत्यादि में धातु का अर्थ ऐसा है कि उसमें लिंग, संख्या आदि का अन्वय नहीं हो सकता। ऐसे धात्वर्थ को वैयाकरण 'साध्यावस्थापन्न भाव" कहते हैं। पाकः, कृतिः, गमनम् इत्यादि में भी 'भाव' (धात्वर्थ) ही कृत् प्रत्यय का अर्थ है। भाव के अर्थ में ही घञ् (पाकः), क्तिन् (कृतिः), ल्युट् (गमनम्) आदि प्रत्यय विहित हैं। किन्तु धात्वर्थ का स्वरूप ऐसा है कि इसमें लिंग, संख्या तथा कारक का अन्वय हो सकता है। ऐसे भाव को 'सिद्धावस्थापन्न' कहते हैं। 'पाकः'पुंलिंग में है; एक वचन है। पाकम्, पाकेन आदि शब्दों में इसे कर्म, करण आदि के रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है। पाकौ, पाकाः इत्यादि में द्विवचन तथा बहुवचन के रूप भी पाये जाते हैं। 'कृतिः' स्त्रीलिंग में है 'गमनम्' नपुंसक लिंग में हैं। 'स्त्रियाँ क्तिन्' "नपुंसके भावे क्तः" "ल्युट् च" इत्यादि सूत्रों में पाणिनि ने स्वयं लिंग का निर्णय बता दिया है। इस प्रकार के सिद्धावस्थापन्न धात्वर्थ को कृद्वाच्य कहा गया है—"कृदभि हितो भावो द्रव्यवत्प्रकाशते।" इस विवेचन से क्या निष्कर्ष निकलता है? धातूपात्त तथा कृद्वाच्य भाव में क्या अन्तर है? अर्थ की दृष्टि से तो कोई अन्तर नहीं है। लिंगादि का योग तो एक बाह्य प्रमाण है। 'धातु' संज्ञा के कारण तिबादि प्रत्यय लगते हैं। तिबादि प्रत्ययों के कारण लिंगादि के अन्वय का भी निर्णय होता है। लिंगादि का अन्वय हो तो वह सिद्धावस्थापन्न भाव है;उसके वाचक शब्द प्रातिपदिक होंगे; लिंगादि का अन्वय न हो तो वह 'साध्यावस्थापन्न भाव' है। उसके वाचक शब्द 'धातु' होंगे। इस प्रकार 'धातु' संज्ञा के निष्कर्ष के लिए लिंगादियोग को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता पड़ती है तो यह "अन्योन्याश्रय" दोष का रोचक उदाहरण बन जाता है।

इस प्रश्न को दूसरी दृष्टि से देखें। यदि कहा जाय कि जिन शब्दों के बाद तिबादि प्रत्यय लगते हैं उनको 'धातु' मानते हैं, तो यह जिज्ञासा अवश्य उठेगी कि किन शब्दों के बाद तिबादि प्रत्यय लगते हैं? उत्तर में यही कहना पड़ेगा कि 'धातु' के बाद तिबादि प्रत्यय लगते हैं। यही पाणिनि ने कहा। "धातोः" उनका एक अधिकार सूत्र है। इस सूत्र के बाद, तृतीयाध्याय की समाप्ति तक जो प्रत्यय विहित हैं वे धातु के बाद ही लगते हैं। यही इस सूत्र का अर्थ और प्रयोजन है। अतः, तिबादि प्रत्ययों की

की उत्पत्ति का निमित्त 'धातु' संज्ञा है और "धातु" का निष्कर्ष तिबादि प्रत्ययों के आधार पर किया जाता है। यही 'अन्योन्याश्रय' है।

पाकः, कृतिः आदि में कृत् प्रत्यय का अर्थ भाव है, तो धातु का अर्थ क्या है? वैयाकरण चाहें जो समाधान दें; तथ्य इतना ही है कि यहाँ प्रकृत्यर्थ और प्रत्ययार्थ में वास्तविक भेद कुछ भी नहीं है। प्रत्यय का उपयोग या लाभ इतना ही है कि जो पहले धातु था, अब वह प्रातिपदिक हो गया। कृदन्त प्रातिपदिक होता है; बस केवल इसीलिए प्रत्यय का विधान किया गया है। अर्थ की दृष्टि से कोई परि' वर्तन नहीं है। अतः 'धातु' संज्ञा में 'क्रियावाची' विशेषण को लगाने से भी धातु का स्वरूप स्पष्ट नहीं हो पाता। हाँ इतना अवश्य किया जा सकता है कि धातु की परिभाषा में कृदन्त का पर्युदास करके मूल रूपों (roots) तक उसे सीमित रखें। धातु की परिभाषा तब ऐसी होगी "भ्वादिगण में पठित, क्रियावाची, तथा कृदन्त से भिन्न शब्द 'धातु' कहलाते हैं। "भूवादयः क्रियावाचिनोऽकृदन्ता धातवः"। यह भी कोई संतोषजनक परिभाषा नहीं है, क्योंकि इसमें 'कृत्' की परिभाषा अनुप्रविष्ट है। "कृद-तिङ्"। 'धातोरिति विहितिः तिङ्भिन्नः प्रत्ययः कृत्संज्ञः स्यात्"। धात्वधिकार में विहित प्रत्ययों को-'तिङ् को छोड़कर—'कृत्' कहते हैं। अतः 'कृत्' की परिभाषा में 'धातु' एक घटक पदार्थ है; धातु की परिभाषा में 'कृत्' एक घटक पदार्थ है; तो हम अन्योन्याश्रय से बच नहीं पाते।' कृत्' प्रत्ययों की एक सूची तैयार कर दे और कहें कि इन प्रत्ययों को 'कृत्' कहते हैं, तो शायद इस समस्या का एक प्रकार से परिहार हो सकता है। "ण्वुलादयः कृतः" कहें, या "कृत्" अधिकारसूत्र बना दें, तो पाठ के आधार पर 'कृत्' संज्ञा का निष्कर्ष हो सकता है। सारांश यह कि '-धातु' और '-प्रातिपदिक' की परिभाषा में इतनी जटिलता पायी जाती है। 'धातु' का निष्कर्ष करने पर, उसके पर्युदास के आधार पर, प्राति-पदिक' संज्ञा का निष्कर्ष किया जा सकता है। ये बातें विद्वानों के विचारार्थ यहाँ प्रस्तुत की गयी हैं; लेखक का किसी मत के बारे में कोई आग्रह नहीं है।

'क्रिया के अन्तर्गत कई प्रकार के अर्थ संकलित हैं। 'पचति' क्रिया में खाना पकाने के समस्त व्यापार (लकड़ी ठीक करना, पात्र रखना, अग्नि प्रज्वलित करना, पानी भरना आदि) संग्रहीत हैं। किन्तु, 'जीवति-म्रियते, अस्ति, क्षीयते' आदि में क्रिया का स्वरूप क्या है? "अहं बालोऽस्मि"—क्या सत्ता भी कोई क्रिया है? वार्ष्यायणि ने षट् भावविकारों की गणना की है। "षड् भावविकारा इति वार्ष्यायणिः"। इन सब को हम 'क्रिया' कहते हैं। **धातु का अर्थ ही क्रिया है।** क्रिया का यही लक्षण व्यवहार में प्रचलित है। **क्रियार्थक शब्द ही धातु है।** इस प्रकार अन्योन्याश्रय की स्थिति बनी रहती है। "धात्वर्थः क्रिया। क्रियार्थकश्च धातुः। इदम-योन्याश्रयम्। इतरेतराश्रयाणिच कार्याणि न प्रकल्पन्ते यही उपर्युक्त समस्या का मूलस्वरूप है। विद्वानों को इस समस्या पर विचार करना चाहिए।

अब हम इस पद के द्वितीय खण्ड 'प्रत्यय' पर विचार करें। इसी संदर्भ में पद के पूर्वार्ध 'प्रकृति' के अन्तर्गत आने वाले कुछ प्रत्ययों पर भी विचार कर लेना सुविधा की दृष्टि से उचित होगा। ये प्रत्यय प्रकृति के निर्माण में सहायक हैं ये धातु और प्रातिपदिक की निष्पत्ति के साधन हैं। इनमें कुछ प्रत्यय व्युत्पादक हैं; एक शब्द से दूसरे शब्द का निर्माण करने की, शब्दनिष्पत्ति की, प्रक्रिया में सहायक होने वाले प्रत्ययों को 'व्युत्पादक' कहते हैं। कुछ तो केवल प्रकृति का निर्माण करने वाले हैं; इन्हें (stem formative) कहा जाता है। कुछ प्रत्यय अर्थविशेष में विहित हैं; कुछ प्रत्ययों का अपना कोई अर्थ नहीं होता; वे 'प्रकृत्यर्थानतिरिक्त स्वार्थबोधक" हैं यानी प्रकृति के अर्थ से भिन्न अर्थ का नहीं, किन्तु प्रकृत्यर्थ का ही बोध करानेवाले होते हैं। इन प्रत्ययों के सम्बन्ध में यहाँ संक्षेप में कुछ विचार करेंगे।

'प्रत्यय' की कोई परिभाषा पाणिनि ने नहीं दी। अष्टाध्यायी के तृतीय अध्याय के आरम्भ में पाणिनि

के दो अधिकार सूत्र हैं—"प्रत्ययः" और "परश्च" ये अधिकार पंचम अध्याय की समाप्ति तक लागू होते हैं। तीसरे, चौथे तथा पाँचवें अध्याय में जो बताया गया है वही 'प्रत्यय' है। तृतीयाध्याय में विहित प्रत्यय ("धातोः" अधिकार सूत्र से पहले विहित कुछ प्रत्ययों को छोड़कर) धातु के बाद लगते हैं। चतुर्थ और पंचम अध्याय में विहित प्रत्यय प्रातिपदिक के बाद लगते हैं। 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्'।

इन प्रत्ययों को सात वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। वर्गों के नाम निम्नांकित हैं—

1 सनादि प्रत्यय।
2 'कृत्' प्रत्यय।
3 विकरण प्रत्यय।
4 तिङ् प्रत्यय।
} ये चारों वर्ग तृतीयाध्याय में उक्त हैं।

5 सुप् प्रत्यय।
6 स्त्रीप्रत्यय।
7 तद्धित प्रत्य
} ये तीनों वर्ग चतुर्थ तथा पंचम अध्याय में उक्त हैं।

**1 सनादि प्रत्यय**

सनादि प्रत्यय सब एक प्रकार के नहीं हैं। इनमें से कुछ प्रत्यय व्युत्पादक हैं। हेतुमति च" प्रेरणार्थ में 'णिच्' का विधान किया गया है। कुर्वन्तं प्रेरयति—कारयति। "धातोः समान कर्तृकादिच्छायांवा"। इच्छा के अर्थ में धातु के बाद 'सन्' प्रत्यय लगता है। जेतुमिच्छति जिगीषति। इसी प्रकार आवृत्ति या पौनः पुन्य के अर्थ में या अतिशय के अर्थ में धातु के बाद 'यङ्' प्रत्यय लगता है। 'धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्'। पुनः पुनरतिशयेन वा भवति बोभूयते। इस यङ् का लुक् (लोप) भी हो जाता है। ऐसे रूपों को 'यङ्लुगन्त' कहते हैं- बोभवीति। इन्हें 'धातुप्रकृतिक धातु' (verbs derived from verbs) कह सकते हैं।

कुछ प्रत्यय संज्ञाओं के बाद भी लगते हैं। 'सुप आत्मनः क्यच्'। इच्छा के अर्थ में सुबन्त शब्दों के बाद 'क्यच्' प्रत्यय लगता है। पुत्रमात्मन इच्छति पुत्रीयति। 'काम्यच्य'। इसी अर्थ में 'काम्यच्' प्रत्यय भी लगता है। पुत्रमात्मन् इच्छति पुत्रकाम्यति। 'पुच्छभाण्डचीवराण्णिङ्'। ऐसे प्रत्ययों से बने धातुओं को 'सुबन्तप्रकृतिक धातु' कह सकते हैं। पाणिनि ने 'वा सुप्यापिशलेः सूत्र में इन्हें 'सुब्धातु' कहा है। 'नाम धातु', (verbs derived from nouns) शब्द भी व्याकरण की परंपरा में प्रचलित है। 'सनादि' प्रत्ययों को व्युत्पादक कह सकते हैं।

सनादि वर्ग के कुछ प्रत्यय अर्थरहित हैं। 'गुप्तिज्किद्भ्यः सन्'। जुगुप्सा, तितिक्षा, चिकित्सा। गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः'। गोपायति, पनायति इत्यादि। इन प्रत्ययों का विधान किसी निमित्त की अपेक्षा नहीं रखता; इन प्रत्ययों से अर्थविशेष की प्रतीति नहीं होती। अतः इनको 'शब्दस्वरूप निष्पादक' यानी 'प्रकृति निर्मापक' (stem-formative) प्रत्यय कह सकते हैं। ये सनादि प्रत्यय सभी तृतीयाध्याय के प्रथम पाद में विहित हैं।

**2 कृत् प्रत्यय**

'धातु' अधिकार में विहित तिङ्भिन्न प्रत्ययों को 'कृत्' कहते हैं। ये प्रत्यय क्रिया से अन्य शब्द भेद (parts of speech other than verbs) बनाने में सहायक हैं। अतः ये व्युत्पादक होते हैं। प्रायः 'कर्ता' के अर्थ में इनका विधान किया गया है। 'कर्तरि कृत्'। अन्य कारकों में भी 'कृत्' प्रयुक्त होते हैं। 'करणाधिकरणयोश्च" "अकर्तरिच कारके संज्ञायाम्" "तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः"। 'साधनम्, करणम्" आदि शब्दों में 'ल्युट' (अन) करण के अर्थ में है। "स्थानम्, शयनम्" आदि में ल्युट अधिकरण के अर्थ में है। रमन्ते योगिनः अस्मिन्निति रामः। यहाँ 'घञ' प्रत्यय अधिकरण के अर्थ में प्रयुक्त है।

पाणिनि ने 'भीमादयोऽपादाने' कहकर अपादान कारक में भी 'कृत्' का प्रयोग स्वीकार किया। बिभ्यति शत्रवोऽस्मादिति भीमः। भीम वह है जिससे लोग डरते हैं। दीयतेऽस्मै दानीयो विप्रः। जिसको दान दिया जाता है, वह 'दानीय' है। यहाँ 'अनीयर्' प्रत्यय संप्रदान के अर्थ में आया है। 'क्त'(भूतकालिक) कर्म के अर्थ में प्रयुक्त होता है—रावणः रामेण हतः'। लेखकः, कुम्भकारः, स्थण्डिलशायी आदि में कृत्प्रत्यय कर्तृवाचक हैं। कुछप्रत्यय तो 'भाव' के वाचक हैं। पाकः। भावे घञ्। स्थितिः। भावेक्तिन्। गमनम्। भावे ल्युट्। गतम्। भावे क्तः। इस प्रकार विविधि अर्थों में 'कृत्' प्रत्ययों का प्रयोग लोकसिद्ध है; उसी का शास्त्र ने अन्वाख्यान किया है।

कुछ कृदन्त शब्द अव्यय हो जाते हैं। 'कृन्मेजन्तः'। मकारान्त तथा एजन्त (एच्=ए,ओ ऐ,औ) कृत्प्रत्ययों से अन्त होनेवाले प्रातिपदिक अव्यय होते हैं।म्लेच्छितवै—एजन्त कृदन्त अव्यय का उदाहरण है। भाष्यकार ने पस्पशाह्निक में इस वाक्य का उद्धरण दिया है—"तस्माद् ब्राह्मणेन न म्लेच्छितवै नापभाषितवै म्लेच्छो है वा एष यदपशब्दः।" मकारान्त कृदन्त अव्यय के उदाहरण हैं—"पार्यपायम्, स्वादुंकारम्" इत्यादि। ये 'णमुल् प्रत्ययान्त शब्द हैं। 'क्त्वा' (पूर्वकालिक कृत्) प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय होते हैं। 'क्त्वातो सुन्कसुनः'। कृत्वा, ज्ञात्वा, विज्ञाय। ल्यप् तो क्त्वा का आदेश है। "समासेऽन ञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्"। इस प्रकार हम देखते हैं कि कुछ कृत्प्रत्यय अव्ययों का निर्माण करते हैं।

**विकरण प्रत्यय**

विकरण प्रत्ययों के सम्बन्ध में थोड़ी-सी चर्चा पहले भी हुई है। इनमें कुछ प्रत्यय गणविशेष पर आधारित हैं। स्वादिगण के धातुओं के बाद 'श्नु' प्रत्यय लगता है। यदि किसी अन्य(स्वादिगण में जो नहीं पाया जाता) धातु के बाद भी यह प्रत्यय लगता है, तो उसके लिए विशेष विधान की आवश्यकता होती है। इसका उदाहरण है—'श्रुवः शृ च"। 'श्रु' धातु के बाद 'श्नु' प्रत्यय लगता है और श्रु के स्थान पर 'शृ' का आदेश होता है। 'शृणोति'। इस प्रकार गणविशेष पर आधारित प्रत्यय नीचे दिये जाते हैं—

श्यन्, श्नु, शः उ, श्नम्, श्ना और णिच्।

इनमें पाँच प्रत्ययों में आदि वर्ण 'श' कार है। उसको 'इत्' मानते हैं; इत् होने के कारण उसका लोप हो जाता है। 'लशक्वतद्धिते"; "तस्य लोपः"। शित् प्रत्ययों को सार्वधातुक कहते हैं। तिङ्शित्सार्व धातुकम्"। ये पाँचों प्रत्यय चार लकारों में (लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ्) ही लगते हैं। अन्यत्र इनका प्रयोग नहीं होता। वर्तमानकाल के लट् के स्थान पर दो आदेश 'कृत्' विहित हैं—"लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे"। 'शतृ' परस्मैपद है और 'शानच्' आत्मनेपद है। दोनों शित् हैं। अतः इनके साथ भी ये विकरणप्रत्यय लगते हैं—'शृण्वन्, वर्तमानः' इत्यादि।

'उ' प्रत्यय भी इन्हीं चार लकारों में लगता है। किंतु यह शित् या तिङ् नहीं है, अतः यह आर्धधातुक है। 'श्नम्' प्रत्यत तो शित्त्व के कारण सार्वधातुक ही माना जाता है, किन्तु यह प्रत्यय आगम के रूप में विहित है; अतः धातु के बीच में उसी का अंग बनकर आता है। इस कारण से इस प्रत्यय को सार्वधातुक मानने से कोई लाभ नहीं। सिर्फ एकरूपता के लिए पाणिनि ने इसे भी शित् बनाया है। 'उ' को शित् बनाने में एक बाधा है। शित् होने पर वह सार्वधातुक होता; सार्वधातुक तथा अपित् होने के कारण वह 'ङित्' माना जाता; "सार्वधातुकमपित्"; तो फिर गुण का निषेध प्राप्त होता; "सार्वधातुकार्धधातुकयोः, क्ङिति च"। किंतु 'करोति' इत्यादि में गुण हो रहा है। अतः गुण की सिद्धि के लिए पाणिनि ने इस 'उ' प्रत्यय को आर्धधातुक बना रखा है। आर्धधातुक अपित् होने पर भी ङित् नहीं माना जाता; अतः गुण की प्रवत्ति निर्बाध है।

'णिच्' प्रत्यय विकरण तो है, लेकिन वह किसी लकार तक सीमित नहीं है। णिच् दो प्रकार के है। एक प्रेरणार्थक प्रत्यय है, जिसका विधायक सूत्र है—"हेतुमति च"। यह प्रत्यय समस्त धातुओं के बाद लग सकता है और प्रेरणार्थक होने के कारण व्युत्पादक भी है। सनादि वर्ग में इसको स्थान दिया है। दूसरा स्वार्थिक णिच् है—'चुरादिभ्यो णिच्' यह भी सनादि वर्ग में आता है; किंतु चुरादि गण के धातुओं के लिए विहित होने के कारण इसे विकरण प्रत्ययों में भी गिन सकते हैं। वास्तव में चुरादि गण में विकरण दो होते हैं। पहला विकरण णिच् है; उसके बाद सार्वधातुक लकारों में 'शप्' और आर्धधातुक में 'तासि' आदि विशिष्ट प्रत्यय होते हैं। चोरयति, चोरयतु, अचोरयत्, चोरयेत्। इन चारों लकारों मेंणिच् और शप् दोनों प्रयुक्त हैं। णिच् में केवल इकार बचता है; शप् में अकार बचता है। शप् प्रत्यय के लिए णिजन्त रूप 'अंग' है—"यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्"। अतः इकार का गुण एकार होता है—"सार्वधातु-कार्धधातुकयोः"। इ+अ=ए+अ=अय। चोरयिता, चोरयिष्यति" इत्यादि आर्धधातुक रूपों में भी णिच् पाया जाता है; उसके बाद तास्, स्य आदि विकरण प्रत्यय जुड़े हैं। लुङ् में विकरण प्रत्यय 'चङ्' लगता है—''णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्'। चङ् में अकार बचता है; यह आर्धधातुक तथा अजादि प्रत्यय है। अतः इसका इडागम नहीं हो सकता। "आर्धधातुकस्येड् वलादेः"। अनिट् प्रत्यय में णिच् का लोप विहित है—"णेरनिटि" अचूचुरत्। लोप होने पर भी यहाँ णिच् और चङ् दो प्रत्ययों का समावेश स्पष्ट है। कहने का तात्पर्य है कि चुरादि से विहित णिच् विकरण होते हुए भी सभी लकारों में प्रवृत्त होता है; अन्य विकरणों से विलक्षण है।

'शप्' प्रत्यय गणनिरपेक्ष है। 'कर्तरि शप्'। कर्तृवाचक सार्वधातुक प्रत्यय में 'शप्' प्रत्यय धातु के बाद लगता है। यहाँ किसी गण का निर्देश नहीं किया गया। "भ्वादिभ्यः शप्" नहीं कहा। अतएव शप् किसी भी धातु के बाद आ सकता है। किन्तु श्यन् आदि गणविशेष से विहित प्रत्यय इसके अपवाद हैं। तो दिवादिगण आदि में श्यन् आदि प्रत्ययों के विशेष विधान के कारण 'शप्' नहीं होता। जहाँ कोई अपवाद नहीं है, वहाँ शप् की प्रवृत्ति होती है। भ्वादिगण में तो 'शप्' का प्रयोग होता ही है—'भवति, शोचति, हरति, सेधति' इत्यादि चुरादिगण में भी 'शप्' पाया जाता है। अदादि तथा जुहोत्यादिगण में भी यही माना जाता है कि 'शप्' लगा और फिर उसका लोप हो गया। जुहोत्यादि गण में शप् के लोप के कारण द्वित्व होता है। अदादि गण में भी 'स्तौति' आदि में शप् के लोप के कारण ही धातु के उकार की वृद्धि होती है। 'स्तु+शप्+ति=स्तु+ति=स्तौति। "अदिप्रभृतिभ्यः शपः, उतो वृद्धिर्लुकि हलि"। अतः 'शप्' को सार्वधातुक लकारों में औत्सर्गिक विकरण मान सकते हैं।

लिट् तथा आशीर्लिङ् में कोई विकरणप्रत्यय नहीं होता। किन्तु लिट् में कुछ विशेष रूप मिलते हैं। पातयामास, गोपायांचकार, एधांबभूव। इन रूपों में 'आस' चकार और बभूव ये तीनों अनुप्रयोग हैं। पातयाम्, गोपायाम्, एधाम्—ये लिट् के रूप हैं। यहाँ 'आम्' प्रत्यय लिट् में प्रयुक्त है। पाणिनि ने कई धातुओं के बाद लिट् में 'आम्' का विधान किया है—"कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि" "दयायासश्च" "इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः" इत्यादि सूत्र हैं। कात्यायन ने प्रथम सूत्र में 'प्रत्ययात्' के स्थान पर "अनेकाचः" कहने का प्रस्ताव किया; प्रत्ययान्त धातुओं के बाद 'आम्' का विधान सूत्रकार ने किया, तो कात्यायन का संशोधन है कि धातु प्रत्ययांत हो या न हो, उसको 'अनेकाच्' होना चाहिए, तभी 'आम्' प्रत्यय की प्रवृत्ति होगी—"कास्यनेकाच आम् वक्तव्यः।" 'ऊर्णुञ्=आच्छादने'। यह धातु अनेकाच् है, प्रत्ययान्त नहीं है। यहाँ भी 'आम्' लगता है। 'चकास्' दीप्ति के अर्थ का वाचक है। यह भी अनेकाच् धातु है। अतः यहाँ भी आम् लगता है। इस 'आम्' को पाणिनि ने विकरण प्रत्यय का स्थान दिया। 'आम्' के बाद के 'लिट्' का लोप हो जाता है। "आमः" फिर 'लिट्'परक कृ, भू तथा अस् का अनुप्रयोग भी विहित है। "कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि"। इसमें अस् और भू दोनों परस्मैपदी हैं। अतः मूलधातु चाहे जो हो (परस्मैपदी हो, आत्मनेपदी हो या उभयपदी हो), इन दोनों के रूप तो परस्मैपद के ही हो सकते हैं।

एधामास, एधांबभूव । यहाँ मूलधातु 'एध' आत्मनेपदी है; फिर भी अनुप्रयुक्त धातु परस्मैपदी रहा। 'कृञ्' धातु उभयपदी है। इसका पद मूलधातु के अनुरूप होगा। "आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य"। अतः, 'एधांचक्रे' ही हो सकता है, 'एधांचकार" नहीं। 'गोपाय' परस्मैपदी है; अतः "गोपायांचकार" होता है, "गोपायांचक्रे" नहीं होता। इस प्रकार पाणिनि ने 'आम्' प्रत्यय के बाद अनुप्रयोग की भी व्यवस्था की

यह 'आम्' क्या विकरण प्रत्यय है? यह तो एक विलक्षण प्रत्यय है, जिसके कारण लिट् का ही लोप हो जाता है। ऐसा एक विकरण 'चिण्' है, जो लुङ् लकार के आत्मनेपद के प्रथम पुरुष के एक वचन में ही लगता है और उसके कारण 'त' का लोप हो जाता है। "चिण् ते पदः, चिणो लुक्"। किंतु वह तो सिर्फ एक प्रत्यय 'त' के लिए विशेष रूप से विहित है; लुङ् लकार में 'सिच्' विकरण औत्सर्गिक है। चिण् को 'त' का आदेश मानें तो फिर 'सिच्' की निवृत्ति के लिए और कोई व्यवस्था करनी पड़ेगी। अतः वहाँ चिण् को सिच् का अपवाद मान लेना उचित है। लेकिन लिट् में तो कोई विकरण प्रत्यय प्राप्त नहीं है। अतः 'आम्' को लिट्' का आदेश मान लें, तो प्रक्रिया की दृष्टि से भी लाघव होगा।

'विद्' धातु में लोट् में आम् लगता है—"विदांकुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम्"। यहाँ भी हम देखते हैं कि आम् के बाद 'लोट्' का लोप हो जाता है तथा 'कुर्वन्तु' (कृञ् धातु का लोट् लकार का रूप) का अनुप्रयोग होता है। यदि 'आम्' को लोट् का आदेश मान लें, तो क्या अनुपपत्ति होगी? शायद यह शंका होगी कि आम् को लोट् का आदेश मानने पर उसे सार्वधातुक कहना पड़ेगा और तब लघूपधगुण की प्राप्ति होगी। "पुगन्तलघूपधस्य च"। आम् को विकरण प्रत्यय मानने पर भी यह प्राप्ति दुर्वार है। लघूपधगुण तो आर्धधातुक में भी होता है—'विवेद'।

'विद' धातु के लिए लिट् लकार में भी विकल्प से 'आम्' का विधान किया गया है—"उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्"। विदांचकार इत्यादि रूप होते हैं। यहाँ लघूपधगुण की प्राप्ति के वारण के लिए यह कल्पना की गयी है कि इस सूत्र में 'विद' धातु को अकारान्त माना है; "विदेत्यकारान्तं निपातनम्"। अर्थात्, दकारान्त 'विद्' के स्थान पर अकारान्त 'विद' का आदेश सूत्रकार के अकारान्त निर्देश से ज्ञापित है। अकारान्त विद के बाद 'आम्' विकरण प्रत्यय लगता है; तो अकार का लोप हो जाता है—"अतो लोपः"। यह लोप आर्धधातुक प्रत्यय में ही संभव है। अतः, 'आम्' को आर्धधातुक मानना जरूरी है। लिट् का आदेश मानने पर भी 'आम्' के आर्धधातुकत्व में कोइ अंतर नहीं पड़ेगा। तब भी अकार का लोप होगा। और उसके स्थानिवद्भाव के कारण लघूपधगुण नहीं होगा। किंतु लोट् में, 'आम्' को लोट् का आदेश मानने पर, लघूपधगुण की प्राप्ति दुर्वार है। इस शंका का यों समाधान किया जा सकता है कि 'विदांकुर्वन्तु' एक निपातन है, अतः निपातन सामर्थ्य से ही सार्वधातुक आम् के साथ भी लघूपधगुण का अभाव सिद्ध होता है। न ह्यत्र आम आर्धधातुकत्वेपि अकारान्त निपातो दृश्यते। तस्मात् निपातन सामर्थ्यादिव गुणाभावो वक्तव्यः।" चाहे जैसी कल्पना करें, 'आम्' को विकरण प्रत्यय न मानकर लकार का आदेश कहें तो कोई अनुपपत्ति नहीं होगी।

'आम्' को विकरण प्रत्यय मानने पर एक और शंका उठती है। इसके मकार की इत्संज्ञा क्यों नहीं होती? हलन्त्यम्"। "श्नम्' प्रत्यय का मकार इत् होता है। मित् होने के कारण वह प्रत्यय—प्रत्ययत्व के बावजूद—आगम बनता है तथा धातु के अंत्य अच् के बाद लगता है। रुणद्धि। मित्वादन्त्यादचः परः। वैसे ही आम् को भी मित् होना चाहिए था। लेकिन यहाँ का मकार लुप्त नहीं होता। वह श्रूयमाण रहता है—"पातयामास, पूजयामास" इत्यादि। मकार के लोप के वारण के लिए टीकाकारों ने एक 'ज्ञापक' का सहारा लिया। पाणिनि ने 'आस्' धातु के लिए आम् का विधान किया है—"दयाय्यासच।" इसी प्रकार 'कास्' धातु में भी आम् विहित है—"कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि"। "आस्" तथा "कास्" में यदि "आम्" आगम के रूप में लगता है तो आकार के बाद ही लग सकता है। "आ+

आ+स्" तथा "का+आ+स्" में सवर्णदीर्घ होगा। तो 'आम्' का विधान यहाँ व्यर्थ होगा। धातु के रूप में वास्तव में कोई परिवर्तन नहीं होगा। अतः इससे ज्ञापित होता है कि 'आम्' मित् आगम नहीं है। वह पर प्रत्यय है। आसांचक्रे' 'कासामास' इत्यादि रूपों में पर प्रत्यय के रूप में इसका श्रवण अपेक्षित है। इसीलिए 'आस्' और 'कास्' के बाद 'आम्' का विधान सार्थक होता है। इस विवेचन को कौमुदी में संक्षिप्त रूप में दो वाक्यों में कहा गया" है—आमो मकारस्य नेत्वम्, आस्कासोराम्विधानाज् ज्ञापकात्।"

इस ज्ञापक के सम्बन्ध में आक्षेप किया जा सकता है। 'आम्' को मित् मानने पर भी 'आस्कासोराम् विधान' व्यर्थ नहीं होगा; माना कि आगम आकार के बाद लगता है तथा सवर्णदीर्घ हो जाता है; फिर भी, आम् के बाद लिट् का लोप हो जाता है, कृभ्वस्ति का अनुप्रयोग होता है; इसलिए आम् का विधान चरितार्थ है। लक्षणैकचक्षुष्क की दृष्टि से ज्ञापक यहाँ अन्यथासिद्ध है। अतः उसके आधार पर मकार के श्रवण की कल्पना करना कठिन है। "विदांकुर्वन्तु" का निर्देश सूत्रकार ने किया है। 'अभ्युत्सादयाम्' इत्यादि सूत्र में भी ऐसा निर्देश पाया जाता है। ऐसे सौत्र निर्देशों के बल पर 'आम्' के मकार के श्रवण (इत्संज्ञा तथा तन्निमित्तक लोप के अभाव को 'श्रवण' कहा जाता है) की उपपत्ति बतायी जा सकती है। आम् को लकार का आदेश मानें तो यह कठिनाई नहीं होगी। यह तिङ् का आदेश होगा। तिङ् को विभक्ति कहते हैं—"विभक्तिश्च"। 'सुप्तिङौ विभक्तिसंज्ञौ स्तः"। विभक्ति के मकार की इत्संज्ञा नहीं होती—"न विभक्तौ तुस्माः"। सुप् में उदाहरण हैं—रामम्, रामाणाम्। 'अम्' द्वितीया का एकवचन है तथा 'आम्' षष्ठी का बहुवचन है। तिङ् में उदाहरण हैं—अभवम्, अभवताम्। 'तस्थस्थमिपां तांतंतामः"। 'अम्' उत्तमपुरुष का एकवचन है तथा 'ताम्' प्रथमपुरुष का द्विवचन है। यहाँ सर्वत्र मकार का श्रवण होता है। उसी प्रकार आम् में भी मकार का लोप नहीं होता है। यह व्याख्या सुगम प्रतीत होती है। आम् को विकरण प्रत्यय मानें या लकार का आदेश? यह भी एक विचारणीय प्रश्न है—विद्वानों को इस पर ध्यान देना चाहिए।

विकरण प्रत्ययों को अर्थरहित तथा केवल प्रकृति के निर्माण में सहायक (Stem formative) माना जाता है। भाषाविज्ञानी भी ऐसे विशिष्ट अर्थ से रहित शब्दांशों को 'empty morph' कहते हैं। किन्तु क्या सभी विकरणप्रत्यय सर्वथा अर्थरहित हैं? 'लुट्' लकार में 'तासि' प्रत्यय लगता है। उसे 'अनद्यतन भविष्यत्' का वाचक (tense-marker) कहने में क्या आपत्ति है। भविष्यतकाल में 'लृट्' लकार विहित है। यहाँ 'स्य' प्रत्यय लगता है। "स्यतासी लृलुटोः"। इस 'स्य' को भविष्यत्काल का वाचक कहें, तो क्या बाधा है? 'लुङ्' लकार भूत सामान्य (सामान्य भूतकाल) में विहित है। उसमें सिच्, क्स, अङ्, चङ् या चिण् विहित हैं। इन प्रत्ययों को भूतकाल के वाचक कहने में दोष क्या है? संभव है कि इस प्रकार के कुछ विकरण प्रत्ययों को कालवाचक के रूप से स्वीकार किया जाय तथा लकार को केवल कर्ता, कर्म या भाव का वाचक मान लिया जाय। 'लःकर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः"। किन्तु 'स्य' तो लृङ् में भी विहित है। "सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तर्हि सुभिक्षमभविष्यत्"। यह 'क्रियातिपत्ति' है। तो 'स्य' का अर्थ कहाँ केवल भविष्यत् काल है और कहाँ क्रियातिपत्ति है? सार्वधातुक लकारों के अर्थ भिन्न-भिन्न हैं। 'लट्' वर्तमान काल में विहित है, लोट् विधि आदि कई अर्थों का वाचक है; विधिलिङ् लोट् का पर्याय है। लङ् अनद्यतन भूतकाल में है। "वर्तमाने लट्" "अनद्यत लङ्" "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्" "लोट् च"। किन्तु इन चारों लकारों में विकरण प्रत्यय एक ही लगता है। तो वर्तमानकाल आदि अर्थ एक विकरण प्रत्यय के नहीं हो सकते। अतः यहाँ तो शप्, श्यन् आदि को निरर्थक ही मानना पड़ेगा। शब्दसाधुत्व के लिए उनका प्रयोग करना अनिवार्य है। एकरूपता की दृष्टि से लुट् आदि लकारों में भी विकरण प्रत्ययों को अर्थरहित. तथा लकारों को ही कालादि अर्थों के वाचक मानना उचित होगा। कुछ विकरणों को सार्थक तथा कुछ को निरर्थक मानना

अर्धजरतीय' होगा। अतः पाणिनि ने लकारार्थों में काल, विधि आदि का—जिसे Tense, mood आदि शब्दों से पाश्चात्य व्याकरणों में पहचाना गया है—समावेश किया तथा सभी विकरणों को अर्थमुक्त तथा शब्दनिष्पत्ति में उपयोगी बताया है।

4. **तिङ् प्रत्यय**—'तिङ्' एक प्रत्याहार है। पाणिनि ने एक सूत्र में अठारह प्रत्ययों की सूची दी है—"तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ्"। इनमें पहले नौ प्रत्यय परस्मैपद हैं। "लः परस्मैपदम्"। बाकी नौ आत्मनेपद हैं—"तङानावात्मनेपदम्" प्रत्ययों की सूची में पहले 'ति' है। सूत्र के अन्त में 'ङ्' है इन दोनों को मिलाने से 'तिङ्' प्रत्याहार बनता है। 'तिङ्' इन अठारहों प्रत्ययों के नाम है।

दोनों पदों (परस्मैपद और आत्मेनपद) को तीन-तीन पुरुषों में बाँट सकते हैं। प्रत्येक पुरुष में तीन वचन होते हैं। नीचे इन प्रत्ययों की तालिका दी गयी है।

(1) परस्मैपद

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम | तिप् | तस् | झि |
| मध्यम | सिप् | थस् | थ |
| उत्तम | मिप् | वस् | मस् |

(सभी लकारों में ये ही प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।)

(2) आत्मने पद

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम | त | आताम् | झ |
| मध्यम | थास् | आथाम् | ध्वम् |
| उत्तम | इट् | वहि | महिङ् |

(सभी लकार में ये ही प्रत्यय लगते हैं।)

कहीं-कहीं इनके स्थान पर आदेशों का विधान किया गया है। परस्मैपद में लिट् लकार में तिवादि नौ प्रत्ययों के स्थान पर नौ आदेश विहित है। "परस्मैपदानां णलतुसस्थलथसणल्वमाः"। लिट् लकार के परस्मैपद प्रत्ययों की सूची यों होगी—

(१) प्रथम पुरुष—णल्, अतुस्, उस्
(चकार, चक्रतुः,:, चक्रुः।)

(२) मध्यम पुरु—थल्, अथुस्, अ
(चकर्थ, चक्रथुः, चक्र।)

(३) उत्तम पुरुष—णल्, व म
(चकार। चकर, चकृव, चकृम।)

कुछ लकारों में टकार इत् है। उन्हें 'टित्' कहते हैं। वे हैं—लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट् और लोट् इनमें 'लेट्' वेद में ही पाया जाता है। बाकी लकार ङित् हैं, इनके अन्त में ङकार का अनुबन्ध पाया जाता है। ये हैं —लङ्, लिङ्, लुङ् और लृङ्। लिङ् के दो भेद हैं—विधिलिङ् तथा आशीर्लिङ्। इस प्रकार पाँच लकार ङित् पाये जाते हैं। पाणिनि का कहना है ङित् लकारों में तस् थस् थ और मिप् के स्थान पर ताम्, तन्, त और अम् आदेश होते हैं। "तस्थस्थमिपां तांतंतामः"।

(१) तस्—प्रथमपुरुष का द्विवचन—आदेश "ताम्"
उदा—लट्—भवतः, लिङ—भवेताम् ।

(२) थस्—मध्यम पुरुष का द्विवचन—आदेश 'तम्'
उदा—लट्—भवथः, लिङ् 'भवेतम्' ।

(३) थ—मध्यम पुरुष का बहुवचन—आदेश 'त' ।
उदा—लट्—भवथ, : लिङ्—भवेत

(४) मिप्—उत्तम पुरुष एकवचन—आदेश—"अम्" ।
उदा—लट्—भवामि, लिङ्—भवेयम् ।

आत्मनेपद प्रत्ययों में भी कहीं-कहीं आदेश का विधान पाया जाता है । "लिटस्तझयोरेशिरेच्" । लिट् लकार में 'त' और 'झ' के स्थान पर क्रमशः 'एश्' और 'इरेच्' आदेश विहित हैं । लट्—वर्धते' लिट्—ववृधे । यहाँ 'त' के स्थान पर 'एश्' हुआ है । लट्—वर्धन्ते, लिट्—ववृधिरे । यहाँ 'झ' के स्थान पर 'इरे' का आदेश हुआ है ।

इसी प्रकार टित् लकारों में 'थास्' के स्थान पर 'से' का आदेश विहित है । 'थासः से' । लट्—वर्तसे, लिट्—ववृतिषे, लुट्—वर्तितासे, लृट्—वर्तिष्यसे, लोट् वर्तस्व । किंतु ङित् लकारों में थास् ही पाया जाता है—लङ्—अवर्तथाः, विधिलिङ्—वर्तेथाः, आशीर्लिङ्—वर्तिषीष्ठाः, लुङ्—अवर्तिष्ठाः, लृङ्—अवर्तिष्यथाः । टित् लकरों में आत्मनेपद प्रत्ययों के 'टि' का एत्व हो जाता है । इससे प्रत्ययों के रूप यों बदल जाते हैं—

त=ते, आताम्=आते, झ=अन्ते, थास्=से,आथाम्=आथे, ध्वम्=ध्वे, इट्=ए, वहि =वहे, महिङ्=महे । 'लट्' लकार में एक आत्मनेपदी धातु के रूपों को देखें तो यह बात बहुत स्पष्ट हो जायेगी ।

"वृतु—वर्तने", आत्मनेपदी—लट् के रूप

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. पु. | वर्तते | वर्तेते | वर्तन्ते |
| म. पु. | वर्तसे | वर्तेथे | वर्तध्वे |
| उ. पु. | वर्ते | वर्तावहे | वर्तामहे |

इस प्रकार के आदेश भी 'तिङ्' ही कहलाते हैं । स्थानी तिङ् है, तो उसका आदेश भी तिङ् माना जायगा—"स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ" । कहने की आवश्यकता नहीं है कि वर्णन की सुविधा और संक्षिप्तता को (brevity and clarity of linguistic description) दृष्टि में रखकर ही पाणिनि ने 'तिप्' आदि प्रत्ययों के 'प्राथमिक रूप' (primary or basic form) का निर्णय किया है । किसको मूलतः प्रत्यय का रूप मानना उचित होगा, किसे आदेश या विकार के रूप में गौण स्थान देना है, इसका निर्णय वर्णनात्मक व्याकरण में स्पष्टता और लाघव के आधार पर किया जाता है । 'तिङ् प्रत्ययों के रूपचयन में पाणिनि ने इसी दृष्टि से काम लिया है ।

5. **सुप् प्रत्यय** 'तिङ्' के समान 'सुप् भी एक प्रत्याहार है । इस प्रत्याहार में कुल इक्कीस प्रत्यय हैं । ये प्रत्यय सात विभक्तियों में विभाजित हैं । प्रत्येक विभक्ति में तीन वचन होते हैं । इनकी तालिका नीचे दी जा रही है—

इन प्रत्ययो की सूची पाणिनि ने निम्नांकित सूत्र में प्रस्तुत की है—
"स्वौजसमौट्छष्टाभ्यांभिस्ङेभ्यांभ्यस् ङसोसांङयोस्सुप्" ।

'सुप् प्रत्यय

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | सु | औ | जस् |
| द्वितीया | अम् | औट् | शस् |
| तृतीया | टा | भ्याम् | भिस् |
| चतुर्थी | ङे | भ्याम् | भ्यस् |
| पंचमी | ङसि | भ्याम् | भ्यस् |
| षष्ठी | ङस् | ओस् | आम् |
| सप्तमी | ङि | ओस् | सुप् |

इन प्रत्ययों में कुछ वर्ण 'इत्' हो जाते हैं। 'इत्' वर्णों का लोप हो जाने के बाद प्रत्ययों के निम्नांकित रूप ठहरते हैं—"स्, औ, अस्, अम्, औ, अस्, आ, भ्याम्, भिस्, ए, भ्याम् भ्यस्, अस्, भ्याम्, भ्यस्, अस्, ओस्, आम्, इ, ओस्, सु।" इनमें भी कुछ के कहीं-कहीं आदेश होते हैं। नपुंसक लिंग के शब्दों में (प्रथमा एकवचन) 'सु' तथा 'अम्' (द्वितीया एकवचन) का लोप विहित है— "स्वमोर्नपुंसकात्"। किन्तु यदि वह शब्द अकारान्त हो, तो इन दोनों प्रत्ययों के स्थान पर 'अम्' का आदेश विहित है—"अतोऽम्"। लोप के उदाहरण हैं—वारि, मधु इत्यादि। 'इदं वारि शीतलम्'— यहाँ "वारि" प्रथमा में है। "शीतलं वारि पिब" में वारि द्वितीया में है। 'अम्' आदेश के उदाहरण हैं—फलम्, ज्ञानम् इत्यादि "इदं फलं मधुरम्" में '–फलम्' प्रथमा में है। "मधुरं फलं भक्षय" में 'फलम्' द्वितीया में है।

आबन्त स्त्रीलिंग शब्दों में प्रथमा तथा द्वितीया के द्विवचन के स्थान पर 'शी' आदेश विहित है। इसमें शकार 'इत्' है, केवल ईकार बचता है। "औङ आपः"। उदाहरण हैं —रमे, लते इत्यादि।'सर्वनाम' शब्दों में प्रथमा बहुवचन 'जस्' के स्थान पर 'शी' का आदेश होता है (सर्वनाम अकारान्त हो, तो)। सर्व+जस्=सर्व+शी=सर्व+ई=सर्वे। "सर्वे जनाः सुखिनो भवन्तु"। ह्रस्वाकारान्त शब्दों के बाद 'टा' का 'इन' होता है, 'ङसि' का 'आत्' होता है; 'ङस्' का 'स्य' होता है। "टाङसिङसामिनात्स्याः"। धन+टा=धन+इन=धनेन। धन+ङसि=धन+आत्=धनात्। धन+ङस्=धनस्य। 'सुप्' के आदेश भी 'सुप्' ही होते हैं। इन्हीं तिङ् और सुप् प्रत्ययों के आधार पर पाणिनि ने पद की परिभाषा बनायी—"सुप्तिङन्तंपदम्"।

**6 स्त्रीप्रत्यय** संस्कृत के वैयाकरणों ने लिंग को प्रातिपदिक का अर्थ कहा है। किन्तु शब्द से लिंग की प्रतीति नहीं होती। संस्कृत भाषा में लिंग। अर्थ पर आधारित नहीं है। वह केवल शब्द का धर्म है, व्याकरण की एक कोटि मात्र है (Grammatical gender)। कई शब्दों में लिंग का बोधक कोई प्रत्यय नहीं होता। 'मरुत्' एक हलन्त प्रातिपदिक है। इसका लिंग क्या है? इस प्रातिपदिक में लिंगनिर्णय में सहायक कोई तत्त्व नहीं है। प्रयोग के आधार पर हम जानते हैं कि यह पुंलिंग है। ठीक इसी प्रकार का एक और शब्द है—"दृषत्"। यह स्त्रीलिंग है। अतः लिंग का ज्ञान प्रातिपदिक से संभव नहीं है। कहीं-कहीं विभक्तिप्रत्यय आदि बाह्य साधनों से लिंग ज्ञान प्राप्त हो सकता है। देवः। यहाँ प्रथमा एकवचन प्रत्यय विसर्ग के रूप में पाया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि यह शब्द पुंलिंग का है। इकारान्त शब्दों में प्रथमा एकवचन का लोप होने पर अनुमान कर सकते हैं कि यह शब्द नपुंसक है। 'वारि'। इन उदाहरणों में बाह्य प्रमाणों से लिंग का ज्ञान हुआ है।

स्त्रीलिंग के सभी शब्दों में स्त्रीप्रत्यय नहीं लगते। लक्ष्मीः, श्रीः, सरित् आदि कई शब्द स्त्रीलिंग में हैं; किन्तु उनमें स्त्रीप्रत्यय कोई नहीं है। कुछ शब्दों में स्त्रीप्रत्यय जुड़ते हैं। टाप्, डाप् तथा चाप्—

ये तीन स्त्रीप्रत्यय 'आ' के रूप में हैं । "अजाद्यतष्टाप्" "डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्", "यङश्चाप्" । रमा, अजा, बहुसीमा आदि उदाहरण हैं । ङीप्, ङीष्, ङीन्—ये तीनों "ई" के रूप में हैं । 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' "षिद्गौरादिभ्यश्च" "शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्" । गौरी, कुरुचरी, आवट्यायनी आदि उदाहरण हैं । इनके अलावा, 'ऊङ्' तथा 'ति' दो प्रत्यय हैं जो स्त्रीत्व के द्योतक हैं । "ऊङुतः" "यूनस्तिः" । कुरूः' वामोरूः आदि ऊङ् के उदाहरण हैं, 'युवन्' का स्त्रीरूप 'युवति" है ।

इन स्त्रीप्रत्ययों में दो तद्धित कहलाते हैं । 'यूनस्तिः" से विहित ति प्रत्यय तद्धिताधिकार में हैं, अतः वह तद्धित है । किन्तु 'ष्फ' एक प्रत्यय है, जो तद्धिताधिकार से पहले उक्त होने पर भी विशेष-वचन से 'तद्धित' संज्ञा को पाता है—"प्राचां ष्फ तद्धितः', यह प्रत्यय षित् है; इसका पहला वर्ण षकार इत् है । 'षः प्रत्ययस्य,' । षकार की इत्संज्ञा का फल है 'ङीष्' की प्रवृत्ति—"षिद्गौरादिभ्यश्च" । 'ष्फ' स्वयं स्त्रीत्व के अर्थ में विहित है । फिर उसके बाद पुनः उसी अर्थ में ङीष् क्यों होगा ? टीकाकारों का कहना है कि षित्त्व का फल ङीष् ही हो सकता है; यदि यहाँ ङीष् न हो, तो फिर 'ष्फ' का षित्त्व व्यर्थ हो जायगा । अतः षित्त्वसामर्थ्य से 'उक्तार्थानामप्रयोगः" के बावजूद—पुनरूक्ति की चिन्ता किए बिना—उसी स्त्रीत्व के अर्थ में ङीष् भी होता है । 'कौमुदी' में लिखा है—

"प्राचां ष्फ तद्धितः । यञन्तात् ष्फो वा स्यात् स्त्रियां, स च तद्धितः । × × तद्धितान्तत्वात्प्रातिपदिकत्वम् । षित्त्वसामर्थ्यात् ष्फेण उक्तेपि स्त्रीत्वे', 'षिद्गौरादिभ्यश्च" इति वक्ष्यमाणो ङीष्; गार्ग्यायणी" । (पृ०—118)

इसका तात्पर्य है कि 'ष्फ' और 'ङीष्'' दोनों मिलकर एक ही शब्दगत स्त्रीत्व का द्योतन करते हैं । स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों के बाद स्वादि प्रत्यय लगते हैं । ङयाप्प्रातिपदिकात्' । 'ऊङ्, प्रत्ययान्त शब्द के बाद भी लिंग विशिष्टपरिभाषा से स्वादि प्रत्यय उत्पन्न होते हैं । अतएव स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों को भी प्रातिपदिक मान लेना हमारी राय में शास्त्रमर्यादा के अनुकूल होगा ।

7. **तद्धित प्रत्यय** "तद्धिताः' एक अधिकारसूत्र है । यह चतुर्थाध्याय के प्रथमपाद में स्त्रीप्रत्यय-प्रकरण के अन्त में 'ति' प्रत्यय से पूर्व है । यहाँ से आगे पंचमाध्याय की समाप्तिपर्यन्त जो प्रत्यय विहित हैं, वे सब 'तद्धित' कहलाते हैं । तद्धित प्रत्यय प्रातिपदिकों के बाद लगते हैं । तद्धितान्त शब्द प्रातिपदिक होते हैं । अतः ये प्रत्यय प्रायः प्रातिपदिक प्रकृतिक प्रातिपदिकों का निर्माण करते हैं ।

तद्धितों में एक 'अकच्' प्रत्यय है, जो प्रातिपदिक के बाद ("पर") नहीं लगता, किन्तु प्रातिपदिक के भीतर ही समाविष्ट हो जाता है—'अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः" । यह प्रत्यय 'टि' ("अचोऽन्त्यादि टि" । हलन्त शब्दों में अन्तिम अच् के साथ का हलंश तथा अजन्त शब्दों में सिर्फ अन्तिम अच् 'टि' कहलाता है ।) के पूर्व लगता है । अतः 'श्नम्' के समान इसे भी अन्तः प्रत्यय (infix) कह सकते हैं । उदाहरण हैं—नीचकैः, उच्चकैः, सर्वकः, एषकः आदि ।

एक और तद्धित प्रत्यय है, जो प्रातिपदिक से पर न होकर पूर्व लगता है । इसे 'पूर्वप्रत्यय' कह सकते हैं । "विभाषा सुपो बहुच् पुरस्ता—तु" । यह 'बहुच्' प्रत्यय तो है, किन्तु 'पुरस्तात्' यानी प्रातिपदिक से पूर्व लगता है । तो फिर शब्द को तद्धितान्त कैसे कहें ? तद्धितान्त न हो तो उसको प्रातिपदिक मानना संभव नही है । यही शंका 'अकच्' प्रत्यय के सम्बन्ध में भी उठती है । तो शायद हमें मानना पड़ेगा कि तद्धितान्त का अर्थ तद्धितयुक्त है । 'तद्धितादि' तथा 'तद्धितमध्य' को भी इसीके अन्तर्गत लिया जा सकता है । "कृत्तद्धितसमासाश्च"—में 'तद्धित' की व्याख्या "तद्धितयुक्त" के रूप में करनी पड़ेगी, इसका दूसरा समाधान भी सम्भव है । यदि बहुच्पूर्व तथा अकच्गर्भ शब्दों को तद्धितान्त न मान सकें, तो भी क्या हानि हो रही है ? ये शब्द प्रत्ययान्त नहीं हैं । ये अर्थवान् भी हैं । अतः 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः

प्रातिपदिकम्" से ही है इनकी प्रातिपदिक संज्ञा सिद्ध हो सकती है। प्रत्ययान्त शब्द होते, तो निषेध की बाधा होती। चूंकि ये शब्द प्रत्ययान्त नहीं हैं, अतः अर्थवत्ता मात्र से इनका प्रातिपदिकत्व सिद्ध है। अर्थवत्ता तो प्रयोग सिद्ध है। अतः अन्तःप्रत्यय तथा पूर्व प्रत्यय के होने पर भी प्रातिपदिकत्व में कोई बाधा नहीं होगी।

"अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः"—इस सूत्र में तिङ् की अनुवृत्ति मानते हैं। तिङन्त शब्दों में भी स्वार्थिक अकच् प्रत्यय लगता है। पचति=पचतकि। इसी प्रकार "उच्चैः नीचैः" आदि अव्ययों में भी अकच् लगता है। उच्चकैः, नीचकैः। 'पचतकि' तिङन्त है, और उच्चकैः" सुबन्त है। ये सभी शब्द प्रत्ययान्त हैं। 'अप्रत्यय' पर्युदास के कारण इनकी प्रातिपदिक संज्ञा में बाधा पड़ती है। अतः अनिवार्यतया 'तद्धित' की व्याख्या 'तद्धितयुक्त' करके इन शब्दों को भी प्रातिपदिक सिद्ध करना पड़ता है। तद्धितयुक्त शब्द को प्रातिपदिक मानें, तो "दाक्षिणात्यस्य" आदि तद्धितान्तप्रकृतिक सुबन्त को भी प्रातिपदिक क्यों न कहें? अतः, तद्धितान्त शब्द को ही प्रातिपदिक कह सकते हैं, तद्धितयुक्त शब्द को नहीं। तब अकच् और बहुच् प्रत्यय के विषय में क्या व्यवस्था की जाय? स्पष्ट है कि इन अपवादात्मक शब्दों के लिए विशेष विधान की आवश्यकता है। "बहुच्पूर्वः प्रातिपदिकम्" "साकच्कश्च"—इस रूप में विशेष विधान किए बिना इस समस्या का समाधान नही हो सकेगा।

इसी प्रसंग में तिङन्त के बाद जुड़नेवाले तद्धित प्रत्ययों पर संक्षेप में विचार कर लें। अतिशय के अर्थ में 'तमप्' प्रत्यय विहित है। यह तिङन्त पद के बाद भी लगता है। "तिङश्च"। 'तिङन्तादतिशयेऽर्थे द्योत्ये तमप् स्यात्।" तमप् के बाद 'आमु' प्रत्यय लगता है। "किमेत्तिङव्ययधादाम्वद्रव्यप्रकर्षे"। 'आमु' में उकार इत् है; इससे मकार का परित्राण हुआ। पचतितमाम्। अतिशयेन पचतीत्यर्थः। यह तिङन्त प्रकृतिक तद्धितान्त का एक उदाहरण है।

पाणिनि ने प्रशंसा के अर्थ में 'रूपप्' प्रत्यय का विधान किया है—"प्रशंसायां रूपप्"। यह प्रत्यय सुबन्त और तिङन्त दोनों प्रकार के पदों के बाद लगता है। "पचतिरूपम्"। इस शब्द के बारे में विचार करते हुए 'तत्त्वबोधिनी' के लेखक ने कहा है कि आख्यात या तिङन्त क्रियाप्रधान होते हैं। क्रिया द्रव्य रूप नहीं है; अर्थात् उसमें संख्या का अन्वय नहीं हो सकता। संख्या के अभाव में भी उत्सर्गसिद्ध एकवचन का प्रयोग अवश्य होता है। अतः द्विवचनान्त तथा बहुवचनान्त क्रियापदों के बाद 'रूपप्' लगता है तो ऐसे शब्द एकवचनान्त ही रहते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि यहाँ प्रथमा विभक्ति ही हो सकती है, कर्मादि कारकों के अभाव में अन्य विभक्तियाँ नहीं हो सकतीं। किंतु द्वितीया भी कहीं कहीं संभव है। लोकप्रयोग के कारण इसको नपुंसक मानते हैं। 'तत्त्वबोधिनी' के शब्द हैं—

"क्रियाप्रधानमाख्यातम्। क्रियायाश्च असत्त्वरूपत्वेपि औत्सर्गिकमेकवचनं भवति। तेन पचतोरूपं पचन्तिरूपमित्यादि। इह प्रथमैव, विभक्त्यन्तराणामप्राप्तेरिति बहवः। वस्तुतस्तु पश्यत्यादियोगे कर्मणि द्वितीयापि सुलभा। क्लीबत्वं लोकात्।" (पृ—314)

ऐसी व्याख्या से एक समस्या पैदा होती है। 'रूपप्' प्रत्ययान्त शब्द प्रातिपदिक हैं। प्रयोगानुसार उन्हें नपुंसक मानते हैं। संख्या के अभाव में एकवचन ही होता है। यहाँ तक तो ठीक है। किंतु कारकयोग को मानकर, "पचतिरूपं पश्य" इत्यादि में कर्म के अर्थ में द्वितीया को स्वीकार करते हैं, तो 'पचतिरूपेण सर्वानानन्दयति" "पचतिरूपाय धनं देहि" इत्यादि वाक्यों में करण, संप्रदान आदि के अर्थ में तृतीया, चतुर्थी आदि विभक्तियाँ क्यों नहीं हो सकतीं? कृद्वाच्य भाव (क्रिया) लिंग, संख्या तथा कारक से युक्त होता है—"कृदभिहितो भावो द्रव्यवत् प्रकाशते"। किंतु तिङ्वाच्य भाव ऐसा नहीं है। 'पचति' में पाककर्ता के एकत्व का बोध होता है, पाकक्रिया के एकत्व का नहीं। तिङन्त में क्रिया की

संख्या की प्रतीति नहीं होती। इस क्रिया का कोई लिंग नहीं। किंतु पाकः में वही क्रिया घञ् प्रत्यय से वाच्य होकर पुंलिग बन जाती है। 'पाकः' में पाक का एकत्व प्रतीत होता है। पाक करनेवाले बहुत लोग हों, तो भी पाक एक ही है तो "बहुकर्तृक एकः पाकः" कहेंगे। "पाकेन सर्वान् प्रीणयति, पाकाय धनं ददाति, पाके निपुणः, पाकस्य कर्ता, पाकं समापयति" इत्यादि वाक्यों में विविध कारकों का योग स्पष्ट है। यह तिङन्त में सम्भव नहीं है. तो आख्यातवाच्य क्रिया में कारक संबंध को स्वीकार करके उसे कृद्वाच्य क्रिया के समान मानते हैं। इस दशा में कारकान्तरयोग का निषेध कैसे कर सकते हैं? तो फिर संख्यायोग क्यों नहीं होता? "पचतिरूपे, पचतिरूपाणि" इत्यादि प्रयोग भी प्राप्त होंगे। अतः तद्धितान्त शब्द में भी तिङन्तवाच्य क्रिया को असत्त्वरूप ही मानना चाहिए। लिंग तो लोकसिद्ध है; एकवचन औत्सर्गिक है। इसलिए नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन का रूप ही न्यायोचित हो सकता है। इस सूत्र की व्याख्या में वार्तिक और भाष्य में इसी मत का स्पष्ट प्रतिपादन किया गया है। वार्तिककार के शब्द हैं—प्रकृतेलिङ्गवचनाभावात्तिङ् प्रकृतेरम्भाववचनम्। सिद्धं तु क्रियाप्रधानत्वात्।" इनकी व्याख्या में पतंजलि ने कहा कि नपुंसक लिंग का विधान करने की आवश्यकता नहीं है, वह तो लोक से ही सिद्ध होता है—"एवमपि नपुंसकत्वं च वक्तव्यम्? न वक्तव्यम् "उक्तं वा"। किमुक्तम्? लिंगमशिष्यं लोकाश्रयत्वात् लिंगस्येति।"

[व्याकरणमहाभाष्य, 5-3-66, पृ+ 463-466]

'कल्पप्' प्रत्यय भी तिङन्त से लगता है। "ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः"। पचतिकल्पम्। यहाँ भी नपुंसकत्व लोकसिद्ध है और एकवचन औत्सर्गिक है। ऐसे कुछ तिङन्तप्रकृतिक तद्धितान्त प्रातिपदिकों के उदाहरण पाये जाते हैं। इनका प्रयोग विरल है; इन्हें अपवादात्मक रूप ही (rare forms) कहा जा सकता है।

कुछ तद्धित प्रत्ययों से अव्यय बनते हैं। "सप्तम्यास्त्रल्"। तत्र, कुत्र। त्रल् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं। "पञ्चम्यास्तसिल्"। ग्रामतः। तसिलादयः प्रत्ययाः परिगण्यन्ते। तदन्तमव्ययं स्यात्।" तसिल् आदि कुछ परिगणित प्रत्ययों से निष्पन्न शब्द अव्यय होते हैं। "तद्धितश्चासर्वविभक्तिः"—इस सूत्र में ऐसा संशोधन किया गया है। इस प्रकार कई तद्धितान्त प्रातिपदिक अव्यय हो जाते हैं।

तद्धित प्रत्यय कई प्रकार के अर्थों में विहित हैं। अपत्य आदि तद्धितार्थों की विभिन्नता तथा विपुलता, और तद्धित प्रत्ययों की लंबी सूची को देखकर शास्त्रज्ञों ने एक कहावत बना ली—"तद्धितमूढा वैयाकरणाः"। कोई विद्वान् आसानी से इन सभी प्रत्ययों तथा उनके अर्थों को याद नहीं रख सकता। दो अध्यायों में सैकड़ों सूत्रों में तद्धित विहित हैं। पाणिनि ने विस्तार से इस प्रकरण का विवेचन करके अपनी सारग्राहिणी सूक्ष्मदृष्टि का परिचय दिया है।

समासान्त प्रत्यय भी तद्धितों में ही गिने जाते हैं। ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे" इत्यादि कुछ प्रत्यय सामान्य रूप से समास से विहित हैं। ये प्रत्येक समास में प्रवृत्त होंगे। कुछ प्रत्यय समासविशेष के लिए ही विहित हैं। "अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः" "राजाहस्सखिभ्यष्टच्" "तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः" "उरःप्रभृतिभ्यः कप्" "बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्" "द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे" इत्यादि सूत्रों से विहित प्रत्यय समासविशेष में नियत हैं। ये समास के ही अन्तावयव माने जाते हैं। अतः इन प्रत्ययों से निष्पन्न शब्द समास भी हैं तथा तद्धितान्त भी। उनका प्रातिपदिकत्व द्विगुणतया पुष्ट है।

**पदान्तर्गत विकार** प्रकृति और प्रत्यय के संयोग की दशा में कई तरह के विकार होते हैं। ये ध्वनिपरिवर्तन के स्तर पर संधिविकार (phonological or morphophonemic) हो सकते हैं अथवा रूप परिवर्तन के स्तर पर (morphological level) आदेशादिरूप भी हो सकते हैं। कुछ प्रकृतिशब्द

कुछ ही प्रत्ययों में पाये जाते हैं। 'आह' एक ऐसा उदाहरण है। लट् लकार में, प्रथम पुरुष के तीनों वचन तथा मध्यम पुरुष के एकवचन और द्विवचन में केवल पाँच प्रत्ययों में—'आह' का रूप पाया जाता है। आह, आहतुः, आहुः, आत्थ, आहथुः। "ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः" पाणिनि ने कल्पना की कि 'ब्रू' धातु के स्थान पर 'आह' का आदेश होता है। इसी प्रकार के कुछ अन्य आदेश हैं—"अस्तेर्भूः, ब्रुवो वचिः, अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति, लुङसनोर्घस्लृ, अजेः व्यघञपोः, पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्तिसर्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छ धौशीयसीदाः" इत्यादि। ये सब प्रत्ययविशेषापेक्ष प्रकृति के उदाहरण हैं। इन्हें आधुनिक भाषाविज्ञान में morphologically conditioned कहते हैं।

इसी प्रकार कुछ प्रत्यय प्रकृति विशेषापेक्ष हैं। 'जसः शी' 'शी' अकारान्त सर्वनाम के बाद ही आ सकता है। 'जागुरुकः'। 'ऊक' प्रत्यय 'जागृ' धातु के बाद लगता है—'जागरूकः' 'गर्गादिभ्यो यञ्'। गार्ग्यः। 'यञ्' प्रत्यय गर्गादिगण पठित प्रातिपदिकों के बाद ही लगता है। ऐसे कई प्रत्यय हैं, जो नियत प्रकृति विशेष से ही जुड़ते हैं; अन्यत्र इनका प्रयोग नहीं होता। तो एक वैयाकरण का कर्तव्य होता है कि वह प्रकृति और प्रत्यय का, प्रयोगों के आधार पर, अध्ययन (Observation) करे और संक्षिप्त सूत्रों में उनसे सम्बन्धित नियमों को व्यवस्थित रूप प्रदान करे। पाणिनि ने इस महत्त्वपूर्णकार्य में अत्युत्तम सफलता पायी है। उनका धातुपाठ, अन्य गणपाठ तथा तीसरे से लेकर पाँचवें तक तीन अध्यायों में प्रत्ययों का विधान उनकी रूपवैज्ञानिक (morphological) या पद संरचना की सफल प्रक्रिया के प्रमाण है।

पद संरचना के अन्तर्गत कई तरह के विकारों का अन्वाख्यान करना आवश्यक है। गुण, वृद्धि, संप्रसारण, द्वित्व, अभ्यासविकार, दीर्घ आदि कई ऐसे विकार हैं जो रूपनिष्पत्ति की प्रक्रिया के ही अंग हैं। पद के भीतर भी सन्धि होती है। हिन्दी आदि भारतीय भाषाओं में संस्कृत के हजारों शब्द उधार लिए गये हैं। विद्यालय, सूर्योदय, रमेश आदि शब्दों में सन्धि हुई है। ऐसी सन्धि संस्कृत के पदों के भीतर—पदावयवों में भी होती है। उदाहरण है—'गवे'। यह ओकारान्त गोशब्द के चतुर्थी एकवचन का रूप है। गो+ए=गवे। यहाँ ओकार के स्थान पर अवादेश हुआ है। पाणिनि पदसंस्कार की प्रक्रिया में इन सभी बातों पर ध्यान देते हुए चलते हैं। जिन्हें आधुनिक भाषा विज्ञान में 'phonological rules' (ध्वनि वैज्ञानिक नियम) तथा 'morphophonemic rules' (पदध्वनीय नियम) कहते हैं, वे सब पाणिनि की पदसंस्कार प्रक्रिया के अन्तर्गत आ जाते हैं।

पाणिनि के व्याकरण की एक विशेषता यह है कि स्पष्टता तथा लाघव के लिए, गुण आदि विकारों की निश्चित प्रतिपत्ति के लिए प्रत्ययों में कई प्रकार के अनुबन्ध (इत्संज्ञक वर्ण) लगाये जाते हैं। इन अनुबन्धों की सहायता से पाणिनि ने गुण आदि विविध कार्यों का विधान किया है। इन अनुबन्धों के द्वारा प्रत्यय की विशेषताओं का आकलन किया जाता है। एक 'अ' कार ही कहीं 'अच्' बनकर सामने आता है। 'अच्' में चकार इत् है। 'हलन्त्यम्'। इत्संज्ञा के कारण उसका लोप हो जाता है—"तस्य लोपः" यही अनुबन्ध है इस प्रत्यय में अब केवल अकार बचता है। चित् होने के कारण स्वर में विशेष होता है। "अच् प्रत्यन्ववपूर्वात सामलोम्नः" कहीं-कहीं 'अण्' होता है; णित्त्व के कारण आदिवृद्धि तथा अंत्यवृद्धि होती है; तद्धितों में णित् प्रत्यय के कारण आदिवृद्धि होती है—"तद्धितेष्वचामादेः"। "प्राग्दीव्यतोऽण्" "प्रज्ञादिभ्योऽण्" प्रज्ञ एव प्राज्ञः। यहाँ अण् के णित्त्व के कारण आदिवृद्धि हुई है। 'उपगोरपत्यम् औपगवः' 'तस्यापत्यम्'। अपत्य के अर्थ में अण् है। अन्य प्रत्ययों में (तद्धित को छोड़कर) णित्त्व के कारण अंत्य वृद्धि होती है। 'कर्मण्यण्'। 'अचोञ्णिति"। कुम्भं करोति इति कुम्भकारः।

कृ+अ=(वृद्धि से 'ऋ' का 'आर" बनता है) कार्+अ=कार ।कहीं अनुबन्ध को पहले रक्खा—"प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्योणः" । 'ण' और 'अण्' में अन्तर यही है कि अण्प्रत्ययान्त शब्द के बाद स्त्रीलिंग में 'ङीप्' स्त्रीप्रत्यय लगता है—"टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः" । 'ण' प्रत्ययान्त के बाद 'ङीप्' नहीं होगा । कहीं "णल्" प्रत्यय होता है । यहां ण और ल दो अनुबन्ध पाये जाते है । "परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः" । तुष्टाव । 'स्तु' धातु का लिट् प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है । 'लिट्' में द्वित्व होता है । द्वित्व में पूर्व भाग को 'अभ्यास' कहते हैं—'पूर्वोऽभ्यासः' । अभ्यास में 'स्तु' में सकार का लोप हो जाता है और तकार बचता है—"हलादिः शेषः शर्पूर्वाः खयः" । तुष्टु+णल्=तुष्टु+अ=(णित्त्व के कारण उकार की वृद्धि 'औ') तुष्टौ+अ=(औकार के स्थान पर आवादेश) तुष्टाव । निनाय' 'चकार' आदि में भी यही वृद्धि है । इस वृद्धि के लिए ही णल को णित् बनाया है ।

कहीं 'अङ्' प्रत्यय है । 'अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्' "पुषादिद्युताद्लृदितः परस्मैपदेषु" । लुङ् लकार में विकरणप्रत्यय 'अङ्' विहित है । अपुषत् । अद्युतत् । 'इरितो वा' । अरुधत् । यहाँ लघूपधगुण प्राप्त है—"पुगन्तलघूपधस्य च" । किन्तु 'अङ्' प्रत्यय ङित् है; ङित् प्रत्यय् में गुण नहीं होता—"क्ङिति च" । गुणनिषेध के लिए ही इस प्रत्यय को ङित् बनाया है । कहीं गुणनिषेध के लिए ही प्रत्यय को 'कित्' किया है—"इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः" । कित्त्व के कारण गुण नहीं होता । गुण के अभाव में 'इयङ्' आदेश हो जाता है—"अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ" । प्री+क=प्री+अ=प्रियः ।"लशक्वतद्धिते" ।

इसी ङित्त्व या कित्त्व के कारण कहीं संप्रसारण होता है । ग्रह+अ=गृहम् । "गेहे कः" । "वचिस्वपियजादीनां किति" "ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च" । गृह्णाति । यहाँ विकरण प्रत्यय 'श्ना' । वह शित् है—'लशक्वतद्धिते' । शित् होने से सार्वधातुक है—"तिङ्शित्सार्वधातुकम्" । सार्वधातुक तथा अपित् होने से 'ङित्' माना जाता है—"सार्वधातुकमपित्" । ङित्त्व के कारण संप्रसारण है—"गृह्णाति" । लिट् में अपित् प्रत्ययों को कित् मानते हैं । "असंयोगाल्लिट् कित्" । जगृहतुः । कित्त्व के कारण यहाँ संप्रसारण हुआ है । किंतु णल् प्रथम पुरुष का एकवचन–तिप् का आदेश स्थानिवद्भाव से पित् है; अतः ङित् नहीं है । णल् में संप्रसारण नहीं होता, किन्तु उपधावृद्धि होती है—"अत उपधायाः । जग्राह । "लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्' । उवाच । ऊचतुः । कर्तरि शप् यह सार्वधातुक होकर भी पित् है । अतः ङित् नहीं हो सकता, और इसमें गुण होता है । भू+शप्+ति=भू+अ+ति=भो+अ+ति=भवति । "तुदादिभ्यः शः" । यह प्रत्यय पित् नहीं है । इसलिए ङित है । "तो इस प्रत्यय में गुण नहीं होता । तुद्+श+ति=तुद्+अ+ति=तुदति ।

'चङ्' प्रत्यय भी दो अनुबन्धों से युक्त अकार ही है । 'णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरिचङ्' । अचूचुरत् । चङ् में धातु का द्वित्व होता है । 'सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे" । सन्वद्भाव के कारण दीर्घ भी होता है—"दीर्घोलघोः" । अङ्, चङ् क, अण्, ण, अञ्, ट, अच्, शप् श, णल् आदि प्रत्यय अंततोगत्वा एक 'अ' कार के ही विविध रूप हैं । केवल अनुबन्धों के कारण भिन्नता पायी जाती है । प्रत्येक अनुबन्ध का एक विशिष्ट प्रयोजन भी होता है । कहीं-कहीं तो कोई अनुबंध नहीं; सिर्फ 'अ' कार ही प्रत्यय के रूप में विहित है—"ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे" । इस प्रकार प्रत्ययों के योग से होनेवाले विकारों की सूचना देने के लिए, उन प्रत्ययों में ही कुछ संकेत अनुबंधों के रूपों में लगा दिये गये हैं, जिससे रूपनिष्पत्ति की प्रक्रिया को समझने में आसानी हो ।

कुछ प्रत्यय स्वयं तो 'ङित्' नहीं हैं । जैसे, तस्, झि, त, आताम् इत्यादि । फिर भी, इनको अतिदेश (आरोप) से ङित् मानते हैं—"सार्वधातुकमपित्" । परस्मैपदों में एकवचन के प्रत्यय तीनों तिप्,

सिप् और मिप्—ही 'पित्' हैं। अतः ये ङित् नहीं हैं। बाकी सब प्रत्यय (परस्मैपद के द्विवचन और बहुवचन, तथा आत्मनेपद के समस्त प्रत्यय) अपित् हैं और इसी कारण से ङित् हैं। तो परस्मैपद के एकवचन में गुण होता है—सुनु+ति=सुनोति। सुनोषि। सुनोमि। द्विवचन तथा बहुवचन में गुण नहीं होता। 'सुनतः, सुन्वन्ति' इत्यादि। आत्मनेपद में सर्वत्र गुण का अभाव पाया जाता है।

षुञ्—अभिषवे, उभयपदी, 'स्वादिभ्यः श्नुः'।

परस्मैपद

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. पु | सुनोति | सुनुतः | सुन्वन्ति |
| प्र. पु. | सुनोषि | सुनुथः | सुनुथ |
| उ. पु. | सुनोमि | सुन्वः/सुनुवः | सुन्मः/सुनुमः |

आत्मनेपद

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. पु. | सुनुते | सुन्वाते | सुन्वते |
| म. पु. | सुनुषे | सुन्वाथे | सुनुध्वे |
| उ. पु. | सुन्वे | सुन्वहे/सुनुवहे | सुन्वहे। सुनुमहे |

इस प्रकार गुण की व्यवस्था की गयी है।

लेकिन कहीं-कहीं स्वगत पित्त्व तथा आतिदेशिक ङित्त्व में विरोध प्राप्त है। विधिलिङ् लकार में परस्मैपद एकवचन के रूप हैं—सुनुयात् (प्र० पु०) सुनुयाः (म० पु०) और सुनुयाम् (उ० पु०)। यहाँ तिङ् प्रत्यय तो पित् हैं। किन्तु इनका आगम 'यासुट्' ङित् कहा गया है—"यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च"। तो यहाँ शंका होती है कि 'यात्' को पित्त्व के कारण अङित् मानें, या यासुट् के कारण उसे ङित् ही मानें? इसीप्रकार लोट् लकार में सुनवानि, सुनवाव सुनवाम" आदि रूप पाये जाते हैं। यहाँ ङित् प्रत्ययों में भी गुण हुआ है। उत्तम पुरुष (लोट) में 'आट्' आगम विहित है—"आडुत्तमस्य पिच्च"। उसका पित्त्व विशेषविहित है। वस् या मस् का ङित्त्व आतिदेशिक है तो यहाँ भी शंका होती है कि वस्, मस् आदि प्रत्ययों को ङित् मानें या आडागम के कारण पित् मानें? भाष्यकार ने यहाँ अपना निर्णय इन शब्दों में दिया है—"ङिच्च, पिन्न, पिच्च ङिन्न" ङित्त्व विशेष विहित है तो उससे स्वगत पित्त्व का भी बाध होता है। अतः परस्मैपद के एक वचन प्रत्यय स्वयं पित् होते हुए भी यासुट् के कारण ङित् ही माने जायेंगे। इसी प्रकार पित्त्व का विशेष विधान करने से आतिदेशिक ङित्त्व का बाध होता है। अतः लोट् के वस्, मस् आदि प्रत्यय स्वयं अतिदेश से ङित् होते हुए भी आट् के कारण पित् माने जाएँगे। यह गुणव्यवस्था में अनुबन्धों का महत्त्व है।

अनुबन्धों की व्यवस्था करने से पहले वैयाकरण को पता लगाना चाहिए कि कहाँ कौनसा विकार हो रहा है और उसकी सिद्धि के लिए कौनसा अनुबंध अपेक्षित है। 'तुदति, लिखति, क्षिपति' आदि में लघूपधगुण नहीं पाया जाता; "शोचति, सेधति, भवति, हरति" आदि में गुण पाया जाता है। अतः पाणिनि ने तुद आदि कुछ धातुओं को 'तुदादि' गण में रखकर उनके लिए विकरण प्रत्यय 'श' का विधान किया— "तुदादिभ्यः शः"। यह प्रत्यय अपित् है। अतः ङित् बनता है। "सार्वधातुकमपित्" ङित्त्व के कारण गुण का निषेध किया जाता है —"क्ङिति च", इसी उद्देश्य के लिए 'श' को अपित् बनाया है। 'भू' आदि धातुओं में गुण की सिद्धि के लिए 'शप् का विधान किया है। कर्तरि शप्,। शप् के पित्त्व के कारण वह ङित् नहीं होगा। अतः गुण का निषेध प्राप्त नहीं होता।

तो जिन धातुओं में गुण पाया जाता है, उन्हें पाणिनि ने 'भ्वादि' गण में स्थान दिया है। गणपाठ, अनुबंधव्यवस्था आदि सब का मूलाधार भाषाई तथ्यों का आकलन है और इसी आकलन के आधार पर पाणिनि ने अष्टाध्यायी का निर्माण किया है।

वास्तव में धातु रूपों का तथा प्रत्यय भाग का निर्णय करना भी कठिन कार्य है। भाषा में 'भवति' बभूव, भविता, भवतु, अभवत्, भवेत् अभूत्, आदि कई रूप मिलते हैं। इनमें कितना अंश धातु का है और कितना प्रत्यय का है? यदि कोई 'भवति' को देखकर कहे कि इसमें 'भव' धातु है और 'ति' प्रत्यय है, तो उसके सामने यह समस्या होगी कि अन्य लकारों में 'भव' का रूपान्तर कैसे हुआ "भवस्य लिटि बभूव्" "भवित् लुटि" भविष्य लृटि" "अभव् लङि" इत्यादि सूत्रों के रूप में आदेशों का विधान करे, तो इन सव आदेशों में 'लाघव' (brevity) कहाँ है? सिर्फ एक धातु के लिए इतने नियम बनायें, तो अन्य धातुओं के विविध रूपों की व्याख्या कैसे कर पाएँगे? अतः लाघव और स्पष्टता को दृष्टि में रखकर धातु के मूल रूप का निर्णय करना पड़ता है।

प्रत्ययों के स्वरूप का निर्धारण भी इसी आधार पर होता है। "नायक :, पाचक :, कारकः 'आदि में वृद्धि हुई है। अतः, इस 'अक' ( पाणिनि ने इसको 'ण्वुल्' कहा। णकार और लकार इत् हैं। 'वु' का 'अक' होता है। युवोरनाकौ।" ) को णित् करना चाहिए। "ण्वुल् तृचौ"। अचोञ्णिति अत उपधाया :। इसी प्रकार वृद्धि के लिए 'णिनि' प्रत्यय को भी णित्' किया है— "सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये"। शीघ्रकारी। कहीं कहीं णित्त्व के कारण प्राप्त वृद्धि का निषेध करने के लिए दूसरा उपाय करना पड़ता है। 'णिच्' (प्रेरणार्थक प्रत्यय) को वृद्धि के लिए णित् बनाया है — कारयति, पाचयति पाठयति, इत्यादि। किंतु 'घटयति, रमयति' इत्यादि में यह वृद्धि नहीं पायी जाती। अतः कुछ धातुओं को 'मित्' कहा। "मितां ह्रस्व :" लक्ष्य के अनुसार अनुबंधों की कल्पना करके गुण, दीर्घ, संप्रसारण, ह्रस्व आदि कई प्रकार के विकारों की व्यवस्था की गयी है।

पाणिनि ने उणादि प्रत्ययों को सामान्य रूप से तो स्वीकार किया, किंतु इन प्रत्ययों से निष्पन्न कई शब्दों को अव्युत्पन्न ही माना। उणादि प्रत्ययों के संबंध में पाणिनीय व्याकरण के आचार्यों ने इस कारिका में 'सामान्य सिद्धान्त (general principles) का निरूपण किया है—

"संज्ञासु धातु रूपाणि प्रत्ययाश्च ततः परे।
कार्याद्विद्या दनूबन्ध, मेतच्छास्त्र मुणादिषु ॥

इसका भाव है कि "किसी प्रातिपदिक को देखकर विचार करना चाहिए कि इसके मूल में कौनसा धातु हो सकता है। फिर उसके अनुरूप परवर्ती प्रत्यय के अंश का निर्णय करना चाहिए। प्रत्यय का निर्णय करते समय ही उस प्रातिपदिक में उपलब्ध विकारों की सिद्धि के लिए उपयुक्त अनुबंधों का भी निर्णय करना चाहिए। उणादियों में शास्त्र की प्रक्रिया ऐसी ही होती है।" यह कारिका उणादि के बारे में लिखी गयी है। किंतु पाणिनि के समस्त व्याकरण पर इसे लागू कर सकते हैं। उन्होंने अष्टाध्यायी में इसी प्रक्रिया का अनुसरण किया है उनकी पदसंरचना की प्रक्रिया इस बात का स्पष्ट प्रमाण है।

उपसंहार में हम यही दुहराना चाहते हैं कि पाणिनि ने संस्कृत भाषा के लिए 'पद' की निश्चित परिभाषा दी है—'सुप्तिङन्तं पदम्'। पद का पूर्वार्ध प्रकृति है, जिसके दो वर्ग किए गए हैं— प्रातिपदिक और धातु। धातुओं कीं संख्या अपेक्षा कृत कम है। अतः पाणिनि ने धातुपाठ का निर्माण करके उनका एक प्रामाणिक संकलन तैयार किया। यह सही है कि कुछ धातु इस गणपाठ में नहीं

पाये जाते। वामन ने काव्यालंकार सूत्रवृत्ति में एक प्रसंग में कहा है—"वर्धते धातुगण:" धातुओं की संख्या में वृद्धि हो रही है।" अर्थात् कई नये धातु प्रयोग में अवतरित हो रहे हैं। पाणिनि के सूत्रों में ही कुछ ऐसे धातु मिलते हैं, जो धातुपाठ में उपलब्ध नहीं हैं। इन्हें 'सौत्र धातु' कहा जाता है। इसका निष्कर्ष यही निकलता है कि पाणिनीय धातुपाठ अभी 'पूर्ण' (exhaustive) नहीं है। किंतु इस कमी के बावजूद धातुपाठ के महत्त्व को स्वीकार करना ही चाहिए। ये धातु दस गणों में विभाजित हैं। पहला गण 'भ्वादि' सबसे बड़ा गण है। इसमें एक हजार से अधिक धातु पाये जाते हैं। बाकी सब गणों में कुल मिलाकर एक हजार से कम ही धातु उपलब्ध हैं। गणों का विभाजन विकरण प्रत्ययों के निर्णय की सुविधा के लिए किया गया है। धातुओं में तीन वर्ग किए जा सकते हैं (1) परस्मैपदी, (2) आत्मनेपदी तथा (3) उभयपदी। अनुदात्त स्वर या ङकार इत् है तो उस धातु के बाद आत्मनेपद प्रत्यय ही लगते हैं—"अनुदात्तङित आत्मनेपदम्" स्वरित स्वर या ञकार इत् है, तो उस धातु के बाद, क्रियाफल कर्तृगामी हो तो आत्मनेपद प्रत्यय लगते हैं; "स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले"। यदि क्रियाफल परगामी है तो परस्मैपद लगते हैं। उदाहरण के लिए 'यज' धातु को लें। यह स्वरितेत् है। जहाँ यजन का फल कर्ता को मिलता है, वहाँ आत्मनेपद का प्रयोग होता है —"दशरथ : पुत्रार्थं यजते"। जहाँ क्रियाफल परगामी है, वहाँ परस्मैपद होता है—"पुरोहित : यजति"। अर्थात् ऐसे धातु उभयपदी होते हैं। बाकी सब धातुओं के बाद परस्मैपद प्रत्यय लगते हैं—"शेषात्कर्तरि परस्मैपदम्"। कहीं कहीं उपसर्ग के कारण आत्मनेपद या परस्मैपद की व्यवस्था में परिवर्तन भी पाया जाता है। 'रम' धातु आत्मनेपदी हैं — 'रमते' किंतु वि, आङ तथा परि के बाद वह परस्मैपदी बन जाता है—"व्याङ्परिभ्यो रमः"। विरमति, आरमति इत्यादि। 'स्था' धातु परस्मैपदी है — 'तिष्ठति'। किंतु 'सम्, अ, प्र' और 'वि' के बाद 'स्था' आत्मनेपदी बनता है — "समवप्रविभ्य : स्थ :"। संतिष्ठते, अवतिष्ठने इत्यादि। परस्मैपद तथा आत्मनेपद की व्यवस्था से सम्बन्धित नियम प्रथम अध्याय के तृतीय पाद में विस्तार से दिये गये हैं।

प्रातिपदिकों की कोई निश्चित संख्या नहीं हो सकती। 'ऊह' के आधार पर कई प्रकार के नए शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। फिर भी, यदृच्छाशब्द या अव्युत्पन्न प्रातिपदिक के संबंध में 'प्रतिपदपाठ' की आवश्यकता भाष्यकार ने स्वीकार की है। 'मंचक' के स्थान पर कोई गलती से 'मंजक' कहे, तो कैसे साबित किया जाय कि यह गलत हैं? 'शश' को 'षष' कहें, तो कैसे सिद्ध करें कि 'षष' गलत हैं? यदि किसी धातु से ये शब्द बने हैं तो धातु के मूलरूप को देखकर शुद्धि या अशुद्धि का निर्णय किया जा सकता है। यदि अव्युत्पन्न शब्द हैं. तो फिर निर्णय क्या होगा? प्रयोग ही इसका नियामक है। अतः शिष्टप्रयोग को देखकर व्याकरण के परिशिष्ट के रूप में शब्दकोश (lexicon) का भी संकलन करना चाहिए। यह भाष्यकार पतंजलि का सिद्धान्त है। भाषा में प्रयुक्त शब्दों का व्याकरण में अन्वाख्यान होता है। **प्रयोग ही शब्दसाधुत्व का एकमात्र आधार है।** उस प्रयोग के अनुसार व्याकरण का निर्माण होता हैं। "प्रयोगशरणा वैयाकरणाः"। व्याकरण के नियमों के आधार पर कुछ शब्द बन सकते हैं; किंतु प्रयोग में वे उपलब्ध नहीं हैं, तो उनको हम 'साधु' नहीं मान सकते। इसे 'अनभिधान' कहते हैं। प्रातिपदिकों के संबंध में पाणिनि और पतंजलि की यह धारणा आधुनिक भाषाविज्ञान के सिद्धांतों के अनुसार भी ठीक ही प्रतीत होती है।

भर्तृहरि ने पाणिनि की वैज्ञानिक दृष्ठि की व्याख्या में लिखा है कि प्रकृति, प्रत्यय और विकार की कल्पना केवल भाषाज्ञान के लिए की गयी है; इसे वास्तविक नहीं समझना चाहिए—

"पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च,
वाक्यात्पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन"

सत्य को पहचानने के लिए असत्य (कल्पना) का सहारा लेना पड़ता है। भाषा सत्य है; उसको प्राप्त करने के लिए धातु, प्रत्यय आदि की कल्पना करते हैं—

"असत्ये वर्त्मनि स्थित्वा ततः सत्यं समीहते"।

———

लक्ष्मीनरायण शर्मा

# आगरा नगर के मुहल्ले

*Abstract*

The present essay is an extract of the dissertation 'A linguistic study of the muhallas of Agra' written for M.A. Linguistics in 1964. The essay is divided in the parts—(i) Introduction (ii) Main (iii) Appendix.

The introductory portion of the essay contains the general theories about human names and place names. In the main portion of tha essay, the analysis of the muhallas', names contains the description of the main part and the following part of the muhalla-names ; the source languages ; the phonemic, morphophonemic changes and their syllabic formation process. An etymological descriptipn of some important names of muhallas has been presented in this essay.

In the appendix geographical, historical and socioeconomical study of 20 important muhallas has been done in a nut shell as a model. Tee muha lla names under this portion in the dissertation are 452 in number.

अंग्रेज़ी onomatology, onomasiolog youomastics के लिए हिन्दी में 'नामविज्ञान' शब्द का व्यवहार होता है। 'नाम' शब्द या शब्दों का समूह है जिससे किसी व्यक्ति वस्तु, स्थान, होना या सत्ता आदि का बोध होता है। वस्तु, स्थान या व्यक्ति-नाम से उनका सार्थक सम्बन्ध आवश्यक नहीं है। 'कृपाराम' महा क्रूर प्रकृति के, 'घूरेमल' अति आकर्षक तथा 'सुन्दरलाल' अत्यन्त कुरूप हो सकते हैं। 'महावन' में वन खोजने पर भी न मिले और 'सूखापुर' में लहलहाती खेती दिखाई दे। तात्पर्य यह है कि 'नाम' संकेत या प्रतीक है जो यादृच्छिक भी हो सकता है, यथा—कंगाल-पुत्र का नाम 'हीरानाथ' तथा करोड़पति-पुत्र का नाम 'दमड़ीदास'।

नाम-अध्ययय अपने आप में एक ओर तो मनोरंजक है ही दूसरे इससे हमारी जिज्ञासा की शान्ति भी होती है और साथ ही समाज के अन्धविश्वास, प्राचीन इतिहास तथा संस्कृति, जाति-मिश्रण और मनोविज्ञान आदि पर भी प्रकाश पड़ता है। स्थान-नामों की आवश्यकता कभी-कभी ही पड़ती है किन्तु व्यक्ति नामों की आवश्यकता प्रतिदिन पड़ती रहती है। व्यक्ति-नाम समय-परिवर्तन के साथ बदलते रहे हैं, यथा—विश्वामित्र, वशिष्ठ, दुर्वासा, ध्रुव, राम; युधिष्ठिर, भीम, दुर्योधन, दुःशासन, नल; अमिताभ,

---

१, यह लेख 'आगरा नगर के मुहल्ला-नामों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन' एम० ए० के लिए लिखे गये शोध निबन्ध के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

सिद्धार्थ, ऋषभ, जैनेन्द्र; अशोक, चन्द्रगुप्त, चाणक्य; रामगुलाम, इज्ज़तसिंह, मुन्शीराम, खुरशेद; स्वीटी, रीटा, बेबी, डिप्टीसिंह, कप्तानसिंह; ओमप्रकाश, वेदप्रकाश, वेदमित्र, ओमवती; देशराज, भारतभूषण, स्वदेशीलाल, जयहिन्द, स्वराज्यपाल, बुल्गानिनसिंह।

मुसलमानों के भारत-प्रदेश से पूर्व नगर, ग्राम, मुहल्ले आदि के नामों के साथ ग्राम, पल्ली, क्षेत्र प्रस्थ, स्थल, हट्ट, पुर, नगर, पट्टन, मंडप, चत्वर, चतुष्क तथा इनके तद्भव रूपों (यथा—गाँव, पाली, खेत, थान, हाट, उर, ऊर, नेर, चौंतरा आदि) का प्रयोग होता था। मुस्लिमकाल में कटरा, बाज़ार, बाड़ा, कूचा, गली, बाग़, बस्ती, दरवाज़ा, मुहल्ला, दरीबा, गंज, फाटक, आदि का प्रयोग बढ़ा तथा अंग्रेज़ी शासन ने रोड, गार्डन, मार्केट, सिटी, गेट आदि के प्रयोग का अवसर प्रदान किया। स्वतन्त्रता-आन्दोलन ने व्यक्ति-नाम की भाँति ही स्थान-नाम पर भी अपनी छाप छोड़ी है। मुख्यतः पुर, नगर, पुनः व्यवहृत होने लगे हैं।

आगरा नगर ने मुस्लिम राज्य, अंग्रेजी राज्य तथा स्वराज्य के अनेक वर्ष अनेक परिवर्तनों के साथ देखे हैं। इन परिवर्तनों, राज्यों की झलक इस नगर के मुहल्ला-नामों में भी देखी जा सकती है। १६५६ ई० में आगरा नगर में ४५२ मुहल्ले थे जो सात क्षेत्रों—छत्ता, कोतवाली, हरीपर्वत, रकाबगंज, ताज़गंज, लोहामंडी तथा छावनी में विभक्त थे। इन मुहल्लों के नामों में नगर-इतिहास तथा संस्कृति छिपी हुई है।

मुहल्लों के नामकरण की विभिन्न प्रवृत्तियों तथा इतिहास पर लिखित सामग्री का अभाव होने के कारण अनुश्रुति-जनुश्रुति तथा अनुमान प्रमाण ही सहायक सिद्ध होते हैं। कुछ मुहल्ला-नामों के काल-निर्णय तथा नामकरण में कभी-कभी गम्भीर स्थिति उपस्थिति हुई। अतः मुहल्ला–विवरण प्रस्तुतीकरण में कहीं-कहीं 'अनुमान है', 'जनश्रुति है, 'लगभग जैसे निर्देशों का प्रयोग करना आवश्यक हो गया।

१. नगर के मुहल्ला-नामों में साम्प्रदायिक, धार्मिक, दार्शनिक, आर्थिक आदि मनोवृत्तियों के दर्शन होते हैं। वर्गीकरण तथा विश्लेषण करने पर मुहल्ला-नाम के सामान्यतः दो अंश प्राप्त होते हैं—पूर्वांश, जो प्रायः किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव का सूचक है; उत्तरांश, जो मुहल्ला या बाज़ार-वाची किसी शब्द का सूचक है; यथा—'गान्धीनगर' में 'गान्धी' पूर्वांश तथा 'नगर' उत्तरांश है। यह आवश्यक नहीं है कि पूर्वांश व्यक्ति, वस्तु या भाव का द्योतक हो ही यथा—'नगला धनी' में पूर्वांश 'नगला'।

जिस आधार पर मुहल्ले का नामकरण हुआ है उसे मूल प्रवृत्ति-द्योतक या मुख्यांश माना जा सकता है। मुख्यांश के अतिरिक्त वे अवशिष्ट अंश जो नामपूर्ति में सहायक हैं, गौण-प्रवृत्ति—द्योतक या गौणांश कहे जा सकते हैं, यथा—'हींग की मंडी' में 'हींग' मुख्यांश है क्योंकि इस अभिधान में 'हींग' का प्राधान्य है। 'मंडी' गौणांश या सहायक अंश है। कुछ मुहल्ला-नामों में गौणांश का अभाव है, यथा—'सिकन्दरा' तथा कुछ मुहल्ला-नामों में मुख्यांश का अभाव है, यथा—'बँगलाज़', 'नगरिया'। मुख्यांश-हीन मुहल्ला-नामों में मुख्यांश का अभाव प्रयत्नलाघव या मुख्यांश से अपरिचय अथवा काल-क्रम में मुख्यांश के लोप होने के कारण हो सकता है।

मुहल्ला-नामों में एक ही शब्द कुछ स्थलों पर मुख्यांश तथा गौणांश रूप में प्रयुक्त है, यथा—'खेरिया' बस्ती द्योतक होने से गौणांश है परन्तु 'खेरिया का नगला' में स्पष्टतः मुख्यांश है क्योंकि यहाँ यह बस्ती द्योतक शब्द न होकर एक अन्य मुहल्ले के नाम का सूचक है तथा स्वयं बस्ती द्योतक शब्द 'नगला' गौणांश से युक्त है।

मुहल्ला-नाम रचना की दृष्टि से सरल, संयुक्त तथा संश्लिष्ट श्रेणी के हैं—

(क) **सरल प्रवृत्ति**—जिन नामों में केवल मुख्यांश या गौणांश ही है, यथा—'खेरिया; नख़ासा; नगरिया; बँगलाज़' आदि केवल गौणांश हैं, तथा 'उखर्रा, कानापटैल, चक्कीपाट, आदि केवल मुख्यांश हैं। १४७ मुहल्ला-नाम इसी कोटि के हैं।

(ख) **संयुक्त प्रवृत्ति**—जिन नामों में एक से अधिक अर्थ द्योतक शब्द—एक मुख्यांश + एक गौणांश—हैं यथा 'नगला धनी' (गौणांश + मुख्यांश); अकबरपुर (मुख्यांश + गौणांश। अधिकांश नाम इसी कोटि के हैं।

(ग) **संश्लिष्ट प्रवृत्ति**—जिन नामों में दो गौणांश प्रयुक्त हैं। ऐसे नाम केवल तीन हैं—आदर्श नगर कॉलोनी; विजय नगर कॉलोनी; नार्थ विजय नगर कॉलोनी। इनमें नगर तथा कॉलोनी बस्ती सूचक शब्द हैं जिनकी एक अर्थ में ही पुनरावृत्ति है। यह आधुनिककालीन प्रवृत्ति है।

## १.१ मुख्यांश-विवरण

नामकरण-प्रवृत्ति की दृष्टि से इन मुहल्ला-नामों में जिन विभिन्न प्रवृत्तियों के बोधक शब्द प्राप्त हुए हैं उनका आवर्तन, प्रतिशत तालिका संख्या १ से स्पष्ट है। ४ नामों में केवल गौणांश है अतः मुख्यांश संख्या ४४८ है।

### तालिका संख्य १—मुख्यांश आवर्तन

| प्राणीवाचक | आवर्तन | प्रतिशत | अप्राणीवाचक | आवर्तन | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| देवी-देवता संज्ञक | १६ | ७.५ | ऐतिहासिक वस्तु संज्ञक | ४२ | १७.८ |
| महापुरुष संज्ञक | १४ | ६.६ | भूमि संज्ञक | १७ | ७.२ |
| गणमान्य व्यक्ति संज्ञक | १०४ | ४९.० | जल संज्ञक | १५ | ६.४ |
| हिन्दू जाति संज्ञक | ३२ | १५.१ | मार्ग-चौक संज्ञक | १४ | ५.९ |
| मुसलमान जाति संज्ञक | १२ | ५.७ | तरु—उद्यान संज्ञक | १३ | ५.५ |
| व्यवसायी संज्ञक | १२ | ५.७ | ग्रामादि संज्ञक | ४ | १.७ |
| पशु-पक्षी संज्ञक | ४ | १.९ | संस्था संज्ञक | ५ | २.१ |
| उपाधिधारी संज्ञक | १७ | ८.० | उद्योग—व्यापार संज्ञक | ५९ | २५.० |
| परिवार संज्ञक | १ | ०.५ | विशेषण—भाववाचक संज्ञक | ३५ | १४.८ |
| | | | गृह संज्ञक | १४ | ५.९ |
| | | | कब्र आदि संज्ञक | ६ | २.६ |
| | | | विविध | १२ | ५.१ |
| योग | २१२ | १०० | योग | २३६ | १०० |

शिव, राम, कृष्ण, बलदेव, हनुमान, भैरों, शीतला, मनसा देवी, मदन को आधार बनाकर जिन मुहल्लों का नाम रखा गया है उनमें कामदेव के अतिरिक्त अन्य देवी-देवताओं के मन्दिर (प्राचीन या नवीन) बने हुए हैं। जनता में इनके प्रति भक्ति भावना भी विद्यमान है। कामदेव का नगर की जनता से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है क्योंकि उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध नगर 'मैनपुरी' के कुछ निवासी मुग़लकाल में इधर आकर बसे थे तथा उन्होंने अपनी जन्मभूमि का प्राचीन नाम ही इस नवीन स्थान को दे दिया।

इतिहास-प्रसिद्ध हिन्दू, मुसलमान महापुरुषों (प्रसिद्ध बादशाह, सरदार, कवि) के नामों पर

बसे हुए मुहल्ले स्वतन्त्रता की भावना के सूचक महापुरुषों के नामों पर बसे मुहल्लों की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। दो मुहल्ले मुसलमान सिद्ध पुरुषों से सम्बन्धित हैं।

अपने समय के लब्ध-प्रतिष्ठ व्यक्तियों (हिन्दू ६९ : मुसलमान ३० : अंग्रेज़ ५) के नामों से सम्बन्धित मुहल्लों में से कुछ मुहल्ले उन व्यक्तियों द्वारा बसाए गए थे तथा कुछ उनकी प्रतिष्ठा के कारण उनके नाम पर मुग़लकाल से लेकर अब तक भिन्न-भिन्न समय पर आबाद हुए हैं।

हिन्दू जाति की विभिन्न उपजातियों के नामों से सम्बन्धित मुहल्ले मुग़लकाल से लेकर अब तक भिन्न-भिन्न समय पर इन जातियों के व्यक्तियों ने बसाए हैं। इन जातियों के व्यक्तियों की संख्या कुछ मुहल्लों में कभी प्रमुख थी तथा कुछ में अब भी है। 'खालसा गली' 'नाई की मन्डी' में सिक्ख नाइयों की प्रमुखता के विषय में निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। 'यादव नगर' प्रधानतः जाटव लोगों की बस्ती है परन्तु उन लोगों ने मुहल्ले का नाम यादव जाति पर रखा है।

मुसलमानों की विभिन्न उपजातियों के नामों से सम्बन्धित प्रायः सभी मुहल्ले मुग़लकालीन हैं। आजकल कुछ मुहल्लों में ही तत्सम्बन्धित जाति के व्यक्ति प्रमुख रूप से रह गए हैं क्योंकि पाकिस्तान बनने के कारण प्रायः लोग वहाँ चले गए।

व्यवसायी संज्ञक मुहल्लों में तत्सम्बन्धी कार्य करनेवालों की कभी प्रमुखता थी। 'बल्केश्वर लेवर कॉलोनी' के अतिरिक्त अन्य सभी मुहल्ले मुग़लकालीन हैं।

वीरता, धन, विद्या, सम्मान विशेष, राजपद से सम्बन्धित उपाधिधारी व्यक्तियों से सम्बन्धित मुहल्लों में से पादरी टोला, मलका गली के अतिरिक्त अन्य मुहल्ले प्राचीन हैं। इन मुहल्लों में से कुछ को उपाधिधारी व्यक्ति विशेष ने स्वयं बसाया था तथा कुछ मुहल्ले उपाधिधारी व्यक्ति विशेष के नाम पर उसकी प्रमुखता अथवा महानता के कारण बसे हैं।

पशु-पक्षियों (ऊँट, शाही घोड़े, बकरियाँ, चील) को आधार बना कर बसे मुहल्लों में से 'कुतलूपुर : बकरी मंडी' मुग़लकालीन बस्तियाँ हैं तथा अन्य परवर्ती काल की हैं।

परिवार 'स्वजन' शब्द से युक्त मुहल्ला 'गली बारह भाई' मुग़लकालीन बारह भाइयों द्वारा बसाया गया था।

ऐतिहासिक नगर आगरा के जिन मुहल्लों का नाम ऐतिहासिक वस्तुओं के नाम पर है, उनमें केवल 'छत्ता राजा काशी' ब्रिटिशकालीन है। इन ऐतिहासिक वस्तुओं में दरवाजा, बाग, हवेली, मस्जिद, तोपखाना, मदरसा प्रमुख हैं। 'गुम्मट' का पूरा नाम अज्ञात है तथा 'नौलक्खा बाग़' में से बाग़ के नष्ट होने के साथ-साथ 'बाग़' शब्द भी लुप्त हो गया हैं। मुहल्ला-नामों से सम्बन्धित वस्तुओं में से अब केवल आगरा फ़ोर्ट, ताजगार्डन, कंसगेट, कालामहल, गुम्मट, छत्ता राजा काशी, जामा मस्जिद, तख्त पहलवान, ताल फ़ीरोज़ खां, दखनाई फाटक, देहली गेट, रामबाग़, पाथरघोड़ा, बाग़, ऐतमाद-दौला, मस्जिद मुखन्निसान, लाल मस्जिद, शीतला का बाग़, सीढ़ी दरवाज़ा ही शेष हैं तथा अन्य वस्तुएँ समय-फेर से नष्ट हो चुकी हैं। कुछ वस्तुओं को ब्रिटिशकाल में अंग्रेज़ी संज्ञा दे दी गई थी।

भूमि की विभिन्न दशाओं के सूचक मुहल्लों में टीला, घटिया को प्रमुखता प्राप्त है। इन मुहल्लों में कुछ मुग़लकालीन हैं तथा कुछ आधुनिक हैं। टीला तथा घटिया से सम्बन्धित भूमि प्रायः किसी विशिष्ट व्यक्ति से सम्बन्धित रही है। मुहल्लों की भूमि की दशा में समय-फेर से थोड़ा बहुत परिवर्तन भी होता रहा है।

जल वर्ग सेसम्बन्धित मुहल्लों में नाला, कुआँ, घाट शब्द प्रमुख हैं। सभी मुहल्ले लगभग मुग़ल

कालीन हैं। नाले, किनारे से सम्बन्धित मुहल्ले नाले, किनारे के पास हैं तथा कुओं में केवल 'चाह इन्द्र', 'रँहट' शेष हैं अन्य कूएँ, घाट, बावड़ी काल-क्रम से परिवर्तन को प्राप्त हो गए।

मार्ग तथा चौक सम्बन्धी मुहल्लों में से अधिकांश ब्रिटिशकालीन हैं प्रमुखत: रोड, चौक, पुल के पास ही ये मुहल्ले बसे हुए हैं।

तरु-उद्यान से सम्बन्धित मुहल्लों में 'खिन्नी गली, पीपलमण्डी' के अतिरिक्त शेष मुहल्ले ब्रिटिशकालीन हैं। बाग, कुंज, बगीची शब्द जोड़ने की प्रवृत्ति में 'कुंज' की प्रवृत्ति नवीन है। मुहल्लों के तरु उद्यान समय-फेर के साथ समाप्त-प्राय हो चुके हैं। किसी-किसी मुहल्ले में किंचित चिह्न शेषहैं।

भिन्न-भिन्न समय पर बसे हुए नगर के कुछ मुहल्ले अन्य मुहल्लों के नामों से युक्त हैं। इस प्रवृत्ति का कारण एक मुहल्ले का किसी बड़े मुहल्ले के अन्दर होना अथवा एक मुहल्ले के निवासियों द्वारा दूसरा मुहल्ला पहले मुहल्ले से सम्बन्धित नाम पर बसा लेना है।

विभिन्न संस्थाओं के नामों पर बसे मुहल्ले ब्रिटिशकालीन हैं। पी० ए० सी० तथा पुलिस (लाइन्स) के अतिरिक्त अन्य संस्थाएँ समाप्त हो चुकी हैं।

उद्योग-व्यापार संज्ञक मुहल्ले मुगल काल के पूर्व से लेकर आधुनिक काल तक भिन्न-भिन्न समय पर बसे हैं। मुहल्ला-नाम से सम्बन्धित उद्योग या व्यापार अब कुछ ही मुहल्लों में होता हैं। नामों में नमक, सब्ज़ी, सूत, गुड़, कसेरट, कोयला, रुई जूतों की प्रमुखता है। 'नुनिहाई' के नमक उद्योग व्यापार के बारे में निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता।

मुग़लकाल से लेकर अब तक भिन्न-भिन्न समय पर बसे मुहल्लों में कुछ मुहल्ले विशेषता सूचक तथा कुछ भाववाचक शब्दों से युक्त हैं। प्रमुखता क्रम नई, नया, बसना, विजय का है। विशेषण शब्दों में अधिकांशत: गुणसूचक हैं।

घर, चौकी आदि से युक्त मुहल्ले मुग़लकाल से लेकर अब तक भिन्न-भिन्न समय पर आबाद हुए हैं। अथाई, छत्ता, रावली समय-फेर से नष्ट हो गए।

कब्र वर्ग के मुहल्ले मुगलकालीन हैं जिनमें सैयद, तकिया शब्दों की प्रमुखता है। कुछ मुहल्लों में अब भी सैयद, तकिया वर्तमान हैं क्योंकि धार्मिक भावना के कारण समय-समय पर इनकी मरम्मत होती रहती है। ये सैयद, तकिए इतिहास-प्रसिद्ध नहीं हैं।

विविध वर्ग से सम्बन्धित मुहल्ले भी मुग़लकाल से लेकर अब तक भिन्न-भिन्न समय पर बसे हैं। फ़ार्म, स्टेण्ड के अतिरिक्त अन्य सभी पदार्थ नष्ट हो गए। इन मुहल्लों का नामकरण विविध रूपों को प्रस्तुत करता है, यथा—'कारवाँ; खतैना; चावली; छिलीईंट; टाल अमरसिंह; नवादा; फ़ार्म; मीरा हुसैनी; सदरभट्टी; सिलैख़ाना; बहिस्ताबाद, पुराना इक्का स्टेण्ड

## १.२ गौणांश-विवरण

विश्लेषण तथा वर्गीकरण करने पर गौणांश शब्दावली के दो वर्ग प्राप्त हुए हैं—बस्ती सूचक शब्द ; बाजार सूचक शब्द। १४७ मुहल्ले गौणांश रहित हैं तथा ३ मुहल्लों में दो-दो गौणांश हैं। कुल ३०८ गौणांशों का आवर्तन तथा प्रतिशत तालिका संख्या २ से स्पष्ट है।

कॉलोनी शब्द से युक्त मुहल्ले आधुनिक कालीन प्रवृत्ति सूचक हैं। 'रेलवे कॉलोनी' के अतिरिक्त शेष मुहल्ले २० वीं शती के हैं। तीन मुहल्लों में इस शब्द की आवृत्ति अनावश्यक-सी प्रतीत होती है क्योंकि उनमें 'नगर' गौणांश का पूर्व प्रयोग भी है (आजकल 'कॉलोनी' शब्द का प्रयोग इन तीन मुहल्लों के साथ

## तालिका संख्या २—गौणांश आवर्तन

| बस्ती संज्ञक | आवर्तन | प्रतिशत | बाज़ार संज्ञक | आवर्तन | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| कॉलोनी | ११ | ५.२ | | २५ | २५.८ |
| क्वार्टर्स | ३ | १.४ | कटरा | १४ | १५.५ |
| गढ़ | ३ | १.४ | गंज | २१ | २१.६ |
| गढ़ी | ४ | १.९ | बाज़ार | २४ | २४.७ |
| गली | ३० | १४.२ | मंडी | ६ | ६.२ |
| घेर | ३ | १.४ | –हाई | ६ | ६.२ |
| टोला | ६ | २.९ | अन्य | | |
| नगर | १६ | ७.६ | | | |
| नगला | ४५ | २१.३ | | | |
| पाड़ा | २९ | १३.८ | | | |
| पुर | ७ | ३.३ | | | |
| पुरा | २६ | १२.३ | | | |
| बस्ती | ४ | १.९ | | | |
| सराय | ६ | २.९ | | | |
| अन्य | १८ | ८.५ | | | |
| योग | २११ | १०० | योग | ९७ | १०० |

कम किया जाने लगा है)। इस शब्द का प्रयोग किसी एक या दो विशिष्ट मुख्यांश के ही साथ नहीं है वरन् विभिन्न प्रवृत्तियों के सूचक मुख्यांशों के साथ प्रयुक्त है।

क्वार्टर्स का बस्ती सूचक अर्थ आधुनिककालीन प्रवृत्ति है। ये सभी मुहल्ले २० वीं शती के हैं। दो नामों में इस शब्द का प्रयोग व्यक्तिवाची नाम के साथ तथा एक में संख्या के साथ हुआ है।

बस्ती सूचक शब्द के रूप में 'गढ़' शब्द का प्रयोग आधुनिककालीन ही है। किला अथवा खाई से इन मुहल्लों का कोई सम्बन्ध नहीं रहा है। ये मुहल्ले २० वीं शती के हैं जिनमें दो का सम्बन्ध व्यक्तिनाम से तथा एक का पक्षी वर्ग से है।

गढ़ शब्द के समान ही 'गढ़ी' शब्द का बस्ती सूचक प्रयोग आधुनिककालीन है। दो मुहल्लों का सम्बन्ध जातिवाची शब्दों से, एक का व्यक्तिनाम से तथा एक का ग्राम नाम से है। ये मुहल्ले मुग़ल कालीन तथा ब्रिटिशकालीन हैं।

गली शब्द से युक्त अधिकांश मुहल्ले मुग़लकालीन हैं। इस शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रवृत्तियों के द्योतक मुख्यांश शब्दों के साथ हुआ है।

'घेर' शब्द से युक्त मुहल्लों में 'नया घेर' के अतिरिक्त शेष दोनों मुहल्ले मुग़लकालीन हैं। 'नया घेर' के अतिरिक्त शेष दोनों में कभी घेर रहा होगा किन्तु अब यह शब्द बस्ती सूचक ही है।

'पादरी टोला' के अतिरिक्त अन्य मुहल्ले ('टोला' शब्द से युक्त) मुग़लकालीन हैं। इस शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रवृत्तियों के सूचक मुख्यांशों के साथ हुआ है।

'नगर' शब्द से युक्त सभी मुहल्ले २० वीं शती के हैं। तीन मुहल्लों में विकल्प से 'कॉलोनी' शब्द

का भी प्रयोग साथ-साथ होता है । इन तीन मुहल्लों के अतिरिक्त ११ मुहल्ले व्यक्तिवाची नामों से युक्त हैं तथा एक जातिसूचक तथा एक संस्था सूचक शब्द से । नगर शब्द जोड़कर मुहल्ले का रूप देना आधुनिक प्रवृत्ति है ।

'नगला' शब्द से युक्त मुहल्ले १९ वीं, २० वीं शती के हैं । नगला रामबाग़' कुछ अधिक पुराना है । 'खेरिया, छऊआ, ढीम, रामबाग़, नया, पुलिया' मुख्यांश के अतिरिक्त अन्य सभी के साथ व्यक्तिवाची तथा प्रयुक्त हैं ।

'पाड़ा' शब्द से युक्त मुहल्ले मुग़लकालीन तथा ब्रिटिश कालीन हैं । 'कंगाल, करौल, काजी, खटोली, चिली, पुनियाँ, मान, मुंडा सुंदर, सूत' मुख्यांश के अतिरिक्त अन्य में जातिपरक मुख्यांश का प्रयोग हुआ है ।

'पुर' शब्द से युक्त मुहल्ले मुग़लकाल से लेकर अब तक भिन्न-भिन्न समय पर बसे हैं । कुतलू, फ़ज़ीहत' मुख्यांश के अतिरिक्त शेष में व्यक्तिवाची नामों का प्रयोग है ।

मुग़लकाल से लेकर अब तक 'पुरा' शब्द से युक्त मुहल्ले समय-समय पर बसे हैं । १७ मुहल्ले व्यक्तिवाची नामों से तथा ७ जाति सूचक शब्दों से युक्त हैं । एक में उपाधि, एक में व्यवसायी शब्द का प्रयोग हुआ है ।

'बस्ती' शब्द से युक्त मुहल्ले ब्रिटिश काल से पूर्व के हैं । इस शब्द का प्रयोग विशेषण शब्दों के साथ हुआ है ।

'सराय' शब्द से युक्त सभी मुहल्ले मुग़लकालीन हैं । ये मुहल्ले कभी सराय के रूप में थे । इस शब्द से युक्त मुख्यांश विभिन्न प्रवृत्तियों के द्योतक हैं ।

विविध वर्ग के १८ मुहल्ला नामों में तीन गौणांश मुख्यांश-रहित हैं । अन्य गौणांशों के साथ भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों के द्योतक मुख्यांशों का प्रयोग हुआ है । मुहल्लों का समय मुग़ल काल से लेकर अब तक भिन्न-भिन्न रहा है । इनमें प्रयुक्त गौणांश कोष्ठक बद्ध हैं, यथा—बहिस्ताबाद (आबाद); आबादी ताज गार्डन (आबादी); कूँचा साधुराम (कूँचा); खेरिया; नगरिया; नामनेर (नेर); मैनपुरी (पुरी); फाटक सूरजभान (फाटक); मोतीकटरा फाटक (फाटक) बँगलाज़; नौबस्ता (बस्ता); बाड़ा तोताराम (बाड़ा); रजबाड़ा (बाड़ा) नया बास (बास); रोशन मुहल्ला (मुहल्ला); पुलिस लाइन्स (लाइन्स); सिविल लाइन्स (लाइन्स); हलका मदन (हलका) ।

'कटरा' शब्द से युक्त मुहल्ले मुग़ल काल से लेकर अब तक भिन्न-भिन्न समय पर बसे हैं । ११ मुहल्लों में यह शब्द व्यक्तिवाची नामों से युक्त है तथा ७ में उद्योग सम्बन्धी मुख्यांश से और ४ में जातिवाची शब्द से । तीन नाम व्यवसायी, उपाधिवाची मुख्यांशवाले हैं प्रत्येक मुहल्ला आरम्भ में बाजार का रूप रहा हो, या आजकल है, अनिवार्य नहीं है । कुछ मुहल्ले अवश्य पहले बाज़ार का रूप थे । आजकल यह शब्द साधारण रूप से बस्ती वाचक ही रह गया है ।

'गंज' शब्द से युक्त मुहल्ले मुग़लकालीन तथा ब्रिटिशकालीन हैं । 'धूलिया, फ्री, रक़ाब, मुख्यांश के अतिरिक्त शेष का सम्बन्ध व्यक्तिवाची मुख्यांश से है । ये सभी मुहल्ले किसी न किसी समय बाजार के रूप में रह चुके हैं तथा कुछ अब भी बाज़ार में हैं ।

'बाज़ार' शब्द से युक्त मुहल्लों में 'सुभाष बाज़ार' के अतिरिक्त अन्य मुहल्ले मुग़गकालीन तथा ब्रिटिशकालीन हैं । इन में से अधिकांश अब भी बाज़ार रूप में हैं । कुछ का बाज़ार स्वरूप

समाप्त हो गया हैं। इस शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रवृत्तियों के सूचक मुख्यांश शब्दों के साथ हुआ है परन्तु प्रमुखता उद्योग-व्यापारवाची शब्दों की है।

'मंडी' शब्द से युक्त मुहल्ले मुग़लकालीन तथा ब्रिटिशकालीन हैं। १७ नाम उद्योग-व्यापार वर्ग से तथा ७ विभिन्न प्रवृत्तियों के सूचक मुख्यांश शब्दों से युक्त हैं। इन मुहल्लों में से अधिकांश अब भी बाज़ार रूप हैं। कुछ का बाज़ार स्वरूप समाप्त हो गया है।

—हाई[2] प्रत्यय से युक्त मुहल्लों में से एक 'तुनिहाई' मुग़ल काल से पूर्व तथा शेष मुग़ल काल में आबाद हुए हैं। इन सभी मुहल्लों में किसी न किसी समय उद्योग-व्यापार होता रहा है। वर्तमान में तत्सम्बन्धी उद्योग-व्यापार का स्वरूप प्राप्त नहीं है। पूर्व मुग़लकालीन 'तुनिहाई' के उद्योग-व्यापार के विषय में निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता।

अन्य गौणांशों से युक्त मुहल्लों में 'शिवाजी, शू' से युक्त मुहल्ले आनुनिक हैं, अन्य मुग़ल-कालीन हैं। एक नाम मुख्यांश– हीन है तथा दो के साथ 'गुदड़ी बाज़ार' का संक्षिप्त रूप 'गुदड़ी' का प्रयोग है। आजकल 'शिवाजी मार्केट, शू मार्केट, फुलट्टी' वास्तव में बाजार के रूप में हैं, शेष तीन के बाज़ार का वास्तविक स्वरूप समाप्त हो गया है। इन नामों में प्रयुक्त गौणांश कोष्ठक बद्ध हैं, यथा– गुदड़ी सूत ( गुदड़ी ) ; गुदड़ी मंसूर खाँ ( गुदड़ी ) ; नख़ासा ; फुलट्टी ( -ट्टी ) ; शिवाजी मार्केट ( मार्केट ) ; शू मार्केट ( मार्केट )

## २. भाषा—स्रोत

विश्लेषण तथा वर्गीकरण करने पर भाषा —स्रोत की दृष्टि से इन नामों में भिन्न-भिन्न भाषाओं— संस्कृत, हिन्दी, अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेज़ी, पुर्तगाली, सिन्धी—का संयोग प्राप्त है। कुछ नाम ऐसे भी हैं जिन में देशज[4] तथा अनुकरणात्मक शब्द भी प्राप्त हैं। १४७ मुहल्ला – नाम गौणांश-रहित हैं; ३०१ मुहल्ला–नाम गौणांश सहित हैं तथा ४ नाम केवल गौणांश पदवाले हैं। सुविधा की दृष्टि से तीनों वर्गों का विश्लेषण अलग-अलग किया गया है।

## २.१ भेदक शब्द सहित मुख्यांश

'उखर्रा ; बोदला' जैसे १९ नामों में केवल मुख्यांश ही है तथा 'टीला नन्दराम; टीला बालूगंज' जैसे १२८ नामों में मुख्यांश ( 'टीला' ) के साथ उस का भेदक शब्द ( 'नन्दराम ; बालूगंज ) प्रयुक्त है। इस प्रकार के भेद्य ( मुख्यांश ) शब्दों के साथ विभिन्न प्रवृत्तियों के द्योतक भेदक शब्द प्रयुक्त हैं जिन का भाषा-स्रोत की दृष्टि से मुख्यांश के साथ ही उल्लेख किया गया है। इस वर्ग के मुहल्ला–नामों में विभिन्न भाषाओं के ५१ संयोग—रूप प्राप्त हैं जो तालिका संख्या ३ में दिखाए गए हैं।

## २. २ भेदक शब्द सहित मुख्यांश + गौणांश

३०१ मुहल्ला— नामों में कुछ तो ऐसे हैं जिन में केवल मुख्यांश तथा गौणांश का ही प्रयोग है, यथा— 'अहीर पाड़ा' ( मुख्यांश + गौणांश ) ; 'कटरा गाड़ीवान' ( गौणांश + मुख्यांश ) तथा

---

२. इस में '–हा' कर्तृवाची तथा '–ई' स्थानवाची प्रत्यय है।

३. यह 'हट्टी' शब्द का समास रूप में प्रयुक्त संक्षिप्त रूप है।

४. देश—विशेष के लोक-व्यवहार में निराधार अथवा अनुकरणात्मक आधार पर विभिन्न कालों में निर्मित अज्ञात व्युत्पत्तिवाले शब्द।

## तालिका संख्या ३

### भाषा[६] की दृष्टि से भेदक शब्द सहित मुख्यांश

| भाषा | आवर्तन | भाषा | आवर्तन | भाषा | आवर्तन |
|---|---|---|---|---|---|
| सं. | २ | अ. + फ़ा. | ७ | हिं. + फ़ा. + हिं. | १ |
| हिं. | ८ | अ. + तु. | १ | हिं. + फ़ा. + अ. | १ |
| फ़ा. | ४ | अ. + अं. | १ | हिं. + फ़ा. + तु. | २ |
| अं. | ३ | फ़ा. + सं. | २ | हिं. + अं. + फ़ा | १ |
| देश. | २ | फ़ा. + हिं. | ६ | अ. + अ. + फ़ा. | १ |
| सं. + सं. | १ | फ़ा. + अ. | ३ | अ. + अ. + तु. | १ |
| सं. + हिं. | २ | फ़ा. + फ़ा. | ८ | फ़ा. + सं. + सं. | १ |
| सं. + फ़ा. | २ | तु. + फ़ा. | २ | फ़ा. + हिं. + हिं. | १ |
| सं. + अं. | ३ | अं. + अं. | ३ | फ़ा. + हिं. + अ. | १ |
| हिं. + सं. | ६ | हिं. + सं. + सं. | १ | फ़ा. + अ. + अ. | १ |
| हिं. + हिं. | २३ | हिं. + सं. + हिं. | १ | फ़ा. + अ + तु. | १ |
| हिं. + अ. | ६ | हिं. + हिं. + हिं. | ५ | फ़ा. + फ़ा + हिं. | १ |
| हिं. + फ़ा. | ९ | हिं. + हिं. + फ़ा. | १ | अं. + हिं. + सं. | १ |
| हिं. + तु. | १ | हिं. + हिं. + तु. | २ | हिं. + अ. + हिं. + तु. | १ |
| हिं. + अं. | २ | हिं. + हिं. + अं. | २ | हिं. + अ. + अ. + तु. | १ |
| अ. + हिं. | ३ | हिं. + अ. + अ. | १ | अ. + सं. + हिं. + अं. | १ |
| अ. + अ. | ३ | हिं. + अ. + तु. | ३ | फ़ा. + अ. + फ़ा + तु. | १ |
| — | — | — | — | योग | १४७ |

कुछ नाम ऐसे भी हैं जिन में गौणांश के अतिरिक्त मुख्यांश का भेदक शब्द भी प्रयुक्त है, यथा— 'चाह शोर बाज़ार'। इस में 'बाज़ार' गौणांश ; 'चाह' मुख्यांश है तथा इस का भेदक 'शोर' है। कुछ नामों में मुख्यांश तथा गौणांश के योग से व्युत्पन्न मुहल्ला—नाम का भेदक शब्द प्रयुक्त है, यथा— 'ग़ालिबपुरा कलाँ' ; 'ग़ालिबपुरा खुर्द'। इन में ग़ालिब ( मुख्यांश ), 'पुरा' ( गौणांश ) के योग से व्युत्पन्न मुहल्ला–नामों ( भेद्य ) को स्पष्ट करने के लिए 'कलाँ', 'ख़ुर्द' ( भेदक ) शब्दों का योग है। ऐसे भेदक शब्दों का भाषा-स्रोत की दृष्टि से मुहल्ला-नाम के साथ ही उल्लेख किया गया है। इस वर्ग के मुहल्ला–नामों में विभिन्न भाषाओं के ४८ संयोग — रूप प्राप्त हैं जो तालिका संख्या ४ में दिखाए गए हैं।

---

५. इन नामों में 'टीला या कोई अन्य शब्द मुख्यांश के रूप में प्रयुक्त है। यहाँ एक टीले का नामकरण 'नन्दराम' ( व्यक्ति विशेष ) के नाम पर हुआ है तथा दूसरे टीले का नामकरण एक अन्य मुहल्ला—नाम 'बालूगंज' के नाम पर हुआ है जो स्वयं एक मुख्यांश + गौणांश ( व्यक्तिवाचक नाम + बाज़ार संज्ञक शब्द ) के योग से व्युत्पन्न है।

६. सं. = संस्कृत ; हिं, = हिन्दी ; फ़ा = फ़ारसी ; अं = अंग्रेज़ी ; देश = देशज ; तु = तुर्की ; सिं = सिन्धी ; अनुक = अनुकरणात्मक ; पुर्त. = पुर्तगाली

तालिका संख्या ४

भाषा की दृष्टि से भेदक शब्द सहित मुख्यांश + गौणांश

| भाषा | आवर्तन | भाषा | आवर्तन | भाषा | आवर्तन |
|---|---|---|---|---|---|
| सं. + सं. | १४ | फ़ा. + अ. | १ | हिं. + अ. + तु. | ८ |
| सं. + हिं. | २४ | फ़ा. + फ़ा. | ६ | हिं. + फ़ा. + सं. | १ |
| सं. + फ़ा. | ४ | फ़ा. + देश. | १ | अ. + हिं. + फ़ा. | २ |
| सं. + अं. | १ | तु. + सं. | १ | फ़ा. + हिं. + हिं. | २ |
| हिं. + सं. | १५ | तु. + हिं. | १ | फ़ा. + फ़ा. + फ़ा. | २ |
| हिं. + हिं. | १०० | अं. + हिं. | १ | फ़ा. + फ़ा. + अं. | |
| हि + अ. | ४ | अं. + फ़ा. | ५ | अं. + हिं. + तु. | |
| हि. + फ़ा. | १७ | अं. + अं. | ८ | अं. + अं. + फ़ा. | |
| हि. + अं. | १ | पुर्त. + हिं. | १ | अं. + सं. + सं. + अं. | |
| हिं. + देश. | २ | सि. + सं. | १ | | |
| अ. + सं. | ३ | देश + हिं. | ५ | | |
| अ. + हिं. | १६ | अनुक. + हिं. | २ | | |
| अ. + फ़ा. | ४ | सं. + सं. + अं. | ३ | | १ |
| अ. + अं. | १ | सं. + फ़ा. + सं. | १ | | १ |
| फ़ा. + सं. | १ | सं. + अं. + अं. | २ | | २ |
| फ़ा. + हिं. | १८ | हिं. + सं. + अं. | १ | | १ |
| | | हिं. + हिं. + सं. | १ | | |
| | | हिं. + हिं. + हिं. | ५ | | |
| | | हिं. + हिं. + फ़ा. | १ | | |
| | | हिं. + हिं. + तु. | ३ | | |
| | | हिं. + अ. + सं. | १ | | |
| | | हिं. + अ. + हिं. | १ | | |
| | | हिं. + अ. + अ. | १ | | |
| — | — | — | — | योग | ३०१ |

## २. ३ मुख्यांश = रहित तथा गौणांश युत मुहल्ले

ऐसे मुहल्ला-नाम केवल ४ हैं। भाषा-स्रोत की दृष्टि से इन नामों में विभिन्न भाषाओं के तीन संयोग-रूप प्राप्त हैं जो तालिका संख्या ५ में दिखाए गए हैं।

तालिका संख्या ५ — भाषा की दृष्टि से केवल गौणांश युत मुहल्ले

| भाषा | आवर्तन |
|---|---|
| हिं. | २ |
| अ. | १ |
| अँ. | १ |
| योग | ४ |

## २. ४ गौणांश शब्दों का भाषा—स्रोत

३०५ मुहल्ला-नामों में ३०८ बार गौणांश का प्रयोग हुआ है क्योंकि ३ मुहल्ला नामों में

दो-दो गौणांशों का प्रयोग है। भाषा की दृष्टि से सभी ३८ गौणांश शब्दों का स्रोत तथा आवर्तन तालिका संख्या ६ से स्पष्ट है।

**तालिका संख्या ६—गौणांश का भाषा-स्रोत**

| भाषा | शब्द-संख्या | प्रतिशत | आवर्तन | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| सं. | ४ | १०.५ | २७ | ८.८ |
| हिं. | २० | ५२.६ | २१४ | ६९.५ |
| फ़ा. | ६ | १५.८ | ४५ | १४.६ |
| अ. | ३ | ७.९ | ३ | १.० |
| अ. | ५ | १३.२ | १९ | ६.१ |
| योग | ३८ | १०० | ३०८ | १०० |

## २. ५ मुख्यांश तथा गौणांश के योजकों का भाषा-स्रोत

मुख्यांश तथा गौणांश के योग से व्युत्पन्न मुहल्ला-नामों में कुछ तो सामासिक रूप हैं, यथा—'कसाई-पाड़ा' ; 'गली-पुरबियान' किन्तु कुछ ऐसे भी मुहल्ला-नाम हैं जिन में मुख्यांश तथा गौणांश के मध्य योजक प्राप्त हैं, यथा — 'छोटू का नगला'; 'राजा की मंडी'। ऐसे ३० मुहल्ला-नामों में से ६ नामों में योजक प्रत्यय मुख्यांश तथा उस के भेदक शब्द के मध्य प्रयुक्त हैं। कुछ नामों के मुख्यांश तथा गौणांश के मध्य 'का' या 'की' का प्रयोग विकल्प से होता है, यथा— नगला भोलाराम—भोलाराम का नगला ; भूरिया गली या गली भूरिया — भूरिया की गली। किन्तु कुछ नामों में योजक का प्रयोग अनिवार्यतः किया जाता है, यथा— हींग की मंडी ; हरिया की बगीची; नाई की मण्डी; सामान्य व्यवहार में योजक – लोप की प्रवृत्ति चल पड़ी है, यथा— हींग मंडी ; राजा मंडी ; सराय चुन्नीलाल; शीतला बाग़ ~ बाग़ शीतला। तालिका संख्या ७ में दिखाए गए योजक चुनाव-सूची में लिखित नामों के आधार पर प्रस्तुत हैं।

**तालिका संख्या ७—योजक प्रत्यय आवर्तन**

| योजक | आवर्तन | प्रतिशत |
|---|---|---|
| —का—(हिन्दी) | १६ | ५३.३३३ |
| —की—(हिन्दी) | १२ | ४०.०० |
| —वाली—(हिन्दी) | १ | ३.३३३ |
| —ज़्—(अँग्रेजी) | १ | |
| योग | ३० | १०० |

## ३. मुहल्ला-नामों का व्याकरणिक पक्ष

विभिन्न भाषा-स्रोतों से प्राप्त ये मुहल्ला-नाम समाज में प्रयुक्त जीवित भाषा के अंग हैं। विभिन्न सभ्यता-संस्कृतियों में ढले, विभिन्न वर्गों के पढ़े-लिखे तथा अपढ़ लोग दिन-रात इनका प्रयोग करते हैं। जीवित भाषा में परिवर्तन होना उसकी प्रकृति है अतः मुहल्ला-नामों में भी ध्वनि, पद तथा अर्थ की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के सांकालिक तथा ऐतिहासिक परिवर्तन होते रहना स्वाभाविक है।

## ३.१ मुहल्ला-नामों में ध्वनि-परिवर्तन

सामान्य सिद्धान्त है कि ग्राह्य भाषा का विजातीय उच्चारण ग्राहक भाषा के निकटतम सजातीय उच्चारण के अनुकूल हो जाता है। आगरा के मुहल्ला-नामों में प्राप्त विजातीय ध्वनियाँ स्थानीय बोली (खड़ी बोली, ब्रज बोली के मिश्रित रूप) के अनुरूप ही ढल गई हैं। नगर के अधिकांश मुसलमान अरबी-फ़ारसी के शब्दों का लगभग शुद्ध उच्चारण करते हैं तथा कुछ अन्य पढ़े-लिखे लोगों में भी विदेशी शब्दों का तत्समवत् उच्चारण करने की प्रवृत्ति है। जिन विदेशी शब्दों को ध्वनियों की क्लिष्ट संघटना का रूप समझा जाता है उन शब्दों का जन साधारण में समानार्थी शब्द उच्चारण किया जाता है। मुहल्ला-नामों के विदेशी भाषा से गृहीत शब्दों में प्राप्त ध्वनि-परिवर्तन के नियमों में कोई भेद नहीं है।

### ३.१.१ सांकालिक स्तर पर मुहल्ला-नामों में उच्चारण-विभिन्नता के कारण ध्वनि-परिवर्तन के प्राप्त सामान्य रूप—

**(अ) आगम**

| | | |
|---|---|---|
| इन्द्र > इन्दारा | कला > काला | कृष्ण > कृष्णा |
| गार्डन > गारडन | चन्दन > चन्दना | नहरा > नेहरा |
| पार्क > पारक | प्रताप > परताप | प्रसाद > परसाद |
| फ़ार्म > फारम | मार्केट > मारकीट | मिस्री > मिसरी |
| लक्ष्मी > लच्छमी | स्टैण्ड > इस्टैन्ड | |

**(आ) लोप**

| | | |
|---|---|---|
| कान्ति > कान्त | कान्हा > काना | क्वार्टर्स > क्वाटर |
| चन्द्र > चन्द | चाह् > चा | जफ्फ़र > जफर |
| पत्थर > पाथर | पहलवान > पैलवान | फ़तेहपुर > फतैपुर |
| बलदेव > बल्देव | बारह् > बारा | मीरास > मीरा |
| मेहराव > महराव | रामसहाय > रामसाय | |

**(इ) समीकरण**

| | | |
|---|---|---|
| कलक्टरी > कलट्टरी | कॉलौनी > कौलौनी | खिरनी > खिन्नी |
| हरज् > हज्ज् | | |

**(ई) स्वरभक्ति**

त्रि > तिर

**(उ) महाप्राणीकरण तथा अल्पप्राणीकरण**

| | | |
|---|---|---|
| कंघी > कंगी | कंधारी > खंदारी | नख़ासा > नकासा |

**(ऊ) अनुनासिकता**

| | | |
|---|---|---|
| कौशल > कौंसल | ख़ान > ख़ाँ | चबूतरा > चौंतरा |
| जंजीरी > जँजीरी | नैचा > न्हैंचा | बास > बाँस |
| मामू > माऊँ | तिकोनिया > तिकोनियाँ | |

---

७. विदेशी शब्दों में ध्वनि-परिवर्तन के नियमों के लिए देखिए 'ब्रजभाषा' डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ ५०-५४ तथा 'हिन्दी भाषा का इतिहास' डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ १९९–२१५

(ए) सघोषीकरण

मुस्तफ़ा > मुस्तवा

(ऐ) वैकल्पिक उच्चारण

| | | |
|---|---|---|
| जटपुरा ~ जाटपुरा | कुआँ ~ कूआँ | कल्याणी ~ कल्यानी |
| बाबड़ी ~ बावरी | गुदड़ी ~ गुदरी | धाकरान ~ ढाकरान |
| मल्टोला ~ मन्टोला | दलिहाई ~ दरिहाई | नगला ~ नगरा |
| वज़ीरि ~ वजीर | | |

### ३.१.२ आक्षरिक स्वरूप

आगरा के मुहल्ला-नामों में प्रयुक्त शब्दों में एक से लेकर चार अक्षरवाले स्वरूप प्राप्त हैं, यथा—

एक अक्षर—जीत, मैन, नौ आदि ।

दो अक्षर—जोगी, बिल्लोच, जगदीश आदि ।

तीन अक्षर—किशोरी, मोहनलाल, पृथ्वीनाथ आदि ।

चार अक्षर—कछियाना, दबकईयान्, बहादुरखाँ आदि ।

नगर के मुहल्ला-नामों में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या दो से लेकर नौ तक प्राप्त है, यथा—

दो अक्षर—कंसगेट, कटघर, कारवाँ ।

तीन अक्षर—अकबरपुर, उखर्रा, खेरिया ।

चार अक्षर—अहीरपाड़ा, गली नहरा, दलिहाई ।

पाँच अक्षर—अजीत का नगला, कटरा हाथीशाह, नगला गंगाराम ।

छह अक्षर—आबादी ताज गार्डन, कटरा इतवारीखाँ, खेरिया का नगला ।

सात अक्षर—आदर्श नगर कॉलोनी, घटिया मामू-भांजा, टीला मंगली मनिहार ।

आठ अक्षर—जी० आई० पी० रेलवे क्वार्टर्स, तकिया करीम उल्लाशाह, बल्केश्वर लेबर कॉलोनी ।

नौ अक्षर—गुम्मट हवेली बहादुरखाँ ।

### ३.१.३ कुछ विशिष्ट शब्दों[८] का ऐतिहासिक मूल्यांकन

मुहल्ला-नामों में प्रयुक्त कुछ विशिष्ट शब्दों का विकास विशिष्टता युक्त है जो विशेषतः उच्चारण-सौकर्य के कारण है । इन शब्दों में कुछ शब्द भारतीय भाषाओं से तथा कुछ विदेशी भाषाओं से सम्बन्धित हैं ।

उखर्रा—√उखड़ + (-ना) के पूर्वकालिक रूप 'उखड़ा' (हुआ) के ड़ > र से विकसित शब्द 'उखरा ।' 'र' का जनभाषा में द्वित्व, अतः 'उखर्रा' शब्द अयुक्त ।

करौल—तुर्की 'क़राव़ुल' के 'व' का लोप, 'आ' तथा 'उ' में सन्धि होने से क़रावुल > *कराउल > करौल शब्द प्रचलित ।

कसेरट—संस्कृत 'कांस्यकार' > कसेरा + (हट्ट ~ हाट) > कसेरहट्ट से 'ह' का लोप तथा कसेरट्ट > कसेरट शब्द रूढ़ स्वरूप में प्रयुक्त ।

८. नगर के मुहल्ला-नामों में प्रयुक्त अधिकांश शब्द प्राभाआ मभाआ नभाआ के सामान्य रूप से विकसित हैं । आगत शब्दों में ध्वनि-परिवर्तन के सामान्य नियम कार्य कर रहे हैं, अतः ऐसे शब्दों, यथा—घर, किशन, भाई, मदरसा, लेन इत्यादि—का यहाँ ऐतिहासिक मूल्यांकन नहीं किया गया है ।

कुतलू—तुर्की 'क़ुतल' (उच्चरित रूप 'कोतल')+(-पुर)>कुतलूपुर में स्वर संगति से 'उ' का आगम, अतः कुतलुपुर>कुतलूपुर जन-समाज में प्रयुक्त।

कल्याणी—मुहल्ला-नाम में 'जीलानी' शब्द के सादृश्य पर यह संस्कृत तत्सम शब्द प्रचलित हो गया है जिसमें हिन्दुत्व की झलक है।

खेरिया—संस्कृत 'खेटक'>खेड़ा के ड़>र+(-इया) से 'खेरिया' शब्द जनभाषा में गृहीत।

खटोली—संस्कृत 'खट्वा'>खाट+(-ओला)>खटोला)+(-ई स्त्रीवाची)>खटोली शब्द प्रचलित।

चित्ती—फ़ारसी 'चिलतह्'+(-ई सम्बन्ध सूचक)>* चिलती>चित्ती (पश्चगामी समीकरण होने से) शब्द प्रचलित।

चिल्ली—फ़ारसी 'चिली'+(-पाड़ा)>चिलीपाड़ा>चिल्लीपाड़ा ('ल' का द्वित्व) शब्द का व्यवहार।

चुरटिया—संस्कृत 'चौर'>चोर+(—'ट' स्वभाव सूचक)+(—'इया' विशेषता सूचक)>* चुरटिया शब्द प्रचलित।

छत्ता—संस्कृत 'छत्र'>छत, छत्त ('त' का द्वित्व)+(—आ सम्बन्ध सूचक)>छत्ता शब्द प्रयुक्त।

बालू—अंग्रेज़ व्यक्ति-नाम 'बाँयलू' के 'य' का लोप, अतः *बॉलू शब्द हिन्दी में 'बालू' शब्द के सादृश्य पर व्यवहृतः।

बेलन—अँग्रेज़ व्यक्ति-नाम 'ब्लन्ट'[1] के 'ट' का लोप तथा व्यंजन-गुच्छ को दूर करने की भावना से 'इ' का आगम, अतः ब्लन्ट> *ब्लन> *बिलन+(—गंज)>बेलनगंज (इकार का एकार में परिवर्तन) हिन्दी 'बेलन' के सादृश्य पर प्रचलित।

## ३.२ मुहल्ला-नामों का पदवैज्ञानिक स्वरूप

आगरा नगर के मुहल्ला-नामों में दो प्रकार के शब्द प्राप्त हैं—

(क) रूढ़—नील; बाज़ार आदि।

(ख) यौगिक—गड़रियान; तेली आदि।

अधिकांश यौगिक शब्द परप्रत्ययों के योग से व्युत्पन्न हैं। कुछ मुहल्ला-नाम सामाजिक रूप में प्रचलित हैं, यथा—आलमगंज, कचौड़ा बाजार, काजीपाड़ा आदि, तथा कुछ नामों में परसर्गों का भी प्रयोग होता है, यथा—खेरिया का नगला; राजा की मंडी आदि।

रूढ़ शब्द मुक्त रूप हैं तथा यौगिक शब्द मुक्त तथा आबद्ध रूपों के विभिन्न संयोगों से व्युत्पन्न हैं।

पूर्व प्रत्ययों के योग से व्युत्पन्न संस्कृत के शब्द तत्सम रूप में ही मुहल्ला-नामों में व्यवहृत हैं, यथा—अशोक, महाराज, सुभाष, स्वदेशी।

परप्रत्ययों का सम्बन्ध संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी से है। शब्द-रचना की दृष्टि से

---

1. 'ग्राउज़' महाशय 'मथुरा मेमोयर', पृष्ठ 304 पर लिखते हैं—
"The Agra Shop-Keepers, who have Converted Blunt Ganj in to Belanganj, have prabably never heard of Vararuchi, but they have Certainly, though unconsciously, followed his rules."

प्रकृति तथा प्रत्ययों के स्रोत भिन्न-भिन्न हैं जिनसे मिश्रित रूपों की सृष्टि हुई है साथ ही प्रकृति-प्रत्ययों का योग स्वजातीय भी है।

-का-, -की-, -वाली--योजक के रूप में प्रयुक्त हैं, यथा—खेरिया का नगला; राजा की मंडी; शीतलावाली गली।

मुहल्ला-नामों में प्रयुक्त गौणांश जो स्थान-सूचक शब्द हैं प्रत्ययवत् प्रयुक्त हैं। ये शब्द-प्रत्यय संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी भाषा के हैं।

कुछ मुहल्ला-नामों में कुछ ऐसे शब्द भी प्राप्त हैं जो पदिम स्वनिमात्मक परिवर्तन[10] के कारण अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुए हैं, यथा—

कट्टी (⌒कट)+घर=कटघर। काठ (⌒कट)+घर=कटघर।
मल्ल (⌒मल)+टोला=मल्टोला। नौ (⌒न)+आबाद=नवादा
फूल (⌒फुल)+ट्टी=फुलट्टी। मुस्तफ़ा (⌒मुस्तबा)+—ज़=मुस्तबाज़

## ३.३ मुहल्ला-नामों का अर्थ वैज्ञानिक अध्ययन

आगरा नगर के मुहल्ला-नामों में प्रयुक्त अधिकांश शब्द अपने मौलिक अर्थ के ही सूचक हैं। कुछ शब्द मुहल्ला-नामों में प्रयुक्त होने पर अपने मौलिक अर्थ से भिन्न अर्थ के भी सूचक हैं। यह अर्थ-विभिन्नता तीन दशाओं में प्राप्त है—

**(क) अर्थ-विस्तार**

| **शब्द** | **मूल अर्थ** | **मुहल्ला-नाम में सूचित नवीन अर्थ** |
|---|---|---|
| कटरा | छोटा चौकोर बाज़ार | सामान्य बस्ती |
| गंज | अनाज की मण्डी | सामान्य वाज़ार, बस्ती |
| फाटक | बड़ा दरवाज़ा | फाटक लगी हुई बस्ती |
| वाड़ा | चारों ओर से घिरा बड़ा मैदान | मनुष्यों की बस्ती |
| मिल | आटा पीसने की चक्की | सामान्य कारखाना |

**(ख) अर्थ-संकोच**

| | | |
|---|---|---|
| गान्धी | गन्ध का कार्य करने वाली जाति | महात्मा गान्धी |
| मालवीय | मालव प्रान्त का | मदनमोहन मालवीय |
| लाइन्स | मनुष्यों या पदार्थों की पंक्तियां | घरों की पंक्तिनुमा बस्ती |

**(ग) अर्थादेश**

| | | |
|---|---|---|
| गढ़ | खाई, दुर्ग | सामान्य बस्ती |
| गढ़ी | छोटा किला | सामान्य बस्ती |
| गुदड़ी | गूदड़ों का बिछौना | फटी पुरानी या बची-खुची चीजें बिकने का बाज़ार |
| तकिया | सिर के आश्रय का साधन | फ़कीर के रहने का स्थान |
| दरवाज़ा | किवाड़जड़ा या बिना जड़ा चौखटा | किसी ओर जानेवाला मार्ग |

[10]. दो या दो से अधिक पदमों का योग होने पर उनमें होनेवाला स्वनिमात्मक परिवर्तन पदिम स्वनिमात्मक (Marphophanemic) रूप है।

नगर के कुछ मुहल्ला-नामों की रचना विदेशी भाषाओं के ही उपादानों से है। ऐसी रचना का प्रयोग जनसाधारण को क्लिष्ट प्रतीत होता है अतः वे लोग ऐसे पदों के गठन का प्रयोग न कर उसका समानार्थी भारतीय गठन प्रयोग करते हैं। इससे जन साधारण में उच्चारण-सौकर्य तथा दुरूह-हीनता के प्रति आकृष्ट होने की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है।

क्वार्टर्स कालेखाँ⌐कालेखाँ के क्वाटर।

गली हकीमान⌐हकीमोंवाली गली⌐गली हकीमों।

बँगलाज़⌐बँगले।

मस्जिद मुख़न्निसान⌐हीजड़ों की मस्जिद।

मुस्तबाज़ क्वार्टर्स⌐मुस्तबा के क्वाटर।

रॉयल आर्टीलरी बाज़ार⌐फ़ौजी बाजार।

ब्रिटिश इंफ़ेन्टरी बाजार⌐फ़ौजी बाजार।

स्वीपर्स कॉलोनी⌐महतर बस्ती⌐भंगियों की कॉलोनी।

## आगरा नगर के कुछ मुहल्लों का ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक विवरण

१. **अथाई** (हिं०)—अनुश्रुति है कि लगभग १७५ वर्ष पूर्व यहाँ बाग था जिसके उजड़ जाने पर यहाँ बड़ी अथाई बनी, दो बस्तियाँ बस गई।

२. **आलमगंज** (अ०+फा०)—आलमगीर (औरंगजेब) ने १६७१ ई० में यहाँ एक मस्जिद बनवाई थी।

३. **उखर्रा** (हिं०)—जनश्रुति है कि गदर से पूर्व भरतपुर लाइन काली पल्टन के कारण कलियानपुर को उखाड़ दिया गया तब ग्रामवासियों ने पास-पास तीन छोटे-छोटे गाँव बसा लिए।

४. **कंगालपाड़ा** (हिं०+हिं०)—जनश्रुति है कि पहले यह अत्यन्त निर्धन लोगों की बस्ती थी जिसकी झोंपड़ियों में सं० १९५६ में भयानक आग लग गई थी।

५. **कटघर** (हिं०+हिं०)—ईदगाह स्टेशन बनने के पश्चात् लगभग १८७५ ई० से इधर कठैल या तिवारा कहे जानेवाले काठ की बाड़ी के मकान बने थे।

६. **कलक्टरी रोड** (अँ०+अँ०)—१८४३ ई० में कलेक्टरेट बनने पर सड़क के पास बस्ती बसी।

७. **काला महल** (हिं०+अ०)—जहाँगीरकालीन राजा गर्जसिंह की हवेली (कला महल) को काला महल कहते हैं।

८. **खन्दारी** (हिं०)—शाहजहाँ की प्रथम पत्नी कन्धारी बेग़म के नाम पर बसी बस्ती।

९. **घटिया मामू-भांजा** (हिं०+फा०+हिं०)—किंवदन्ती है कि अकबर के दरबार में मामा-भानजे अपना युद्ध-कौशल दिखाते हुए कट कर एक साथ मर गए जिनकी क़ब्रें इधर घटिया में बनवाई गईं।

१०. **चावली** (देश०)—पं० चिम्मनलाल ने २०० वर्ष पूर्व चावड़ी (पड़ाव) के स्थान पर बस्ती बसाई जो सं० १९१७ में उखड़ जाने पर पं० मूलचन्द ने वर्तमान स्थान पर बसाई।

११. **छीपीटोला** हिं०+हिं०)—बस्ती के प्रायः सभी छीपी १९२८ ई० की प्लेग में भाग गए। यहाँ १६२० ई० में बना अलीवर्दीखाँ का हमाम अभी वर्तमान है।

१२. **नखासा** (अ०)—मुग़लकाल में इधर नख्खास (विशेषतः घोड़े बिकने का बाज़ार) था।

१३. **पंजा मदरसा** (फा० + अ०)--यहाँ शाहजहाँकालीन शाही मदरसा, हजरत अली का पंजा बना हुआ था।

१४. **प्रतापपुरा** (सं० + हिं०)--ब्रिटिश काल में यहाँ पालकी-ठेकेदार ठा० प्रतापसिंह रहते थे।

१५. **फजीहतपुर** (अ० + सं०)—मुग़लकालीन लशकरपुर में जनश्रुति के अनुसार एक तेली की बरात में अत्यन्त फ़जीहत होने पर बरातियों ने गाँव का यह नाम लगभग १०० वर्ष पूर्व रख दिया।

१६. **बरफखाना** (फा० + फा)— जनश्रुति है कि यहाँ ९० वर्ष पूर्व देशी विधि से जाड़ों में बर्फ जमाते थे।

१७. **बहिस्ताबाद** (फा० + फा०)—अकबर के मकबरे को पहले बागे बहिस्त कहते थे। उसके पास की बस्ती को गाँववालों ने बहिस्तावाद नाम दे दिया।

१८. **बेलनगंज** (अँ० + फा०)—अकबरकालीन मुहल्ला सैयद रफीउददीन, औरंगजेबकालीन मुबारकगंज, ब्रिटिश काल में ब्लन्ट साहब के नाम पर ब्लन्ट गज से अब बेलनगंज हो गया है।

१९. **रकाबगंज** (फा० + फा०)— अनुश्रुति है कि मुग़लकाल में यहाँ रक़ाबदार (हलवाई) रहते थे।

२०. **हींग की मंडी** (हिं० + हिं० + हिं०)—अनुश्रुति है कि मुग़लकालीन बाज़ार में वर्तमान रॉक्सी सिनेमाघर के स्थान पर बनी सराय में क़ाबुली ख़ान लोग हींग लाकर ठहरा करते थे।

कु० सरला तिवारी

# प्रेमचन्द युगीन हिन्दी-कहानी में प्रतीक-विधान

The present paper deals with the symbolism adopted by the fiction writers of the Premchand-period. Taking some stories of the prominent writers of the period as base the author analysis the symbolism in three main catogories—symbolism in titles, symbolism in plot and symbolism in characters. The author explained how the fiction writers used the symbols taken from man-kind, and from non-human elements (animate and inanimate) for the human characters and made them effective. At the end the author concludes that almost all the symbols used in fiction were borrowed from the contemporary Hindi poetry and there is lack of Psychological impact.

जीवन-परिप्रेक्ष्य में तेजी से जो बदलाव आ रहा है उससे कथा-साहित्य में एक मोड़ आ गया है। यह मोड़ आकस्मिक नहीं वरन् एक परम्परा का विकास ही है। इसके वस्तु बीज हमें प्रेमचन्द और प्रसाद की कहानियों में ही मिलने लगते हैं। आज कहानियों का स्वर नहीं बदला है, समय की माँग बदल गई है। प्रेमचन्द-प्रसाद की कहानियों को भी उनके युग की माँग ने ही नए अर्थ और जीवन सन्दर्भ दिए थे इसी कारण उनमें प्रारम्भिक कहानियों की अपेक्षा एक परिवर्तन दिखायी पड़ता है। इनकी कहानियों का यह परिवर्तन शिल्प, संवेदन और दृष्टि तीनों ही स्तरों पर दिखाई देता है। प्रेमचन्द युग में प्रेमचन्द और प्रसाद ने कथा-साहित्य को जो आदर्शवादी स्वर दिया था वह आज भले ही धूमिल हो गया हो पर तब युगानुरूप था। शिल्प के स्तर पर कथानक सीधे-सपाट भले ही थे किन्तु प्रतीकों का प्रयोग इस युग से ही होने लगा था (चाहे वह बहुत स्थूल ही क्यों न हो)। इन कथानकों में प्रभाव रूप में जो प्रतीकार्थ निकलते थे शीर्षक रूप में उन्हीं का प्रयोग होता था। पूरे वातावरण में प्रतीक व्याप्त नहीं था। जहाँ पात्र प्रतीक रूप में आते थे वे भी आध्यात्मिक या सामाजिक परम्परा के आग्रहवश प्रयुक्त होते थे, जैसे 'सुदर्शन' की कहानी 'ऐथेन्स का सत्यार्थी' का 'देवकुलीष' (सत्य की खोजरत जिज्ञासु के प्रतीक रूप में है) जिसका आध्यात्मिक दृष्टि से एक महत्व है या 'प्रेमचन्द' के 'दो बैलों की कथा' के पात्र हीरा-मोती साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक रूप में आए हैं वे भी सामाजिक और राजनीतिक उद्देश्य को व्यंजित करते हैं। इस युग के बाद की कहानियों में कथानक के ह्रास के साथ-साथ प्रतीकों का रूप भी बदलने लगा था। उन्होंने स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर कदम बढ़ाए प्रतीक अब बहिर्जगत की अपेक्षा अन्तर्जगत के अधिक हो गए थे। उन्हें समझने के लिए व्यक्ति के मन की

हराई में पैठना आवश्यक हो गया था (जैसे 'अज्ञेय' की 'शत्रु') । ये प्रतीक कितने ही मनोविश्लेष-
ात्मक हो गए हों फिर भी कथा को कहीं तो लेकर चलते थे । लेकिन धीरे-धीरे प्रतीक इस प्रकार
थ्य पर छा गया कि आज कहानी सिर्फ वातावरण भर रह गई है । लेखक का उद्देश्य उस वातावरण
ो प्रस्तुत भर कर देना है । पाठक उस वातावरण में से उभरते प्रतीक के आधार पर स्वयं प्रतीकार्थ
ोजता है । इसी कारण कहानी की प्रतीकात्मकता पर विचार करते समय प्रेमचन्द युगीन कहानी की
र्वथा उपेक्षा नहीं की जा सकती ।

प्रेमचन्द युग में प्रतीकों का प्रयोग 'गुलेरी जी' की कहानी 'बुद्धू का काँटा' से मिलने लगता है
जसमें काँटे को प्रेम की कसक का प्रतीक बनाया गया है । नायिका के पैर से काँटा निकालते समय ही
ायक के हृदय में इस प्रेम का काँटा लग जाने से कसक पैदा हो गई थी । इस कहानी का प्रतीकार्थ
सके प्रभाव के माध्यम से पाठक तक पहुँचता है ।

**ातीकात्मक शीर्षक—**

हिन्दी-कथा-साहित्य में प्रतीकात्मकता के विकास-क्रम में इस युग की जिन कहानियों का चयन
कया जा सकता है, उन सभी के शीर्षक प्रतीकात्मक हैं । प्रतीक-विधान इस युग में एक नव्य प्रयोग भर
ा जो कभी-कभी अनायास ही किसी कहानी में उभर आता था । यह एक आकस्मिक विस्फोटक हुआ
रता था क्योंकि कहानी के प्रमुख शिल्प के रूप में इस युग के लेखक उसे मान्यता नहीं दे पाए थे ।
स युग की प्रतीकात्मक कहानियों के शीर्षक अनिवार्यतः प्रतीकात्मक हैं । इन शीर्षकों का आधार
हानी का प्रभाव है । 'ऐथेन्स का सत्यार्थी' (सुदर्शन) पाश्चात्य विज्ञान का प्रतीक है तो 'प्रथम किरन'
सुदर्शन) मानव के आदि ज्ञान का । 'प्रलय' (जयशंकर प्रसाद) आध्यात्मिक विश्रान्ति का प्रतीक है
एक ऐसी विश्रांति जिसमें आदि पुरुष और आदि नारी के मिलन जन्य आनन्द में समस्त गोचर जगत
वस्मृत हो चुका हो । प्रलय में भी गोचर सृष्टि विलीन हो जाती है) । 'ख़ाली बोतल' (भगवती प्रसाद
ाजपेयी) मन की रिक्तता का प्रतीक है । इन प्रतीकात्मक शीर्षकों के चयन का आधार किसी पात्र
ा गुण विशेष (जैसे ऐथेन्स के सत्यार्थी के देवकुलीष की जिज्ञासु वृत्ति), कोई विशिष्ट घटना (जैसे
लय-प्रसाद) कोई भाव या विचार (जैसे प्रसाद की आंधी में प्रेम की उद्दामता और 'सुदर्शन' की 'प्रथम
करन' में 'किरन' ज्ञान के प्रतीक रूप में एक विचार को देती है) या कोई स्थिति (भगवती प्रसाद
ाजपेयी की खाली बोतल मन की रिक्तता के लिए) हो सकती है ।

**थानक-प्रतीकात्मक—**

इस युग में कथानक से तात्पर्य घटनाओं का संयोजन मात्र था अतः प्रतीकात्मक कहानियों में ये
टनाएँ ही प्रतीक के आस-पास घूमती रहती हैं, जैसे ऐथेन्स के सत्यार्थी में केन्द्र बिन्दु नायक देवकुलीष
अतः मन में जिज्ञासा का उदय, भोगों से विरक्ति, देवी के साथ बादलों के पार तक की यात्रा, सत्य
र पड़े आवरणों को हटाने का प्रयत्न और देवी की प्रसन्नता आदि, सभी घटनाएँ उसके ही चारों ओर
मती हैं । देवकुलीष आधुनिक विज्ञान का प्रतीक है; वह सत्य के प्रकृत रूप को अनावृत कर देना
ाहता है । आज तक की समस्त सभ्यता, उस प्रकृत रूप पर एक के बाद एक, आवरण डालने पर ही
ार्मित हुई है । सत्य की ओर प्रवृति श्लाघ्य हो सकती है लेकिन सत्य प्राप्य नहीं है । प्रतीक के होने से
हानी दोहरी हो जाती है, एक तो वह जो देवकुलीष के चारों ओर घूमती है (मात्र घटनाएँ) और
ूसरी वह जो घटनाओं के प्रतीकार्थ को लेकर बनती है और लेखक का मूल कथ्य है ।

इस आधार पर इन कहानियों के प्रतीक कथानक तीन प्रकार के हैं—आध्यात्मिक, सामाजिक
ार वैयक्तिक ।

**आध्यात्मिक कथानक**—प्रेमचन्द युग एक ऐसा युग था जबकि आन्दोलनों की बाढ़ सी आयी हुई थी। धार्मिक आन्दोलनों के चरम उत्कर्ष में से नई सामाजिकता का उदय हो रहा था। आर्य समाज के आन्दोलनों ने जिस नई आध्यात्मिकता को प्रतिष्ठित किया था उसमें ज्ञान का विशेष महत्व था। साहित्य में यह आध्यात्मिकता बिना कलात्मक आधार के ग्राह्य नहींहो सकती थी इसीलिए सांकेतिकता (प्रतीकात्मकता) इसकी अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में प्रेमचन्द युगीन कहानी में आई। विज्ञान या सत्य के जिज्ञासु के रूप में देवकुलीष का भटकना इसी आध्यात्मिक ज्ञान की पिपासा है। 'प्रथम किरन' तो ज्ञान का प्रत्यक्ष प्रतीक है ही प्रसाद की कहानी 'प्रलय' में विश्रान्ति का आनन्द इस चरम सत्य के ज्ञान का ही प्रतीक है। प्रसाद की 'बेड़ी' में बेड़ी को बन्धन के प्रतीक रूप में और मृत्यु को बन्धन मुक्ति के साधन रूप में भी, क्या, परोक्ष आध्यात्मिक संकेत के रूप में ही स्वीकार नहीं किया गया ?

**सामाजिक कथानक**—विदेशी सत्ता के शासन से मुक्त होने की छटपटाहट, इस युग के आन्दोलनों के प्रभाव स्वरूप, आक्रोश का रूप धारण कर चुकी थी। इन्हीं आन्दोलनों का दूसरा रचनात्मक कदम समाज-सुधार था। अतः राजनीतिक और सामाजिक जागरूकता ही इस युग का यथार्थ बन गई थी। इसी जागरूकता को सामाजिक कथानकों में प्रतीक के माध्यम से व्यक्त किया गया है। 'टीला और गड्ढा' (उग्र) तथा 'दो बैलों की कथा' (प्रेमचन्द) में जहाँ तत्कालीन राजनीति पर आक्रोश व्यक्त किया गया है वहीं 'रिसर्च' (उग्र) में तत्कालीन लालफ़ीताशाही पर व्यंग्य है। 'अंधेरी रात' (भगवती प्रसाद वाजपेयी) उस युग की उपेक्षिता नारी की दयनीय स्थिति का यथातथ्य प्रस्तुतीकरण है।

प्रतीक, इस युग की शैली का प्रमुख रूप नहीं बन पाया था, अतः इस युग के कथानक में मात्र सामाजिक सदाचार प्रतीक रूप में प्रस्तुत नहीं किए गये। उन कहानियों में कुछ प्रतीकात्मक घटनाओं के द्वारा युगीन समस्याओं का स्पर्श भर किया गया है; उदाहरणार्थ प्रेमचन्द की बहुचर्चित कहानी 'दो बैलों की कथा' में दोनों बैल दो सम्प्रदायों के प्रतीक हैं। उनका 'झूरी' के यहाँ चैन से रहना प्रतीक रूप में यह व्यंजित करता है कि दोनों समुदाय एक दूसरे से अलग होते हुए भी एक ही भूमि में पल्लवित हो रहे थे। 'गया' के यहाँ जाना इन सम्प्रदायों का विदेशी सत्ता की चाल से आक्रान्त हो जाना है। गया के द्वारा डण्डे के बल पर काम लेना और खाने को सूखा भूसा डाल देना तत्कालीन विदेशी सत्ता की शोषक वृत्ति पर चोट है। गया के यहाँ से भाग आना प्रतीक रूप में विद्रोह है। दोनों बैलों का सामूहिक रूप से साँड़ का सामना करना साम्प्रदायिक एकता का प्रतीक है। बाड़े को तोड़ कर भाग आना स्वतन्त्रता के जन्म सिद्ध अधिकार का घोषणा पत्र है। दोनों बैलों में से एक का नर्म और दूसरे का उग्र स्वभाव उस युग के राजनीतिक जीवन के दो छोरों का ही प्रतीक है।

'उग्र' की 'टीला और गड्ढा' में तत्कालीन राष्ट्रीयता को प्रतीक रूप में व्यंजित किया गया है जिसमें समाजवादी क्रांति की मोहकता का चित्रण है। टीला और गड्ढा क्रमशः अमीरी और गरीबी के प्रतीक हैं और जिस प्रकार प्रकृति एक ही झटके में इन्हें समतल कर देती है उसी प्रकार सामाजिक क्रांति की आँधी अमीरी और गरीबी की विषमता को समतल कर देगी, यह व्यंजना की गई है। इस क्रांति का प्रतीक भूकम्प है। 'रिसर्च' (उग्र) में स्थूल घटनाएं भले ही गिनी चुनी हों पर उसमें भी विदेशी सत्ता पर प्रतीक रूप में चोट की गयी है जैसे शैतान का गोरापन श्वेतांग लालफीताशाही है, उसका गाड़ी में चलना, सुन्दरी और सुरा का साथ होना, नौकरशाही की विलासिता है और उसके द्वारा प्रतीक रूप में यह व्यक्त किया गया है कि शांति खतरे में है। शैतान का धीरे-धीरे हावी होना और भगवान का विरोध करना यह व्यक्त करता है कि समाज के पैर अपनी भूमि से कहीं उखड़ने लगे थे और अधिकार-मद उस पर हावी होने लगा था।

'अँधेरी रात' नारी पर होनेवाले आत्याचारों की कहानी का प्रतीकात्मक चित्रण है ; जिसमें नायिका अँधेरी रात की तरह अपने दामन में समाज के अत्याचार रूपी कुकर्म छिपाए हैं और स्वयं कालिमा ओढ़े हैं। अँधेरी रात को नायिका का प्रतीत बनाकर लेखक ने उसका अर्थ प्रभाव रूप में स्पष्ट किया है जो इस पद के सामान्य अर्थ के हट कर है।

**वैयक्तिक कथानक**—वैयक्तिकता इस युग का सत्य नहीं थी, अतः वैयक्तिक समस्याओं पर कहानीकारों का ध्यान गया नहीं। एक मात्र वैयक्तिक समस्या जो इस युग में मिलती भी है वह प्रेम है। किन्तु समय और युग के आग्रह ने इस प्रेम को भी आदर्श रूप दे रखा था। इस युग के प्रेम में महत्व पात्र का नहीं उसकी भावना का है। इसी कारण प्रसाद की 'मुसहरों की बस्ती में' रहने वाली नायिका भी एक उच्चवर्ग के विवाहित युवक से प्रेम कर पाती है (आँधी)। उसके प्रेम का महत्व उसी उच्चादर्श के कारण है। इस युग के प्रेम का महत्व उसी उच्चादर्श के कारण है। इस युग के प्रेम में ऐन्द्रिकता या वासना नहीं है और न यह प्रेम सर्वसुलभ ही है। इस युग का प्रेम कहीं तो प्रथम दर्शन में ही काँटा बन कर गड़ जाता है और किसी'बुद्धू' को निरन्तर उसी कसक में जीने को बाध्य करता है, (बुद्धू का काँटा-गुलेरीजी) कहीं इसी प्रेम का अभाव जिन्दगी को 'खाली बोतल' (भगवती प्रसाद वाजपेयी) बना देता है। जो ग्रीष्म आतप, वर्षा, और शीत को सहते हुए दिन के उजाले या अँधेरे में किसी कमरे की बन्द अलमारी में रखी रहती है और आशा के तार टूट जाने पर छोड़ दी जाती है, मानों वह खाली बोतल ही नहीं टूटी जीवन का सारा क्रिया-कलाप ही चुक पया। एकांगी होने पर यही प्रेम, उद्दाम 'आँधी' (प्रसाद) का रूप धारण कर व्यक्ति को आत्म-बलिदान करने तक को बाध्य कर देता है।

**प्रतीक पात्र**—

इस युग की कहानियों में प्रतीक पात्रों की संख्या कम है और उनमें से प्रत्येक किसी न किसी भाव या विचार का प्रतिनिधि है। अनेक जड़ पदार्थों तथा अमूर्त तत्त्वों तक को इन कहानियों में पात्र बना कर प्रस्तुत किया गया है। पात्र प्रतीकों के प्रतीकार्थों को निम्नलिखित तालिका में संकलित किया गया है।

| लेखक | कहानी | प्रतीक-पात्र | प्रतीकार्थ |
|---|---|---|---|
| सुदर्शन | ऐथेन्स का सत्यार्थी | देवकुलीष, | विज्ञान |
| | | देवी ऐन्टीना | प्रकृति |
| | प्रथम किरन | मुसाफिर | अज्ञान से आववृ जीव |
| | | देवता | सद्वृत्ति |
| | | प्रथम किरन | ज्ञान |
| प्रेमचन्द्र | दो बैलों की कथा | हीरा और मोती | दो साम्प्रदायिक वर्ग |
| | | झूरी | धरती माता |
| | | गया | विदेशी सत्त |
| पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' | रिसर्च | बांसुरी बजाता बालक | शांति-प्रिय मनुष्य |
| | | शैतान | दुर्वृत्तियां |
| | | भगवान | आस्था |
| | टीला और गड्ढा | टीला | अमीरी |
| | | गड्ढा | गरीबी |
| | | भूकम्प | समाजवादी क्रांति |

इन प्रतीकों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है—
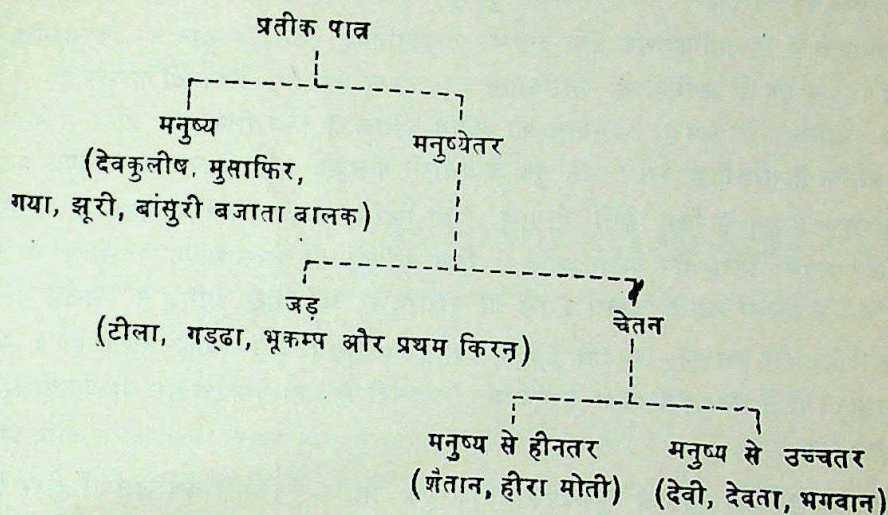
इस वर्गीकरण को देखने पर जो प्रश्न उठता है वह यह है कि ये प्रतीक पात्र कितने सक्षम हैं और इनका औचित्य क्या है ? मनुष्य का अपनी भाषा में बात करना तो स्वाभाविक है ही, देवताओं का मनुष्यों की भाषा में बात करना भी आस्वाभाविक नहीं क्योंकि काल्पनिक ही सही उनका व्यक्तित्व तो है लेकिन पशुओं का मनुष्यों की भाषा में बात करना, मूर्त मनुष्य का अमूर्त प्रतीक के रूप में चित्रण अथवा जड़ों में आरोपित मानवीयता कितनी स्वाभाविक हो पाई है यह देखना आवश्यक लगता है। 'सुदर्शन' की ऐथेन्स का सत्यार्थी में देवकुलीष विज्ञान का एक सशक्त प्रतीक है। विज्ञान में जिज्ञासा है देवकुलीष भी जिज्ञासु वृत्ति का है। सतत शोध वैज्ञानिक प्रक्रिया का अनिवार्य अंग है, देवकुलीष सतत शोधार्थी है। विज्ञान में प्रकृति के रहस्यों को जानने की तत्परता है, देवकुलीष भी बादलों के पार जाना चाहता है, विज्ञान में एकाग्रता है देवकुलीष भी धुन का पक्का है। विज्ञान, प्रकृति को सर्वोपरि मान कर चलता है देवकुलीष भी देवी ऐन्टिना की पूजा में लगा रहता है। इसी प्रकार दो बैलों की कथा में बैलों को बात करते दिखाया है यानी प्रेमचन्द ने भाषा के प्रयोग (मानवीय गुण) को आरोपित कर इन बैलों को मानव बना दिया है। स्वभाव से भिन्न होते हुए भी हीरा और मोती मेल से रह रहे हैं। तत्कालीन साम्प्रदायिक वर्ग—हिन्दू और मुसलमान—भिन्न-भिन्न भूमियों से उदभूत होते हुए भी शताब्दियों तक साथ-साथ हिलमिल कर रहे थे; हीरा-मोती इन्हीं के प्रतीक हैं। 'प्रथम किरन' में मुसाफिर जीव का प्रतीक है, जैसे मुसाफिर सराय में आता है और सुबह की किरन से जागकर चल देता है वैसे ही जीव संसार में आता है और ज्ञान जाग्रत होने पर उससे विरक्त हो जाता है। उग्र की 'टीका और गड्ढा' कहानी में प्रतीकों का आधार धर्म-साम्य है। टीला ऊँचा होता है अमीर भी तथाकथित ऊँचे होते हैं, गड्ढा गहरा होता है गरीबों की समस्याएं भी गहरी ही होती हैं।

इन प्रतीकों का प्रयोग दो दिशाओं में हुआ है—एक अमूर्त अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए मूर्त प्रतीक। जैसे विज्ञान के लिए देवकुलीष अमीरी के लिए टीला तथा गरीबी के लिए गड्ढा; दूसरे मूर्त अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए मूर्त प्रतीक जैसे साम्प्रदायिक वर्गों के लिए हीरा और मोती या धरती के लिए झूरी।

निष्कर्ष—शीर्षक, कथानक एवं पात्र की दृष्टि से प्रेमचन्द-युग की जिन कहानियों के उदाहरण दिए गए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि इस युग की कहानी के प्रतीक कविता से उधार लिए हुए हैं इसीका परिणाम है कि प्रतीकात्मक होते हुए भी ये कहानियाँ शिल्प के स्तर पर किस्सागोई ढग की ही अधिक हैं। इस युग के प्रतीकों में मनोविज्ञान का प्रभाव कम है—इसके दो कारण हैं —(१) इन कहानियों में वातावरण की अपेक्षा कथानक का महत्व अधिक है (२) शिल्प की दृष्टि से ये कहानियां वर्णनात्मक अधिक हैं सांकेतिक कम। इस गुण के प्रतीकों में बहुत बड़ी संख्या परम्परागत प्रतीकों की है जैसे सांसारिक बन्धन के लिए बेड़ी, ज्ञान के लिए किरन, विज्ञान के लिए सत्यार्थी, अमीरी और गरीबी के लिए क्रमशः टीला और गड्ढा आदि। जिन प्रतीकों को समसामयिक समस्याओं से जोड़ा जा सकता है वे हैं—बैल तथा खाली बोतल। बैल का लाक्षणिक अर्थ 'मूर्ख' प्रसिद्ध है (लेखक ने स्वयं भी स्वीकार किया है) और मन की रिक्तता के लिए 'खाली-खाली-सा' जैसे प्रयोगरूढ़ हैं ही। अभिप्राय यह है कि सही अर्थों में इन प्रतीकों में से एक भी ऐसा नहीं है जो प्रेमचन्द युग की देन हो। ये सभी पूर्व प्रचलित प्रतीक हैं।

शिल्प की दृष्टि से इनमें से बहुसंख्यक प्रतीक शुद्ध प्रतीक हैं जिनके अर्थ लक्षणा द्वारा स्पष्ट हो जाते हैं। कहीं-कहीं तो कहानीकारों ने इतना भी कार्य पाठक के लिए नहीं छोड़ा है और प्रतीकार्थ स्वयं स्पष्ट तक कर दिया है जैसे 'आँधी' अँधेरी रात' और 'काँटा।' निष्कर्षतः प्रेमचन्द युग में प्रतीकात्मक कहानियाँ संख्या की दृष्टि से तो कम हैं ही उनमें प्रतीक के उल्लेखनीय प्रयोग भी कम ही हैं। जहाँ प्रतीकात्मकता का अच्छा निर्वाह है वहाँ कहानी-शिल्प पीछे छूट जाता है और व्यक्तित्व अधिक मुखरित हो उठता है जैसे 'प्रसाद' की 'प्रलय' और 'सुदर्शन' की 'प्रथम किरन।' 'भगवती प्रसाद वाजपेयी' की 'खाली बोतल' निश्चित रूप से अपवाद है जिसमें सशक्त कहानी शिल्प भी है और समर्थ प्रतीक-विधान भी।

प्रेमचन्द युगीन कहानी की प्रतीकात्मकता नई कहानी की प्रतीक-दृष्टि से दो रूपों में भिन्न है। एक तो प्रेमचन्द युगीन कहानी का प्रतीक बाहर से लाया हुआ होता था। लेखक पहले किसी अर्थ और उसके प्रतीक को निश्चित कर लेता था और उसके चारों ओर कहानी का ताना-बाना बुनता था। नयी कहानी का मूल कथ्य उसकी संवेदना में होता है और प्रतीक उसमें से प्रभाव के रूप में उभरता है। दूसरा अन्तर यह है कि बिना प्रतीकार्थ की पकड़ के प्रेमचन्द युग की प्रतीकात्मक कहानी का मूल आनन्द नहीं प्राप्त किया जा सकता जबकि नयी कहानी में प्रतीकार्थ यदि छूट भी जाय तब भी पाठक को कहानी के कहानीपन में कमी नहीं लगेगी। प्रतीकार्थ स्पष्ट हो जाने पर तो उसमें कथ्य का एक अतिरिक्त स्तर उजागर होता है।

नींव में टूटी-फूटी ईंटें अवश्य भरी होती हैं पर भव्य प्रासादों का समस्त शिल्प-सौन्दर्य अन्ततः टिका तो उसी आधार पर होता है।

K. V. Subbarao

# IS HINDI A VSO LANGUAGE

प्रस्तुत लेख में रॉस के मत का खण्डन करते हुए यह प्रतिपादित किया गया है कि हिंदी वाक्य के शब्द क्रम में क्रिया का स्थान अन्तिम है। रॉस महोदय ने हिंदी वाक्यों में क्रम की दृष्टि से क्रिया का स्थान मध्य में बताया है। उनके अनुसार हिंदी वाक्य का रूप 'कर्ता क्रिया कर्म' है न कि 'कर्ता कर्म क्रिया'। हिंदी वाक्य में क्रिया के स्थान को आरंभ में मानना भी तर्क संगत नहीं है। यदि रॉस के मत को स्वीकार कर लिया जाय तो हिंदी व्याकरण में कई असंगत नियमों की कल्पना करनी पड़ेगी और कई अव्याकरणिक वाक्य भी इस व्याकरण से सिद्ध होंगे। लेख में जापानी तथा द्रविड़ परिवार की भाषाओं से हिंदी की तुलना करते हुए यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि हिंदी वास्तव में क्रिया-अन्त भाषा है। जापानी तथा द्रविड़ परिवार की भाषाएँ क्रिया-अन्त मानी गई हैं।

I. The studies in the transformational-generative grammar of Hindi, so far have been done under the assumption that Hindi is a verb-final language[1]. Th basis for such an assumption has been that in Hindi, the verb *always* occurs as th final constituent of a sentence in the surface structure unless a constituent is movec to the right by a movement transformation. However, in his paper "Gapping anc the Order of Constituents", Ross (1970) claims that Hindi is a verb-medial languag because Hindi exhibits "forward" and "backward" Gapping and there is an Extra position transformation in Hindi which moves the embedded sentence to the right o the verb of the matrix sentence. He claims that an underlying verb-final languag cannot have a transformation which moves a constituent to the *right* of the verb i.e., there can never be SVO or OVS surface word order in an underlying SOV language. I argued elsewhere that such a claim is incorrect[2].

McCawley (1969) conjectures that there can be only two types of languages— verb-initial and verb-final. If McCawley's conjecture is correct, then Ross's claim

[1] I am deeply indebted to Pulavarthi Satyanarayana for the discussions that wen into planning of this paper and for his suggestions and am thankful to Dr. Yamuna Kachru for her comments on this paper. I am also thankful to Dr. Seiichi Makino for providing me information concerning Japanese.

[2] See Subbarao (1972a) for a detailed discussion.

n conjunction with McCawley's hypothesis, would amount to saying that Hindi is verb-initial language.

The aim of this paper is to refute Ross's claims concerning the underlying word order in Hindi on both theoretical and empirical grounds and to reestablish that Hindi is an irrefutably verb-final language. I will also argue that accepting Ross's claim concerning word order in Hindi would force us to have unmotivated rules in the grammar of Hindi and also would lead to the generation of ungrammatical sentences in Hindi.

II. Hindi has all the surface characteristics of a verb-final language and according to Greenberg's study also (Greenberg 1963), Hindi is a verb-final language. On the basis of his study of 30 different languages, Greenberg arrived at a number of insightful linguistic universals concerning surface word order and some other elements in a language. The three common types of languages in his study are VSO, SVO ane SOV, viz., verb-initial, verb-medial and verb-final. Hindi, which is a surface verb-final language, has all the characteristics of SOV languages and thus, neatly fits into Greenberg's category III, viz., verb-final language group. It should be emphasized that Greenberg's study was concerned with the surface structure only and not with underlying or deep structure in the sense of Chomsky (1965). I will present some evidence from Greenberg (1963) to show that Hindi is verb-final language. This evidence is crucial in deciding the word order of Hindi, as in the later part of the paper I will question the hypothesis of postulating an underlying word order for a particular language different from the surface word order especially when the underlying word order postulated is never manifested in the surface structure.

(1) Hindi has postpositions as opposed to prepositions of non-verb-final languages (Greenberg's universal 21).

| | | |
|---|---|---|
| 1. | kitaab me | 'in the book' |
| | mez par | 'on the table' |
| | aadmii ke saath | 'with the man' |

(2) The auxiliary verb *always* follows the main verb as opposed to the tendency in languages with dominant verb-initial order where the auxiliary precedes the verb (Greenberg's universal 16).

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2. | pii | rahaa | hūū | — | 'am drinking' |
| | 'drink' | 'aspect marker' | 'tense marker' | | |

(3) The genitive (also the possessive) always precedes the governing noun while in languages with dominant VSO order the genitive "almost always" follows the governing noun (Greenberg's universal 2).

| | | |
|---|---|---|
| 3. | maaltii kii kitaab | 'Malti's book' |
| 4. | raam ke beṭe | 'Ram's sons' |

(4) The only order in comparison is, as Greenberg puts it, standard of compariso marker of comparison-adjective as in all other verb-final languages (Greenberg universal 22).

| 5. | mohnii | syaam | se | choṭii | hai |
|---|---|---|---|---|---|
| | 'Mohni' | 'Shyam' | 'comparison marker' | 'small' | 'is' |

Notice that the standard of comparison here is Shyam, the marker of comparison *se* and the adjective is *chotii*.

(5) The relative expression precedes the head noun as one of the alternati constructions in Hindi (Greenberg's universal 24).

| 6. | jo | larkaa | vahāā | gaa rahaa hai, | vah | meraa | bhaaii | hai |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 'which' | 'boy' | 'there' | is singing' | 'he' | 'my' | 'brother' | 'is' |

'The boy who is singing there, is my brother.'

In verb-initial or verb-medial languages, usually some or all adverbs follow th adjective they modify (Greenberg's universal 21). In Hindi, on the other han all the adverbs *precede* the adjective they modify.

There are some other surface characteristics that Hindi shares with verb-fin languages such as Dravidian languages and Japanese. I will present some of the here under :

(7) The unmarked order of direct object and indirect object in Hindi, as i Dravidian languages and Japanese, is the indirect object followed by the dire object.

(8) Time adverbials in verb-final languages usually precede place adverbials in th unmarked order. Japanese and Dravidian languages exhibit this pattern and Hinc also has this surface tendency.

(9) Another interesting surface structure characteristic is concerning the ascendin or descending order of occurence of elements in time adverbial phrases. In no verb-final languages such as English, the constituents of a time adverbial phras occur in the ascending order as in ±7.

7. At 5 p.m. on the 3rd of December 1972

whereas in verb-final languages, the normal order is the descending order. Th above example of adverbial phrase is expressed in Hindi as in 8.

8. 1972 disambar kii tiin taariikh kii saam ko pāāc baje.

A similar phenomenon of order is manifested in place adverbial expression also.

It should be pointed out here that the order of constituents in the surface structure in verb-final languages is usually the mirror image of that in verb-medial or verb-initial languages. Hindi, as far as I know, does not share any surface characteristics with non verb-final languages such as English.

III. In his paper "Gapping and the Order of Constituents", Ross (1970) aims that Hindi is an underlying verb-medial language and that there is a (last yclic) transformation in Hindi, Scrambling rule, which changes the word order om SVO to surface SOV. In this section, I will argue that Ross's claim about ord order in Hindi is incorrect.

Ross postulates a constraint on movement of a constituent, in support of his aim concerning underlying word order in languages such as Hindi. He argues at only languages with underlying SVO order*th* have rules of the type (9)

9. . . . . . A . . . . . X
 1 2 ——————>
 0 2 + 1, where A is a constituent and X a variable[3]

hich move a constituent to the *right* of the verb and languages with underlying erb-final order *cannot* have such a rule, i.e., they remain verb-final in the surface ructure. Put differently, if a language has nonverb-final sentences in the surface, ien it must be a nonverb-final language in the underlying representation as ell.

I have shown elsewhere (Subbarao 1972a) that Ross's claim concerning the niversal absence of rules of type (9) would force us to conclude that some irrefu- ably verb-final languages such as Japanese and Telugu which have rules of type 9) should be considered as verb-medial languages. I have also argued that "a ransformation which changes the relative order of a verb and a constituent *cannot* e given as an argument to decide the underlying word order because such a novement transformation does not provide any evidence whatsoever to draw any onclusions about underlying word order of a language one way or the other".[4] Therefore, Ross's argument that Hindi is an underlying SVO language because it as an Extraposition transformation which moves the embedded sentence to the ight of the verb does not stand.

The only other support the SVO hypothesis for Hindi given by Ross con- erns Gapping. Hindi exhibits both "forward" and "backward" Gapping. Ross (1970) rgues that the deletion of an identical verb in coordinated sentences depends on the order of constituents of the sentence at the time the Gapping rule applies. Sentences 11) and (12) illustrate the phenomenon of "forward" and "backward" Gapping.

10. saritaa ne kahaanii paṛhii aur raakes ne upanyaas paṛhaa
 'Sarita' 'story' 'read' 'and' 'Rakesh' 'novel' 'read'
 'Sarita read a story and Rakesh read a novel. (SOV + SOV order)

---

[3] Though Ross does not specifically mention it, it should be pointed out that X in (9) cannot be a crucial variable because according to Ross (1967), all rightward movement rules are upward bounded. For a discussion of the notion of crucial variable, see Postal (1970).

[4] See Subbarao (1972a) pp. 1-2.

11. saritaa ne kahaanii paṛhii aur raakeś ne upanyaas.
    'Sarita' 'story' 'read' 'and' 'Rakesh' 'novel'
    (SOV+SO order)—"forward" Gapping.

12. saritaa ne kahaanii aur raakeś ne upanyaas paṛhaa.
    'Sarita' 'story' 'and' 'Rakesh' 'novel' 'read'
    (SO+SOV order)—"backward" Gapping.

In order to account for the existence of both the phenomena of "forward" and "backward" Gapping in languages such as Hindi and Turkish, as opposed to only "backward" Gapping in languages such as Japanese and Telugu, Ross proposes that Hindi and Turkish are underlying verb-medial languages. "Forward" Gapping on the structures of the type SVO+SVO, maintains Ross, yields SVO+SO accounting for the deletion of the verb on the right. The Scrambling rule then applies yielding SOV+SO configuration as in (11). In order to account for "backward" Gapping, however, he proposes that the Scrambling rule apply first to yield the configuration SOV+SOV. Then, he says, "backward" Gapping applies yielding structures of the type SO+SOV, as in (12). On the basis of the two-way Gapping, Ross concludes that Hindi is a verb-medial language.

But, as Maling (1972) and Satyanarayana and Subbarao (in preparation) argue, what Ross calls "forward" Gapping is a phenomenon different from what he calls "backward" Gapping. In fact, it is argued that "backward" Gapping is only an instance of conjunction reduction. So, no claim about underlying word order can be made on the basis of Gapping, either, since according to the One-Way Gapping proposal "forward" Gapping is the only type of Gapping, which may or may not be found in a given language and is independent of conjunction reduction.

Thus, we observe that Ross's claim that Hindi is a verb-medial language because it has both "forward" and "backward" Gapping and because it has an Extraposition transformation which moves the sentence to the *right* stands without any support. Hindi, a surface verb-final language, should therefore be treated as an underlying verb-final language too. In the next section, I will discuss the problems with treating otherwise.

IV. McCawley (1970) argues that English is an underlying verb-initial or predicate-first language and conjectures that there are only two word-order types : verb-initial and verb-final. If McCawley's hypothesis is accepted, then Ross's claim that Hindi is a verb-medial language would amount to saying that Hindi is an underlying verb-initial language.

In this section an argument is presented to the effect that if the underlying word order of Hindi is VSO and a last cyclic transformation moves the verb to sentence-final position, then such a move would yield ungrammatical sentences. If such a proposal is accepted, it would be necessary to have some unmotivated and ad hoc rules in the grammar of Hindi. I will discuss the consequences of verb-initial hypothesis with respect to one specific transformation—passive in Hindi.

Consider a sentence such as (13), which has an embedded sentence.

13. mujh se bekaar logō ko gaalii diyaa jaanaa
'by me' 'unnecessarily' 'people' 'being' 'scolded'
'I cannot tolerate people being scolded unnecessarily
sahaa nahīī jaataa.
'cannot be tolerated'

Sentence (13) is a result of applying passive transformation cyclically on an underlying representation roughly as in (14).

14. $\left[_{S_1}\right.$ maī $\left[_{S_2}\right.$ koii bekar logō ko gaalii de $\left.\right]_{S_2}$ nahīī sahtaa $\left.\right]_{S_1}$

Under the verb-initial hypothesis, (12) has a tree structure (simplified) such as (15).
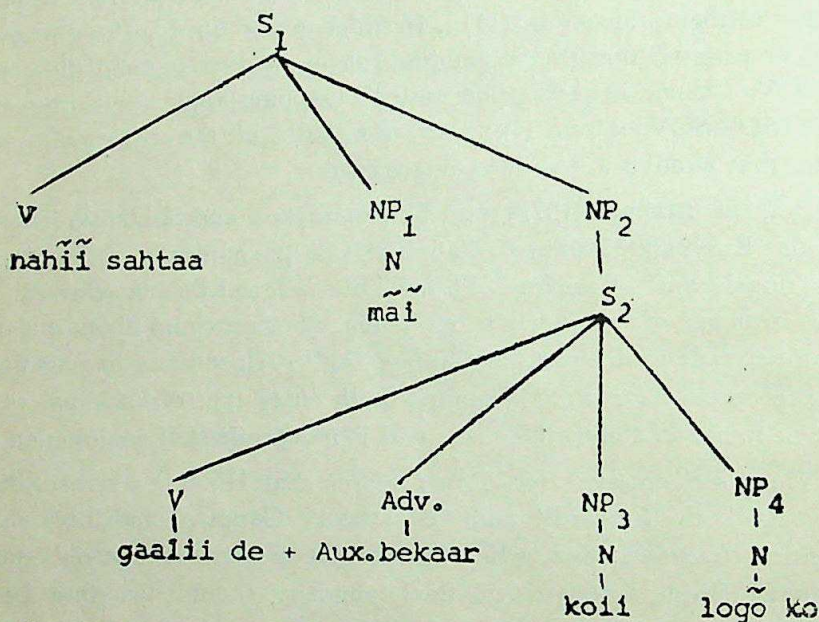
Passive transformation applies on $S_2$ yielding (16)

(16) gaalii diyaa jaa+Aux. bekaar kisii se logō ko

*kisii se* in (16) can be deleted by optional unspecified agent deletion transformation. On $S_1$ cycle, the Complementizer Change transformation applies yielding (17).

(17) $\left[_{S_1}\right.$ nahii sahtaa mai $\left[_{S_2}\right.$ gaalii diyaa jaa+naa bekaar logo ko $\left.\right]_{S_2}$ $\left.\right]_{S_1}$

Then Passive applies yielding (18).

18. $\left[_{S_1}\right.$ nahīī sah+yaa jaa+taa mujh se $\left[_{S_2}\right.$ gaalii diyaa jaa+naa bekaar logō ko $\left.\right]_{S_2}$ $\left.\right]_{S_1}$

Finally Verb-Flip, which is a last cyclic rule, applies on (18) yielding the semi-grammatical sentence (19)

19. ? mujh se gaalii diiyaa jaanaa bekaar logo ko nahii sahaa jaataa.

In order to have the correct surface sentence, *gaalii diyaa jaanaa* should be moved to the right of *logo ko.* But it has been clearly demonstrated elsewhere (Subbarao 1972b) that it is uneconomical to have rules which move phrases of the type *galii diyaa jaanaa* either to the left or to the right. It should also be emphasized that the Verb-Flip transformation cannot move *gaalii diyaa jaanaa* to the *right* of *logo ko* because *gaalii diyaa jaanaa* is *not* a verb at the time this transformation applies. One may wish to argue that *gaalii denaa* is .not a conjunct verb but *gaalii* 'scolding' should be treated as an object NP in the underlying representation. But, such a proposal does not provide any solution, either.

Thus, we observe that adopting a verb-initial hypothesis for Hindi results in the generation of ungrammatical sentences in Hindi.

V. As mentioned in the second section, the relative clause in Hindi has an alternative construction, viz., one that is to the left of the head noun. The other constructions are—the relative that occurs immediately to the right of the head noun and the one that occurs to the right of VP of matrix sentence. In verb-final languages, the relative clause precedes the head noun as the only construction as in Japanese, Telugu and other Dravidian languages or as an alternative construction as in Quechua and Nubian (cf. Greenberg, 1963, p. 106). In this section, I will argue that the relative expression to the *left* of head noun should be chosen as the underlying representatlon, i. e., the PS rule for NP in Hindi should be as in (20)

20. NP———→ (S) NP

similar to the one in many other verb-final languages. I will argue that if the relative expression to the *left* is not chosen as the underlying representation, we would need

i) a rule which moves constituents to the position immediately to the left of head noun[5]

ii) an extraposition transformation which moves the embedded sentence to the left of the head noun.

If we choose the PS rule in (20) to represent the relative expression in Hindi, we do not need to include (i) and (ii) in the grammar of Hindi.

---

[5] In a recent study on Noun Phrase Complementation in Hindi and English, Sinha (1970) without presenting evidence, postulates the phrase structure rule for NP in Hindi as NP —→ N (S). Though he does not explicitly claim that the PS rule for NP in relative clauses is NP —→ NP (S), following his analysis, it is not entirely unreasonable to say that he would have assigned a PS rule such as NP —→ NP (S) to account for relative expressions in Hindi also, because, otherwise, it would only be counter-intuitive and uneconomical to have one PS rule for complement sentences and another PS rule, which is a mirror image, for relative clauses especially when a single PS expansion rule can adequately account for both complement and relative clause sentences. For acritique of Sinha's analysis, see Kachru (1971).

I will now present evidence in support of PS rule NP—→(S) NP in Hindi.

a) The infinitival phrase *always* occurs to the *left* of the lexical head nouns such as *khabar* 'news', *baat* 'news, thing', *samaacaar* 'news', etc.

21. ham ne uske aane kii { khabar / bat } sunii.

'we' 'his' 'to arrive' 'of' 'news' 'heard'
(infinitive)

'We heard the news that he was arriving.'

I. e. in (21) the infinitive *aanaa* 'to arrive, to come' precedes the noun. This is not surprising because as mentioned in Section II, the genitive *always* precedes the governing noun (Greenberg's universal 2) and the infinitival structure of the complement sentence is syntactically the same as the genitive construction in Hindi.

If the structure of NP in Hindi is as in (22)

22. NP —→ NP (S) or N (S)

then we would need a rule which would prepose the infinitive *aanaa* to the left of the lexical noun after the application of Complementizer Change transformation whereas under NP —→ (S) NP or (S) N analysis no such preposing rule is needed.

A similar preposing rule would also be needed under NP (S) analysis, in order to derive participial and agentive phrases and in possessive constructions such as (23) - (28)-

23. baiṭhe hue log
'seated' 'people'
'The people who are sitting (stative)'

24. bahtaa huaa paanii
'running' 'water'

25. duudhwaalaa raamuu
'milkman' 'Ramu'

26. mehnat karne waale log
'hard working' 'people'
'People who work hard.'

27. siitaa ke bacce
'Sita's' 'children'

28. haathii kaa sar
'elephant's' 'head'

From the above examples it is clear that the grammar would be unnecessarily burdened by having an additional rule under NP (S) analysis.

b) An Extraposition transformation in Hindi moves an embedded S to the *right* of the verb of martix sentence and this is an upward bounded rule ( in the

sense of Ross 1967) since all rightward movement rules are universally upwa bounded. This transformation yields sentences of the type (29) from an underlyi structure of the type (30).

29. ham ko maaluum huaa ki niksan haar gayaa.
 'we' 'learnt' 'that' 'Nixon' 'lost'

30. ham ko niksan haar gayaa yah maaluum huaa.
 'we' 'Nixon' 'lost' 'it' 'learnt'

This rule can be formulated roughly as in (31)

31. Extraposition :

| X ..... | S ..... | N ..... | Y | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | ———→ |
| 1 | $\theta$ | 3 | 4+2 | where X and Y are variables[6] |

If the PS rule for NP in Hindi is posulated as NP ——→ (S) NP, th Extraposition to the right as in (31) (with a slight modification) can account f sentences of the type (33) and (34) from the underlying representation of (32).

32. $[_{S}$ jo larkii khel rahii hai $]_{S}$ $[_{NP}$ vah $]_{NP}$ merii bahan hai
 'which' 'girl' 'is playing' 'she' 'my' 'sister' 'is'

33. $[_{NP}$ vah larkii $]_{NP}$ merii bahan hai, $[_{S}$ jo khel rahii hai $]_{S}$

(embedded S moved to the *right* of verb of martix S)

34. $[_{NP}$ vah larkii $]_{NP}$, $[_{S}$ jo khel rahii hai $]_{S}$ merii bahan hai.

(embedded S moved to the *right* of head noun)

If the PS rule for NP is postulated as NP——→NP (S) or N (S), th sentence (34) would be closer to the underlying representation and we need extraposition transformation which moves the embedded S to the *left* (to yield se tences of the type (32)) or to the *right* (to yield sentences of the type (33)). I. the Extraposition transformation as postulated in (31) has to be modified such th the embedded S is moved either to the *left* or to the *right*. But such a move creat serious problems, when the modified Extraposition applies on the underlyi structure of sentences of the type (35) and (36), it results in generating ungramm tical sentences of the type (37) and (38).

35. prakaash ne kahaa ki usne cor ko bhaagte hue dekhaa

---

[6] Notice that Y cannot be crucial variable as all rightward movement rul are upward bounded.

'Prakash' 'said' 'that' 'he' 'thief' 'running' 'saw'
'Prakash said that he saw the thief running away.'

36. yah sambhav hai ki indiyaa me CIA ejents ho
'It' 'possible' 'is' 'that' 'India' 'in' 'CIA' 'agents' 'are'
'It is possible that there are CIA agents in India.'

37. * ki usne cor ko bhaagte hue dekhaa prakaash ne kahaa.

38. * ki indiyaa me CIA agents ho yah sambhav hai.

Ungrammatical sentences such as (37) and (38) clearly indicate that the xtraposition transformation as formulated in (31) cannot be modified to include ie movement of the embedded sentence to the left as well. It means that the iderlying representation of NP should be as in (20), viz., NP ——→ (S) NP or 5) N just as in other verb-final languages such as Telugu, Kannada and Japanese. his PS rule provides further justification for having a verb-final structure for Hindi i the surface as well as underlying representation.

VI. Though Hindi has almost all the characteristics of verb-final language, appears to be an exception in one linguistic universal concerning word order. It claimed[7] that languages with underlying verb-final order usually have postposed onjunctions as in Japanese and Telugu and languages with verb-medial or verb-iitial order have pre-posed conjunction as in English. Contrary to what one would xpect Hindi has preposed conjunctions and disjunctions as (32) and (40) ustrate :

39. prakaash aur saritaa paṛhne gaye
'Prakas' 'and' 'Sarita' 'in order to study' 'went'
'Prakash and Sarita went to study.'

40. mai taamil yaa kannaḍa siikhnaa caahtaa hūū.
'I' 'Tamil' 'or' 'Kannada' 'to learn' 'want'
'I want to learn Tamil or Kannada.'

In a language such as Telugu, there are postposed conjunctions and dis-onjunctions as the following examples illustrate.

41. prakaasawūū saritaa[8] cadawadaaniki welleeru
'Prakash and Sarita went to study.'

42. neenu tamilam gaanii kannadam gaanii nercu kondaaw ani anukonṭunnaanu.
'I want to learn Tamil or Kannada.'

But in literary Telugu,[9] there is a preposed conjunction *mariyu* 'and' and

---

[7] McCawley (1970) discusses this universal and attributes it to Ross.

[8] The marker/enclitic for conjunction is realized as length of the final owel on all the conjuncts in Telugu.

[9] For a detailed discussion of various registers of Telugu, see Subbarao 967).

there is a preposed disjunction *leka* 'or'. Telugu is an irrefutably verb-final language.[10] This casts a serious doubt on the universal proposed by Ross. Turkish,[11] which is also a verb-final language, has a preposed conjunction *ve*.[12, 13] This evidence from Telugu and Turkish indicates that the division of languages entirely on the basis of type of conjunctions or disjunctions it has, is not correct because there are languages which are verb-final with preposed conjunctions.

Even, for a moment, if we accept the universal claimed by Ross concerning the type of conjunctions and underlying word order is valid, the question that arises is : Can Hindi be a verb-medial or verb-initial language in the underlying representation just because it has preposed conjunctions and disconjunctions ? I believe it cannot be. I will discuss this problem in a greater detail in the next section of this paper.

VII. To conclude, in this paper, first I presented the surface typological characteristic that Hindi shares with many other verb-final languages. Then I argued that Ross's hypothesis concerning Gapping and Extraposition in relation to underlying word order is incorrect and therefore, his conclusion about word order in Hindi based on these hypothesis does not hold. I argued that treating Hindi as a verb-initial language would result in the generation of ungrammatical sentences. Further, I have shown that the embedded sentence in relative clauses and in complement sentences in Hindi should be posited to the left of head noun just as in many other underlying verb-final languages. Finally, I showed that the occurance of a certain type of conjunction or disjunction in a language does not reflect the order of constituents in the underlying representation and thus, the preposed conjunctions and disjunctions that occur in Hindi do not constitute any counter-evidence to the claim that Hindi is a verb-final language.

In light of the above discussion, the one crucial question that one might ask is : What is the basis or bases on which one could classify a language typologically ?

I can think of the following four situations that a linguist might came across in the typological classification of languages :

i. All the surface typological features point toward one type of classification.
ii. There is a mixture of surface typological characteristics.[14]

---

[10] In Subbarao (1972a), evidence for this claim is presented.

[11] I am thankful to Mrs. Eloise Enata, Dr. Hans Hock and Dr. Ladislav Zgusta for providing me information concerning conjunctions in Turkish, Sanskrit and Indo-European respectively.

[12] For further details see Swift 1963.

[13] Evidence that Turkish is verb-final is provided in Subbarao (1972a).

[14] As in Amharic as discussed in Bach (1970).

iii. All the surface characteristics point toward one conclusion where as the type of transformation the language has point toward the opposite conclusion.

iv. Majority of the surface characteristics and the transformations in the language point toward one conclusion but the language shares one or two typological characteristics with one other type of languages.

I will now discuss the above four types of situations. As long as there is no compelling evidence to posit underlying structure different from the surface, in cases like (i), the underlying representation should be the same as that in the surface structure. In cases like (ii), the language should be classified as verb-final ar verb-initial or verb-medial on the basis of the type of transformations it has. This, of course, is a difficult task because so far, none of the studies in transformational-generative grammar have exactly been able to pinpoint the relation between the type of transformations and underlying word order. Case (iii) is, in fact, a subcase of (i) and I think the underlving representation should be the one that is in accordance with the type of transformations the language has. Let us consider case (iv). The typological features that a language shares with other type of language could be due to borrowing or could be due to the reason that the language is shifting from one type of typology to another type. But in any case, the underlying representation, I think, should be in accordance with the majority of surface sentence characteristics and the type of transformations the language has.

The discussion presented in this paper points overwhelmingly to the claim that Hindi is an underlying (as well as surface) verb-final language.

as the
posite

the
r two

is no
cases
rface
verb-
is, of
ional-
the
bcase
accor-
case
guage
age is
rlying
tence

claim

## *References*


Bach, Emmon. (1970) "Is Amharic an SOV Language," in *Journal of Ethopia* *Studies.*

Chomsky, Noam. (1965) *Aspects of the Theory of Syntax*, MIT Press, Cambridge Massachusetts.

Greenberg, Joseph H. (1963) "Some Universals of Grammar with Particula Reference to the Order of Meaningful Elements" in Greenberg (ed.), *Universals of Language.* MIT Press, Cam bridge, Massachusetts.

Kachru, Yamuna. (1971) "Some Remarks on Predicate Complement Constructio in Hindi." (Mimeographed) Department of Linguistics, Un versity of Illinois, Urbana, Illinois.

Maling, Joan. (1972) "On Gapping and the Order of Constituents." *Linguist Inquiry*, Volume 3, Number 1, 101-108.

McCawley, James. (1970) 'English as a VSO Language," Language 46, No. 2 286-299.

Postal, Paul. (1971) *Crossover Phenomenon.* Holt, Rinehart and Winston, Inc New York.

Ross, John R. (1967) *Constraints on Variables in Syntax*, Unpublished doctoral disser tation, MIT.

——————— (1970) "Gapping and the Order of Constituents" in Bierwisc and Heidolph (eds.) *Progress in Linguistics.* Mouton & Co The Hague.

Satyanarayana, P. and Subbarao, K. V. (in preparation) "Gapping in Telugu"

Sinha, Anil. (1970) *Predicate Complement Constructions in English and Hindi*, Universit of New York Doctoral dissertation.

Subbarao, Karumuri V. (1967) "Spoken and Written Telugu" (Mimeographed Department of Linguistics, University of Illinois, Urbana Illinois.

——————— (1972a)" Extraposition and Underlying Word Order. (Mimeo)

——————— (1972 b) Noun Phrase Complementation in Hindi (in prepa ration).

Swift, Lloyd B. (1963) *A Reference Grammar of Modern Turkish.* Indiana University Bloomington.

## 'गवेषणा' में प्रकाशित लेखक क्रम लेखों की सूची

(अंक १ से २० तक)

| क्र०सं० | लेखक का नाम | शीर्षक | अंक | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|---|
| १. | अग्निहोत्री, सुरेश | अहिन्दी भाषियों की हिन्दी भाषा शिक्षण की समस्याएँ और सुझाव | ७ | ५७ से ६० |
| २. | अग्निहोत्री, सुरेश | साहित्यिक अध्ययन और भाषा विज्ञान के संपर्क बिंदु | ९-१० | ७९३-२०३ |
| ३. | अग्रवाल, चमनलाल | पंजाबी समास : स्वरूपगत विश्लेषण | १५ | १३९-१४३ |
| ४. | अधिकारी, अमृतलाल के० | अन्य भाषा के रूप में राष्ट्रभाषा हिन्दी शिक्षण के संबंध में कुछ विचार | ७ | १७५-१८२ |
| ५. | अयाचित, हनुमच्छास्त्री | तेलुगु के ऐतिहासिक काव्य में प्रयुक्त हिन्दी और उर्दू शब्दावली | १ | १९- २८ |
| ६. | अयाचित, हनुमच्छास्त्री | भावात्मक एकता की साधना में संत कवियों का योगदान | ८ | १०१-१३२ |
| ७. | अयाचित, हनुमच्छास्त्री | संगोष्ठी : सार्वजनिक हिन्दी का भावीरूप | ३ | ४४- ५० |
| ८. | अय्यंगार, वि० कृष्णस्वामी | उपमालंकार का एक विवेचन | १५ | ९७-१२९ |
| ९. | अय्यंगार, वि० कृष्णस्वामी | कन्नड में भाषा वैज्ञानिक कार्य | १७ | १- ९ |
| १०. | अय्यंगार, वि० कृष्णस्वामी | निरुक्त में व्युत्पत्ति-विचार | १६ | ७- १२ |
| ११. | अय्यंगार, वि० कृष्णस्वामी | पाणिनीय व्याकरण का विवेचन-विषय प्रवेश | १८ | १- ४९ |
| १२. | अय्यंगार, वि० कृष्णस्वामी | व्याकरण के प्रयोजन-पतंजलि के विचार | १३ | ३१- ४५ |
| १३. | अय्यंगार, वि० कृष्णस्वामी | यास्क और पाणिनि की भाषा-विश्लेषण प्रक्रिया | ९-१० | १४१-१४६ |
| १४. | अय्यर, विश्वनाथ | संगोष्ठी१९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | ५२- ४९ |
| १५. | अवस्थी, सुरेश | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | २९-- ३२ |
| १६. | आनंद, मुल्कराज | भारतीय साहित्य का परिप्रेक्ष्य | ५ | १८३-१८४ |
| १७. | आरमुखम, के० | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | १४१-१४९ |
| १८. | आरिगपूडि रमेश चौधरी | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | ११६-१२५ |
| १९. | उपाध्याय, नीलमणि | अहिन्दी भाषियों को हिन्दी सिखाने की उपयुक्त विधि | ७ | ४१- ४५ |
| २०. | उपाध्याय, सुशीला पं० | मराठी और मलयालम की ध्वनि संबंधी कठिनाइयाँ | १५ | ४९ ५३ |
| २१. | उप्रैति, मुरारी लाल | हिन्दी अनुतान | ९-१० | ७०- ७८ |
| २२. | उर्मिला कुमारी | शिवरानी देवीजी की कहानियाँ | ४ | १११-१२१ |
| २३. | ओझा, दशरथ | [illegible] नाटक : उद्भव और विकास | १ | ४२- ५५ |

| क्र०सं० | लेखक का नाम | शीर्षक | अंक | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|---|
| २४. | ओझा, दशरथ | हिन्दी नाट्य परम्परा में पूर्वी प्रदेश का योग | ३ | ९७–१०८ |
| २५. | कमल मोहन | गोरखपुर की हिन्दी की समस्याएँ | १५ | ३६– ४८ |
| २५.अ | कमल मोहन | हिन्दी की यात्रा; पश्चिम से पूर्व को | २० | १२५–१२७ |
| २६. | काचरु, यमुना | Nominal Compliment Construction in Hindi | ९–१० | ११९–१३० |
| २७. | कामत, पी० जी० | अन्य भाषा शिक्षण की समस्याएँ | १७ | ८७–९१ |
| २८. | कुंजिरामन, पी० के० | मलयालम तथा हिन्दी व्याकरण में साम्य-वैषम्य | १७ | ३३–४१ |
| २९. | कुट्टी, के० वी० कृष्णन | केरल के स्कूलों में हिन्दी पाठ्य-पुस्तकें | २ | ४३– ६१ |
| ३०. | कुट्टी; लक्ष्मी | राष्ट्रभाषा हिन्दी : महत्व, अहिन्दी भाषियों को हिन्दी शिक्षण के कुछ सुझाव | ७ | ८७– ९३ |
| ३१. | कुलश्रेष्ठ, अरविन्द | भाषा जनांकिकी | ३० | ११९–१२३ |
| ३२. | कुलश्रेष्ठ, रामप्रकाश | हिन्दी उच्चारण शिक्षण का महत्व (अन्य भाषा शिक्षण के विशेष सन्दर्भ में) | ९-१० | ६९– ६९ |
| ३३. | कुलश्रेष्ठ, रामप्रकाश | हिन्दी के मानक उच्चारण (अनुसंधान) | ८ | १५२–१५४ |
| ३४. | कुलश्रेष्ठ, रामप्रकाश | हिन्दी में अव्यय-विचार | ८ | ७२–१०० |
| ३५. | कुलश्रेष्ठ, रामप्रकाश | हिन्दी रेडियो रूपक | ६ | १२०–१२७ |
| ३५.अ | कृष्ण स्वामी न० | Transformational Grammar and Contrastive analysis | ७–१० | १३१–१३६ |
| ३६. | कैमल, ओ० पी० राम | हिन्दी और मलयालम के आंचलिक उपन्यास | ४ | ७९– ८३ |
| ३७. | कैमल, ओ० पी० राम | हिन्दी और मलयालम में कृष्ण भक्ति काव्य : नायर भाष्करन (ग्रंथ परीक्षा) | १ | १०९–११३ |
| ३८. | खाँ, मुहम्मद अयूब | हिन्दी सीखने की समस्याएँ | ७ | १८३–१८८ |
| ३९. | गुप्त जगदीश | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव : भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | ८०– ८८ |
| ४०. | गुप्त, मनोरमा | अन्य भाषा शिक्षण और उसकी समस्याएँ | १६ | ३०– ३८ |
| ४१. | गुप्त, मनोरमा | गांधी शिक्षा दर्शन | ६ | १०– १९ |
| ४२. | गुप्त, मनोरमा | भारतीय शिक्षा में पाठ्य क्रमीय समस्याएँ | १३ | १– ९ |
| ४३. | गुप्त, मोतीलाल | संगोष्ठी ६५-६६ : अहिन्दी (भारतीय) भाषियों को हिन्दी सिखाने के सम्बन्ध में कुछ सुझाव | ७ | ६१– ६३ |
| ४४. | गुप्त मोतीलाल | ध्वनि-विश्लेषण की यांत्रिक पद्धति (कुछ प्रारम्भिक चर्चा) | ८ | ५९-७१ |
| ४५. | गुप्त, मोतीलाल | भाषा-शिक्षण में यांत्रिक ध्वनि-विज्ञान का योग | ९–१० | ५८– ६५ |
| ४६. | गुप्त, सुरेशचन्द्र | गुरु नानक का काव्यादर्श | ४ | ९५– ९६ |
| ४७. | गुप्त, सुरेशचन्द्र | रहीम के काव्य सिद्धान्त | १–१२ | ७७– ८२ |
| ४८. | गुप्त, सोमनाथ | पं० छब्बीलाल मिश्र : उनके संगीत | १ | ९२–१०३ |
| ४९. | गुप्त, सोमनाथ | लाला शालिग्राम और उनकी नाटक विषयक रचनाएँ | २ | ९२–१०३ |
| ५०. | गुप्त, सोमनाथ | हिन्दी नाटक की लोकधर्मी परम्परा के दो प्राचीन नाटक | ४ | ७३– ७८ |

| क्र० सं० | लेखक का नाम | शीर्षक | अंक | पृष्ठ स |
|---|---|---|---|---|
| ५१. | गोविन्द दास सेठ | समापन भाषण संगोष्ठी ६५-६६ | ७ | १६८–२ |
| ५२. | गौडर, एस० एच० | हिन्दीतर प्रदेशों में हिन्दी भाषा-शिक्षण की रूपरेखा | ७ | ४६– |
| ५३. | चंदोला, अनूपचन्द अनुवादिका सरोजिनी शर्मा | संगीत व्यवस्था की कुछ पद्धतियाँ और भाषा विज्ञान के सिद्धान्त | १६ | १३२–१ |
| ५४. | चतुर्वेदी, अरुण | अनुसंधान : ध्वनि पाठ : उच्चारण के लिए | १३ | १३८–१ |
| ५५. | चतुर्वेदी, एम० जी० | A contrastive Study of Hindi-English stress Accent. | ९-१० | ७९– |
| ५६. | चतुर्वेदी, रामस्वरूप | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | ८– |
| ५७. | चतुर्वेदी, रामस्वरूप | हिन्दी की अधुनातन प्रवृत्तियाँ (तीन-व्याख्यान) | ११–१२ | १– |
| ५८. | चौरसिया, श्याम सुन्दर | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव : भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | ६५– |
| ५९. | चौहान, मोहब्बत सिंह | गुजरात राज्य में हिन्दी सीखने-सिखाने में उपस्थिति होने वाली समस्याएँ तथा कुछ सुझाव | ७ | ९८–१ |
| ६०. | जगन्नाथन, वी० आर० | अनुसंधान : आधारभूत शब्दावली | ३ | १३२–१ |
| ६१. | जगन्नाथन, वी० आर० | अनुसंधान : हिन्दी की आधारभूत शब्दावली | ४ | १२८–१ |
| ६२. | जगन्नाथन, वी० आर० | अनुसंधान : 'हिन्दी की आधारभूत शब्दावली' एक टिप्पणी | ८ | १६१–१ |
| ६३. | जगन्नाथन, वी० आर० | ट्रैन्सफ़ारमेशन और सिस्टिमिक सिद्धान्तों का हिन्दी भाषा के अध्ययन के संदर्भ में अवलोकन | ९–१० | १३७–१ |
| ६४. | जगन्नाथन, वी० आर० | तमिल भाषा का ध्वनि वैज्ञानिक अध्ययन | ४ | ९७–१ |
| ६५. | जगन्नाथन, वी० आर० | संगोष्ठी १९६४: साहित्य पर बाह्य प्रभाव : भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | ८९– |
| ६६. | जगन्नाथन, वी० आर० | हिन्दी और तमिल की समान स्रोतीय भिन्नार्थी शब्दावली (एक शोध प्रबन्ध) | ११–१२ | ३+१– |
| ६७. | जगन्नाथन, वी० आर० | हिन्दी की आधार भूत शब्दावली | ३ | ५१– |
| ६८. | जगन्नाथन, वी० आर० | हिन्दी की लिपि-स्वरूप और समस्याएँ | ८ | ३९– |
| ६९. | जगन्नाथन, वी० आर० | हिन्दी परसर्ग | १३ | ५६ – |
| ७०. | जगन्नाथन, वी० आर० | हिन्दी शिक्षण में भाषा प्रयोगशाला का महत्व | ७ | १४०- |
| ७१. | जायसवाल, महेश प्रसाद | विदेशों में हिन्दी अध्ययन की समस्याएँ | ६ | २०– |
| ७२. | जायसवाल, सीताराम | विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन | २ | ३– |
| ७३. | जायसवाल, सीताराम | शिक्षा का समाज शास्त्रीय आधार | ११–१२ | ५९– |
| ७४. | जैन, महावीर सरन | अन्य भाषा-शिक्षण तथा ध्वनि विज्ञान | ९–१० | ४३– |
| ७५. | जैन, महावीर सरन | हिन्दी सीखने में तमिल भाषियों की कुछ कठिनाइयाँ | ३ | ३१– |
| ७६. | जोशी, जेठालाल | संगोष्ठी : सार्वजनिक हिन्दी का भावी रूप | ३ | १५ – |

| क्र०सं० | लेखक का नाम | शीर्षक | अंक | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|---|
| ७७. | तिवारी, नित्यानन्द | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव : भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | ६९– ७३ |
| ७८. | तिवारी, रामचन्द्र | कबीर का समसामयिक और परवर्ती सन्तों पर प्रभाव | १३ | २०– ३० |
| ७९. | दास, अनित्य | बँगला भाषियों के हिन्दी-अध्ययन में व्याकरणिक समस्याएँ | १ | ६१– ६६ |
| ८०. | दास, ठाकुर | हिन्दी ध्वनि विज्ञान संगोष्ठी | २० | १३९–१४१ |
| ८१. | दीक्षित, सूर्य प्रसाद | समीक्षात्मक शोध : प्रतिमान तथा प्रक्रिया | ८ | १३३–१५१ |
| ८२. | दुबे, रामेश्वर दयाल | संगोष्ठी : सार्वजनिक हिन्दी का भावी रूप | ३ | २१ · ३१ |
| ८३. | दुबे, रामेश्वर दयाल | हिन्दीतर भाषा भाषियों को हिन्दी सीखने सिखाने की समस्याएँ (नागा प्रदेश के सन्दर्भ में) | ७ | १४७–१५५ |
| ८४. | दुबे, लक्ष्मीनारायण | उर्म्मिला का महाकाव्यत्व | २ | ७३– ९१ |
| ८५. | दुबे, लक्ष्मीनारायण | हिन्दी के प्रधान राष्ट्रीय कवि-'सनेही' जी | ६ | ९७–१०७ |
| ८६. | द्विवेदी, विश्वनाथ प्रसाद | हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी अध्यापक | ६ | |
| ८७. | नरवणे, वी० एस० | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ७ | १३१–१३६ |
| ८८. | नावडा, रामकृष्ण | कन्नड और हिन्दी संख्यावाचक विशेषण | ५ | ४८– ५१ |
| ८९. | नावडा, रामकृष्ण | संगोष्ठी : सार्वजनिक हिन्दी का भावी रूप | ४ | ३७– ३९ |
| ९०. | नावडा, रामकृष्ण | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव : भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ३ | ३३– ३५ |
| ९१. | नाहटा, अगरचन्द | एक अनुपलब्ध प्राचीन कथा के जैन रूपान्तरों की खोज | ५ | १३३–१३५ |
| ९२. | नाहटा, अगरचन्द | कवि बाण कृत कलि चरित्र | २ | १३६–१५५ |
| ९३. | नाहटा, अगरचन्द | जगन कवि रचित सबरस नाम माला | १७ | ९२– ९८ |
| ९४. | नाहटा, अगरचन्द | नरवर नरेश रामसिंह जी की रचनाओं | १३ | १७– १९ |
| | | पर विशेष प्रकाश | ६ | ११६–११९ |
| ९५. | 'निर्मल' भीमसेन | हिन्दी एवं तेलुगु : तेलुगु भाषियों को ध्यान में रखते हुए हिन्दी शिक्षण के सम्बन्ध में सुझाव | ७ | ६४– ६७ |
| ९६. | 'निर्मल', भीमसेन | हिन्दी को आन्ध्र की देन | ११–१२ | ८३– ८४ |
| ९७. | पट्टनायक, डी० पी० | Teaching of script to adult learner | ९–१० | १८५–१८७ |
| ९८. | पांडेय, रामशकल | प्रयोजनवादी शिक्षा और उसका भारतीय स्वरूप | ६ | १– ९ |
| ९९ | पांडेय, रामशकल | शिक्षा में विज्ञान, दर्शन और साहित्य का योगदान | ८ | १– १० |
| १००. | पांडेय, शंभूनाथ | अर्थ विकास में रूपक का महत्व | १ | ३६– ४१ |
| १०१. | पांडेय, शंभूनाथ | रामचरित मानस में प्रयुक्त प्रश्नवाचक 'का' का विश्लेषणात्मक अध्ययन | १५ | १३०–१३८ |
| १०२. | पांडेय, शंभूनाथ | 'मानस' का अप्रस्तुत विधान : मानवेतर बिम्ब | २० | १११–११८ |
| १०३. | पांडेय, शंभूनाथ | 'मानस' का अप्रस्तुत विधान : लोक जीवन | ६ | १०८–११५ |
| १०४. | पांडेय, शंभूनाथ | 'मानस' की पुनरुक्तियाँ | १६ | १३– २९ |
| १०५. | पांडेय, शंभूनाथ | 'मानस' की सूक्तियाँ | १३ | ११५–१३२ |
| १०६. | पांडेय, शंभूनाथ | 'मानस' के ध्वन्यात्मक शब्द | २ | ६४– ७६ |

| क्र०सं० | लेखक का नाम | शीर्षक | अंकां | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|---|
| १०७. | पांडेय, शंभूनाथ | 'मानस' में प्रयुक्त बिम्ब गुच्छ | १७ | ६६–१० |
| १०८. | पांडेय, शंभूनाथ | रामचरित मानस में विदेशी शब्द | ४ | ८४– ६४ |
| १०६. | पांडेय, शंभूनाथ | संगोष्ठी : सार्वजनिक हिन्दी का भावी रूप | ३ | ३५– ३८ |
| ११०. | पांडेय, शंभूनाथ | संगोष्ठी १६६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव : भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | ६०– ६४ |
| १११. | पार्थसारथी, जे० | Contrastive Linguistics and language teaching with special reference to Hindi & Tamil | ६–१० | २५– ३० |
| ११२. | पार्थसारथी, जे० | Expletive Particles in Hindi & Tamil : A Contrastive Restatement | १७ | ११७–१२८ |
| ११३. | पिल्लै, के० जी० बालकृष्ण | अहिन्दी प्रान्तों के स्कूलों में हिन्दी परीक्षाएँ | २ | ३८– ४२ |
| ११४. | पिल्लै, के० जी० बालकृष्ण | नया सवेरा विधि | ११–१२ | ७२– ७३ |
| ११५. | पिल्लै, के० जी० बालकृष्ण | भारत के अहिन्दी भाषियों को नागरी लिपि सिखाने की सर्वोत्तम विधि | १ | ७१– ७५ |
| ११५.अ | बान, ल० थे० | हिन्दी भाषा का मूलभूत वाक्य विन्यास | १६ | ८– १५ |
| ११६. | बासुतकर, म० मा० | मराठी की कारक व्यवस्था | २० | ८३– ६१ |
| ११७. | बासुतकर, म० मा० | हिन्दी और मराठी का 'ने' परसर्ग | १७ | ४१– ५६ |
| ११८. | बाहरी, हरदेव | अर्थविज्ञान तथा भाषा शिक्षण | ६–१० | १७७–१८१ |
| ११६. | भट्ट, मधुकर | हिन्दी का प्रथम उपन्यास—पं० बालकृष्ण भट्ट का 'रहस्य कथा' | ४ | ५१– ५८ |
| १२०. | भट्टाचार्य, स्वयंभू | द्वितीय भाषा शिक्षा की आधारभूत समस्याएँ | ७ | १२६–१३० |
| १२१. | भाटिया, कैलाशचन्द | भारतीय भाषाओं में मूलभूत एकताः ध्वन्यात्मक स्तर पर | ४ | १३– २३ |
| १२२. | भाटिया, कैलाशचन्द | शब्दः शब्द का अध्ययन तथा भाषाशिक्षण | ६–१० | १६५–१७३ |
| १२३. | मण्डलोई, भगवन्तराय | भावात्मक एकता और हिन्दी | १ | ङ–ज |
| १२४. | माचवे, प्रभाकर | संगोष्ठी १६६४ : साहित्य में बाह्य प्रभावः भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | १८०–१६१ |
| १२५. | माथुर, सुधीर कुमार | अनुसंधानः नागरी लिपि के लेखन की सरल तथा वैज्ञानिक विधि | ८ | १५५– |
| १२६. | माथुर, सुधीर कुमार | अनुसंधानः हिन्दी परसर्गों का विश्लेषण | ६ | १२६–१३२ |
| १२७. | माथुर, सुधीर कुमार | हिन्दी का लघु अवधि पाठ्यक्रम | ६–१० | ३७– ३६ |
| १२८. | माथुर, सुधीर कुमार | हिन्दी शिक्षण में 'ध्वनि विज्ञान' का महत्व | ७ | १३७–१३६ |
| १२६. | मित्तल, ल० ना० | An instrumental Study of Some aspirated Sounds in Hindi | ६–१० | ८५– ६४ |
| १३०. | मित्तल, लक्ष्मी नारायण | भाषा-प्रयोगशाला | ११–१२ | ३८– ४४ |
| १३१. | मित्तल, ल० ना० तथा गुप्ता, जे० पी० | A Preliminary Study on the formant frequencies of Hindi Vouwels. | १७ | १२६–१३० |
| १३२. | मिश्र, दत्तात्रेय | असम राज्य में हिन्दी अध्यापक और हिन्दी प्रचारक की समस्याएँ कुछ सुझाव | ७ | १०८–११३ |
| १३३. | मिश्र, भगवत्स्वरूप | भाषा-शिक्षण में भाषाविज्ञान का योगदान | ६–१० | १७– २४ |
| १३४. | मिश्र, भगवत्स्वरूप | संगोष्ठी १६६४ः साहित्य में बाह्य प्रभावः भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | १५०–१५५ |

| क्र०सं० | लेखक का नाम | शीर्षक | अंक | पृ०सं० |
|---|---|---|---|---|
| १३५. | मिश्र, भगीरथ | उत्कृष्ट पर उपेक्षित लिपि-देवनागरी | १ | ६७– ७० |
| १३६. | मिश्र, विद्यानिवास | संगोष्ठी : सार्वजनिक हिन्दी का भावीरूप | ३ | ३२– ३३ |
| १३७. | मिश्र, विद्यानिवास | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | ७४– ७९ |
| १३८. | मुकुन्दन, के० | अनुसंधान-अहिन्दी भाषा-भाषियों की हिन्दी शिक्षा और शिक्षण सम्बन्धी समस्याएँ | ८ | १६०–१६१ |
| १३९. | मुहम्मद, एम० मलिक | गोपालकृष्ण और राधा के व्यक्तित्व विकास में तमिल की देन | २ | १०४–११९ |
| १४०. | मेनन, के० एम० | मलयालम में संस्कृत आगत शब्दों की सामासिक प्रणाली | १७ | ३०– ३२ |
| १४१. | मेनन, एम० श्रीधरन | मलयालम भाषा की विशेष ध्वनियाँ | ११–१२ | ३४– ३७ |
| १४२. | मेरी, बी० पी० | मलयालम तथा हिन्दी की समान शब्दावली | ३ | ६३– ७८ |
| १४३. | मेरी, बी० पी० | हिन्दी तथा मलयालम के समान शब्दों की भिन्न रूपता का एक अध्ययन | ४ | २९– ३६ |
| १४३. | रस्तोगी, कृष्ण गोपाल | हिन्दी क्रियाओं का अर्थ परक अध्ययन | २० | ५१– ५६ |
| १४५. | राजगोपालन, न० वी० | अहिन्दी भाषियों का हिन्दी-शिक्षण विषय प्रस्तावना | ७ | १४– २३ |
| १४६. | राजगोपालन, न० वी० | A transformational approach to Hindi Syntax | १६ | १०१–१०९ |
| १४७. | राजगोपालन, न० वी० | तमिल भाषा की प्राचीनता | २ | १७– ३४ |
| १४८. | राजगोपालन, न० वी० | तमिल भाषा पर उर्दू और हिन्दी का प्रभाव | १ | २९– ३५ |
| १४९. | राजगोपालन, न० वी० | प्राचीन तमिल साहित्य में वर्णित सामाजिक जीवन | ३ | १२३–१३१ |
| १५०. | राजगोपालन, न० वी० | भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान | ९–१० | ६– १६ |
| १५१. | राजगोपालन, न० वी० | 'मराठी का भक्ति साहित्य' : देशपाण्डे, भी० गो० (ग्रंथ परीक्षण) | १ | १०५–१०९ |
| १५२. | राजगोपालन, न० वी० | मलयालम भाषियों के हिन्दी-उच्चारण की विशेषताएँ | ६ | ५२– ५६ |
| १५३. | राजगोपालन. न० वी० | संगोष्ठी : सार्वजनिक हिन्दी का भावीरूप | ३ | ५०– ५१ |
| १५४. | राजगोपालन, न० वी० | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के 'परिप्रेक्ष्य में | ५ | १३९–१४० |
| १५५. | राजगोपालन, न० वी० | Some Structural Peculiarities of Hindi Syntax in the writing of dravidian Speakers. | १७ | १०८–११६ |
| १५६. | राजगोपालन, न० वी० | हिन्दी का भाषा वैज्ञानिक व्याकरण | १९ | ११७–२४४ |
| १५७. | राजगोपालन, न० वी० | हिन्दी का भाषा वैज्ञानिक व्याकरण विपरिवर्तन परक निष्पादक विश्लेषण) | १८ | १–११६ |
| १५८. | राजगोपालन, न० वी० | हिन्दी के पदबंधात्मक शब्द रूप | १३ | १०– १६ |
| १५९. | राजेन्द्रकुमार | भागवत के भाषानुवादों की परम्परा (सन् १७०० से १९०० ई० तक) | ३ | १०९–१२२ |
| १६०. | राव, ई० पाण्डुरङ्ग | अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी सिखाने की उपयुक्त विधि | ७ | ३०– ४० |
| १६१. | राव, बालकृष्ण | अहिन्दी भाषियों के लिए हिन्दी-शिक्षण (संगोष्ठी) अध्यक्षीय भाषण | ७ | १– २ |

| क्र० सं० | लेखक का नाम | शीर्षक | अंक | पृ० सं० |
|---|---|---|---|---|
| २१७. | शर्मा, किशोरीलाल | ओड़िया भाषियों की हिन्दी भाषा सम्बन्धी लिखित त्रुटियों का विश्लेषण | १८ | ५१– १ |
| २१८. | शर्मा, किशोरीलाल | चलचित्र के माध्यम से भाषा-शिक्षण | ९–१० | १९१–१ |
| २१९. | शर्मा, किशोरीलाल | वाचन-शिक्षण की प्रक्रिया तथा वाचन शिक्षण के नए सोपान | १६ | ३९– |
| २२०. | शर्मा, केशवदेव | अहिन्दी भाषी भारतीय क्षेत्रों के अनुरूप हिन्दी एवं उसके साहित्य को विकसित करने की समस्याएँ | ८ | ३३– |
| २२१. | शर्मा, केशवदेव | चैतन्य दर्शन में श्रीकृष्ण तत्व | ६ | ८८– |
| २२२. | शर्मा, कोट सुन्दरराम | हिन्दी वर्तनी और व्याकरण प्रयोगों की अनेकरूपता और अस्थिरता के कारण अहिन्दी भाषियों की कठिनाइयाँ | ७ | ५१– |
| २२३. | शर्मा, गोपाल | भाषा के अध्यापन की पद्धति का क्रमिक विकास | ८ | ११– |
| २२४. | शर्मा, गोपाल | शिक्षा की शब्दावली | ४ | १– |
| २२५. | शर्मा, गोपाल | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | ३३– |
| २२६. | शर्मा, जगदीशप्रसाद | ब्रजभाषा और गुजराती की समान प्रवृत्तियाँ | ६ | ५७– |
| २२७. | शर्मा, टी० राजेश्वरानन्द | अहिन्दी भाषी प्रान्तों में मध्यकालीन हिन्दी कविता का अध्ययन | ११–१२ | ७४– |
| २२८. | शर्मा, ब्रजभूषणलाल | द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण | ७ | ५३– |
| २२९. | शर्मा, ब्रजभूषणलाल | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | ११३–१ |
| २३०. | शर्मा, आर० पी० | अन्य भाषा शिक्षण | ३ | १९– |
| २३१. | शर्मा, रामविलास | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव : भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | २४– |
| २३२. | शर्मा, लक्ष्मीनारायण | हिन्दी की ध्वनि-संघटना, क—स्वर चर्चा ख—व्यंजन चर्चा | १६ | ८३–१ |
| २३३. | शर्मा, विनय मोहन | काव्य की प्रेरणा | २ | १३– |
| २३४. | शर्मा, विनयमोहन | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव | ५ | २०– |
| २३५. | शर्मा, विनयमोहन | हिंदी और मराठी का सम्बन्ध | १ | ४– |
| २३६. | शर्मा, सरोजिनी | राष्ट्र भाषा हिन्दी की शब्दावली उन्नत करने के कुछ सुझाव (संगोष्ठी ६५–६६) | ७ | ११४–१ |
| २३७. | शर्मा, सरोजिनी | हिन्दी बंगला परसर्गों का व्यतिरेकात्मक अध्ययन | २० | ९३–१ |
| २३८. | शर्मा, हरीशंकर | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | १६– |
| २३९. | शास्त्री, भूदेव | अनुसंधान: निदानात्मक परख निर्माण | ३ | ४६–१ |
| २४०. | शास्त्री, भूदेव | शब्दों के व्याकरणिक वर्गीकरण के व्यावहारिक एवं दार्शनिक आधार | १ | १५६– |
| २४१. | शास्त्री, भूदेव | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारभीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५ | १०२–१ |
| २४२. | शास्त्री, भूदेव | हिन्दी शिक्षण की समस्याएँ : कुछ सुझाव (संगोष्ठी ६५–६६) | ७ | १७०–१ |

| क्र०सं० | लेखक का नाम | शीर्षक | अंक | पृ०सं० |
|---|---|---|---|---|
| २४३. | शास्त्री, सीताराम | कोश परियोजना उर्दू-हिन्दी प्रयोग कोश | १६ | ११०–१३१ |
| २४४. | शास्त्री, सीताराम | राष्ट्र भाषा हिन्दी : भाषा एवं साहित्य दोनों रूपों में विकास की दिशाएँ | ७ | ८०– ८६ |
| २४५. | शास्त्री, सीताराम | विश्व विद्यालयीय विद्वत्ता एवं अध्यापकों का प्रशिक्षण | १७ | ६५– ७० |
| २४६. | शास्त्री, सीताराम | हिन्दी तेलुगु के शब्द समूह में समानता-एक तात्विक विश्लेषण | ६ | ४३– ५१ |
| २४७. | श्रीकृष्ण मूर्ति, एस० | हिन्दी तथा चार मुख्य द्रविड़ भाषाओं की ध्वनि रचना शब्द आदि की दृष्टि से तुलनात्मक विवेचन (संगोष्ठी ६५–६६) | ७ | ११७–१२८ |
| २४८. | श्रीवास्तव,आशीर्वादीलाल | भारत के इतिहास और संस्कृति में आगरा | ११–१२ | २८– ३३ |
| २४९. | श्रीवास्तव, पुष्पा | प्राथमिक कक्षाओं के विषय का मनोविज्ञान | १७ | ७१– ७८ |
| २५०. | श्रीवास्तव, आर० एन० | Phonetics and Phonemics in Second Language Teaching | ९–१० | ४८– ५७ |
| २५१. | श्रीवास्तव, वीरेन्द्र | आधुनिक हिन्दी काव्य की अध्यात्म प्रबंधत्रयी | ६ | ६३– ८७ |
| २५२. | सक्सेना, बाबूराम | संगोष्ठी, सार्वजनिक हिन्दी का भावी रूप | ३ | ११– १४ |
| २५३. | सफाया, रघुनाथ | अहिन्दी भाषियों की राष्ट्र भाषा हिन्दी के शिक्षण की समस्याएं तथा समाधान के सुझाव | ७ | १६१–१६९ |
| २५४. | सत्यनारायण, मोटूरि | अहिन्दी भाषियों को हिन्दी-शिक्षण (संगोष्ठी) शुभारम्भ भाषण | ७ | ३– ८ |
| २५५. | सहाय, चतुर्भुज | अहिन्दी भाषियों को हिन्दी सीखने में उत्पन्न होने वाली कठिनाइयाँ (संगोष्ठी ६५–६६) | ७ | १४५–१४६ |
| २५६. | सहाय, चतुर्भुज | अनुसंधान: हिन्दी क्रियाएँ | ४ | १३५–१३९ |
| २५७. | सहाय, चतुर्भुज | अनुसंधान: हिन्दी क्रियाएँ | ३ | १३९–१४६ |
| २५८. | सहाय, चतुर्भुज | पुस्तक समीक्षा (१) तमिल साहित्य का नवीन इतिहास; न० वी० राजगोपालन (२) कर्नाटक और उसका साहित्य, एन० एस० दक्षिणामूर्ति | ४ | १५१–१५४ |
| २५९. | सहाय, चतुर्भुज | हिन्दी और असमिया के व्यंजनों की तुलना | १६ | ६७– ७२ |
| २६०. | सहाय, चतुर्भुज | हिन्दी क्रिया की काल-रचना | ४ | ४५– ५० |
| २६१. | सहाय, चतुर्भुज | हिन्दी के पूरक उपवाक्य | २० | १– ३५ |
| २६२. | सहाय, चतुर्भुज | हिन्दी में नकारात्मक निपात | ९–१० | १४७–१५० |
| २६३. | सहाय, रमानाथ | अन्य भाषा शिक्षण में टैग्मेमिक्स की उपयोगिता | ९–१० | ९७–१०७ |
| २६४. | सिंह, ईश्वर | भाषा शिक्षण में परीक्षण | ७– | १५६–१६० |
| २६५. | सिंह, ईश्वर | मूल्यांकन की वैज्ञानिक पद्धति | १७– | ५७– ६४ |
| २६६. | सिंह, जगदेव | हिन्दी क्रियापद | ६– | २७– ३७ |
| २६७ | सिंह, जगदेव | हिन्दी सीखने में बोली भाषियों की कठिनाइयाँ | ९–१० | २०७–२११ |
| २६८ | सिन्हा, एन० के० | Psychological Aspects of Teaching Second Language (A Synopsis) | ९–१० | २१६–२१७ |

| क्र०सं० | लेखक का नाम | शीर्षक | कअं | पृ० सं० |
|---|---|---|---|---|
| २६९. | सीताराम गिड्डुगु वेंकट | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५– | ९५–१०१ |
| २७०. | 'सीतेश' रामेश्वर प्रसाद | उड़ीसा में हिन्दी सीखने-सिखाने की कठिनाइयाँ और उनका समाधान | ८– | २२– ३२ |
| २७१. | 'सुमन' अम्बाप्रसाद | हिन्दी-भाषा में लिंग-विधान | १– | ८२– ९६ |
| २७२. | सुरेश कुमार | साहित्यिक शैली विज्ञान-सिद्धान्त और प्रयोग | १९– | १– ७ |
| २७३. | सोनी, रामगोपाल | महाराष्ट्र के स्थानवाची उपनामों का विश्लेषण | ४– | २४– २८ |
| २७४. | स्वामी, एन० कृष्ण | Transformational grammar and Contrastive Analysis | ९–१० | १३१–१३६ |
| २७५. | हुसैन, एहतिशाम | संगोष्ठी १९६४ : साहित्य में बाह्य प्रभाव: भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में | ५– | १६४–१७५ |